१३ ग

१३ ग

१३,,

पवित्र — पायो

गंगा-पुस्तकमाला का इकसठवाँ पुष्प

पवित्र पापी

पं० ब्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी०
कविराज विद्याधर विद्यालंकार

६१

पवित्र पापी

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(माधुरी-संपादक)

SHNA BROTHERS
Booksellers
AJMER

उत्तमोत्तम पढ़ने योग्य पुस्तकें

रंगभूमि दोनों भाग	५), ६)	कर्तव्याघात	२॥)
बहता हुआ फूल	२॥), ३)	आँख की किरकिरी	१॥)
विजया	१॥), २)	नवीन सन्यासी	३॥)
माँ	लगभग ३)	पंडितजी	१॥)
चित्रशाला	१।॥), २।)	बड़ी दीदी	१)
हृदय की प्यास	लगभग २॥)	परिणीता	१)
मिस्टर व्यास की कथा	,, ३)	नवविधान	१)
नन्दन-निकुंज	१), १॥)	मझली दीदी	॥)
प्रेम-प्रसून	१=), १॥=)	अरक्षणीया	१)
प्रेम-गंगा	१), १।॥)	सम्राट् अशोक	२।॥)
प्रेम-द्वादशो	१), १।॥)	चन्द्रनाथ	॥)
गोरी	लगभग १॥)	कामिनो कांचन	३)
गिरिबाला	,, २)	अधखिली कली	२॥)
विचित्र योगो	,, १॥)	मंगल प्रभात	५)
लबड़ धों धों	।॥=), १॥=)	घर और बाहर	१)
विवाह-विज्ञापन	लगभग १)	विवाहित प्रेम	१॥)
मंजरी	,, १)	आश्चर्य घटना	१॥)
मिलन मंदिर	२॥)	सुशीला विधवा	१)
कायाकल्प	३॥)	शांता	॥)
प्रेम-प्रतिमा	२)		

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक, गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
२९-३० अमीनाबाद पार्क
लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला का इकसठवाँ पुष्प

Govt. Model Girls' ... School
AJMER
LIBRARY
Class No. 891.433
Accession No. 93...
Book No. 172
Date

पवित्र पापी

[सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यास-लेखक डॉस्टाय फिस्की के लोक-प्रिय उपन्यास Crime & Punishment का हिंदी अनुवाद]

अनुवादक

प० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी०

कविराज विद्याधर विद्यालंकार

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३० अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

... BROTHERS
Booksellers
AJMER
3/8/...

प्रथमावृत्ति

४।)

सजिल्द ३॥)] सं० १९८३ वि० [सादी ३ ३॥)

... Model ...
AJ...
LIBRARY
Class No. ...
A... No. 9351
... No. ...
Date...

प्रकाशक
श्रीछोटेलाल भार्गव बी०एस्-सी०, एल्-एल्० बी०
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीरामकिशोर गुप्त
साहित्य प्रेस,
चिरगाँव (झाँसी)

परिचय

करुणरस में, जिससे पाठक का हृदय दया और भय के भावों से परिपूर्ण और अन्तःकरण शुद्ध होता है, हमारी समझ में कोई भी उपन्यास डास्टायफ़्स्की के उपन्यासों की समता नहीं रखता। इसका कारण उसकी जीवनी का कुछ हाल पढ़ने से विदित हो जाता है। यहाँ संक्षेप में इस पुस्तक के लेखक का परिचय लिखा जाता है—

सन् १८२१ ईस्वी में, मास्को के एक दरिद्रों के अस्पताल के डॉक्टर के यहाँ, डास्टायफ़्स्की का जन्म हुआ था।

इसने १८४४ ईस्वी में दरिद्र पुरुष-नामक पहला उपन्यास लिखा।

एप्रिल, १८४९ ई० में अन्य ४२ मनुष्यों के साथ उस पर यह अपराध लगाया गया कि वह साम्यवाद के (Socialistic) विषयों पर वाद-विवाद करता है। वह पकड़ा गया, और उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

दिसम्बर, १८४९ ई० में २१ मनुष्यों के साथ वह मृत्यु-दण्ड के लिये सेमियानविस्की के चौक में खड़ा किया गया। दण्ड की आज्ञा सुनाई गई। तीन मनुष्य बाँस से बाँध दिए गए। उनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोली चलाने की आज्ञा दी गई। इतने ही में एक अफ़सर ने आकर कहा कि इनके दण्ड में परिवर्तन हुआ है, और साइबेरिया में देश-निकाले का दण्ड दिया गया है। उन तीन आदमियों में से एक पागल हो गया।

डास्टायफिस्की ने इस घटना का हाल खुद लिखा है। उसे हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

"मेरी कोठरी में मुझको मृत्यु का दण्ड सुनाया गया। समय के विषय में कुछ नहीं कहा गया था। परन्तु एक घण्टा भी व्यतीत न हुआ होगा कि मुझको आज्ञा मिली कि मैं कपड़े पहन लूँ। प्रातःकाल सात बजे थे। चार-चार आदमी एक-एक सिपाही के साथ गाड़ी में बिठाए गए। हमने पूछा—हम कहाँ जा रहे हैं? सिपाही ने कुछ उत्तर न दिया। खिड़कियों पर बर्फ़ पड़ी हुई थी, इस कारण हम बाहर न देख सके। अन्त में हम सेमियानविस्की के चौक में पहुँचे। बीच में एक प्राणदंड देने का स्थान बनाया गया था। हम दो पंक्तियों में खड़े किए गए। इतना कड़ा पहरा था कि पासवाले से भी अधिक बातचीत करना असंभव था।

"एक अफ़सर आया, और उसने दण्ड की आज्ञा पढ़कर सुनाई। उसने कहा—शीघ्र ही गोली मार दी जाय। बीस बार ये शब्द मेरे कानों में पड़े—दण्ड! गोली से मृत्यु! ये शब्द मेरी स्मृति में इतने गहरे अंकित हो गए थे कि मैं बरसों रात को चौंक-चौंककर उठ बैठता रहा। मुझको ये ही शब्द रात्रि के अन्धकार के सन्नाटे में सुनाई देते थे। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि अफ़सर ये शब्द सुनाकर, काग़ज़ को जेब में रखकर हट गया था। उसी क्षण सूर्योदय हुआ, और मेरे मन में यह विचार आया कि हम मारे नहीं जायँगे। यह बात मैंने अपने पासवाले साथी से भी कही। उत्तर न देकर उसने मुझको सामने उन टिकटियों की पंक्ति दिखाई, जो हम लोगों का मृतक शरीर ले जाने के लिये रक्खी थीं। मेरी आशा जाती रही, और मैं भी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा। मैं बहुत डर गया था; परन्तु मैंने भय प्रकट करना अच्छा न समझकर साथी से बातचीत शुरू कर दी।

"एक पादरी वहाँ पर आया, और पूछने लगा कि हममें से किसी को पाप-स्वीकार (Confession) करना है ? एक व्यक्ति आगे बढ़ा; परन्तु जब पादरी ने क्रॉस (Cross) उठाया, तो सबने क्रॉस का चुम्बन किया।

"पेट्राश्विस्की और दो और, जो सबसे बड़े अपराधी समझे गए थे, बाँसों से बाँध दिए गए। उनके सिर एक थैली से ढक दिए गए, और सिपाही गोली चलाने को तैयार हो गए।

"अब मेरी समझ में आया कि पाँच मिनट का जीवन और है ! कैसी भयङ्कर घड़ियाँ थीं। मैं एक गिरजाघर के चमकते हुए मीनार को देखने लगा। उस पर सूर्य की किरणें पड़ रहीं थीं। मुझको शीघ्र ही विदित हुआ कि मैं भी उसी देश में, जहाँ से सूर्य की किरणें आ रही हैं, कुछ ही क्षण में पहुँच जाऊँगा।

"भीड़ में खलबली मच गई। मैं कुछ न समझा। इतने में एक अफ़सर सफेद रूमाल हिलाता हुआ आया। सम्राट् ने उसको हमें क्षमा की आज्ञा सुनाने के लिये भेजा था। अन्त में मुझको मालूम हुआ कि मृत्यु का दण्ड केवल एक धमकी थी। परन्तु इस धमकी का परिणाम हममें से कुछ के लिये बहुत बुरा हुआ। ग्रीगारेफ़ जब बाँस से खोला गया, तब वह पागल हो गया था। वह जीवन-भर अच्छा नहीं हुआ। सभी को कुछ-न-कुछ शारीरिक हानि पहुँची। केवल कमीज़ पहने हुए हम लोग बीस मिनट तक २१° डिग्री की सरदी में खड़े रहे ! हममें से कुछ के कान और पैरों की उँगलियाँ जम गई थीं। एक के फेफड़ों में सूजन आ गई, और फिर उसे राजयक्ष्मा हो गया। मुझको कुछ सरदी नहीं लगी। हमारा दण्ड अब आठ वर्ष का साइबेरिया में कठिन कारागार और वर्षों का देश-निकाला रह गया।

"सन् १८४९ से १८५७ तक, चार वर्ष तो कारागार में रूस के बड़े भयंकर पापियों के साथ कटे। चार वर्ष वह सिपाही रहा।"

सन् १८६६ में उसका 'पवित्र पापी' या Crime & Punishment नाम का यही उपन्यास छपा, जिसमें उसे बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

सन् १८६६ से १८८१ तक, प्रसिद्धि प्राप्त करने पर भी, लेखक दरिद्र ही रहा। बहुधा उसे उपवास करना पड़ता था। महाजनों के तकाजों और ऊधम से बचने के लिये उसे रूस छोड़ना पड़ा। एक बार अपना ओवरकोट और अन्तिम कमीज़ तक गिरवी रखनी पड़ी! सन् १८८१ में उसका देहान्त हुआ, और उसके शव के साथ ४० हज़ार देशवासी गए!

उसे जन्म से ही मृगी का रोग था, और उस पर यह कठिन दण्ड मिला। परन्तु आश्चर्य की बात है कि कभी उसने ज़ारशाही के विरोध में कुछ नहीं कहा। वह यहाँ तक कहता है कि दण्ड ही के कारण मैं सदाचारी हो गया, और मेरा दिमाग़ ठीक रहा। डास्टायफिस्की ने साइबेरिया जाते समय अपने एक मित्र से कहा था—कैदी जानवर नहीं होते; कदाचित हमसे अच्छे ही हैं। फिर वहाँ से उसने लिखा था—मैं नहीं समझ सकता था कि हममें सौ में से दस आदमी तो पढ़ते-लिखते हैं, और नब्बे अज्ञान के अन्धकार में रहकर इन दस के लिये परिश्रम करते हैं। मुझको पूर्ण विश्वास है कि यदि हम सब अज्ञानी न रहें, तो कुछ हानि न होगी, और मुझे दृढ़ आशा है कि रूस में ज्ञान का प्रकाश और देशों से पहले होगा; क्योंकि हममें से कोई भी योरप के और सभ्य देशों की तरह यह नहीं कहता कि जन-संख्या के एक भाग का दूसरे भाग के सुख के लिये परिश्रम करना धर्म है।

टॉल्सटॉय का भी यही विश्वास था। यद्यपि इन दोनों का कार्य-क्षेत्र भिन्न-भिन्न था, परन्तु ये दोनों देश के लिये एक ही आशा

रखते थे, और इन्हीं के कंधों पर रूस के साहित्य-मन्दिर की नींव पड़ी है। न तो टॉल्सटॉय प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिये चेष्टा करता था, और न डास्टायफ़िस्की। डास्टायफ़िस्की के मरने की सूचना पाकर टॉल्सटॉय ने लिखा था—"मैं इस मनुष्य से कभी नहीं मिला, और न मुझसे इससे कोई व्यवहार था। परन्तु इसके मरने पर मुझे विदित हुआ कि वही मुझे सबसे प्यारा और मेरे लिये सबसे आवश्यक मनुष्य था। जो कुछ उसने किया, मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिये किया। उसके मरने की सूचना पाकर ऐसा विदित होता है कि मेरा आश्रय जाता रहा।"

अनुवादक का वक्तव्य

आज हम उक्त लेखक का यह उपन्यास हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित करते हैं। हम आशा करते हैं, लेखक का मनुष्यों के चरित्र-चित्र खींचने का असाधारण कौशल हिन्दी-पाठकों को भी वैसा ही रुचिकर होगा, जैसा और देशों के पाठकों को हुआ है। अँगरेज़ी में इस रूसी उपन्यास के अनुवाद का पहला संस्करण जनवरी, सन् १९११ में, लारेंस इरविंग-नामक लेखक ने छपवाया। पुस्तक की इतनी माँग हुई कि तीन महीने के बाद ही मई, १९११ में दूसरा संस्करण छपवाना पड़ा। फिर तीसरा संस्करण मार्च, १९१४ में, चौथा अगस्त, १९१५ में, पाँचवाँ सितंबर, १९१६ में, छठा जनवरी, १९१८ और सातवाँ ऑक्टोबर, १९२१ में हुआ।

हमने इस अनुवाद में शब्दानुवाद करने की चेष्टा की है, और साथ ही साहित्य का भी ध्यान रक्खा है। इस उपन्यास के अनुवाद का विचार हमें इसलिये हुआ कि यह अपने ढंग का निराला उपन्यास है। हिन्दी में आज तक ऐसा उपन्यास हमारी नज़र से नहीं गुज़रा। अश्लील बातें तो आपको इसमें ढूँढ़े न मिलेंगी। मदिरापान से पागल होकर किस प्रकार अच्छा मनुष्य भी विवेक-हीन हो जाता है, यह आपको मारमेलेडाफ़ का हाल पढ़कर मालूम होगा। सुनिया-जैसी पवित्र आत्माएँ परोपकार करने के लिये वेश्या का घृणित जीवन क्यों स्वीकार करती हैं, यह भी आपको विदित होगा। सती स्त्रियाँ किस प्रकार आत्मरक्षा करती हैं, डोनिया

के चरित्र में स्पष्ट दिखाया गया है । पुलीस हमारे भारतवर्ष की पुलीस की तरह केवल डण्डे से नहीं, प्रत्युत बुद्धि से भी काम कर सकती है, यह आपको इस उपन्यास में पेट्रोविश की कार्यवाही का ढंग देखकर विदित होगा ।

दरिद्रता यद्यपि स्वयं पाप नहीं है, फिर भी इसी के कारण कितने ही पाप होते हैं, और उन पापियों पर हम घृणा की दृष्टि नहीं डाल सकते; क्योंकि उनकी आत्माएँ पवित्र हैं । केवल शरीर बनाए रखने के लिये उन्हें ये पाप करने पड़ते हैं । एक कवि ने कैसा अच्छा कहा है—

"बुभुक्षितः किन्न करोति पापं क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ।"

इस उपन्यास के पढ़ने से हमें रोडियन-जैसे पवित्र पापी के दर्शन होते हैं, जो यद्यपि खून करता है, फिर भी हमारी सहानुभूति सदा इस खूनी के साथ रहती है; और हमारी हार्दिक इच्छा यही होती है कि किसी तरह रोडियन बच जाय, तो अच्छा ।

यदि रामायण पढ़कर हमारी इच्छा होती है कि हमारा भाई भी लक्ष्मण-सा हो, तो इस उपन्यास को पढ़कर हम यही चाहते हैं कि हे ईश्वर, हमें भी कोई राजू-सरीखा मित्र मिले ।

कैथराइन का अपनी सौतेली पुत्री के लिये प्रेम भी बड़ा विचित्र है । आत्माभिमान ने उसको सड़कों पर भीख माँगना स्वीकार कराया, परन्तु मकान की मालकिन की कटु बातें सहन न करने दीं ।

स्विड्रीगेलफ़-जैसा पापी पुरुष भी सती के तेज से प्रभावित होकर, अपनी इच्छाओं का दमन करके, दरिद्रों की सहायता करके, उपकार कर सकता है, उसके मरने पर भी हमको कुछ शोक अवश्य होता है, और उसके साथ सहानुभूति करने की इच्छा होती है ।

यदि इस पुस्तक में हमें किसी के साथ घृणा उत्पन्न होती है, तो वह

लुशिन है। लूशिन-जैसे मनुष्य इस संसार में हमें सहस्रों की संख्या में मिलेंगे, जो अपने को बहुत बड़ा समझकर दूसरों को निर्धन होने के कारण, नीच समझते हैं। और, यदि वह निर्धन उन्हें बड़ा नहीं समझता, तो वे उसका नाश करने में बुरी-से-बुरी चालें और घृणित-से-घृणित काम करने को उद्यत हो जाते हैं।

बस, हमें अब अन्त में केवल यह लिखना है कि नेस्टेसिया-जैसी निष्काम भाव से सेवा करनेवाली परिचारिकाओं का दर्शन इस संसार में दुर्लभ है, और रोडियन की ओर से उसको धन्यवाद देने की धृष्टता करने में पाठक भी हमारा साथ देने में आगापीछा न करेंगे।

———

पवित्र पापी

पहला भाग

ख़ून का परिणाम

पहला परिच्छेद

जुलाई की एक गरम सन्ध्या को एक युवा पुरुष पचमंज़िले मकान से—अपने छोटे-से रहने के स्थान से—निकला, और बिना कुछ सोचे हुए नदी के पुल की ओर चला। वह इसलिये ख़ुश था कि सीढ़ियों पर मकान की मालकिन से उसकी भेंट नहीं हुई, जो नीचे के हिस्से में रहती थी, और जिसकी रसोई का द्वार सदा खुला रहता था। इसलिये जब कभी यह युवा बाहर जाता था, तो इसको सबसे पहले अपने शत्रु से मिलना पड़ता था, इससे वह घबराता था। और उसकी भौंहों में बल पड़ जाते थे। उसको मालकिन के कुछ रुपए देने थे, इसलिये वह उसका सामना करने से डरता था।

उसको इधर कोई भारी नुक़सान नहीं हुआ था; परंतु कुछ दिनों से उसका दिमाग़ पागलों का-सा हो रहा था। उसने समाज में बैठना छोड़

दिया था, और अब वह मकान की मालकिन ही से नहीं, परंतु प्रत्येक मनुष्य से घृणा करने लगा था। दरिद्रता से कभी वह चिंतित रहा करता था; परंतु अब उसको उसका भी ध्यान न था। उसने अपने नित्य-कर्म छोड़ दिए थे, और अपने जी में मालकिन के ऊपर हँसा करता था। परंतु फिर भी सीढ़ियों में मुठभेड़ हो जाने से जो गालियाँ और धमकियाँ उसको सुननी पड़ती थीं, जो बहाने उसको करने पड़ते थे, उनकी अपेक्षा चोरी से निकल जाना ही वह अच्छा समझता था। आज जब वह सड़क पर निकल आया, तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं इस स्त्री से इतना क्यों घबराता हूँ। उसने सोचा, इन छोटी-छोटी बातों से मुझे घबराना नहीं चाहिए, जब कि मैं इतना भारी काम करने के लिये तैयार हो रहा हूँ। वह हँसने और धीरे-धीरे इस तरह बड़बड़ाने लगा—"मनुष्य के हाथ में उसकी दवा है, और वह केवल कायरता के कारण उस दवा को काम में नहीं लाता। मैं जानना चाहता हूँ कि लोग किस चीज़ से बहुत डरते हैं। मैं बकबक बहुत करता हूँ। शायद इसीलिये कुछ नहीं करता, या यों कहिए कि कुछ नहीं करता, इसीलिये बकता हूँ। मुझे बकने का अभ्यास इसी महीने में पड़ गया है। दिन-भर बिछौने में पड़े-पड़े छोटी-छोटी बातों का ध्यान किया करता हूँ। हैं! अब मैं इस ओर क्यों जा रहा हूँ। क्या मैं यह काम कर सकता हूँ? क्या सचमुच मैं यह काम करूँगा? नहीं, नहीं, यह केवल स्वप्न है, झूठे विचार हैं, जो मेरे दिमाग़ को ख़राब करते हैं।

गरमी बहुत तेज़ पड़ रही थी। लोगों की भीड़, चूने, ईंट और दूकानों की दुर्गन्ध से इस युवा का दिमाग़ और ख़राब हो चला। शराब की बू से और शराबियों की शक्ल देखकर हमारे नायक के चेहरे पर, थोड़ी देर के लिये, बल पड़ गए। उसकी शक्ल बुरी न थी। क़द मँझोला, शरीर गठा हुआ तथा बाल और आँखें काली थीं। वह फिर ध्यान में डूब गया, और फिर कुछ बड़बड़ाने लगा। इस समय उसको ध्यान आया

कि मेरा दिमाग़ ख़राब हो रहा है, मैं बहुत निर्बल हो रहा हूँ, और दो दिन से मैंने कुछ नहीं खाया।

उसकी पोशाक बहुत गंदी थी, और शायद ऐसे चोथड़े पहनकर कोई दूसरा आदमी दिन को बाहर न निकलता। नगर के इस कूचे में लोग वेश-भूषा का विचार नहीं करते थे; क्योंकि यहाँ घास की मंडी थी, और कारीगर लोग ही रहा करते थे। दूसरे, युवा की घृणा इस दर्जे तक पहुँच गई थी कि उसको सड़क पर फटे कपड़े पहनकर निकलने में लज्जा नहीं आती थी। अगर कोई जान-पहचानवाला मिल जाता, तो शायद उसको लज्जा आती। इतने में वह रुक गया, और एक शराबी की बातें सुनने लगा। शराबी कह रहा था—"ओहो, इस जर्मन की टोपी देखो!" युवा ने अपनी टोपी उतारकर देखना शुरू किया। वह बहुत पुरानी हो गई थी, उसमें धब्बे पड़े हुए थे, और उसके किनारे फट गए थे। टोपी को देखकर उसे लज्जा नहीं आई, और वह बड़बड़ाने लगा—"मैं तो पहले ही से समझता था कि छोटी-छोटी बातों से सब ख़राबी हो जाती है। यह टोपी लोगों का ध्यान मेरी ओर खींचती है। मुझे अपने चोथड़ों के माफ़िक ही टोपी पहननी चाहिए। ऐसी टोपियाँ कोई नहीं पहनता। जो इसको एक बार देखेगा, याद रक्खेगा; और इसी से शायद सब भेद खुल जाय। मुझे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों से ही बड़ी-बड़ी बातों का पता लग जाता है।"

वह अपने घर से केवल सात सौ तीस क़दम आया था। वह यह नहीं समझता था कि मैं यह काम कर सकूँगा; परंतु महीने-भर से वह इसी का ध्यान कर रहा था। यद्यपि वह अपने को डावाँडोल होने के लिये बुरा-भला कहता था, तथापि अब यह समझने लगा था कि शायद ऐसा काम करना उसके लिये संभव है। वह अपने काम का अभ्यास कर रहा था, और हर क़दम पर उसके दिल की धड़कन तेज़ होती जाती थी। एक बहुत बड़ी इमारत देखकर—जिसके एक तरफ़ नहर थी और दूसरी

तरफ़ सड़क—उसका दिल बैठ, गया और उसके हाथ-पाँव काँपने ल
मकान में बहुत-से छोटे-छोटे हिस्से थे, जिनमें भाँति-भाँति के लोग र
दर्ज़ी, लोहार, रसोइए, भाँति-भाँति की जर्मन वेश्याएँ और छोटे दफ़
क्लर्क बाबू रहते थे। लोग दोनों दरवाज़ों पर जमा रहते थे। इस म
तीन या चार चौकीदार थे। परंतु युवा को कोई नहीं मिला
चुपके से दाहने हाथ के ज़ीने पर चढ़ गया। वह इस अँधेरे एवं तं
से भली भाँति परिचित था, और ख़ुश था कि अँधेरे के कारण उस
देख नहीं सकता था। जब वह चौथी मंज़िल पर पहुँचा, तो सो
यदि मैं अभी से इतना घबराता हूँ, तो जब अपना काम करने अ
तब मेरी क्या दशा होगी? रास्ता रुका हुआ था; क्योंकि कुछ
कुली एक जर्मन अफ़सर का सामान उठाकर ले जा रहे थे।
बुढ़िया की घंटी बजाते हुए यह सोचा कि अच्छा हुआ; अ
मंज़िल में सिवा उस बुढ़िया के और कोई नहीं रहा। घंटी की
बहुत धीमी हुई, और इस आवाज़ से उसके शरीर में कँपकँपी
हो गई।

थोड़ी देर में दरवाज़ा खुला, और एक बुढ़िया ने अपनी छोटी
आँखों से आगंतुक को बड़े ध्यान से देखा। परंतु जब बहुत-से
उस मंज़िल पर देखे, तो उसने दरवाज़ा खोल दिया। युवा एक अँधेरे
में घुसा, जिसके पीछे एक छोटा-सा रसोईखाना था। बुढ़िया चु
उसको देखती रही। उसकी अवस्था साठ वर्ष की थी। वह दुबली-
थी, पर उसकी आँखें बहुत चमकती थीं। सिर खुला हुआ था,
गर्दन में एक फ़लालैन का टुकड़ा बँधा था। इतनी तेज़ गरमी में भी
वह एक गंदा पीला फ़र (बालों की खाल) डाले हुए थी। वह
खाँसती और युवा को बड़ी संदिग्ध दृष्टि से देखती जाती थी।

युवा ने कहा—"मैं विद्यार्थी रोडियन हूँ, जो एक महीना
तुम्हारे पास आया था।" यह कहकर युवा ने बहुत आदर से

लाम किया । बुढ़िया ने उत्तर दिया—"हाँ, हाँ बच्चे, मुझे अच्छी तरह याद है।" परंतु अपनी आँखें उसी के चेहरे पर जमाए रही।

रोडियन को बड़ा आश्चर्य था कि वह मेरी ओर इस तरह संदिग्ध दृष्टि से क्यों देख रही है । कदाचित् उसकी यही आदत हो, यह सोचकर वह बोला—

"इधर देखो, मैं फिर वैसा ही संदेसा लेकर आया हूँ।"

बुढ़िया थोड़ी देर चुप रही । फिर कुछ सोचने लगी। उसके बाद अंदर के कमरे की ओर इशारा करके कहा—"बच्चे, इसमें चलो।"

छोटा कमरा, जिसमें युवक घुसा, पीले काग़ज़ों से मढ़ा हुआ था। खिड़कियों में मलमल के पर्दे लगे थे, और सूर्य अपनी रोशनी अंदर पहुँचा रहा था। रोडियन ने अपने मन में कहा—"सूर्य उस दिन भी इसी तरह चमकता रहेगा!" शीघ्रता से कमरे की सब चीज़ों को ध्यान से देखकर अपनी स्मृति में रख लिया। कमरे में कोई विशेष सामग्री नहीं थी। पीली लकड़ी का सामान बहुत पुराना था। एक कौच पड़ा था, उसके सामने एक मेज़ रक्खी थी। एक मेज़ पर शीशा लगा हुआ था। कुर्सियाँ दीवाल से सटी हुई एक पंक्ति में रक्खी हुई थीं; और दो-तीन जर्मन कन्याओं के भद्दे चित्र थे, जिनके हाथ में पक्षी थे। एक लैंप एक छोटे-से चित्र के सामने जल रहा था । छत और सामान बहुत साफ़ था। युवा ने सोचा, एलिज़बेथ इनकी देखभाल करती होगी । कहीं पर धूल का नाम भी न था । रोडियन अपने मन में कहने लगा कि ऐसी भयंकर बूढ़ी विधवाओं के ही यहाँ ऐसी सफ़ाई रहती है! फिर वह उत्सुक होकर एक पर्दे की तरफ़ देखने लगा, जो दूसरे छोटे कमरे के द्वार पर पड़ा हुआ था, जिसमें वह आज तक कभी नहीं घुसा था । उसमें बुढ़िया का बिछौना और आलमारी थी। मकान की मालकिन ने, आगंतुक के सामने खड़े होकर, बहुत ध्यान से उसे देखते हुए, रूखे भाव से कहा—"तुम क्या चाहते हो?"

युवा ने अपनी जेब से एक पुरानी चाँदी की घड़ी, जिसमें लोहे की चेन लगी थी, निकालकर कहा, "मैं इसको गिरवी रखने आया हूँ।"

"परंतु तुमने अभी तक मेरा ऋण नहीं चुकाया; वादे के ऊपर दो दिन हो गए!"

"ज़रा धीरज धरो, एक महीने का ब्याज मैं तुमको और दूँगा।"

"मैं धीरज धरूँ, या तुम्हारी अमानत बेच डालूँ, यह मुझको अधिकार है।"

"एलेना, इस घड़ी पर तुम मुझको क्या उधार दे सकती हो?"

"यह तो बिलकुल भद्दी-सी चीज़ है। इसका मूल्य कुछ भी नहीं। पिछली बार मैंने तुम्हारी अँगूठी पर दो रूबल दिए थे, यद्यपि डेढ़ ही रूबल में मैं उसे किसी जौहरी के यहाँ मोल ले सकती थी।"

"मुझको चार रूबल दो। मैं इसको छुड़ा लूँगा। वह मेरे पिता की थी, मुझको रुपए बहुत शीघ्र मिलनेवाले हैं।"

"नहीं डेढ़ रूबल दूँगी, और ब्याज पेशगी ले लूँगी।"

"बस, डेढ़ ही?"

"तुम्हारा जी चाहे, गिरवी रक्खो, जी चाहे न रक्खो।"

यह कहकर बुढ़िया ने घड़ी वापस कर दी। आगंतुक घड़ी लेकर चलने ही को था कि उसने सोचा, इस साहूकारिन के सिवा मुझे उधार देनेवाला कौन है? दूसरे वहाँ आने में उसका एक मतलब भी था।

"अच्छा रूबल निकालो" यह युवा ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

बुढ़िया ने अपनी जेब में चाबियाँ ढूँढ़ीं, फिर पास के कमरे में घुस गई। युवा वहाँ अकेला रह गया। उसने अपने कान खड़े किए, और ध्यान से सोचने लगा। उसने साहूकारिन को आलमारी का ख़ाना खोलते हुए सुना। उसने सोचा, यह सबके ऊपरवाला ख़ाना है। अब मुझको मालूम हो गया कि वह चाबियाँ दाहनी जेब में रखती है। चाबियाँ एक लोहे के छल्ले में हैं, और एक चाबी उन सबसे तिगनी बड़ी है। यह चाबी

खाने की नहीं हो सकती । जान पड़ता है, इसके पास कोई बड़ा मज़बूत संदूक़ या लोहे की आलमारी और है । मज़बूत संदूक़ की चाबियाँ ऐसी ही होती हैं। मगर ये कैसे गंदे विचार मेरे मन में आ रहे हैं !

बुढ़िया बाहर निकली, और उसने कहा—"देखो बच्चे, मैं दस कूपक (सिक्का) एक रूबल (सिक्का) पर ब्याज लेती हूँ । डेढ़ रूबल के पंद्रह कूपक हो गए । और, दो रूबल जो मैंने पहले उधार दिए हैं, उनका महीने-भर का ब्याज बीस कूपक हुआ । लो, सब ब्याज काटकर यह एक रूबल और पंद्रह कूपक ।"

"क्या कुल एक रूबल और पंद्रह कूपक ही मुझे इस समय दोगी ?"

"बस, इतना ही तो तुम्हें चाहिए ।"

युवा ने रुपए उठा लिए, और बुढ़िया की ओर देखने लगा । वह कुछ कहना या करना चाहता था; परंतु उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे । अंत में बड़ी घबराहट से उसने ये वाक्य मुँह से निकाले—

"ऐ एलेन, मैं एक सुंदर सिगार-केस तुम्हारे पास गिरवी रखने को शीघ्र लाऊँगा ।"

"अच्छा बच्चे, उसकी बातचीत फिर करेंगे ।"

"सलाम । क्या तुम सदा अकेली रहती हो, या तुम्हारी बहन भी तुम्हारे साथ रहती है ?"—यह उसने बाहर जाते-जाते कहा ।

"तुमको मेरी बहन से क्या काम है बच्चे ?"

"कुछ नहीं, यों ही पूछ लिया, कदाचित् तुमको—ख़ैर, सलाम एलेन !"

रोडियन घबराया हुआ बाहर निकला । नीचे जाते-जाते वह कई बार ज़ीने में रुक गया । उसके हृदय में न जाने क्या-क्या भाव आ रहे थे। अंत को जब वह सड़क पर निकल आया, तो उसने कहा—"कैसी घृणित बात है ! क्या मैं कभी—नहीं, बेहूदा ख़याल है, असंभव है । यह विचार मेरे मस्तिष्क में कैसे आया ? क्या मैं ऐसा बुरा काम कर सकता हूँ—घृणित, निंदित, कमीना काम ? और, फिर पूरे महीने से—"

ये शब्द उसके हृदय का भाव नहीं बता सकते थे। जो घृणा बुढ़िया के घर से निकलने पर उसके हृदय को दबा रही थी, वह इतनी अधिक हो गई थी कि वह किसी प्रकार इस कष्ट से निकल भागना चाहता था। वह रास्ते में शराबियों की तरह लोगों को धक्का देते हुए चला जा रहा था। उसने पास ही एक शराब की दूकान देखी, जिससे दो शराबी एक-दूसरे पर ढलते और परस्पर गालियाँ देते निकल रहे थे। युवा वहाँ ठहर गया। वह कभी ऐसे स्थान में पहले नहीं गया था। उसके सिर में चक्कर आ रहे थे, और प्यास लगी थी। उसे शराब पीने की इच्छा हुई; क्योंकि ख़ाली पेट होने के कारण वह अपने को बहुत निर्बल समझ रहा था। एक गंदे और अँधेरे कोने में, एक गंदी छोटी मेज़ के सामने, बैठकर उसने शराब माँगी, और एक गिलास पी गया। उसके कलेजे में ठंडक पहुँची, और दिमाग़ काम करने लगा। उसने मन में सोचा, मैं कैसा आदमी हूँ। इसमें इतनी बेचैनी की क्या बात थी? यह तो शरीर की निर्बलता थी। एक शराब का गिलास और कुछ बिस्कुट मेरे दिमाग़ को ताज़ा करने के लिये, मेरी प्रतिज्ञा को दृढ़ करने के लिये, आवश्यक थे। उसका चेहरा चमकने लगा, जैसे उसके दिल पर से कोई बड़ा बोझ हट गया। वह कमरे में चारों ओर देखने लगा। उसको फिर ध्यान आया कि यह बनावटी ख़ुशी थोड़ी देर की है। वहाँ बहुत थोड़े आदमी थे। पाँच गवैयों की टोली शराबियों के पीछे-पीछे चली गई थी। अब वहाँ केवल तीन आदमी रह गए थे। एक तो कोई दूकानदार जान पड़ता था, जो अपने सामने शराब की बोतल रक्खे बैठा था। उसके पास एक लंबा, मज़बूत, सफ़ेद दाढ़ी-वाला आदमी एक बड़ा कोट पहने, शराब के नशे में मस्त होकर, झूम रहा था। कभी-कभी वह चौंक उठता था, उँगलियाँ चटख़ाता और अपनी छाती पर हाथ मारता था। साथ ही कोई बेहूदा-सा गीत याद करने का प्रयत्न करता था। यथा—

"साल-भर मैं जोरू को, साल-भर मैं जोरू को करता रहा प्यार।"

परंतु गाने में उसका साथ किसी ने नहीं दिया। उसके साथी उसके गाने से कुछ परेशान-से थे। इस सभा का तीसरा सभासद कोई पेंशनयाफ़्ता अफ़सर मालूम होता था। वह अकेला बैठा हुआ कभी-कभी अपना गिलास होठों पर लगाता था, और चारों ओर देखता था। वह भी बहुत परेशान मालूम होता था।

दूसरा परिच्छेद

रोडियन को भीड़ की आदत न थी, और थोड़े दिनों से मनुष्यों से मिलना उसको बुरा लगता था। परंतु इस समय उसके भावों में परिवर्तन हो गया, उसको लोगों से मिलने की इच्छा होने लगी। हमारे नायक ने अकेले बैठे-बैठे अनेक गंदे विचार किए थे, और अब उकताकर वह थोड़ी देर के लिये मनुष्यों से मिलना चाहता था। यद्यपि यह शराब की दूकान बड़ी गंदी थी, फिर भी वहाँ उसको बैठने में प्रसन्नता होने लगी। दूकानदार दूसरे कमरे में बैठा था, परंतु कभी-कभी इधर भी आ जाता था। उसके बड़े-बड़े जूते, जिनमें लाल अस्तर लगा हुआ था, जब चौखट पर आते थे, तो लोगों का चित्त उसी ओर आकर्षित होता था। वह एक चोग़ा और एक काली वास्कट पहने था। उसका मुख तेल के लगाने से चमक रहा था। एक चौदह बरस का लड़का दाम वसूल कर रहा था, और छोटे ग्राहकों की सेवा कर रहा था। खिड़की में खीरे के टुकड़े, काले बिस्कुट और छोटी मछलियाँ रक्खी थीं; परंतु सबमें सड़ी बू आरही थी। गरमी तेज़ थी, और शराब की बू इतनी तेज़ थी कि पाँच मिनट में आदमी बिना पिए ही मस्त हो जाता था।

कभी-कभी हमको ऐसे मनुष्य मिलते हैं, जिनसे बिना परिचय के ही उनसे बात करने को हमारा जी चाहता है। रोडियन के दिल में उस पेंशनयाफ़्ता अफ़सर को देखकर ऐसी ही इच्छा हुई। वह टकटकी लगाकर उसको देखने लगा। अफ़सर भी उसकी ओर देखता था, और उससे बात करना चाहता था। वह और मेहमानों और दूकानदार की तरफ़ बड़ी तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। कदाचित् अपनी शिक्षा और सामाजिक पद के विचार से उनसे बात करना उसे उचित न

था। इसकी अवस्था पचास के ऊपर थी। मँझोला कद, और अच्छा रंग था। उसका सिर गंजा था। सिर्फ कुछ थोड़े-से सफ़ेद बाल थे। उसके फूले हुए पीले कपोल इस बात की सूचना दे रहे थे कि वह शराब बहुत पीता है। उसकी झुकी हुई पलकों के नीचे लाल, परंतु प्रेमभरी आँखें देख पड़ती थीं। उसके चेहरे में सबसे विशेष बात यह थी कि कभी तो वह बहुत बुद्धिमान् और जोशीला प्रतीत होता था, और कभी उससे पागलपन टपकता था। वह एक फटा हुआ पुराना कोट पहने था, जिसमें केवल एक ही बटन रह गया था। उसकी वास्कट के नीचे एक मैली और फटी हुई कमीज़ थी। दाढ़ी के न होने से यह विदित होता था कि यह कोई अफ़सर है; परंतु बहुत दिनों से उसके कपोलों पर उस्तरा नहीं चला था, और उसके कपोल बहुत घने काँटों-जैसे बालों से काले हो रहे थे। अफ़सरी शान उसके रंग-ढंग से प्रतीत होती थी, यद्यपि वह इस समय कष्ट में था। वह कभी अपना हाथ सिर पर फेरता था, और कभी अपना सिर मेज़ पर रख देता था। अंत को वह रोडियन की ओर देखकर बोला—

"क्या मैं आपसे बातचीत कर सकता हूँ? मेरी अनुभवी आँखें मुझे बतला रही हैं कि आप पढ़े-लिखे मनुष्य हैं, और शराब की दूकान में बैठने वाले नहीं। मैं स्वयं शिक्षा को, जब वह उत्तम गुणों से भूषित हो, अच्छा समझता हूँ। मेरा नाम मारमेलेडाफ़ है। क्या आप कहीं नौकर हैं?"

युवा ने उसकी मीठी बातें सुनकर उत्तर दिया—"नहीं, मैं विद्यार्थी हूँ।"

यद्यपि वह स्वयं उससे बातें करना चाहता था, परंतु एक अनजान आदमी का इस प्रकार से परिचय करना उसको अच्छा न लगा।

अफ़सर ने तुरंत जवाब दिया—"तो आप विद्यार्थी हैं, या थे? मैं तो यह पहले ही समझ गया था। मेरे अनुभव ने मुझको यह पहले ही बता दिया था।"

यह कहकर उसने अपने माथे पर अपनी योग्यता दिखाने को उँगली

रक्खी। फिर कहा—"तो आपने विद्याध्ययन किया है ?" यह कह-कर उसने अपना गिलास उठाया, और युवा के पासवाली कुर्सी पर आकर बैठ गया। यद्यपि वह शराब पिए हुए था, परंतु बातचीत स्पष्ट कर रहा था। रोडियन के पास उसके इस प्रकार आ जाने से यह विदित होता था कि उसने भी महीनों से ज़बान नहीं खोली।

फिर वह बड़ी गंभीरता से बोला—"यह सच है कि दरिद्रता पाप नहीं। यह भी मैं जानता हूँ कि शराब पीना पुण्य नहीं। यही तो रोना है। आप ग़रीब हों, तब भी आपको अभिमान हो सकता है; परंतु शराब पीनेवाले को कोई अभिमान नहीं हो सकता। शराबी समाज से, लकड़ी से नहीं, झाड़ू से भगाया जाता है, जो बड़े अपमान की बात है। परंतु समाज को ऐसा अधिकार होना चाहिए; क्योंकि शराबी अपने को आप अपमानित करता है। एक महीना हुआ, मेरी स्त्री को एण्ड्रियास ने मारा था। मुझको इस बात का बड़ा शोक हुआ। हाँ, क्या आप कभी रात को नोवा में रहे हैं ?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"नहीं, क्यों ?"

"मैं पाँच रातों से वहीं सो रहा हूँ।"

उसने अपना गिलास फिर भरा, और पीकर गुनगुनाने लगा। घास उसके कपड़ों और बालों में चिमटी हुई थी, और पाँच दिनों से न उसने कपड़े बदले थे, न वह नहाया था। उसके लंबे लाल-लाल हाथों में बड़े-बड़े नाखून थे, जो गंदे मालूम होते थे। सब लोग उसकी बातें सुन रहे थे। लड़के हँस रहे थे। मालिक भी इस सनकी आदमी की बातें सुनने को वहाँ आकर कुछ दूर पर बैठ गया था। मारमेलेडाफ़ यहाँ बहुधा लोगों से बातचीत करने आया करता था। शराबियों को—विशेष कर उन लोगों को, जिनकी स्त्रियाँ उनसे बुरा व्यवहार करती हैं—ऐसा अभ्यास पड़ जाता है, और वे घरकी बातें अपने शराबी साथियों से करने लगते हैं। दूकानदार ने ज़ोर से कहा-"सनकी आदमी है।

परंतु यदि आप अफ़सर हैं, तो आप कुछ काम या नौकरी क्यों नहीं करते ?"

मारमेलेडाफ़ ने रोडियन की ओर देखकर उत्तर दिया—"मैं नौकरी क्यों करता ? क्या वेकारी मुझको नहीं सता रही है ? जब मिस्टर एण्ड्रियास ने मेरी स्त्री को अपने हाथों से, एक महीना हुआ, मारा और मैं शराब पिए उस दृश्य को देख रहा था, तो क्या मुझको दुःख नहीं हुआ ? अच्छा एक बात बतलाओ, क्या तुमने कभी विना आशा के उधार माँगा है ?

"विना आशा से आपका क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि तुम पहले से जानते हो कि तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। उदाहरणार्थ, तुमको यह पूरा विश्वास है कि यह अच्छा आदमी और भला-मानस तुमको रुपए उधार नहीं देगा । वह क्यों दे ? वह भली प्रकार जानता है कि इसको रुपए वापस नहीं मिलेंगे। क्या दयाभाव से प्रेरित होकर दे ? मिस्टर एंड्रियास ने, जो पढ़ा-लिखा आदमी है, यह समझाया कि दया विज्ञान ने अब बंद कर दी है, और इँगलैंड ने, जो अर्थशास्त्र का केंद्र है, यही सम्मति प्रकाशित की है । यह आदमी तुमको क्यों उधार दे ? तुम जानते हो कि वह नहीं देगा; परंतु फिर भी तुम—"

रोडियन ने बात काटकर कहा—"ऐसी दशा में आप क्यों उसके पास जाते हैं ?"

"हाँ, क्यों ? इसलिये जाते हैं कि आपको कहीं जाना अवश्य है। आपके चलाए काम नहीं चलता । समझे या विना समझे आपको प्रत्येक काम करना पड़ता है। जब मेरी कन्या ने पुलीस के रजिस्टर में नाम लिखाया, और वेश्या हो गई, तब मुझे भी जाना पड़ा।"

यह कहकर उसने चिंतित दृष्टि से युवा की ओर देखा। दोनों लड़के अट्टहास कर रहे थे, और दूकान का मालिक भी हँस रहा था। वह शान्त भाव से बोला—"मुझको इस बात की कुछ चिंता नहीं । मैं इनके सिर हिलाने की पर्वा नहीं करता। प्रत्येक मनुष्य इस बात को जानता है

कि उसको छिपाने से कोई काम नहीं। मैं इस काम को घृणा की दृष्टि
नहीं, बल्कि उदासीनता की दृष्टि से देखता हूँ। युवक, क्या तुम मे
ओर देखकर यह कह सकते हो कि मैं पतित मनुष्य नहीं हूँ? मैं पति
मनुष्य हूँ; परंतु वह बड़ी अच्छी स्त्री है। मैं जानवर हूँ; परंतु मेरी स
कैथराइन बहुत सभ्य और एक बड़े अफ़सर की कन्या है। मैं अस
मनुष्य हूँ; परंतु मेरी स्त्री शिक्षित, ऊँचे दिमाग़ की और बड़े दिलवाली है
और, यदि वह मुझ पर दया करे—प्रत्येक मनुष्य दया खोजता
कैथराइन यद्यपि उच्च विचारवाली स्त्री है, परंतु मेरे साथ अन्याय करत
है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ, वह मेरे बाल, मेरे ही भले के लिये
नोचती है; परंतु यदि एक वार भी वह—नहीं, नहीं, इस बात के सोच
से क्या प्रयोजन?—उसने कभी मुझ पर दया नहीं की। यही मेरा चरित्र
है। मैं जानवर हूँ।"

शराबवाले ने जम्हाई लेकर कहा—"मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ।"

मारमेलेडाफ़ ने मेज़ पर हाथ पटककर कहा—"हाँ, मेरा चरित्र ऐसा
ही है। क्या आप विश्वास करेंगे कि उसके मोज़े बेचकर मैं शराब पी
गया? उसके जूते की बात नहीं कहता, क्योंकि वह तो विश्वास-योग्य
बात है। मोजे तक बेच डाले! मैंने उसका छोटा अंगोरा का दुशाला
जो मेरे विवाह से पहले उसको भेंट में मिला था, और जिस पर मेरा कुछ
भी अधिकार नहीं था, बेच डाला! हम एक ठंडे कमरे में रहते हैं, और सर्दी
की हवा लगने के कारण उसको खाँसी हो गई है, वह खून थूकती है।
हमारे छोटे-छोटे तीन बच्चे हैं। कैथराइन सवेरे से शाम तक काम करती
रहती और बच्चों को साफ़ रखती है; क्योंकि उसको साफ़ रखने का
अभ्यास पड़ गया है। दुर्भाग्य से उसकी छाती निर्बल है, और उसे क्षयी
का रोग है। मुझको इस बात का बड़ा दुःख है, और जितनी अधिक
शराब पीता हूँ, उतना ही मेरा दुःख बढ़ता जाता है। दुःख को
दुगना करने के लिये ही मैं शराब पीता हूँ।"

यह कहकर उसने निराशासूचक भाव से अपना सिर मेज़ पर दिया। फिर सिर उठाकर यों कहना शुरू किया—"ऐ युवक, तुम्हारे पर दुःख की कहानी लिखी हुई है। जैसे तुम घुसे, वैसे ही मैं समझ और इसी कारण मैंने तुमसे बात की। यदि मैंने अपने जीवन कथा तुमको सुनाई, तो इस कारण नहीं कि ये मूर्ख, जो पहले चुके हैं, मेरी हँसी उड़ावें; बल्कि इसलिये कि मैं एक शिक्षित आदमी की सहानुभूति चाहता हूँ। मेरी स्त्री ने एक बहुत अमीरों के स्कूल में शिक्षा पाई है, और वह पढ़ना छोड़कर गवर्नर और बड़े-बड़े अफ़सरों के सामने नाची है। उसको एक स्वर्णपदक और डिप्लोमा मिला है। पदक तो, बहुत दिन हुए, मैंने बेच डाला; परंतु मेरी स्त्री ने डिप्लोमा संदूक़ में रख छोड़ा है। अभी थोड़े दिन हुए, मकान की मालकिन को उसने वह दिखाया था। यद्यपि उससे उसकी लड़ाई रहती है, तो भी अपने पुराने ज़माने की याद तो किसी को दिखाती ही। अब वे दिन गए, केवल उनकी याद बाक़ी है। उसका हृदय उच्च, उदार और अभिमानी है। अपना घर साफ़ करने और काली रोटी खाने में वह दोष नहीं समझती; परंतु चाहती यह है कि लोग उसको आदर की दृष्टि से देखें। वह मिस्टर एण्ड्रियास के बुरे व्यवहार को नहीं सह-सकती। जब मिस्टर एण्ड्रियास ने उसको मारा, तो घूसों की चोट से नहीं, वरन् अपने अभिमान के पददलित होने के कारण वह बिस्तरे पर लेट रही। जब मैंने उससे विवाह किया; वह विधवा थी, और थी तीन छोटे-छोटे बच्चों की मा। उसका पहला पति फ़ौज में अफ़सर था, जिसके साथ उसने घर से भागकर विवाह किया था। वह उससे बहुत प्रेम करती थी। परंतु उसको जुए की लत पड़ गई। वह अफ़सरों से लड़ने लगा, और मर गया। अंत में वह उसको मारने भी लगा था। मुझको बड़े विश्वसनीय स्थान से पता लगा है कि आपस में उनका व्यवहार अच्छा न था। परंतु, फिर भी, वह उसके लिये अब तक आँसू बहाती है;

मेरा और उसका मुकाबला सदा किया करती है। मुझको यही प्रसन्नता है कि वह पहले ख़ुश थी। जब उसका पति मरा, तो वह तीन छोटे बच्चों के साथ एक उजाड़ गाँव में पड़ी हुई थी। वहीं मैं उससे मिला। मैंने दुनिया बहुत देखी है। फिर भी मैं उसकी दरिद्रता का वर्णन नहीं कर सकता। उसके संबंधियों ने बात तक नहीं पूछी; न उसके अभिमान ने आज्ञा दी कि वह उनसे सहायता माँगे। तब मैंने, जो एक रँडुआ था, और जिसके एक चौदह वर्ष की कन्या थी, उसको दुखी देखकर, दया करके, उससे विवाह करने का प्रस्ताव किया। यद्यपि वह बड़े ऊँचे कुटुंब की और पढ़ी-लिखी थी, फिर भी मुझसे विवाह करने को राज़ी हो गई। उसने रोते-रोते मेरा प्रस्ताव सुना, अपने हाथ मले, और स्वीकार कर लिया; क्योंकि उसके रहने का ठिकाना और कहीं नहीं था। आप नहीं समझ सकते कि ठिकाना न होने का क्या मतलब है। साल-भर तक मैंने उससे बड़ा अच्छा व्यवहार किया। शराब कभी नहीं छुई; क्योंकि मेरे विचार पवित्र थे। मैं कुछ कमाता न था। मेरी नौकरी विना अपराध के छूट गई; क्योंकि शासन-परिवर्तन में मेरी जगह तोड़ दी गई। तब मैंने शराब पीना शुरू किया, इस अठारह महीने की निराशा के बाद मैं इस सुंदर राजधानी में आया। मुझको नौकरी मिली, और छूट भी गई। इस बार तो मेरा ही अपराध था। मेरे शराब के प्रेम के कारण ही नौकरी छूटी। हम एमेलिया के मकान में रहते हैं। परंतु हम कैसे रहते हैं, और कैसे काम चलता है, यह मैं नहीं कह सकता। हमारे अलावा वहाँ और लोग भी रहते हैं, और वहाँ सदा लड़ाई-झगड़ा मचा रहता है। मेरी पहली स्त्री की लड़की बड़ी हो रही थी। मैं नहीं कहना चाहता कि उसकी विमाता ने उसको क्या दुःख दिए। कैथराइन यद्यपि उदार हृदय की स्त्री है, परंतु बड़े क्रोधी स्वभाव की है। अस्तु। इन बातों से क्या मतलब? सुनिया को अच्छी शिक्षा नहीं दी गई।

बरस हुए, मैंने उसको भूगोल और इतिहास पढ़ाने का प्रयत्न
ा था। पर चूँकि मुझको स्वयं कुछ नहीं आता था, और न
रे पास कोई उत्तम पुस्तक ही थी, वह फ़ारस के राजा साइरस के इतिहास
ही पढ़कर रह गई। फिर उसने कुछ उपन्यास पढ़े। मिस्टर एंडियास
उसको लुडविक की शरीर-रचना की पुस्तक पढ़ने को दी। क्या
पने वह पुस्तक पढ़ी है? उसको वह बहुत रोचक प्रतीत हुई, और
ने ज़ोर से पढ़कर हमें कुछ भाग सुनाए। बस, यही उसकी शिक्षा है।
मुझको बताइए, एक दरिद्र लड़की किस प्रकार अपना
ाह करे? यदि वह पढ़ी-लिखी न हो, और दिन-भर काम में
ी रहे, तो पंद्रह कूपक पैदा कर सकती है। मैं क्या कह रहा हूँ?
नया ने एक कौंसिल के मेंबर "इवान्" के लिये, जिसको आप सब
ा जानते हैं, छः मलमल की क़मीज़ें बनाईं। परंतु दाम देना
अलग रहा, उसने यह बहाना करके कि गर्दन की नाप ग़लत
ली है, सुनिया को गालियाँ देकर घर से निकाल दिया। बच्चे
ों मर रहे थे। कैथराइन, जिसके कपोलों पर बीमारी के कारण
ल दाग़ पड़े हुए हैं, कमरे में हाथ मलती हुई इधर-उधर घूम
थी। उसने सुनिया से कहा—"ऐ निकम्मी लड़की, तुझको लज्जा नहीं
नी कि तू कुछ काम नहीं करती, और बैठे-बैठे खाती रहती है?"
आप शायद यह पूछें कि जब बच्चों ही के लिये खाना न था,
वह खाती-पीती कहाँ से थी? मैं शराब पिए हुए पड़ा था। मैंने
िया की मधुर वाणी सुनी। (सुनिया सुंदर है, परंतु उसका
पीला पड़ गया है।) उसने कहा—"कैथराइन, फिर मैं क्या करूँ?"
मैं आपसे यह कहना उचित समझता हूँ कि 'डेरिया', जो एक
बुरा स्त्री है, और जिसको पुलीस भली भाँति जानती है, तीन
मकान की मालकिन के द्वारा सुनिया से बुरे प्रस्ताव कर चुकी थी। कैथ-
इन ने सुनिया से कहा—"तुम क्यों अपनी इज़्ज़त की इतनी रक्षा

करना चाहती हो ?" आप उसको दोष न दें; वह नहीं समझती थी कि वह क्या, कह रही है। वह बीमार थी, दुखी थी, उसके बच्चे भूख से चिल्ला रहे थे। वह सुनिया को सिर्फ़ तंग करना चाहती थी, उसको बुरे जीवन में ढकेलना नहीं चाहती थी। कैथराइन, जब बच्चे रोते हैं, उनको मारने लगती है, चाहे वे भूख ही से क्यों न रोते हों। पाँच बज चुके थे। सुनिया ने अपनी चादर कंधे पर डाली, और घर से निकल गई। आठ बजे वापस आई, और सीधी कैथराइन के पास जाकर विना कुछ कहे तीस रूबल मेज़ पर रख दिए। फिर वह मेरा हरा ऊनी रूमाल सिर में लपेटकर, मुँह दीवार की ओर करके लेट रही। उसका शरीर काँप रहा था। उस समय मेरी भी वही दशा थी। ऐ युवक, मैंने देखा, कैथराइन उठी, और सुनिया के बिछौने के पास जाकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। रात-भर वह प्रार्थना करती और मेरी पुत्री के पैर चूमती रही। अंत में दोनों एक दूसरे को प्यार करके सो गईं, और मैं उसी दशा में पड़ा रहा।

मारमैलेडाफ़ की आवाज़ रुक गई। फिर एक गिलास चढ़ाकर वह कहने लगा—"तब से डेरिया की जलन के कारण मेरी लड़की सुनिया का नाम पुलीस के रजिस्टर में लिखा गया, और हमें मकान छोड़ना पड़ा। हमारे मकान की मालकिन ने—यद्यपि उसी ने पहले हमको यह राह सुझाई थी—हमसे निकल जाने के लिये कहा। मिस्टर एंन्डियास भी उसीकी ओर बोले। सुनिया के कारण कैथराइन से और उनसे ख़ूब झगड़ा हुआ। वह सुनिया को पहले चाहता था; परंतु अभिमान ने उसे अब ऐसा करने से रोक दिया। उसने कहा—मैं ऐसा सभ्य मनुष्य किस प्रकार एक ऐसी स्त्री के साथ, एक ही मकान में, रह सकता हूँ ? कैथराइन सुनिया की ओर से बोली, और इसी पर एंन्ड्रिया ने कैथराइन को मारा। मेरी लड़की सूर्यास्त के बाद हमसे मिलने आती और कैथराइन की सहायता करती है। वह रैपर मैस्यूमाफ़ नाम के एक लँगड़े दर्ज़ी के संग रहती है।

उस दर्ज़ी का कुटुंब बहुत बड़ा है, और उसकी स्त्री बड़ी बक्की। वे सब एक कमरे में रहते हैं। केवल सुनिया एक कोने में अलग रहती है। एक दिन सवेरे मैं उठा, और ईश्वर की प्रार्थना करके श्रीमान् इवान् से मिलने के लिये गया। क्या आप श्रीमान् इवान् को जानते हैं? नहीं, तो आप एक भले आदमी को नहीं जानते। वह ईश्वर के बराबर खड़े होने के योग्य है। उसने मेरी कहानी आद्योपांत सुनने की कृपा की। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा—"मारमैलेडाफ़, तुमने एक बार मुझको निराश किया। अब मैं अपनी ज़िम्मेदारी पर फिर तुमको नौकरी देता हूँ। अब शिक्षा लो, और ठीक तरह से काम करो। मैंने मन में उसके पैरों की धूल चूमी; क्योंकि वास्तव में आजकल, सभ्यता के ज़माने में, वह ऐसा मुझे करने न देता। परंतु हे ईश्वर! जब मैंने घर में आकर अपनी नौकरी की बात सुनाई, और वेतन पाने की आशा दिलाई, तो मेरा बड़ा आदर हुआ।"

अब मारमैलेडाफ़ का दिल भर गया। बहुत-से शराबी दूकान में घुस आए। एक छोटा बच्चा छोटे किसान का गीत गाने लगा। दूकानवाला आगंतुकों की सेवा में लग गया। मारमैलेडाफ़ ने इसकी कुछ चिंता न की, और अपनी कहानी सुनाने लगा। उसके मुँह पर इस समय प्रसन्नता की रेखा दिखाई देती थी, और रोडियन बड़े ध्यान से उसकी कहानी सुन रहा था।

"इस बात को हुए पाँच सप्ताह हुए। जब कैथराइन और सुनिया ने मेरी बात सुनकर प्रसन्नता प्रकट की, मैंने अपने को सातवें आसमान पर पाया। एक समय था कि गालियों के सिवा मैं कुछ नहीं सुन पाता था; परन्तु अब वह पंजों के बल चलकर बच्चों को चुप करा रही थी—देखो, थके हुए दफ़्तर से आए हैं, उन्हें आराम करने दो। घर से जाने के पहले मलाई डालकर एक प्याला काफ़ी पिलाती थी। किस प्रकार उसने ग्यारह रूबल और पचास कूपक बचाए, मैं नहीं कह सकता। सिर से पैर तक

उसने मुझे लैस कर दिया। मेरे लिये जूते, यूनीफ़ार्म, कमीज़ों के आगे का हिस्सा, सब साढ़े ग्यारह रूबल में ख़रीदा। छः दिन हुए, मैंने अपनी कमाई तेईस रूबल और चालीस कूपक लाकर अपनी स्त्री को दिए थे। उसने मेरे कपोलों में चिमटी काटी, और कहा—तुम बड़े अच्छे आदमी हो।"

मारमैलेडाफ़ हँसना चाहता था; परंतु उसकी ठोढ़ी काँप रही थी। किसी प्रकार उसने अपने भावों को रोका। रोडियन की समझ में यह न आया कि यह शराबी—जिसने पाँच दिन से अपना घर छोड़ दिया है, और घास की मंडी में सो रहा है—किस प्रकार अपने कुटुंब से अब तक प्रेम करता है। वह ध्यान से उसकी बातें तो सुनता रहा; परंतु दुखी हो गया, और अपने को बुरा-भला कहने लगा कि मैं ऐसी जगह क्यों आया!

मारमैलेडाफ़ ने फिर कहना शुरू किया—"शायद औरों की तरह आप भी मेरी कहानी को हँसी समझते हों। शायद अपनी गृहस्थी की छोटी-छोटी मूर्खता की बातें सुनाकर मैं आपका समय नष्ट कर रहा हूँ। ये बातें मुझको सुख नहीं पहुँचातीं, परंतु मेरे दिल का धीरज बँधाती हैं। उस भाग्यशाली दिन को मैं दिन-भर हवा के महल बनाता रहा अपने जीवन के सुधार के स्वप्न देखता रहा। मैं सोचता रहा कि बच्चों के कपड़े बनवाऊँगा, सभी को कुछ आराम दूँगा, और अपनी इकलौती लड़की को बुरे जीवन से निकालूँगा।"

मारमैलेडाफ़ काँपने लगा। उसने अपना सिर उठाकर सब लोगों की ओर देखा, और कहा—"दूसरे दिन, ठीक पाँच दिन हुए, मैंने कैथराइन की चाबियाँ चुराईं, और उसके संदूक में जो कुछ बचाया हुआ रक्खा था, चुरा लिया। मुझको याद नहीं, कितने रुपए थे। पाँच दिन हुए, मैंने घर छोड़ा था। उन लोगों को मेरा कुछ पता नहीं है। मेरी नौकरी छूट गई। पुलवाली शराब की दूकान पर मैंने अपनी पोशाक दे दी, और उसके बदले में ये फटे कपड़े पाए। अब मेरा सर्वनाश हो गया।"

Govt. Model Girls Sec. School
AJMER
LIBRARY
Class No........
Accession No....937....

मारमैलेडाफ़ ने अपना सिर पीटा, दाँत किटकिटाए, आँखें बंद कर लीं, और फिर मेज़ पर झुक गया। थोड़ी देर के बाद उसके मुख का भाव बदल गया, उसने रोडियन से हँसते हुए कहा—"मैं आज सुनिया के पास शराब के लिये दाम माँगने गया था।" इस पर नए आगंतुकों में से एक ने अट्टहास करके पूछा—"फिर क्या उसने आपको कुछ दिया ?" मारमैलेडाफ़ ने रोडियन की ओर मुँह करके उत्तर दिया—"उन्हीं दामों से तो मैंने यह आधी बोतल शराब ख़रीदी है। उसने तीस कूपक अपने हाथ से मुझको दिए। मैंने देखा, उसके पास अधिक कुछ न था। उसने मुझसे कुछ नहीं कहा; पर मेरी ओर एक स्वर्गीय दृष्टि से देखा। वह दृष्टि उन देवतों की-सी दृष्टि थी, जो मनुष्यों के दोषों पर रोते हैं, परंतु उनको कोई कठोर बात नहीं कहते। यह बात कठोरता से भी अधिक कठोर है। इन तीस कूपकों की उसको इस समय आवश्यकता होगी। उसको बनठन कर रहना पड़ता है। उसके पेशे के बनाव-चुनाव में भी रुपए लगते हैं। उसको पोमेड चाहिए, पेटी कोट भी चाहिए, पैरों को सजाने के लिये छोटे-छोटे जूते भी चाहिए। उसको साफ़ रहने की भी आवश्यकता है। मैंने—जो मैं उसका पिता हूँ—उसके तीस कूपक शराब पीने के लिये ले लिए, और उनको पी गया। क्या आप मुझको करुणा की दृष्टि से देखेंगे ? क्या अब भी आप मुझसे सहानुभूति करेंगे ? कहिए, कहिए, आप मुझको करुणा की दृष्टि से देखते हैं, या नहीं ? हः हः हः !!!"

वह एक गिलास और भरने को था कि उसने देखा, उसकी आधी बोतल समाप्त हो गई है। दूकानदार ने कहा—"आप पर कोई क्यों दया करे ?" इस पर बड़े ज़ोर से हँसी हुई, और जिन लोगों ने उसकी पूरी कहानी नहीं सुनी थी, वे उसको देखकर ही हँसने लगे।

मारमैलेडाफ़ का जोश बढ़ गया। वह खड़े होकर ज़ोर से कहने लगा—"ठीक है, आप ठीक कहते हैं, मुझ पर कोई क्यों कृपा करे! उचित दंड तो मुझको बिना कृपा दिखाए ही मार डालना है। मुझको मार

डालो, मेरा इंसाफ़ करो, परंतु फिर भी मुझ पर कृपा करो। मैं अपना दंड भुगतने के लिये तैयार हूँ। मैं सुख नहीं चाहता। मैं दुःख और आँसू चाहता हूँ। ऐ शराबवाले, क्या तू समझता है कि तेरी आधी बोतल से मुझको कुछ सुख प्राप्त हुआ? नहीं, केवल आँसू और दुःख! और, दुःख ही का मुझे इसमें स्वाद मिला है। परंतु वह परमात्मा, जो सबके हृदयों का हाल जानता है, हमारे ऊपर कृपा करेगा। वही न्याय करनेवाला है। इंसाफ़ करने के दिन वह आवेगा, और पूछेगा—वह लड़की कहाँ है, जिसने अपने शराबी सांसारिक पिता पर घृणा न करके कृपा की? वह कन्या कहाँ है, जिसने अपनी निर्दयी, क्षयग्रस्त विमाता और उन बच्चों के लिये, जो उसके मांस और रक्त के बने हुए नहीं हैं, सब त्याग कर दिया। वह कहेगा—आ बच्ची! मैं तुझको एक वार पहले ही क्षमा कर चुका हूँ, और अब तेरे सभी पापों को क्षमा करता हूँ; क्योंकि तूने प्रेम के लिये सब कुछ किया। मैं जानता हूँ, वह मेरी सुनिया को क्षमा करेगा, और अभी-अभी, जब मैं उसके पास था, मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया। वह हम लोगों का न्याय करेगा, वह हमें क्षमा करेगा, चाहे हम अच्छे हों या बुरे, बुद्धिमान् हों या मूर्ख। जब वह सबका न्याय कर चुकेगा, तब हमारी ओर देखकर कहेगा—ऐ शराबियो, कायरो, बदमाशो! मेरे पास आओ। हम विना काँपे हुए उसके पास जायँगे। तब वह कहेगा—तुम बदमाश हो, तुम्हारे माथे पर जानवरों का चिन्ह है, परंतु, फिर भी, तुम मेरे पास आओ। फिर कुछ बुद्धिमान् लोग कहेंगे कि हे प्रभो! तुम इनको क्यों अपने पास बुलाते हो? ईश्वर उत्तर देगा—मैं इनको इस कारण बुलाता हूँ कि इनमें से एक को भी इस कृपा की आशा न थी। तब वह अपने हाथ फैला देगा, और हम रोते-रोते उसके चरणों में गिर पड़ेंगे। तब सारा संसार समझ जायगा, कैथराइन भी समझ जायगी कि परमात्मा की महिमा अपरंपार है।

यह कहकर वह थककर बेंच पर गिर पड़ा, और थोड़ी देर के लिये ध्यान में मग्न हो गया। उसकी वक्तृता का कुछ प्रभाव हुआ। थोड़ी देर के लिये शोर बंद हो गया। परन्तु फिर हँसी होने लगी।

एक—"ख़ूब स्पीच दी।"

दूसरा—"पुराना पापी है।"

तीसरा—"बड़ा ज़ालिम है।"

मारमैलेडाफ़ उठ खड़ा हुआ, और रोडियम से बोला—"चलिए, अब चलें। मुझको घर पहुँचा दीजिए। मैं कैथराइन के पास जाना चाहता हूँ।" युवक भी जाना चाहता था। वह मारमैलेडाफ़ की कुछ सेवा करना चाहता था। उसकी टाँगें उसकी आवाज़ से ज़्यादा काँप रही थीं, और वह रोडियन पर सारा बोझ डाले हुए था। उनको तीन-चार सौ क़दम जाना था। शराबी ज्यों-ज्यों अपने घर के पास आता था, बेचैन होता जाता था। अंत में वह रुक-रुक कर कहने लगा—"मैं कैथराइन से नहीं डरता। मैं जानता हूँ, वह मेरे बाल नोचेगी। परंतु मेरे बालों का क्या मूल्य? मुझे इसकी कुछ चिंता नहीं। मेरे लिये तो यह अच्छा ही है। परंतु मैं उसके नेत्रों से, उसके कपोलों के लाल धब्बों से और उसकी साँस से डरता हूँ। क्या आपने कभी ऐसे रोगियों की, घबराहट की दशा में, साँस सुनी है? मैं बच्चों के रोने से डरता हूँ। यदि सुनिया ने उनके लिये कुछ प्रबंध नहीं किया तो मैं नहीं जानता कि उन्होंने कुछ खाया होगा या नहीं। मुझे घूँसों की चिंता नहीं। मुझे घूँसों से चोट नहीं लगती, बल्कि सुख प्राप्त होता है। उनके बिना मैं नहीं रह सकता, और उनसे मुझे आराम मिलता है। मुझको मार-कर अपना हृदय शान्त करने दो। लो, हम घर पहुँच गए। यह एक धनवान् जर्मन का मकान है। आओ, मेरे संग आओ।"

आँगन से होकर वे चौथी मंज़िल पर चढ़ने लगे। ग्यारह बजे थे। यद्यपि उस मौसम में सेंटपीटर्सबर्ग में रात नहीं होती थी, फिर भी

ज्यों-ज्यों वे चढ़ते जाते थे, अँधेरा होता जाता था। धुएँ से भरा हुआ छोटा द्वार खुला हुआ था। मोमबत्ती के जलने से छोटा कमरा दस फ़ीट लंबा दिखाई दे रहा था। बरामदे से उसमें बच्चों के कपड़े फैले हुए दिखाई पड़ रहे थे। एक फटा हुआ चीथड़ा परदे की जगह लटका हुआ कमरे के एक भाग को अलग कर रहा था। उसके पीछे शायद पलँग हो। कमरे में केवल दो कुर्सियाँ थीं, और एक भद्दा पलँग, जो बिना वार्निश की मेज़ के पास रक्खा हुआ था। मेज़ पर एक लोहे का शमादान रक्खा था, जिसकी बत्ती लगभग जल चुकी थी। मारमैलेडाफ़ का बिछौना कोने में नहीं, रास्ते में ही था। मैडम के दूसरे किराए-दारों के दरवाज़े खुले हुए थे। कुछ उनमें से कोलाहल कर रहे थे। शायद ताश खेल रहे या चाय पी रहे हों। शोर सुनाई देता था; कभी हँसी होती थी। कभी गाली-गलौज।

रोडियन ने कैथराइन को शीघ्र पहचान लिया। वह काफ़ी लंबी, दुबली और सुंदर थी। परंतु बीमार मालूम होती थी। उसके सुनहले बाल अब भी सुंदर थे। परंतु जैसा मारमैलेडाफ़ ने कहा था, उसके कपोलों की हड्डियों पर लाल-लाल धब्बे थे। वह अपनी छाती पर हाथ रक्खे इधर से उधर घूम रही थी। उसकी साँस उखड़ी हुई थी। उसके नेत्र ज्वर की तीव्रता से चमक रहे थे, परंतु दृष्टि स्थिर थी। बुझती हुई मोम-बत्ती की रोशनी में उसकी घबराई हुई सूरत देखकर बड़े दुःख का भाव उत्पन्न होता था। रोडियन ने उसकी अवस्था तीस वर्ष की समझी। वह अपने पति से बहुत छोटी थी। उसने इन दोनों को आते हुए नहीं देखा। ऐसा विदित होता था कि उसकी देखने और सुनने की शक्ति जाती रही है। कमरे में बड़ी गरमी थी। सीढ़ी में बड़ा बदबूदार धुँआ था। परंतु उसकी समझ में यह न आता था कि वह खिड़की खोल दे, या द्वार बंद कर दे। दरवाज़े से तंबाकू का धुँआ आ रहा था, जिसके कारण उसको खाँसी आ रही थी, परंतु उसको रोकने की उसने कोई चेष्टा नहीं की।

सबसे छोटी लड़की, जो चार बरस की होगी, कौच के सहारे ज़मीन पर बैठा सो रही थी। छोटा लड़का, जो उससे एक बरस बड़ा होगा, कोने में रो और काँप रहा था। शायद अभी पीटा गया था। सबसे बड़ी बच्ची, जो लंबी और दुबली छः बरस की लड़की थी, एक फटी हुई चोली पहने और अपने नंगे कंधों पर एक पुराना ऊनी चोग़ा डाले थी, जो शायद दो बरस पहले ख़रीदा गया हो; क्योंकि वह उसके घुटनों तक ही पहुँचता था। वह अपने छोटे भाई के पास कोने में खड़ी हुई उसको प्यार कर रही थी, और उसको चुप करने की चेष्टा में थी। वह मा की ओर भी घबराई हुई दृष्टि से देखती जाती थी। मा की बड़ी-बड़ी काली आँखें, जो भय से और भी बड़ी मालूम होती थीं, उसको भयानक प्रतीत हो रही थीं। मारमैलेडाफ़ कमरे में घुसने की जगह दरवाज़े पर झुक गया, और उसने रोडियन से आगे बढ़ने का संकेत किया। अनजान आदमी को देखकर स्त्री रुक गई, और अपने मन में सोचने लगी कि वह यहाँ क्या करने आया है? तुरंत ही उसको ध्यान आया कि शायद वह किसी और से मिलने आया हो; क्योंकि औरों का रास्ता मारमैलेडाफ़ के कमरे से होकर ही था। वह अनजान आदमी से पूछे विना ही दरवाज़ा खोलने को थी कि अपने पति को झुका हुआ देखकर उसके मुख से चीख़ निकल गई।

क्रोध से भरी काँपती हुई आवाज़ में उसने कहा—"बदमाश! फिर तुम आ गए। रुपए कहाँ हैं? तुम्हारी जेब में क्या है? ये तो तुम्हारे नहीं हैं? रुपए क्या किए, बोलो?"

उसने पति की जेब में हाथ डाल दिए। मारमैलेडाफ़ ने रोकने की जगह अपने हाथ फैला दिए कि उसे जेब ढूँढ़ने में आसानी हो। उसके पास एक कूपक भी नहीं था। वह चिल्ला उठी—"सारे रुपए क्या हुए! हे परमात्मा! क्या सबकी इसने शराब पी डाली! संदूक में बारह रूबल थे।"

उसने क्रोध से अपने पति के बाल पकड़े, और कमरे में घसीट ले गई। मारमैलेडाफ़ का साथ धीरज ने न छोड़ा। वह नम्रता से घुटनों के बल अपनी स्त्री के पीछे चला गया।

"मुझको यह अच्छा लगता है, मुझको इसमें कष्ट नहीं होता"—यों वह ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा। कैथराइन ने उसका सिर ज़ोर से हिलाया। फिर एक बार उसने आप अपना सिर ज़मीन से टकराया। सोया हुआ बच्चा जाग पड़ा, और रोने लगा। छोटा बच्चा, जो कोने में खड़ा था, यह दृश्य न देख सका। वह सहम गया, और चिल्लाकर अपनी बहन से लिपट गया। वह इतना डर गया था कि बेहोश होने को था। सबसे बड़ी लड़की थर-थर काँप रही थी।

कैथराइन ने निराश होकर कहा—"क्या सबकी शराब पी डाली? कपड़े भी बेच डाले!" और, बच्चों की ओर संकेत करके हाथ मलती हुई बोली—ये भूखों मर रहे हैं!"

तुरंत ही रोडियन की ओर देखकर कहने लगी—"आपको लज्जा नहीं आती कि आप शराब की दूकान से सीधे यहाँ आए! आप इनके संग शराब पी रहे थे। यहाँ से निकल जाइए।"

युवा ने विना कुछ कहे वहाँ से चलने का इरादा किया। अंदर का दरवाज़ा खुला हुआ था, और रास्ते में निर्लज्ज मसख़रे रहनेवाले खड़े थे। वे गोल टोपियाँ पहने सिगरेट या पाइप पी रहे थे। कुछ चोग़े और दूसरे हवादार कपड़े पहने थे, जो निर्लज्जता प्रकाशित कर रहे थे। कुछ के हाथ में ताश थे। उनको मारमैलेडाफ़ के चीखने से, जब वह बाल पकड़ के खींचा गया, बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। दूसरे किराएदार उस कमरे में एकत्र हो गए थे। इतने में मैडम की एक क्रोध-भरी आवाज़ सुन पड़ी, जिसने सबको शांत कर दिया। उसने कैथराइन से कोई सौ बार कहा—"कल हमारा मकान ख़ाली कर दो।" यह बात बड़ी अपमान जनक भाषा में कही गई थी। रोडियन की जेब में उस रूबल के, जिसे उसने शराब की दूकान में भुनाया था बचे हुए कुछ कूपक थे। मकान से जाने के पहले उसने खिड़की पर शेष बचा हुआ धन रख दिया, और चुपके से चला गया। जैसे ही वह ज़ीने पर

पहुँचा, उसको पछतावा हुआ कि मैंने क्यों यह दान किया ? मैं बड़ा मूर्ख हूँ। उनके पास सुनिया है, मेरे पास तो कोई नहीं। उसका दिल चाहा कि लौटकर वह धन उठा लावे। परंतु फिर कुछ सोचकर वह बाहर निकल आया। सुनिया को पोमेड (वेसलीन) की आवश्यकता होगी। अपनी सुंदरता बनाए रखने के लिये उसको धन चाहिए। आज शायद उसको कुछ नहीं मिला। आदमियों का शिकार भी जानवरों के शिकार की तरह है। किसी दिन ख़ाली हाथ घर लौटना पड़ता है। मेरे रुपए के विना कल उनको बड़ा कष्ट होगा। सुनिया, तुमको इन्होंने गऊ बना रक्खा है, और तुम्हारे द्वारा रुपए दुहते हैं। तुम्हारे बारे में अब इनको कोई कष्ट नहीं होता। अभ्यास पड़ गया है। पहले दिन इन्होंने कुछ आँसू बहाए थे; परंतु अब इनका संकल्प दृढ़ हो गया है। मनुष्य बड़ा कायर जीव है, और प्रत्येक बात का अभ्यास कर सकता है। यदि मेरा विचार ठीक नहीं है, यदि मनुष्य कायर नहीं है, तो उसे प्रत्येक भय और प्रत्येक बात को जो उसकी राह में काँटा हो—पैरों के नीचे कुचल देना चाहिये।

रोडियन अब ध्यान में मग्न हो गया।

तीसरा परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातःकाल रोडियन देर से उठा । उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो रहा था। वह अपने ही कमरे को क्रोध की दृष्टि से देख रहा था। बहुत छोटा-सा स्थान था। छः फ़ीट से अधिक लंबा न होगा। लटके हुए गंदे काग़ज़ के टुकड़े दरिद्रता का परिचय दे रहे थे। छत इतनी नीची थी कि लंबे मनुष्य के सिर में चोट लगने का भय था। सामान भी कमरे ही का-सा था। तीन पुरानी हिलती हुई कुर्सियाँ थीं। एक कोने में रोग़न की हुई मेज़ रक्खी थी, जिस पर धूल से भरी हुई किताबें और काग़ज़ पड़े थे। एक बहुत बड़ा भद्दा पलँग बिछा हुआ था, जो एक फटे कपड़े से ढका था। यह पलँग कमरे का आधा हिस्सा रोके था। यही रोडियन के सोने का स्थान था। बिना चादर के, कपड़े पहने ही हुए, वह उस पर सो जाता था, और अपने पुराने कोट ओढ़ लेता था। तकिए की जगह उसने एक गद्दी रक्खी थी। उसके नीचे उसने कुछ गंदे और कुछ साफ़ कपड़े रक्खे थे जिससे वह कुछ ऊँची हो जाय। पलँग के सामने एक छोटी-सी मेज़ रक्खी थी। रोडियन को अपनी झोपड़ी की यह गंदी हालत देखकर क्रोध नहीं आता था। मनुष्यों से उसको इतनी घृणा हो गई थी कि जो नौकर उसका कमरा साफ़ करने आता था, उससे भी वह चिढ़ता था। ऐसी ही दशा उन पागलों की हो जाती है, जो एक ही बात का सदा ध्यान रखते हैं। पन्द्रह दिन से मकान की मालकिन ने उसको खाना देना बंद कर दिया था, और उसने अभी तक इसका कारण पूछने का विचार तक नहीं किया था। नेस्टेसिया, जो खाना पकाती और सारे घर की सफ़ाई करती थी, रोडियन की यह दशा देखकर दुखी न थी, क्योंकि उसका काम कम हो गया था। उसने इसका कमरा साफ़ करना

छोड़ दिया था। अधिक-से-अधिक सप्ताह में एक बार इसके कमरे में आकर झाड़ू दे देती थी। नेस्टेसिया उसको इस समय जगा रही थी—

"उठो, अभी तक क्यों सो रहे हो? नौ बज गए। क्या एक प्याला चाय पियोगे? तुम कैसे पीले पड़ गए हो!"

रोडियन ने आँखें खोलीं, और नेस्टेसिया को पहचानकर कहा—"क्या मालकिन ने यह चाय मेरे लिये भेजी है?"

"उसकी तो कोई आशा नहीं।" यह कहकर नौकरानी ने अपनी चायदानी में से जिसमें कुछ चाय बच गई थी, उसको चाय दी, और लाल शक्कर के दो टुकड़े उसके सामने रख दिए। रोडियन ने अपनी जेब से कुछ दाम निकाले, और नेस्टेसिया को देकर कहा—"मेरे लिये कुछ मिठाई ले आओ। मांस की दुकान से कोई सस्ता शोरबा भी ले आना।"

"मैं अभी तुम्हारे लिये मिठाई लाती हूँ। पर शोरबे की जगह मैंने बड़ा अच्छा करमकल्ले का साग पकाया है। रात को मैंने तुम्हारे लिये रख छोड़ा था। पर तुम बहुत देर में आए।"

वह करमकल्ले का साग ले आई, और रोडियन खाने लगा। दासी उसके पास पलँग पर बैठकर एक सच्ची ग्रामीण कन्या के समान वार्तालाप करने लगी।

उसने कहा—"मेडम पुलीस में तुम्हारी रिपोर्ट करनेवाली है।"

युवा की भौंहों में बल पड़ गए। बोला—"पुलीस में क्यों?"

"न तो तुम दाम देते हो, और न यहाँ से जाते हो, इसीलिये।"

युवा ने दाँत कटकटाते हुए कहा—पागल है! यह अंतिम महीना है। ये बड़े बुरे दिन आ रहे हैं। वह बड़ी मूर्ख है। मैं उससे कल बातचीत करूँगा।

"वह वास्तव में उतनी ही मूर्ख है, जितनी मैं। पर तुम, जो इतने चतुर हो, क्यों यहाँ पड़े रहते हो? क्यों कुछ काम नहीं करते? क्या कारण है कि तुम्हारे पास अब रुपए नहीं हैं? मैंने सुना है, तुम लड़कों को पढ़ाया करते थे। अब क्यों कुछ नहीं करते?"

रोडियन ने रूखे भाव से उत्तर दिया—"मैं एक काम में लगा हुआ हूँ।"

"किस काम में?"

"कुछ काम है।"

"किस तरह का काम है?"

कुछ देर चुप रहकर उसने गंभीरता से उत्तर दिया—"मैं ध्यान करता हूँ।"

नेस्टेसिया घबरा गई। वह हँसमुख थी, पर उसकी हँसी बहुत छिपी हुई होती थी। उसको अंदर-ही-अंदर की गुपचुप हँसी से कष्ट होने लगा। जब उसके मुँह से बोल फूटा, तो उसने पूछा—"क्या ध्यान करने से तुमको धन मिल जाता है?"

"मेरे पास जूते नहीं हैं, इसलिये मैं पढ़ाने नहीं जाता। मुझे पढ़ाने से घृणा भी है।"

"अपनी दशा को सँभालो, नहीं तो तुमको दुःख होगा।"

रोडियन ने चिढ़कर कहा—"पढ़ाने से बहुत कम धन मिलता है। थोड़े से कूपक लेकर मैं क्या करूँगा?"

"तो तुम एकबारगी बहुत-सा धन पैदा करना चाहते हो?"

रोडियन ने उसकी ओर एक अजान व्यक्ति की तरह देखा, और कहा—"हाँ!"

"मैं तो डर गई। तुम इस समय बड़े भयानक मालूम हो रहे हो। क्या जाकर तुम्हारे लिये मिठाई ले आऊँ?"

"तुम्हारी इच्छा।"

"हाँ, तुम्हारा एक पत्र, जब तुम बाहर गये हुए थे, आया है।"

"मेरा पत्र? किसने भेजा?"

"मुझको क्या मालूम? मैंने अपने पास से तीन कूपक डाकिए को दिए हैं। मैं समझती हूँ, मैं ने ठीक किया।"

रोडियन ने चिल्लाकर कहा—"ईश्वर के लिये उसे शीघ्र ले आओ।"

एक मिनट के बाद वह पत्र उसके हाथ में आ गया। उसका विचार ठीक था। पत्र उसकी मा का था। पत्र पाकर वह पीला पड़ गया। अर्से से घर से कोई पत्र नहीं आया था। परंतु इस समय उसको कुछ और वेदना हो रही थी।

"नेस्टेसिया, जाओ, अपने तीन कूपक लो, और कृपा करके ईश्वर के लिये जाओ।"

पत्र उसकी उँगलियों में काँप रहा था। वह नेस्टेसिया के सामने उसको खोलना नहीं चाहता था। इसीकी राह देख रहा था कि वह जाय तो पढ़े। दासी के जाने पर उसने लिफ़ाफ़े को होठों से लगाया, और चूमा। वह पते को ध्यान से देखने लगा। उसने अपनी माता के सुंदर हस्ताक्षर पहचान लिए। पत्र खोलते समय उसके हाथ काँपते थे। अंत में उसने मोहर तोड़ी, और बहुत लंबा ख़त नज़र आया। उसमें लिखा था—

"मेरे प्यारे रोडियन,

दो महीने से अधिक हुए, मैंने तुमको पत्र नहीं लिखा, और इसी कारण दुखी रहने से रातों को नींद नहीं आई। मुझको विश्वास है, तुम क्षमा करोगे। तुम जानते हो, मैं तुमसे कितना प्रेम करती हूँ। युग-जोड़िया और मैं तुमको अपना सहारा, अपनी आशा, और अपना सुख समझते हैं। यह सुनकर कि तुमको धन के अभाव के कारण युनिवर्सिटी छोड़नी पड़ी, और अब तुम्हारी आय का कोई मार्ग नहीं है, मुझे अत्यंत दुःख हुआ। मेरे पास कुछ नहीं है, केवल १३० रूबल सालाना पेंशन मिलती है। किस प्रकार मैं तुम्हारी सहायता करूँ? चार महीने हुए, जो १५ रूबल मैंने तुमको भेजे थे, वह एथेनेसियस से—जो एक भला मनुष्य है, और तुम्हारे पिता का मित्र था—उधार लेकर भेजे थे। मैंने उसको अपनी पेंशन लेने का अधिकार लिखकर दे दिया था—जब तक ये रुपए अदा न हो जाते, मेरे लिये तुमको कुछ भेजना असंभव था।

अब सब रुपए अदा हो चुके हैं, और ईश्वर की कृपा से मैं तुमको कुछ और भेज सकती हूँ। मैं तुमको एक अच्छी ख़बर सुनाना चाहती हूँ; परंतु पहले यह लिख देना उचित समझती हूँ कि तुम्हारी बहन छः सप्ताह से मेरे साथ है, और मेरे साथ ही रहने का उसका विचार है। ईश्वर की दया से उसके सब कष्ट दूर हो गए। आज मैं तुमको वे सब बातें लिखती हूँ, जो अब तक मैंने तुमसे छिपाई थीं। दो महीने हुए, तुमने लिखा था कि मैंने सुना है, डोनिया (उसकी बहन) को स्विड्रीगेलफ़ लोग दुःख पहुँचा रहे हैं। तुमने इस बारे में पूछा था। उस समय मैं इसका क्या उत्तर दे सकती थी। यदि मैं तुमको सब लिख देती, तो तुम—चाहे तुमको पैदल ही आना पड़ता—सब काम छोड़कर मेरे पास चले आते। कारण, मैं जानती हूँ, तुम्हारा चरित्र और तुम्हारे भाव ऐसे हैं कि तुम बहन का अपमान नहीं सह सकते। मैं स्वयं दुःख में थी, पर क्या करती? फिर उस समय तक मुझे पूरी बात मालूम भी न थी। दुर्भाग्य से डोनिया ने इस कुटुंब में गत वर्ष धाय का काम करना स्वीकार कर लिया था। इसको १०० रूबल पेशगी भी मिल गए थे। इसीलिये जब तक यह रकम चुक न जाती, तब तक उसे वहाँ रहना था। मेरे प्यारे रोडियन, ये पेशगी रुपए उसने इसलिये लिए थे कि तुमको साठ रूबल की आवश्यकता थी। हमने गत वर्ष यही रुपए तुमको भेजे थे। उस समय हमने तुम्हें झूठ लिख दिया था कि ये रुपए डोनिया की बचत के हैं। अब तुम को सच लिखती हूँ। ईश्वर उसका भला करे, डोनिया बड़ी भोली और प्यारी लड़की है। मिस्टर स्विड्रीगेलाफ़ ने उसके साथ बुरा व्यवहार शुरू किया, और खाने के समय उससे अपमान-सूचक वाक्य कहते रहे। अब उन छोटी-छोटी बातों को लिखकर तुम्हें दुःख पहुँचाने से कोई लाभ नहीं। स्विड्रीगेलाफ़ की स्त्री मार्फ़ा और, और और कुटुम्बी उसके ऊपर दया-भाव रखते थे; परन्तु जब मि० स्विड्रीगेलाफ़ शराब पी लेते थे, तब उसको बड़ा दुःख सहना पड़ता था। इतना ही होता, तो भी

अच्छा था। पर इस स्पष्ट दुर्व्यवहार और घृणा के साथ वह बदमाश डोनिया को ख़राब करना चाहता था।

अन्त में उसने उससे अनुचित प्रस्ताव किया, और बहुत-से वादे करके उसको बुरे मार्ग पर लाना चाहा। यहाँ तक कहा कि मैं अपना घर और कुटुम्ब छोड़कर दूसरे गाँव या देश में जाने को तैयार हूँ। तुम डोनिया की विपत्ति समझ सकते हो। केवल रुपयों का ही विचार न था, उसको यह भी भय था कि यदि वह शीघ्र ही नौकरी छोड़ दे, तो मार्फ़ा को कुछ संदेह होगा, और घर में कलहदेवी का राज्य हो जायगा। मार्फ़ा ने एक दिन बाग़ में अपने पति को डोनिया से भागने के लिये कहते सुन लिया, और विना समझे-बूझे डोनिया ही को दोषी माना। बड़ा भयानक समय था। मार्फ़ा ने डोनिया को मारा, और उसकी एक बात भी न सुनी। घंटे-भर तक उसको बुरा-भला कहती रहीं। अन्त में तुरन्त ही उसने डोनिया को एक साधारण किसान की गाड़ी में मेरे पास रवाना किया, और उसका असबाब बिना बाँधे ही गाड़ी में फेंक दिया। बड़े ज़ोर की वर्षा हो रही थी। अपमानित और लज्जित डोनिया को किसान के साथ सत्रह घंटे खुली गाड़ी में रहना पड़ा। अब तुम स्वयं समझ लो कि दो महीने पहले मैं तुम्हारे पत्र का क्या उत्तर देती। मैं उस समय बहुत दुखी थी। ये बातें कहने का मुझमें साहस न था; क्योंकि तुमको दुःख होता, और तुम कुछ कर न सकते थे। तुम पर मुसीबत आती, और डोनिया को कष्ट होता। उस समय मेरा दिल दुःख से भरा हुआ था, और मैं झूठी बातें पत्र में नहीं लिख सकती थी। महीने-भर तक गाँव में यही चर्चा रही। बात यहाँ तक पहुँची कि डोनिया और मेरे लिये गिरजाघर तक जाना—विना बुरा-भला सुने, विना लोगों की घृणित दृष्टि देखे—असंभव होगया। हमारे मित्रों ने हमको पहचानना छोड़ दिया! मैंने यहाँ तक सुना है कि कुछ सौदागरों और दफ़्तर के बाबुओं ने यह इरादा किया था कि हमारे मकान का दरवाज़ा तारकोल से रँग दें।

मालिक-मकान ने भी हमसे निकल जाने के लिये कहा। इन सभी बातों का कारण वही मार्फ़ा थी, जिसने घर-घर जाकर डोनिया को दोषी ठहराया। थोड़े ही समय में यह कहानी गाँव ही में नहीं, सारे ज़िले में फैल गई। मुझको बड़ा दुःख हुआ, परन्तु डोनिया ने बड़ी शान्ति से सब कुछ सहा, और मुझको भी तसल्ली देती रही। सचमुच वह एक देवी है।

ईश्वर की कृपा से हमारी विपत्ति का अन्त हो गया। मि० स्विड्रीगेलाफ़ होश में आ गए, और पछताकर, डोनिया पर कृपा करके, उन्होंने मार्फ़ा के सामने वह पत्र रख दिया, जो डोनिया ने बाग को भेंट होने के पहले लिखा था। इस पत्र में उसने मि० स्विड्रीगेलाफ़ को मार्फ़ा के संग बुरा व्यवहार करने के लिये बहुत फटकारा था। उसमें लिखा था कि वह एक कुटुम्ब का सिरधरा है, और उसके लिये एक अभागिनी निःसहाया कन्या का अपमान करना बड़े शोक की बात है। यह पत्र इतने अच्छे भावों से पूर्ण था कि मैं बिना रोए उसको नहीं पढ़ सकती थी। डोनिया की सचाई की नौकरों ने भी गवाही दी, जो बहुत कुछ हाल जानते थे। मार्फ़ा को बड़ा दुःख हुआ, और डोनिया की सचाई का विश्वास हो गया। दूसरे दिन रविवार था। मार्फ़ा गिरजाघर आई। घुटनों के बल बैठकर आँसू बहाते हुए उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसको दुःख सहने और धर्म करने की शक्ति दे। फिर सीधी हमारे यहाँ आई, और रोते-रोते बड़ी दीनता से सब कहानी कही। डोनिया को प्यार किया, और उससे क्षमा माँगी। उसी दिन संध्या को वह गाँव में घर-घर गई, डोनिया को निर्दोष बताया, और उसके भावों और चरित्र की बड़ी प्रशंसा की। डोनिया का पत्र पढ़कर ज़ोर से सुनाया, और उसकी नक़लें बाँट दीं। (मेरी समझ में इसकी कोई आवश्यकता न थी।) कुछ दिन तक वह गाँव में दौरा करती रही। कुछ लोगों को यह बुरा लगा; क्योंकि उसने दूसरों से पहले हाल कह दिया

। इसलिये वह बारी-बारी से सबके पास जाने लगी। यहाँ तक कि
हले मालूम हो जाता था कि आज मार्फ़ा अमुक स्थान में आवेगी।
हाँ आकर लोग वह पत्र सुनते थे, जिसे वह पहले अपने घर में या किसी
त्र के यहाँ पढ़ चुके थे। मेरी राय में यह बात आवश्यक न थी।
न्तु मार्फ़ा का चरित्र ऐसा ही है। डोनिया निर्दोषी हो गई; परन्तु
ार्फ़ा के पति का हाल इस निर्दयता से खुल गया कि मुझको उस पर
या आती है। डोनिया के पास पढ़ाने के लिये कुटुम्बों से प्रस्ताव आने
गे; परन्तु उसने सबको अस्वीकार कर दिया। इन सब बातों से हमारे
ाग्य ने पल्टा खाया। प्यारे रोडिया, डोनिया ने शादी का प्रस्ताव
वीकार कर लिया है। तुम इसके लिये क्रोध न करना कि तुम्हारे बिना पूछे
सने ऐसा क्यों किया। तुमसे पत्र का उत्तर मिलने का समय नहीं था। फिर
ुम यहाँ थे भी नहीं, इसलिये ठीक निर्णय भी नहीं कर सकते थे।
ीटर पेट्रोविश लूशिन, जो मार्फ़ा का दूर का नातेदार और वकील है,
मारे घर मार्फ़ा की मारफ़त आने लगा था। उसने आकर हमारे यहाँ
ाफ़ी पी, और दूसरे दिन बहुत नम्रता से विवाह का प्रस्ताव कर तुरन्त
ी उत्तर चाहा। वह अब सेंटपीटर्सबर्ग को रवाना हो गया है। पक्का
यवसायी होने के कारण उसका प्रत्येक क्षण मूल्यवान् है। मि० लूशिन
नवान् और अच्छे चरित्र का मनुष्य है, और दो स्थानों में वकालत करता
ै। वह पैंतालीस वर्ष का अवश्य है, परन्तु सुन्दर है, और स्त्रियों को
सन्न कर सकता है। वह बड़ा प्रतिष्ठित और शानदार है। थोड़ा-सा कठोर
ौर अभिमानी अवश्य है।

प्यारे रोडिया, मैं तुमको बताना चाहती हूँ कि शीघ्र ही वह तुमसे
ेंटपीटर्सबर्ग में मिलेगा, पर तुम अपने अभ्यास के अनुसार शीघ्रता से
सके विषय में कोई सम्मति न स्थिर कर लेना। यद्यपि मैं जानती हूँ
के तुम पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा, परन्तु, फिर भी, मनुष्य को धीरे-
ीरे व्यवहार से भली भाँति जानना चाहिए। एकबारगी किसी के विरुद्ध

कोई सम्मति न स्थिर करनी चाहिए। मि० लूशिन अपनी बात का प
प्रतीत होता है। पहली ही भेंट में उसने हमसे कहा कि वह पुरा
विचारों का मनुष्य है; परन्तु नई पद्धति की कुछ बातों में भी विश्वा
करता है। दूसरों से घृणा करने का तो वह शत्रु है। और भी बहु
कुछ उसने कहा, जिससे शायद कुछ आदमी उसको अभिमानी कहें, प
यह कहें कि वह आप अपनी ही कहता और दूसरे की नहीं सुनना चाहत
है। परन्तु यह कोई पाप नहीं है। वास्तव में मैं तो उसकी बातें नह
समझी। परन्तु डोनिया ने मुझको समझाया कि वह बहुत पढ़ा-लिखा
चतुर और दयालु है। तुम तो डोनिया को जानते ही हो कि वह कैसी
सच्चरित्र, कैसी चतुर, कैसी धीर और कैसी दयालु है। कुछ क्रोधी भी
अवश्य है, जैसा मैं अपने अनुभव से जानती हूँ। वास्तव में दोनों ओर
से प्रेम नहीं है; परन्तु डोनिया समझदार और दयालु है। वह पूरी देवी
है। वह अपने पति को प्रसन्न रखना अपना धर्म समझती है, यदि वह
उसके सुख का ध्यान रक्खे। हमको उसके विचारों में कुछ सन्देह नहीं
करना चाहिए; क्योंकि वह भी समझदार है, और यह समझ सकता है
कि उसका आनन्द स्त्री के सुख के साथ है। यद्यपि दोनों के चरित्रों,
स्वभावों और विचारों में अन्तर है, (जैसा बहुतेरे सुखी कुटुम्बों में भी
होता है) पर डोनिया को अपनी सहन-शक्ति पर विश्वास है; और यदि
वह ठीक रहा, तो कोई दुःख न होगा। पहले हमने उसके मुँहफट होने
के कारण उसको बुरा समझा था। पर जब वह दूसरी बार हमारे यहाँ
आया, और हमारी सम्मति, विवाह के विषय में, स्वीकृति-सूचक पाई, तो
उसने कहा कि मेरा सदा से यह विचार था कि मैं किसी ईमानदार लड़की
से विना कुछ धन-वस्त्र लिए विवाह करूँ। ऐसी कन्या, जिसकी परीक्षा
आग में हो चुकी हो, उसे चाहिए। उसने समझाया कि पति को किसी
प्रकार पत्नी का अनुगृहीत न होना चाहिए। उसके लिये यह अच्छा है कि
वह पत्नी को अनुगृहीत करनेवाला न हो। मैं यह भी लिखना चाहती

कि उसने बहुत कठोर वाक्य कहे थे। मैं उसके वाक्य तो भूल गई, हूँ, उनका आशय मुझे याद है। पर यह सब उसने जान बूझकर नहीं, तचीत में यों ही कह दिया था। अन्त को उसने अपने वाक्यों को कोमल ाने का प्रयत्न किया; परन्तु फिर भी मैंने उसको कटुवादी समझा। मैंने ह बात डोनिया से कही। डोनिया ने क्रोध करके मुझको उत्तर दिया वाक्यों और कर्मों में बड़ा अन्तर होता है। डोनिया निर्णय करने पहले रात को नहीं सोई, और मुझको सोती समझकर रात-भर मरे में टहलती रही। अन्त को उसने घुटनों के बल बैठकर बड़ी क्ति से ईश्वर की प्रार्थना की, और प्रातःकाल कहा कि मैंने निर्णय कर या।

मैं तुमको पहले ही लिख चुकी हूँ कि लूशिन सेंटपीटर्सबर्ग को ाना हो गया है। उसकी यात्रा बहुत ही आवश्यक है; क्योंकि वह वहीं कालत करना चाहता है। बहुत दिनों से वह मुकदमे करता रहा है। ड़े दिन हुए, वह एक बहुत बड़ा मुकद्मा जीता है। इसलिये उसका टपीटर्सबर्ग में वकालत करना उचित है। तुमको उससे बहुत सहायता मलेगी। डोनिया को और मुझको पूरा विश्वास है कि उसकी रक्षा में म्हारा भविष्य जीवन सुख-मय होगा। यदि ऐसा होगया, तो ईश्वर ी कृपा ही समझनी चाहिए। डोनिया तो यही स्वप्न देखती है। हमने म्हारे बारे में लूशिन से थोड़ा-बहुत कह दिया है। उसने बहुत साव-ानी से उत्तर दिया कि उसको एक मंत्री की आवश्यकता होगी, और ातेदार को वेतन देना किसी अपरिचित को देने से कहीं अच्छा है, यदि ातेदार मंत्री का काम कर सके। परन्तु उसने यह सन्देह प्रकट किया कि फ्तर का काम करने से तुम्हारी युनिवर्सिटी की शिक्षा में बाधा पड़ेगी। ात यहीं पर रुक गई; परन्तु डोनिया को यही ध्यान है, और वह यह समझती है कि तुम भी एक दिन वकील होकर उसके हिस्सेदार बन जाओगे। मैं भी उससे सहमत हूँ, और मुझको भी यही पूर्ण आशा है, यद्यपि

लूशिन की बात टालने से मैं घबराती हूँ (शायद इसका कारण यह है कि वह तुमको नहीं जानता)।

डोनिया को पूर्ण आशा है कि वह अपने पति से, अपने प्रभाव-द्वारा, सब कुछ प्राप्त कर लेगी। इस समय तो हम तुम्हारे हिस्सेदार होने की बातचीत उससे नहीं कर सकते। वह एक क्रियात्मक मनुष्य है, और ये बातें सुनकर हमको स्वप्न देखनेवाला समझेगा। तुमको युनिवर्सिटी में धन की सहायता करने के लिये भी मैंने और डोनिया ने उससे कुछ नहीं कहा। प्रथम तो यह बात स्वयं ही हो जायगी। (क्या डोनिया की वह ऐसी छोटी-सी बात भी न मानेगी?) दूसरे, तुम उसके व्यवसाय में उसके दाहने हाथ होगे, तो तुम्हारी सहायता करना कोई अनुग्रह नहीं, किन्तु तुम्हारा वेतन ही देना होगा। डोनिया इन सब बातों का प्रबंध कर लेगी। इसके अलावा हमने इसलिये यह बात नहीं कही कि हम चाहते हैं, तुम उससे बराबरी से मिलो। जब डोनिया ने जोश से तुम्हारा वर्णन किया, तो उसने कोई सम्मति नहीं प्रकट की; केवल यही कहा कि प्रत्येक मनुष्य के जानने के लिये पहले उसकी जाँच करना आवश्यक होता है।

प्यारे रोडिया, मैं सोचती हूँ, विवाह के बाद मैं अलग रहूँगी। यद्यपि लूशिन ने इस विषय में कुछ नहीं कहा, पर मुझे विश्वास है कि लड़की के साथ रहने का वह मुझसे प्रस्ताव करेगा (अभी तक तो नहीं किया है) परन्तु मैं मना कर दूँगी। मैंने अनुभव किया है कि सासें पतियों को अच्छी नहीं लगतीं। अपने कारण मैं किसी को असुविधा में नहीं डालना चाहती। जब तक मेरी पेंशन है, और तुम और डोनिया-जैसे मेरे बच्चे हैं, मैं स्वाधीन रहना चाहती हूँ। यदि संभव हुआ, तो मैं तुम दोनों के समीप ही रहूँगी। पत्र के अन्त के लिये मैंने यह अच्छा समाचार छोड़ रक्खा है कि हम शीघ्र मिलेंगे, और तीन वर्ष के बाद एक दूसरे को फिर प्यार करेंगे। वास्तव में मैं और डोनिया, दोनों सेंटपीटर्सबर्ग

जा रही हैं। यह नहीं पता कि क्यों, पर शीघ्र ही जायँगे। हम लोग लूशिन के पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह कई कारणों से विवाह शीघ्र करना चाहता है। कितनी प्रसन्नता से मैं तुमको अपने कलेजे से लगाऊँगी! तुम्हारी मिलने की प्रसन्नता में डोनिया पागल हो रही है। वह एक बार हँसी में कहने लगी कि तुमसे मिलने ही के लिये वह लूशिन से विवाह करेगी। वह सच्ची देवी है। वह तुमको कुछ लिखना नहीं चाहती, परन्तु यह कहती है कि उसे तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं। लेकिन कुछ लिख नहीं सकती। वह तुमको अपना पवित्र प्रेम और सहस्रों चुंबन भेजती है। यद्यपि अब हम शीघ्र ही मिलेंगे, तथापि जो कुछ रुपए हो सकेंगे, भेजूँगी; क्योंकि यह सब जान गए हैं कि डोनिया का विवाह लूशिन से होगा। इसीलिये मेरी साख बढ़ गई है। मुझको विश्वास है कि एसिनेथियस मेरी पेंशन को गिरवी रखकर पचहत्तर रूबल उधार दे देगा। मैं तुमको २५ या ३० रूबल भेजूँगी। मैं और भी भेजती, परन्तु राहखर्च के लिए भी तो धन चाहिए। यद्यपि लूशिन ने हमारे असबाब के ले जाने का भार अपने ऊपर लिया है, फिर भी यह आवश्यक है कि सेंटपीटर्सबर्ग़ पहुँचने पर हमारी जेब में कुछ हो। डोनिया और मैंने हिसाब लगा लिया है कि यहाँ से रेलवे-स्टेशन तक ९० वर्स्ट (सिक्का) लगेंगे; क्योंकि हमने एक परिचित किसान से तय कर लिया है कि हम तीसरे दर्जे में चलेंगी। वास्तव में २५ नहीं, तीस रूबल मैं तुमको भेज सकूँगी।

परन्तु अब मुझको पत्र समाप्त करना चाहिए; क्योंकि काग़ज़ अब भर गया है, अधिक लिखने की जगह नहीं है। यही हमारी कहानी है। अब तुमको, प्यारे रोडिया, मैं प्यार करती हूँ। माता का आशीर्वाद स्वीकार करो। अपनी बहन डोनिया से प्रेम करो वैसा ही, जैसा वह तुमसे करती है। वह तुमको अपने जीवन से अधिक चाहती है। वह देवी है, और तुम, रोडिया, हमारी आशा और हमारे सहारा हो।

तुम .खुश रहो, तो हम भी .खुश रहेंगे। रोडिया, क्या तुम पहले की तरह अभी ईश्वर की आराधना करते और उसकी कृपा में विश्वास रखते हो? मुझको भय है कि नए नास्तिकों की हवा तुमको भी न लग गई हो। यदि ऐसा है, तो मैं तुम्हारे लिये ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। प्यारे बच्चे, याद करो, बचपन में जब तुम्हारे पिता जीवित थे, किस प्रकार तुम मेरे घुटने पर बैठकर तोतली वाणी से ईश्वर की प्रार्थना करते थे। उस समय हम कैसे सुखी थे! बस, आशीर्वाद। मैं तुमको सहस्र वार प्यार करती और अगणित चुम्बन भेजती हूँ। जब तक जीवन है, मैं तुम्हारी हूँ।"

पुल्चेरिया रेस कालनी काफ़

पत्र पढ़ते-पढ़ते रोडियन का मुख-मंडल आँसुओं से भीग गया। जब पत्र समाप्त होगया, तो उसका वर्ण पीला पड़ गया, और आकृति बिगड़ गई। उसके होंठों पर कड़वी हँसी की रेखा दिखाई दी। उसने अपना सिर तकिए पर रख लिया, और ध्यान में मग्न हो गया। उसका हृदय धड़कने लगा, और विचार बिखर गए। वह अपने छोटे कमरे में जकड़ा हुआ पड़ा रहा। उसके नेत्र और उसके विचार उसके कमरे के अनुसार न थे। उसने टोपी उठाई, और विना यह सोचे कि सीढ़ियों पर किससे भेंट होगी, चल पड़ा। वैसीलिस के टापू की ओर—जैसे बड़े आवश्यक काम के लिये जा रहा हो—अपने अभ्यास के अनुसार बड़बड़ाता हुआ चल पड़ा। लोगों ने उसको शराब पिए हुए समझा।

चौथा परिच्छेद

माता का पत्र पढ़कर वह दुखी हो गया। उसकी विशेष बात में तो उसको कुछ सन्देह न था। उसने पढ़ते ही उसके विषय में निर्णय कर लिया था कि जब तक मैं जीवित हूँ, कदापि यह सम्बन्ध न होगा। मि० लूशिन का नाश हो !

उसने हँसते हुए अपने निर्णय की सफलता की आशा करके यों बड़बड़ाना शुरू किया—यह सर्वथा स्पष्ट है कि मा, और डोनिया, तुम मुझको धोखा नहीं दे सकती। मेरी सलाह बिना ऐसा निर्णय करने का बहाना ठीक नहीं। यह लूशिन कैसा व्यवसायी है, जो घोड़े की डाक—नहीं-नहींरेल की तेज़ी से ब्याह करना चाहता है ? डोनिया, मैं जानता हूँ, तुम मुझसे क्या कहना चाहती हो ? मैं जानता हूँ, किन विचारों से तुम रात-भर कमरे में टहलती रहीं, क्यों तुमने मेरी मा के कमरे में ईश्वर से प्रार्थना की, और यह निर्णय कर लिया कि तुम इस व्यवसायी, धनवान् मनुष्य से, जो दो जगह वकालत करता है, नई पद्धति के नए विचारों से सहमत और दयालु विदित होता है, विवाह करोगी। यह जानकर भी तुम इससे विवाह करोगी, यह बड़ी अद्भुत बात है। फिर मेरी मा नई पौध के विषय में मुझको लिखने को कितनी उत्सुक है। क्या यह केवल मि० लूशिन के विषय में मेरे हृदय में अच्छा विचार उत्पन्न करने के लिये लिखा है ? यह चतुरता ! एक बात साफ़ कर लेना अच्छा है। यही कि उस दिन और उस रात को उन्होंने एक दूसरे से मुँह खोलकर कितनी स्पष्ट बातें की, और उसके बाद उनका व्यवहार कैसा रहा ? क्या उनकी बातचीत सब बनावटी थी, और उन्होंने अपने सच्चे विचार प्रकाशित नहीं किए ? अवश्य ऐसा ही है। पत्र से विदित होता

है कि उसने मेरी माता से अच्छा व्यवहार नहीं किया, और मा ने डोनिया से उसकी शिकायत की। कौन इन बातों को सोचकर पागल न हो जायगा? मा ने यह क्यों लिखा कि डोनिया से प्रेम करो; क्योंकि वह अपने जीवन से भी अधिक तुमसे प्रेम करती है। उसकी आत्मा उसको अपने पुत्र के लिये अपनी पुत्री का सर्वनाश करने में सहमत होने के कारण सता रही है। "तुम्हीं हमारे सहारा हो।" ऐ मा! मैं सब समझ गया।

उसका क्रोध बढ़ता जाता था, और यदि उस समय वह मि० लूशिन से मिलता, तो उसको अवश्य मार डालता।

अपने विचारों की नदी में बहते हुए उसने फिर कहा—यह बात सच है कि मनुष्य को जानने के लिये धीरे-धीरे उसे जानना आवश्यक है। परन्तु मि० लूशिन, तुमको समझना कुछ कठिन नहीं। तुम व्यवसायी हो, और दयालु जान पड़ते हो, कैसे अच्छे गुण हैं! असबाब का भार तुमने अपने ऊपर लिया है, बड़े सन्दूकों का भाड़ा तुम दोगे। और, मा और दुलहिन किसान की टूटी हुई गाड़ी में आवेंगी!

मैं इस प्रकार से जाया करता था, केवल नब्बे वर्स्ट, और फिर हम तीसरे दर्जे में चलेंगे! ठीक, "चादर के माफ़िक पैर फैलाने चाहिए", परन्तु मि० लूशिन, तुम क्या कहते हो? तुम्हारी दुलहिन की यात्रा का ख़र्च मेरी मा पेंशन पर उधार रुपए ले कर दे। यह तो एक साधारण व्यवसाय का सिद्धान्त है कि बराबर के हिस्से हों, और बराबर का लाभ। रोटी और नमक सबका, पर तंबाकू अपना-अपना। पर इस व्यवसायी मनुष्य ने उनको धोखा दिया है। असबाब का किराया कम लगता, और कदाचित् बिना ही किराया लगे पहुँच जाय। क्या उनकी समझ में यह नहीं आता, या उन्होंने अपने नेत्र बंद कर लिए हैं? उनको शायद यह ध्यान है कि यह अभी तो केवल फूल है, फल आगे आवेंगे। मैं उसकी कंजूसी से नहीं डरता, पर उसकी वाणी से डरता हूँ। मैं समझ सकता हूँ कि विवाह के बाद उसकी क्या वाणी होगी। मेरी मा, तुम किस ध्यान में हो!

तुम सेंटपीटर्सबर्ग आकर क्या करोगी ? तीन चाँदी के रूबलों या दो नोटों से यहाँ क्या होगा ? अपना निर्वाह कैसे करोगी ? यह स्पष्ट है कि मेरी मा समझती है कि विवाह के बाद डोनिया के साथ रहना असंभव होगा। शायद इस भले आदमी ने पहले ही से यह बात कह दी है, परन्तु मेरी मा दोनों हाथ उठाकर कहती है कि मैं मना करूँगी। एक सौ बीस रूबल की पेंशन (जिसमें से एथेनेसियस अपने उधार दिए हुए रुपए भी काटलेगा) में कैसे काम चलेगा ? जाड़े-भर वह गुलूबन्द बुनती और कफ़ काटती है, अपने नेत्र ख़राब करती है, तब कहीं साल में बीस रूबल मिलते हैं। फिर भी उसको मि० लूशिन के भद्र भावों का सहारा है। वह स्वयं प्रार्थना करेगा। ऐसा ही ये स्वप्न देखनेवाले आदमी सदा किया करते हैं। अन्त समय तक वह उस आदमी को मोरों के पंख से सजाते हैं, अन्त तक वे उसकी प्रशंसा करते हैं, यद्यपि पहले ही से उनको उसकी बुराई मालूम हो जाती है। वे सच्चे विचारों से भागते हैं, वास्तविकता को दोनों हाथों से ढक देते हैं। यहाँ तक कि अन्त में वह आदर्श पुरुष उनको मुँह चिढ़ाता है, उन पर हँसता है, और अपना असली रूप प्रकाशित करता है। हे ईश्वर, इसका नाश हो।

मेरी माता, ईश्वर तेरी सहायता करे। प्यारी डोनिया, मैं तुझको ख़ूब जानता हूँ। तू उन्नीस बरस की थी, जब मैंने तुझे देखा था। उसी समय मैं तेरा चरित्र समझ गया था। मेरी माता लिखती है कि डोनिया बहुत सह सकती है। मैं ढाई बरस से यह बात जानता हूँ, और यदि वह मि० स्विड्रीगेलाफ़ से ब्याह करके उसके परिणाम को सह सकी, तो सचमुच वह बहुत कुछ सह सकती है। अब वे समझते हैं कि मि० लूशिन और उसके सिद्धान्त को भी सह सकेंगे। मि० लूशिन का सिद्धान्त– जिसे उसने पहली ही भेंट में बता दिया कि दरिद्रता से सुखी होने के कारण स्त्री को पति का अनुग्रहीत होना चाहिए ! यह प्रकट करने में उसने भूल अवश्य की, परन्तु कदाचित् वह पहले ही से सब बात साफ़ कर

देना चाहता है। पर डोनिया, तुमको चाहिए कि तुम देखो, वह क्या है। ऐसे आदमी के संग तुम रह सकती हो? तुम काली रोटी और पानी पीना स्वीकार करोगी; परन्तु अपने सिद्धान्त को सुख के लिये बेच न दोगी। न स्विलज़िक हूस्टेन के लिये, और न मि० लूशिन के लिये तुम ऐसा करोगी। डोनिया, तुम ऐसी तो कभी न थी, और न अब तुममें कोई परिवर्तन हुआ होगा। यह सच है कि स्विड्रीगेलाफ़ के संग रहना कठिन है। एक स्थान से दूसरे स्थान में जीवन-भर २०० रूबल पर धाय की नौकरी करना कठिन है। परन्तु मैं जानता हूँ कि मेरी बहन किसान की दासी होकर रहना अच्छा समझेगी, और ऐसे आदमी से, जिसको न वह प्रेम कर सकती है, न आदर, विवाह करके अपनी आत्मा और अपने आचरण को कलंकित न करेगी। वह अपने व्यक्तित्व के सुख के लिये कभी ऐसा न करेगी। यदि मि० लूशिन सोने और हीरे के बने हों, तो भी वह उनके संग धार्मिक वेश्या होकर रहना कभी न स्वीकार करेगी। मगर फिर उसने यह स्वीकार क्यों किया?

इसमें क्या चाल है? इसमें क्या भेद है? बात साफ़ है? अपने लिये, अपने सुख के लिये, अपना जीवन बचाने के लिये वह अपने आपको न बेचेगी। परन्तु हाँ, दूसरे के लिये, जिससे वह प्रेम करती है, जिसका वह आदर करती है, वह ऐसा करेगी। यही सारा रहस्य है। भाई और मा के लिये वह सर्वस्व त्याग देगी। अपना आचार, अपनी स्वाधीनता, हृदय की शान्ति, अपना जीवन तक, सब बाज़ार में लाकर अपने प्यारों को सुखी करने के लिये बेच देगी। वह दूसरे के भले के लिये सब कुछ करेगी। रोडियन के लिये यह सब कुछ हो रहा है। मुझको युनिवर्सिटी में पढ़ाने के लिये, मुझको मि० लूशिन का हिस्से-दार बनाने के लिये, आदर और धन दिलाने के लिये, मेरे एक प्रसिद्ध आदमी होकर मरने के लिये यह सब कुछ हो रहा है। मैं क्यों इसमें बाधक होऊँ? अपनी मा के लिये मैं सब कुछ हूँ। मैं पहलौठी का

लड़का हूँ, और पहलौठी के लड़के के लिये वह अपनी कन्या का सर्वनाश कर देगी।

ए प्यारे और अन्यायी हृदय! क्या तुम ऐसी दशा में सुनिया के कर्म से घृणा करोगे? क्या तुमने त्याग की सीमा देख ली है? क्या तुममें इस त्याग की शक्ति है? डोनिया, क्या तुम जानती हो, मि० लूशिन के संग रहकर तुम्हारी दशा सुनिया से अच्छी न होगी? मेरी मा लिखती है कि परस्पर कोई प्रेम नहीं है। नहीं, नहीं, परस्पर घृणा है। परन्तु इससे क्या? आदमी को पवित्र रहना चाहिए। क्या तुम समझती हो कि लूशिन की पवित्रता सुनिया की पवित्रता के बराबर है? नहीं, नहीं, उससे भी बुरी है; क्योंकि डोनिया, तुमको तो सुख का ध्यान है। परन्तु सुनिया की दशा में भूखों मरने और मौत के सिवा कुछ नहीं है। डोनिया, ऐसा काम मत करो। यदि तुम्हारी शक्ति ने जवाब दे दिया, तो फिर पछताने से कुछ न होगा। तुम मार्फ़ा नहीं हो। हाय, मेरी माता की क्या दशा होगी? अभी से वह बेचैन हो रही है, और अन्त में तो न जाने क्या होगा? मुझको तुम क्या समझती हो? मैं तुम्हारा त्याग स्वीकार न करूँगा? जब तक मैं जीवित हू, ऐसा न होने दूँगा।

थोड़ी देर वह चुप हो गया, और फिर यों बड़बड़ाने लगा—

मैं क्यों मना करूँ? मुझे क्या अधिकार है? मैं उनको क्या दे सकता हूँ? मैं युनिवर्सिटी छोड़ने के बाद, नौकरी मिलने पर, अपना जीवन उनके अर्पण कर दूँगा। परन्तु अब इसी समय कुछ होना चाहिए—क्या मैं यह नहीं समझता? मैं इस समय क्या करूँ! सौ रूबल पेंशन पर वह उधार ले सकती है, या स्विड्रीगेलाफ़ से कुछ पा सकती है। स्विड्रीगेलाफ़ और एफ़िनेथियस से किस प्रकार उनकी रक्षा करूँ? जब मैं इस योग्य हूँगा, तब तक मेरी मा बुनते-बुनते अंधी हो चुकेगी, भूखों मर चुकेगी। मेरी बहन, तेरा क्या होगा? क्या मेरी समझ में यह नहीं आता?

इन विचारों से वह उत्तेजित हो गया। उसके प्रश्न नए अथवा बनावटी नहीं थे, पुराने थे, और इन्होंने उसको बहुत दिन से दुखी कर रक्खा था। इन्हीं बातों का ख़याल और दुःख बहुत दिन से था; किन्तु इस समय उनका एक भयंकर रूप उपस्थित हो गया। उसकी मा के पत्र ने उसका रहा-सहा धीरज खो दिया। उसको स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा कि अब सोचने अथवा दुखी होने का समय नहीं है। अब कुछ करने का समय आ गया है। शीघ्र ही कुछ करना चाहिए, या जीवन को त्याग देना चाहिए। भाग्य के सहारे बैठकर काम करना तथा जीवित रहने और प्रेम करने का विचार छोड़ देना चाहिए।

मारमैलेडाफ़ का पिछली रात का प्रश्न उसे स्मरण आया। आदमी को कहीं रहने के लिये स्थान होना चाहिए। जिस मनुष्य का कोई स्थान नहीं, उसकी दशा बहुत ही शोचनीय है। वह काँप उठा। पिछली सन्ध्या की एक और बात उसे याद आई। वह इस विचार से नहीं काँपा; क्योंकि वह जानता था कि यह विचार कभी-न-कभी उठेगा। और, न यह विचार पिछले ही दिन का था। महीने-भर से यह उसका स्वप्न था, परन्तु अब उस स्वप्न ने एक नया और भयंकर रूप धारण कर लिया है। उसे इस परिवर्त्तन का हाल मालूम हुआ। उसका दिल धड़कने लगा, उसकी आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। वह बैठने के लिये स्थान ढूँढ़ने लगा। सौ क़दम पर एक बेंच पड़ी थी। उसी ओर को वह चला, किन्तु राह में एक छोटी-सी बात ने उसका चित्त अपनी ओर खींच लिया। थोड़ी दूर पर एक स्त्री खड़ी थी। उसमें कोई अजीब बात थी। उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध उस स्त्री के परिचय की उत्कण्ठा हुई। वह एक जवान स्त्री थी, और तेज गरमी में नंगे सिर, बिना छतरी के, हाथ हिलाती हुई चली जा रही थी। अपने रेशमी कपड़े, जो पीछे से फटे थे, वह बड़े अनोखे ढंग से पहने थी। छोटा रूमाल उसके कंधे पर पड़ा था, और वह लड़खड़ा रही थी। रोडियन की उत्सुकता और बढ़ गई। वह बेंच के पास

पहुँचा, और देखा कि वह स्त्री अपना सिर बेंच पर रक्खे हुए, अपने नेत्र बन्द करके, बहुत थकान के करण, गिर गई है। उसने समझा कि वह शराब पिए हुए है। पंद्रह या सोलह वर्ष की उसकी अवस्था होगी। इसके बाल बहुत सुन्दर और बिखरे हुए थे। उसे इतना होश न था कि वह सड़क पर है।

रोडियन उसके सामने खड़ा हो गया। इस स्थान में लोगों का आनाजाना कम रहा करता था। फिर इस गरमी में, दो बजे, तो कोई देख भी न पड़ता था। थोड़ी दूर पर एक मनुष्य खड़ा था, और यह विदित होता था कि वह उस कन्या के पास आना चाहता है। रोडियन को देखकर वह रुक-सा गया। उसने रोडियन की ओर घृणा की दृष्टि से देखा; परन्तु उसे यह भी चिन्ता थी कि रोडियन उसको भी न देख ले। वह थोड़ी दूर पर खड़े होकर इस फटेहाल आदमी के जाने की राह देखने लगा। बात स्पष्ट थी। उसकी अवस्था तीस वर्ष की होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा था, मूँछें थीं, और अच्छे कपड़े पहने था। रोडियन उसे देखकर क्रोध से भर गया, और उसके मन में इस मोटे गुंडे को अपमानित करने का विचार उत्पन्न हुआ। थोड़ी ही देर में लड़की को छोड़कर रोडियन इस आदमी के पास पहुँचा, और गर्जकर, मुक्का तानकर बोला—"ऐ स्विड्रीगेलाफ़! तुम क्यों इसके पीछे पड़े हो?"

उस आदमी ने भौं चढ़ाकर, रोडियन को सिर से पैर तक देखकर कहा—"तुम्हारा क्या प्रयोजन है?"

"मैं यह चाहता हूँ कि तुम यहाँ से भाग जाओ।"

बेंत हिलाकर उसने कहा,—"बदमाश! तुम्हारी इतनी हिम्मत?"

रोडियन बिना यह सोचे-विचारे कि मेरे-जैसे दो के लिये वह काफ़ी है, उसकी ओर घूँसा तानकर लपका। उसी क्षण किसी आदमी ने उसे पीछे से पकड़ लिया, और उन दोनों के बीच में आ गया। यह एक पुलीसमैन था। "ऐ भलेमानसो, तुम राह में क्यों लड़ रहे हो?"

रोडियन को फटे कपड़े पहने देखकर उसने कहा—"तुम कौन हो ? मैं तुमको गिरफ्तार करूँगा।"

"मैं विद्यार्थी हूँ, रोडियन मेरा नाम है। तुम पूछ लेना। और, यहाँ आइए, मैं आपको कुछ दिखलाना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने पुलीसमैन का हाथ पकड़ा और बेंच की तरफ़ ले चला। "देखो, यह शराब पिए हुए है, अभी यहाँ आई है। न मालूम कौन है। वेश्या मालूम होती है, परन्तु है नहीं। किसी ने उसे शराब पिलाकर या कोई नशे की दवा देकर सड़क पर निकाल दिया है। उसकी तरफ़ देखो। यह सब बात स्पष्ट मालूम हो जायगी। और, अब इस गुंडे को देखो, जिसको मैं अभी मारता। इसको आज ही मैंने देखा है। बेचारी निस्सहाय कन्या के पीछे पड़ा है, इसकी दशा देखकर, अपने मतलब के लिये, इसको पकड़ना चाहता है। यह बात सच है; विश्वास करो। मैंने इस कन्या का पीछा करते इसको देखा है। मेरे कारण वह रुक गया और मेरे जाने की राह देख रहा है। देखो, वहाँ खड़े-खड़े सिगरट पी रहा है। मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता। अब इसको किस प्रकार घर पहुँचावें ?

पुलीसमैन कुछ सोचने लगा। गुंडे की बात तो समझ में आती है; परन्तु यह कन्या कौन है ? उसने दया-भाव से बालिका की तरफ़ देखकर कहा—"बच्ची, तुम कहाँ रहती हो ?" कन्या ने अपनी आँखें खोली, और सिपाही की ओर करके हाथ हिलाए। रोडियन ने अपनी जेब से ढूँढकर २० कूपक निकाले, और सिपाही से कहा—"सवारी करके इसे घर पहुँचा दो। परन्तु इसका पता कैसे लगे ?"

पुलीसमैन ने कूपक लेकर कन्या से कहा—"देवी, तुम कहाँ रहती हो ? तुम्हारा पता क्या है ?" कन्या ने हाथ दिखाकर धीरे से कहा—"वह मुझको पकड़ना चाहते हैं।" पुलीसमैन ने करुणा से सिर हिलाकर, रोडियन की ओर सिर से पैर तक देखकर, सोचा, यह कैसा मनुष्य है, जो फटे

कपड़े पहनता है, और इस तरह रक़म फेंकता है। फिर बोला—"कैसे दुःख और शर्म की बात है! क्या किया जाय? क्या तुमने इसको बहुत दूर से आते देखा है?"

"मैं कहता तो हूँ, वह मेरे सामने लड़खड़ा रही थी। बेचारी बेंच के पास पहुँचकर गिर पड़ी।"

"दिन-दोपहर ऐसी बात! शराब पिए है, और किसी ने इसको भ्रष्ट किया है? इसके ऐसे कपड़े तो देखो।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"सबसे पहला काम उस बदमाश से इसको बचाना है। वह यहाँ क्यों खड़ा है?" रोडियन ने यह बात ज़रा ज़ोर से कही, और उस आदमी ने सुन ली। वह बोलना चाहता था, परन्तु फिर रुक गया, और रोडियन की ओर घृणा से देखकर, कुछ दूर हटकर, खड़ा हो गया।

पुलीसमैन ने उत्तर दिया—"यदि इसका पता मालूम हो जाय, तो हम इसे घर पहुँचा सकते हैं। देखो, देवी!"

कन्या ने आँखें खोलीं, एकटक देखा, और कुछ याद कर के जिधर से आई थी, उसी ओर को चल पड़ी। फिर हाथ हिलाकर कहा—"बदमाश मुझको पकड़ रहे हैं।" वह जल्दी-जल्दी लड़खड़ाती हुई चली। गुंडा दूसरी ओर से, उसी पर आँख लगाए, उसके पीछे-पीछे चला।

पुलीसमैन ने कहा,—"तुम परेशान मत हो। वह उसको नहीं पा सकता।" फिर आह भरकर बोला—"चारों ओर कैसा पाप हो रहा है।" यह कहकर वह भी उनके पीछे चल पड़ा। थोड़ी देर में रोडियन को कुछ खयाल आया, और वह पुलीसमैन से बोला,—"आपको क्या, जाने दीजिए, उसको मज़े करने दीजिए।" उसकी समझ में कुछ न आया, और रोडियन की ओर देखने लगा। रोडियन हँसने लगा। पुलीसमैन ने समझा, यह कोई पागल है। और, वह उनके पीछे चला गया। रोडियन ने अपने दिल में सोचा—"मेरे बीस कूबक तो मुझसे लेकर चल दिया, और गुंडे से भी कुछ

जटेगा । मैं क्यों बीच में पड़ा, मुझे क्या अधिकार था? दोनों चूल्हे में जाँय। मुझको क्या? मैंने क्यों बीस कूपक दे डाले? क्या वे मेरे थे?

उसका दिल भरा हुआ था। वह वहीं बैठ गया। उसको इतनी चिन्ता थी कि वह कुछ सोच नहीं सकता था। उसकी इच्छा थी कि वह सब भूल जाय, और सो जाय।

उस स्थान को देखकर उसने कहा—"बेचारी कन्या जब होश में आवेगी, तो रोवेगी; उसकी मा सब बात जानकर उसके कान पकड़ेगी, कोड़े मारेगी, और कदाचित् घर से बाहर निकाल देगी। और, कोई कुटनी यह समाचार पाकर उसको सर्वनाश की राह पर लगा देगी। फिर उसको अस्पताल जाना पड़ेगा। (जैसा प्रतिष्ठित माताओं की ऐसी कन्याओं को सदा होता है)। जब वह अस्पताल से निकलेगी, तो फिर कुकर्म करेगी। बार-बार अस्पताल जाना पड़ेगा। फिर, मदिरापान शुरू करेगी, और दो-तीन बर्ष में, १८ या १९ बर्ष की अवस्था में, उसका अन्त हो जायगा! फिर क्या? यह बात तो आवश्यक है। समाज में शान्ति रखने के लिये कुछ स्त्रियों को ऐसा काम करना पड़ता है। मन के बहलाने के लिये यह वैज्ञानिक नियम हो सकता है। कौन कह सकता है कि अगले बर्ष डोनिया भी इन्हीं स्त्रियों में सम्मिलित न हो जाय?"

उसने अचानक सोचा, मैं कहाँ जा रहा हूँ। पत्र पढ़कर मैं कहाँ को चला था। हाँ, याद आया, राजूमिखेन के पास। पर क्यों? उसके पास आने का विचार क्यों हुआ था।

उसको अपने ऊपर आश्चर्य होने लगा। राजूमिखेन युनिवर्सिटी में उसका परम मित्र था, यद्यपि यह कह देना आवश्यक है कि रोडियन के बहुत कम मित्र थे। वह प्रत्येक पुरुष से घृणा करता था, किसी के संग घूमने भी नहीं जाता था। सबसे पृथक् रहता था। और, और लोग भी उससे हटने लगे थे। वह अपने ही काम में

परिश्रम करता था, और इसलिये उसका आदर था। कोई उससे प्रेम नहीं करता था; क्योंकि दरिद्र होने के अतिरिक्त वह बहुत ही अभिमानी था, और सबसे अलग रहना पसंद करता था। अपने चारों ओर उसने एक ऐसा वायुमंडल बना लिया था कि उसे सब अचम्भे से रहस्यपूर्ण समझते थे। कुछ विद्यार्थी कहते थे, यह हमको बच्चा समझता है, और अपने को हमसे बुद्धि में, विचार और विश्वास में बहुत बढ़-बढ़कर समझता है। हमारी सम्मति उसके सामने कुछ नहीं। केवल राजूमिखेन से वह मिलता था, और औरों की अपेक्षा उसी से अधिक बातचीत भी उसकी होती थी। राजूमिखेन से कोई भी और किसी तरह का व्यवहार नहीं कर सकता था। वह बहुत हँसमुख, सच्चा, दयालु और बहुत नम्र हृदय का लड़का था। इन सब गुणों के साथ-साथ उसकी बुद्धि और उसकी योग्यता सोने में सुगन्धि का काम करती थीं। उसके मित्र यह जानते भी थे, और उससे प्रेम करते थे। उसकी आकृति में आकर्षण था। काले बाल और दाढ़ी हमेशा बढ़ी रहती थी।

कभी-कभी वह लड़ाका हो जाता था, और हरक्युलीज़ के समान वीर समझा जाता था। वह मदिरा भी बहुत पी सकता था, और छोड़ भी सकता था। असफलता का उस पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता था, उस दशा में भी वह हँसमुख रहता था। वह खुली छत पर रह सकता और हँसते-हँसते सर्दी और गरमी सहन कर सकता था। वह बहुत दरिद्र था, अपनी रोटी आप कमाता था कुछ-न-कुछ काम करके आवश्यक धन प्राप्त कर लेता था। एकबार सरदी-भर उसने अपने कमरे में अँगाठी नहीं जलाई, और बड़े गर्व से कहा करता था कि ठंढ में नींद अच्छी आती है। इस समय धन न होने के कारण उसको पढ़ना छोड़ना पड़ा था; परन्तु उसको आशा थी कि शीघ्र ही वह अपनी आर्थिक दशा सुधार लेगा। रॉडियन चार महीने से उसके पास

नहीं गया था, और राजूमिखेन को रोडियन का पता नहीं मालू
था। दो महीने हुए, वे मिले थे; परन्तु रोडियन आँख बचाक
निकल गया। राजूमिखेन भी यह समझकर कि उसका मि
इस वक्त उससे मिलना नहीं चाहता, उससे कुछ न बोल
था।

पाँचवाँ परिच्छेद

रोडियन ने अपने मन में कहा—मैं राजू के पास कुछ काम पाने के लिये जा रहा था। कदाचित् वह मेरी सहायता कर सके। वह मुझे कोई काम दिलवा दे, और कदाचित् उसके पास हो, तो वह मुझे कुछ भी दे, जिससे जूते मोल लेकर और अपने कपड़ों की मरम्मत करके, मैं फिर लड़कों के पढ़ाने जाने लायक हो जाऊँ। परन्तु फिर थोड़े-से कूपक पाकर मैं क्या करूँगा? उसके पास जाने का विचार करना मूर्खता है।

राजूमिखेन के पास जाने का उसने क्यों विचार किया, इस प्रश्न ने उसे बहुत दुःखी कर दिया। वह अपने मित्र से मिलने की अपनी स्वाभाविक इच्छा में ही नए-नए अर्थ निकालने लगा।

क्या यह संभव है? मेरी सभी आशाएँ, राजूमिखेन पर अवलम्बित हैं? ऐसा विचार करके उसने अपने माथे पर हाथ फेरा, फिर एक अनोखा विचार उसके ध्यान में आया। उसने दृढ़ संकल्प करके कहा कि मैं जाऊँगा ज़रूर, परन्तु अभी नहीं। वह काम करने के एक दिन बाद जाऊँगा, और तब सब बात तय हो जायगी। तभी नया जीवन आरंभ हो जायगा। बेंच से उठते-उठते उसने कहा—"क्या यह कभी हो सकता है? और, यदि ऐसा हो गया—"

वह वहाँ से चलकर वापस लौटना चाहता था, परन्तु घर जाने का विचार उसको बड़ा घृणित जान पड़ा। जिस कुटी में एक महीने पूर्व यह विचार उत्पन्न हुआ था, वहीं को बिना सोचे-समझे चल पड़ा। उसका शरीर काँपने लगा, और बुरे विचारों के आघात से शिथिल पड़ गया। उसने प्रयत्न किया कि पास की वस्तुओं और राहगीरों में मेरा कुछ मन

लगे, किंतु सब निष्फल हुआ। काँपते हुए उसने अपना सिर उठाया, चारों ओर देखा; परन्तु उसकी समझ में न आया कि वह जा कहाँ है, और सोच क्या रहा है। इसी दशा में वह नीवा-नदी को पार टापू में पहुँच गया था। यहाँ की हरियाली ने उसे प्रसन्न कर दिया। भरे मकानों की ओर उसका चित्त आकृष्ट होने लगा, और वह वहाँ उन अट्टालिकाओं और अच्छे वस्त्र पहने हुई स्त्रियों तथा बच्चों के दे के लिये ठहर गया। कहीं पुष्पों को देखकर ही वह बड़ी देर तक खड़ा र सुन्दर गाड़ियों पर चढ़े हुए स्त्री-पुरुष उसके देखते-देखते ही विस्म हो गए।

एक बार वह रुका, और रकम सहेजने लगा। उसके पास केवल रूपक रह गए थे। वह हिसाब लगाने लगा,—बीस तो पुलीसमैन दिए, तीन नेस्टोसिया को, और ४० या ५० मारमैलेडाफ के यहाँ दिए हों गिनते-ही-गिनते वह भूल भी गया कि मैंने रूपक निकाले क्यों थे। एक हलवाई की दूकान देखकर उसको ध्यान आया कि मैं भूखा वहाँ घुसकर उसने ब्राण्डी का एक ग्लास लिया, और एक लेकर राह में खाता हुआ चल पड़ा। बहुत दिन से उसने ब्राण्डी पी थी, इसलिये उसका प्रभाव उस पर बहुत शीघ्र हो गया। उसके पैर ढीले पड़ गए, और वह ऊँघने लगा। वह घर की ओर चला, निर्बलता के कारण उसे ठहरना पड़ा, यहाँ तक कि सड़क से झाड़ियों में, घास पर, मीठी नींद सो गया।

अस्वस्थ दशा में मनुष्य बहुत अद्भुत स्वप्न देखता है, वास्तव में वह सत्य मानता है। अनेक भयानक चित्र, बातें ऐसी एकत्र हो जाती हैं, जो किसी चित्रकार के मस्तिष्क नहीं आ सकतीं। ऐसे भयानक स्वप्न बहुत दिन तक याद भी हैं, और स्वप्न देखनेवाले के बिगड़े हुए मस्तिष्क पर बड़ा प्र डालते हैं।

रॉडियन ने एक अद्भुत स्वप्न देखा—"मानों वह बच्चा है, और
ने गाँव में है। उसकी सात वर्ष की आयु है, और वह अपने
ा के साथ घूम रहा है। गरमी पड़ रही है। आकाश बिलकुल
क है, और सामने एक घना जंगल है। थोड़ी दूर पर एक सराय
सराय से बचपन में बड़ी घृणा करता था। वहाँ लोग एकत्र
ते थे, शराब पीकर लड़ते थे, गालियाँ देते थे। उनको देखकर
काँपने लगता और अपने पिता के पास भाग जाता था। सराय
सड़क तो एक काली पगडण्डी खेतों को पार करती हुई गई थी, और
के दाहनी ओर, ३०० गज की दूरी पर, मरघट था। बीच में पत्थर
गिरजा बना हुआ था, जहाँ वह साल में दो बार अपने माता-
ता के साथ अपनी दादी—जिसे उसने कभी नहीं देखा था—की क़ब्र
जाता था, जहाँ वह किशमिश लगी हुई एक चावल की रोटी
जाते थे, जिसमें वहाँ की पुरानी मूर्तियाँ हैं। वृद्ध पुरोहित से
बड़ा प्रेम करता था। उसकी दादी की क़ब्र के पास उसके
टे भाई की भी क़ब्र थी, जो छः महीने का होकर मर गया
, और जो कि रॉडियन को अच्छी तरह याद भी न थी।
रन्तु उन्होंने बतलाया था कि उसके छोटे भाई की क़ब्र है।
सलिये जब वह वहाँ जाता था, तो बड़ी श्रद्धा से उस छोटी क़ब्र को
र झुकाकर चूम लेता था। उसने स्वप्न में देखा कि वह अपने
ता के साथ सराय की ओर से मरघटवाली सड़क पर जा रहा है, अपने
ता का हाथ पकड़े हुए सराय की ओर भयभीत होकर देख रहा है। उसी
उत्सव वस्त्र पहने हुए नगर के स्त्री-पुरुष और एक भीड़ वहाँ आई।
शराब में मस्त हैं, और कुछ गा-गाकर चिल्ला भी रहे हैं। दरवाजे पर
क अद्भुत गाड़ी खड़ी है, जो बहुत बड़ी है, और जिस पर शराब के
े हैं और भारी असबाब है। बड़े-बड़े घोड़े उसे खींचकर ले जा रहे हैं।
ड़ों के बाल लंबे और टाँगें मोटी हैं। इतना भारी बोझा लादे हुए भी

वे शान्ति से धीरे-धीरे जा रहे हैं, मानों बड़े अच्छे लगते हैं। परन्तु इस बड़ी गाड़ी में एक छोटी एवं निर्बल घोड़ी भी जुती हुई है। यह वही घोड़ी है, जो सूखी घास ढोकर ले जाती थी, और जिसको किसान बड़ी निर्दयता से, नाक और नेत्रों पर, मारता था। उसको यह दृश्य ऐसा करुणा-पूर्ण विदित होता था कि उसके आँसू आ जाते थे, और उसकी माता उसको खिड़की के ऊपर ले जाती थी। एकबारगी बहुत-से किसान लाल और नीली कमीजें पहने हुए, शराब में मस्त गाते हुए इधर ही आ गए। एक नवयुवक बलवान् किसान ने, जिसकी गर्दन और मुँह गाजर की तरह लाल था, चिल्लाकर कहा—चढ़ जाओ, सब इस पर चढ़ जाओ। सभी ने हँसकर जवाब दिया—ऐ निकोलका ! क्या पागल हो गए हो? ऐसी कमज़ोर घोड़ी पर क्यों चढ़ाते हो ? निकोलका गाड़ी पर चढ़कर, सामने खड़े होकर, चिल्लाने लगा—आओ चढ़ो, मैं इस घोड़ी से ऊब गया हूँ। और, चाबुक उठाकर उसने कहा—देखो, कैसा सरपट इसे भगाता हूँ। भीड़ ने हँसकर कहा—यह क्या सरपट भागेगी !

"ऐसा सरपट, जैसा दस बरस से न भागी होगी। भाइयो, आओ, दया छोड़कर अपने-अपने चाबुक सँभालो।"

वे हँसते हुए गाड़ी पर चढ़ने लगे। छः तो चढ़ गए; और कुछ जगह बची हुई थी। एक लाल मुँहवाली स्त्री भी थी, जिसको उन्होंने कोने में खड़ा कर दिया, और जो हँस-हँसकर अखरोट तोड़ने लगी। भीड़ इस दृश्य को, जिसमें बुड्ढी घोड़ी इतना बोझ उठाकर चलनेवाली थी, देखने के लिये उत्सुक थी। दो आदमी चाबुक लेकर निकोलका की सहायता के लिये खड़े हो गए। घोड़ी ने अपनी शक्ति-भर खींचा, परन्तु चलने के स्थान से शायद ही एक इंच बढ़ी हो। उसके पैर इधर-उधर होने लगे। इधर चाबुक-पर-चाबुक पड़ने लगे, और वह ज़ोर से चिल्लाने लगी। गाड़ी में चढ़े हुए और बाहरवाले ज़ोर से हँस पड़े। इससे

निकोलका का क्रोध बढ़ गया, और उसका चाबुक उस अभागिनी घोड़ी पर बरसने लगा—"आप लोग शान्ति रक्खें, मैं अभी इसे चलाता हूँ।"

रोडियन ने अपने पिता से कहा—"पिता, ये क्या कर रहे हैं ? घोड़ी को मार डालेंगे !" पिता बोले—"इसकी चिन्ता न करो। ये शराब पिए हुए हैं, और यह उनका पागलपन है।" और, वह उसे ले चला। परन्तु बाप का हाथ छोड़कर वह घोड़ी के पास दौड़ आया। उसकी साँस ज़ोर से चल रही थी, और एक अन्तिम प्रयत्न और करके खड़ी होकर गिरनेवाली ही थी। भीड़ में से एक बुड्ढे ने चिल्लाकर कहा—"तुम ईसाई नहीं हो ?"

दूसरा बोला—"इतना भारी बोझ वह कैसे ले जा सकती है ?"

तीसरे ने कहा—"तुम उसको मार डालोगे ?"

निकोलका ने जवाब दिया,—"हाँ, वह मेरी है, और मेरा जो जी चाहेगा, करूँगा। देखो, अभी सरपट चलती है।" चारों ओर फिर हँसी होने लगी। घोड़ी चाबुक खाकर लातें फटकार रही थी। बुड्ढे को भी हँसी आ गई। भीड़ को चीरकर दो आदमी आगे आ गए, और उसकी पसलियों पर चाबुक फटकारने लगे। निकोलका ने कहा—"आँख और नाक पर मारो।" गाड़ी के भीतर से एक ने चिल्लाकर कहा—"भाइयो, गाओ।" सब बेहूदा गीत गाने लगे। कुछ सीटी ही बजाने लगे। लाल मुँहवाली स्त्री अपने अखरोट तोड़ती रही। लड़का उस जानवर को देखता रहा। उसका दिल भर आया, और उसके आँसू आ गए। एक चाबुक मारनेवाले ने उसको तमाचा मार दिया; परन्तु उसने उसका ख़याल न किया, और बुड्ढे के पास, जिसने उनको बुरा कहा था, दौड़ गया। एक बुढ़िया उसको गोद में भीड़ से बाहर ले आई, परन्तु फिर वह घोड़ी के पास दौड़ गया। घोड़ी अब सर्वथा थक गई थी, और दुलत्तियाँ फटकार रही थी।

निकोलका ने अपना चाबुक फेंक दिया, और एक लंबा बाँस गाड़ी के नीचे से निकालकर उसके सिर पर मारते-मारते बोला— "मैं तुझे भेड़िए को खिला दूँगा।"

लोगों ने चिल्लाकर कहा—"तुम उसे मार डालोगे ?" निकोलका ने अपनी पूरी शक्ति से बाँस मारते हुए कहा—"हाँ, अच्छी बात है, मर जाने दो।" गाड़ी से लोग चिल्लाए—"मारो, मारो, कुछ चिन्ता नहीं।" निकोलका ने बाँस उठाकर ज़ोर से बेचारी घोड़ी पर जमाए। घोड़ी की पिछली टाँगों ने जवाब दे दिया, और वह निकल जाने के लिये कूदने-फाँदने लगी। चारों ओर से चाबुकों की वर्षा होने लगी, और बाँस पड़ने लगे। निकोलका को यह दुःख था कि एक ही चोट से घोड़ी क्यों न मर गई। एक आदमी ने चिल्लाकर कहा—"वह गिरनेवाली है।" दूसरा बोला—"कुल्हाड़ी लाओ, और समाप्त करो।" निकोलका ने बाँस फेंककर एक लोहे की सलाख़ उठाई, और 'होशियार हो जाओ' कहकर घोड़ी को उससे मारा, पर स्वयं भी लड़खड़ा गया। घोड़ी तो लड़खड़ा ही गई। फिर एक सलाख़ और उसकी रीढ़ की हड्डी पर पड़ी। उसकी चारों टाँगों ने जवाब दे दिया, और वह ज़मीन पर बदहवास गिर पड़ी। निकोलका ज़ोर से चिल्लाने लगा—"सब समाप्त हो गया।" शराबियों में किसी ने लकड़ी, किसी ने तख़्ता और किसी ने कुछ और उठाकर मरती हुई घोड़ी को मारना शुरू कर दिया। निकोलका लोहे की सलाख़ से मार-मारकर अपना क्रोध शान्त करता रहा। घोड़ी ने सिर डाल दिया, ज़ोर से हिनहिनाई, और मर गई।

कुछ लोगों ने कहा—"घोड़ी तो मर गई।" दूसरे बोले—"परन्तु सरपट तो नहीं चली।" निकोलका की आँखों से ख़ून टपक रहा था, और वह दुःखी था कि अब उसको मारने के लिये कुछ नहीं रहा। उन्हीं में से कुछ लोगों ने फिर चिल्लाकर कहा—"वास्तव में तुम ईसाई नहीं हो।"

लड़के को अपनी सुध न थी, वह भीड़ चीरकर मरी हुई घोड़ी के पास गया, उसके ख़ून से भरे हुए सिर को प्यार से चूमा, और फिर क्रोध से घूसा तानकर निकोलका की ओर लपका। इसी बीच में उसका पिता, जो उसको बड़ी देर से ढूँढ़ रहा था, उसे पकड़कर ले गया।

लड़के ने सिसकते हुए, भरे हुए दिल से कहा—"पिताजी, इन्होंने बेचारी घोड़ी को क्यों मार डाला?" पिता ने उत्तर दिया—"शराब पिए हुए हैं, हमको इन बातों से क्या प्रयोजन? चलो चलें।" उसने पिता का हाथ पकड़ा। उसका दम घुटने लगा, और उसको साँस लेना कठिन हो गया। वह चिल्लाया, और जग गया।"

वह पसीने से तर था, उसकी साँस ज़ोर से चल रही थी, और वह बहुत भयभीत था। वृक्ष के नीचे बैठकर उसने कहा—"भगवन्, तुझे धन्यवाद है कि यह केवल स्वप्न ही था!" परन्तु यह क्यों? मुझे तो बुख़ार जान पड़ता है। कैसा बुरा स्वप्न था! उसके हाथ-पैरों में दर्द हो रहा था। उसका दिमाग़ काम नहीं करता था। वह हाथों पर सिर रखकर बैठ गया।

"भगवन्, क्या मैं उसका सिर कुल्हाड़ी से फाड़ डालूँगा, गर्म लोहू से नहाऊँगा, ताला तोड़ूँगा, चोरी करूँगा, लोहू चारों ओर बहता होगा, और फिर अपने-आपको छिपाऊँगा? भगवन्, क्या यह संभव है, और क्या ऐसा होना चाहिए?" यह कहते-कहते वह काँपने लगा।

"मैं क्या सोच रहा हूँ? मैं ख़ूब जानता हूँ कि इस बात को सहन नहीं कर सकता। कल जब मैं अभ्यास कर रहा था, मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम हो गई। फिर यह प्रश्न उठा क्यों? क्या कल मैंने सीढ़ी पर चढ़ते हुए नहीं कहा था कि यह घृणित, निंद्य एवं कमीनेपन का काम है, और क्या मैं उससे भयभीत होकर नहीं भागा था?"

वह खड़ा हो गया, और चारों ओर देखकर सोचने लगा, मैं यहाँ कैसे पहुँचा? वह पुल की ओर चला। वह पीला पड़ गया था, उसके

नेत्र जल रहे थे। हाथ-पैरों में शिथिलता आ गई थी, परन्तु उसको यह विश्वास हो गया कि जिस विचार से मैं इतना दुःखी था, वह अब मुझसे दूर है।—अब उसके स्थान में शान्ति और प्रकाश आ गए। भगवन्, मुझको सीधी राह पर लगाओ, जिससे मेरा इन बुरे विचारों से पिंड छूटे।

पुल को पार करके उसने नीवा की ओर देखा, और देखी उसमें सूर्य की अस्त होती हुई लालिमा। निर्बलता होने पर भी उसको अब थकावट न थी, और उसके दिल का बोझ-सा हट गया था। स्वधीनता! स्वाधीनता! उसने अपने बुरे विचारों से स्वधीनता पाई। अपने जीवन के आगामी भाग में जब वह इन दिनों की बात सोचता, और मिनट-मिनट की हृदय की दशा सामने आती तो वह यह समझता कि छोटी-छोटी-सी साधारण बातें कैसे उसकी किस्मत का साथ दे रही हैं। इतना वहमी वह था। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि जब वह इतना थका हुआ है, तो वह क्यों नहीं नज़दीक के रास्ते से घर आ गया, दूर जाकर घास की मण्डी पार करने से उसको क्या काम था? बीसों बार वह अपने घर बड़े टेढ़े रास्तों से गया था, और वह उन्हें नहीं जानता। परन्तु क्यों उसको मण्डी में ऐसे मनुष्य मिले, और ठीक उस समय, जब उसके हृदय की यह दशा हो रही थी? इसका उत्तर वह सिवा होनहार के और कुछ नहीं दे सकता था। वास्तव में वह किसी ख़ास काम के लिये पैदा किया गया था। घास की मण्डी में वह ९ बजे पहुँचा। दूकानदार दूकानें बंद करके घर चले गए थे। इस स्थान में, जहाँ दरिद्र लोग रहते थे, और जहाँ वमन पैदा करनेवाली दुर्गन्ध आती थी, रोडियन को घूमना बहुत अच्छा लगता था; क्योंकि यहाँ उसको कोई देखता न था। कोने में एक दूकानदार अपना असबाब, घर जाने के लिये, बाँध रहा था। उसकी स्त्री और वह एक स्त्री से बात कर रहे थे। यह एलिज़बेथ थी, जो उस बुढ़िया साहूकारन की छोटी बहिन है, जहाँ रोडियन अपना अभ्यास करने कल गया था। वह एलिबेज़थ के विषय

में सब कुछ जानता था, और वह भी उसको थोड़ा-बहुत जानती थी। वह लंबी, बदसूरत, चुपचाप रहनेवाली, मूर्खा, अपनी बहन की दासी, रात-दिन उसका काम करनेवाली, उसके घूँसे खानेवाली ३५ वर्ष की स्त्री थी। एक गठरी बग़ल में लिए हुए वह कुछ सोच रही थी, और उसके मित्र किसी बात के लिये उसको मजबूर कर रहे थे। जब रोडियन ने उसको पहचाना, उसको बड़ा आश्चर्य हुआ, यद्यपि इसमें कोई आश्चर्य की बात न थी।

"एलिज़बेथ, तुम निर्णय कर लो। कल सात बजे शाम को आना।" आदमी ने कहा।

"कल?" एलिज़बेथ ने बहुत धीरे से आश्चर्य-पूर्ण स्वर में कहा।

उस आदमी की स्त्री ने कहा—तुम एलेन से क्यों इतना डरती हो? एलिज़बेथ, तुम बच्ची नहीं हो, और फिर वह तुम्हारी सौतेली बहन है। वह तुमसे बहुत काम लेती है। तुम एलेन से कुछ न कहना, और बिना पूछे चली आना। तुम्हारी बहन पीछे देखभाल कर लेगी।'

"तो फिर कब आऊँ?"

"कल सात बजे शाम को।"

"अच्छा, मैं आऊँगी।" एलिज़बेथ यह कहकर चली गई। रोडियन भी चल पड़ा। धीरे धीरे उसका आश्चर्य भय में बदल गया। उसकी देह ठण्डी पड़ने लगी। उसको यह मालूम हुआ कि कल शाम को ७ बजे एलिज़बेथ घर पर न रहेगी, और इसलिए बुढ़िया बिलकुल अकेली होगी। वह अपनी बुढ़िया बहन के साथ रहती थी। उसका कमरा थोड़ी दूर पर था। रोडियन इस प्रकार जा रहा था, जैसे उसे फाँसी का हुक्म हो गया हो। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। उसको ऐसा विदित हुआ कि वह कर्म करने में स्वाधीन नहीं है, और उसके भाग्य का फ़ैसला हो गया। ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता, और कदाचित् फिर उसको पहले से कभी यह न मालूम हो कि अमुक दिन अमुक समय पर वह सर्वथा अकेली होगी।

छठा परिच्छेद

रोडियन को बाद को पता लगा कि उस आदमी और उसकी स्त्री ने एलिज़बेथ को क्यों बुलाया था। बड़ी सीधी-सी बात थी। बाहर के रहनेवाले, तंगी की हालत में, कुछ अपनी चीज़ें बेचना चाहते थे। वे चाहते थे कि कोई पुराने कपड़े ख़रीदनेवाला हमें मिल जाय, और एलिज़बेथ यही काम करती थी। उसकी जान-पहचान बहुत थी; क्योंकि वह ईमानदार थी, और एक दाम बतलाकर फिर ज़बान नहीं बदलती थी। रोडियन बहुत ही अदृष्टवादी था। जीवन के इस भाग में वह सदा यही समझता था कि जो बातें होती हैं, वे उसकी क़िस्मत के पहले के किए हुए फ़ैसले के मुआफ़िक़ होती हैं।

पिछले जाड़े में उसके सहपाठी थोकोरफ़ ने उसको एलेन का पता बतलाया था कि कभी उसको कुछ गिरवी रखने की आवश्यकता पड़े, तो वहाँ चला जाय। बहुत दिनों तक तो उसको वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं हुई; क्योंकि वह लड़कों को पढ़ाता था। बहुत दिनों तक उसने इस का कुछ विचार भी नहीं किया, परन्तु अब छः सप्ताह हुए, उसको उसका ख़याल आया। उसके पास दो चीज़ें गिरवी रखने को थीं—एक उसके पिता की पुरानी चाँदी की घड़ी; दूसरे, एक छोटी सोने की तीन नगवाली अंगूठी, जिसे घर से चलते वक़्त उसकी बहन ने उसे दिया था। अँगूठी गिरवी रखने के लिये वह बुढ़िया के पास गया था। बुढ़िया को देखते ही उसके हृदय में घृणा उत्पन्न हुई। दो नोट लेकर होटल में चा पीने गया। ध्यान में मग्न था, और बुरे विचार उसके दिमाग़ में आ रहे थे। दूसरी मेज़ पर एक विद्यार्थी और एक अफ़सर बिलियर्ड खेलते जाते थे, और चा पी रहे थे। रोडियन ने सुन लिया कि विद्यार्थी ने अफ़-

सर को एलेना का पता बतलाते हुए कहा कि यह एक प्रोफ़ेसर की विधवा है, और गिरवी पर रुपए उधार देती है। राडियन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये भी उसी की बातचीत कर रहे हैं। यह केवल अचानक हो गया था। परन्तु रोडियन के मस्तिष्क में इस बात ने एक विचित्र प्रभाव उत्पन्न किया। विद्यार्थी ने अफ़सर से कहा—वह बहुत प्रसिद्ध और रुपए-वाली है, और ५,००० रूबल एकदम तुरन्त उधार दे सकती है। परन्तु फिर भी छोटी-छोटी चीज़ें गिरवी रखती ही है। हम लोगों के लिये तो वह साक्षात् ईश्वर है, परन्तु है बड़ी चुड़ैल—बड़ी बुरी और लोभी है। और, यदि एक दिन भी चीज़ छुड़ाने में देर हो जाय, तो उस चीज़ को ज़ब्त कर लेती है। यद्यपि असली क़ीमत की चौथाई से ज्यादा उधार भी नहीं देती, और ५-६ प्रति सैकड़े माहवार ब्याज भी लेता है। उसकी एक बहन एलिज़बेथ है, जिससे वह बड़ा बुरा व्यवहार करती है, और जिसको वह बच्चे के समान रखती है, यद्यपि एलिज़बेथ बड़ी देव-सी लंबी चौड़ी है, और उमर में बहुत छोटी है। कैसे आश्चर्य की बात है! यह कहकर वह हँसने लगा।

बातचीत फिर एलिज़बेथ के ही विषय में होने लगी। अफ़सर ने उससे कहा—एलिज़बेथ को मेरे कपड़ों की मरम्मत करने के लिये भेज देना। रोडियन उनकी बात सुनता रहा, और सब ताड़ गया। वह एलेना की छोटी सौतेली बहन है, पैंतीस वर्ष की अवस्था है, दिन-रात बुढ़िया के लिये काम करती है। उसको रोटी पकाती है, कपड़े धोती है। इसके सिवाय कपड़े सीकर बेचती भी है, और सब कमाई बहन को ही देती है। कोई काम बिना एलेना की आज्ञा के नहीं करती। सुनते हैं, एलेना ने एक वसीयत की है, जिसके द्वारा एलिज़बेथ को फ़रनीचर के सिवा कुछ नहीं मिलेगा, उसका सारा धन एक मठ में जायगा, जहाँ उसकी जीवात्मा के लिये सदा प्रार्थना होती रहेगी। एलिज़बेथ बहुत लंबी और भद्दी है, परन्तु बहुत साफ़ रहती है। विद्यार्थी को इस बात का बड़ा आश्चर्य था

कि एलिज़बेथ बार-बार गर्भवती हो जाती है। अफ़सर ने कहा—तुम तो कहते हो कि वह बहुत भद्दी है। विद्यार्थी ने जवाब दिया—वह काली अवश्य है, और फ़ौजी मालूम होती है; परन्तु बिलकुल भद्दी नहीं है। उसका स्वभाव बहुत अच्छा है। उसके नेत्रों से सहानुभूति टपकती है, और वह लोगों को प्रसन्न रखती है। बहुत शान्त, सीधी, और धीर है, और उसकी मुसकिराहट बड़ी प्यारी लगती है।

अफ़सर ने हँसकर कहा—"तुम उससे खुश मालूम होते हो।"

विद्यार्थी ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया—उसकी विचित्रता मुझको बड़ी रोचक मालूम होती है। परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस बुढ़िया को मार डालूँगा, और उसका सब धन ले लूँगा। मेरी आत्मा को तनिक भी दुःख न होगा।

अफ़सर हँसने लगा, परन्तु रोडियन काँपने। ये शब्द रोडियन ही के विचार प्रकट कर रहे थे। विद्यार्थी ने और उत्तेजित होकर कहा—अच्छा ? मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ। अभी तक मैं हँसी कर रहा था, परन्तु अब सुनिए। एक ओर तो यह मूर्खा, निर्दयी बुढ़िया है, जो किसी के लिये आवश्यक नहीं, परन्तु हानिकारक है, और जो स्वयं नहीं जानती कि मैं क्यों जीवित हूँ। दूसरी ओर जिनके बाहु में बल है, ऐसे युवा धनाभाव के कारण मर रहे हैं। ऐसी दशा हज़ारों की है। हज़ारों उत्तम काम उस रुपए से, जो इस मठ को वसीयत कर दिया गया है, हो सकते हैं। एक दर्जन कुटुम्ब भूखों मरने के पाप और दरिद्रता से इसी रुपए से बचाए जा सकते हैं। उसको मार डालो, उस का धन ले लो, और लोक-सेवा और उपकार में उसे लगा दो। आपकी क्या राय है ? क्या एक छोटा-सा पाप हज़ारों अच्छे कामों से धुल न जायगा ? एक बेकार जीवन से हज़ारों जीवन विनाश और मृत्यु से बचाए जा सकते हैं, एक मौत से हज़ारों को जीवनदान मिल सकता है। आप हिसाब लगाकर बतलाइए, इस बुढ़िया का जीवन इन अच्छे कामों के सामने क्या चीज़ है ?

है ? उसका जीवन एक मक्खी,—एक पिस्सू के बराबर है। नहीं, नहीं, इससे भी गिरा हुआ है। वह दूसरों के जीवन पर शिकार खेलती है। अभी थोड़े दिन हुए, उसने एलिज़बेथ की उँगली क्रोध में आकर काट ली।

अफ़सर ने कहा—"यह ठीक है; क्योंकि वह जीवित रहने के योग्य नहीं, परन्तु प्रकृति—"

आह, मेरे मित्र ! हमको प्रकृति को ठीक राह पर लगाना चाहिए, नहीं तो हम सब डूब जायँगे। बिना उसको ठीक किए एक भी आदमी बड़ा नहीं हो सकता। लोग कहते हैं, धर्म जीवात्मा है। मैं धर्म और जीवात्मा के विरुद्ध कुछ नहीं कहता। परन्तु मैं एक और प्रश्न करता हूँ। सुनिए—"

अफ़सर ने कहा—"ठहरो, पहले एक बात का उत्तर मुझे दो। क्या तुम उस बुढ़िया को स्वयं मारोगे, या नहीं ?"

"नहीं, मैं तो केवल संसार का अन्याय दिखा रहा था। और, रहा मारना।"

"यदि तुम नहीं मारोगे, तो मेरी राय यह है कि उसका मारना न्याय-युक्त नहीं है। आओ, एक बाज़ी और खेल लें।"

रॉडियन बहुत उत्तेजित हो गया। यह कोई असाधारण बातचीत न थी। वह ऐसे विचार और युवाओं से भी सुन चुका था। परन्तु उसने यह विचार किया कि मैंने ही यह बातचीत और विचार क्यों सुने, जब मेरे हृदय में भी वही विचार आ रहे हैं, और ठीक उस समय, जब मैं उस बुढ़िया के यहाँ से आता हूँ ? यह उसको बहुत विचित्र मालूम हुआ, और इस बातचीत का प्रभाव उसके जीवन पर बड़ा भयंकर पड़ा। छोटी-छोटी-सी बातों से उसको यह विश्वास हो गया कि वह किसी विशेष काम के लिये पैदा किया गया है। बाज़ार से लौटकर वह कोच पर घंटे-भर तक बिना हिले-डुले बैठा रहा। अँधेरा हो गया, फिर भी बिना प्रकाश के ही बैठा रहा। अंत में उसको सर्दी लगी, और वह काँपने

लगा। उसको यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वह अपनी ही कोच पर बैठा है। वह लेट गया, और गहरी नींद सो गया। रोज़ से अधिक देर तक, विना स्वप्न देखे, सोता रहा। नेस्टेसिया दूसरे दिन दस बजे उसके कमरे में आई, और बड़ी मुश्किल से उसको जगाया। नौकरानी उसके लिये कुछ रोटी, और कुछ चाय अपने में से बचाकर पहले दिन की तरह लाई थी।

"अभी तक नहीं उठे? कितनी देर तक सोते हो!" रोडियन ने उठने का प्रयत्न किया। उसका सिर दुख रहा था। वह कुछ दूर चला, और फिर कोच पर लेट गया।

"क्या फिर सो गए?" नेस्टेसिया ने कहा। "क्यों, कुछ तबियत ख़राब है क्या?" उसने कुछ उत्तर न दिया। नेस्टेसिया ने फिर कहा—"थोड़ी-सी चा पी लो।"

"थोड़ी देर में पिऊँगा।" यह कहकर वह दीवाल की ओर मुँह करके लेट गया। नेस्टेसिया थोड़ी देर तक तो उसे देखती रही, और फिर यह कहती हुई चली गई कि शायद बीमार है। दो बजे वह कुछ शोरवा लेकर आई। रोडियन कोच पर सो रहा था। उसने चा नहीं छुई थी। नौकरानी ने गुस्से में आकर उसको ज़ोर से हिलाया, और घृणा से कहा—"क्यों इतना सोते हो?" वह उठ बैठा, और छत की ओर एकटक लगा-कर देखने लगा।

नेस्टेसिया ने पूछा—"तुम बीमार हो या नहीं?"

इस प्रश्न का भी कोई उत्तर नहीं मिला। तब उसने कहा—"तुम बाहर जाओ, ताज़ी हवा से तुम्हें फ़ायदा होगा! कुछ खाओगे या नहीं?" उसने उत्तर दिया—"थोड़ी देर में।" और नेस्टेसिया को जाने का संकेत करते हुए कहा—"जाओ।"

एक क्षण वह उसको करुणा-भरी दृष्टि से देखती रही। फिर चली गई।

कुछ मिनटों के बाद उसने अपनी आँखें खोलीं, चा और शोरवे

की तरफ़ देखा, और खाना आरंभ किया। तीन-चार चम्मच विना भूख के खा गया। उसके सिर का दर्द कुछ कम हुआ। खा चुकने पर वह फिर कोच पर लेट गया। परन्तु उसको नींद नहीं आई। वह पेट के बल चुपचाप अपना मुँह तकिए में छिपाए पड़ा रहा। उसने ध्यान में बड़े विचित्र दृश्य देखे—कभी तो वह आफ्रिका में है, कभी मिसर में, कभी दलदल में, जहाँ पिण्डखजूर के वृक्ष लगे हुए हैं। यात्री आराम कर रहे हैं, ऊँट चुपचाप पड़े हैं, और कुछ यात्री ब्यालू कर रहे हैं, कुछ बहते हुए स्रोत से जल पी रहे हैं। कैसा सुखदायी नीला जल है—कैसा साफ़, रंग-बिरंगा सुनहली बालू पर से बह रहा है।

उसने घंटे का शब्द सुना और काँप गया। सिर उठाकर, खिड़की से झाँककर देखने लगा कि वक्त क्या है। उसको होश आ गया। पंजों के बल चलकर उसने धीरे-से दरवाज़ा खोला, और सुनने लगा। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था; परंतु ज़ीने से कोई आवाज़ न आती थी। जान पड़ता था, मानों सब सोए पड़े हैं। उसको आश्चर्य हुआ कि मैं इतनी देर तक क्यों सोता रहा, और मैंने काम के लिये कुछ तैयारी नहीं की। कदाचित् छः बज चुके हैं।

'क्या करना है' यह ध्यान आते ही वह उत्तेजित हो गया। उसने अपने विचारों को भटकने से रोकने का प्रयत्न किया, और काम में ध्यान लगाया। उसका दिल इतना धड़क रहा था कि साँस लेना मुश्किल था। पहले तो उसको एक ऐसी जगह कोठे में बनानी थी, जहाँ वह चीज़ को छिपा सके। उसने अपनी एक पुरानी कमीज़ निकालकर फाड़ डाली, और उसके दो टुकड़े लेकर, अपने कोट के बाँएँ हाथ के नीचे सीकर, एक चोर-जेब बना ली, उसके हाथ काँप रहे थे। परन्तु काम सन्तोष-दायक हो गया। उसने अपना कोट पहन लिया, और देखा। कुछ असाधारण परिवर्तन नहीं मालूम होता था। यह छिपाने की जगह कुल्हाड़ी रखने के लिये बनी थी। कुल्हाड़ी को हाथ में ले जाने से लोगों को संदेह होता, और यदि वह

उसको कोट के नीचे रखता, तो भी उसको हाथ से पकड़ना पड़ता। परन्तु इस स्थान में वह उसे रख सकता था, और कोट की जेब में हाथ डालकर बेंट को हिलाने से रोक सकता था। अब उस पर कोई सन्देह नहीं कर सकता था। इस बात का उसने पन्द्रह दिन पूर्व से ही विचार कर लिया था।

अपना काम समाप्त करके रोडियन ने कोच के नीचे, फ़र्श के एक छेद में, हाथ डाला, और गिरवी रखने की चीज़ निकाली, जो केवल एक धोखा था। एक लकड़ी का टुकड़ा था, जो चाँदी के सिगरेट-केस की तरह मोटा और लंबा था। इसे उसने एक बढ़ई की दुकान के सामने पड़ा पाया था। दूसरा एक लोहे का टुकड़ा उसी नाप का था, जिसे उसने सड़क पर पड़ा पाया था। इन दोनों को उसने तागे से मिलाकर बाँध दिया, और फिर एक साफ़, सफ़ेद काग़ज़ में लपेट दिया। फिर इस पार्सल में एक कड़ी गाँठ लगा दी। ऐसा उसने इसलिये किया था कि बुढ़िया को गाँठ खोलने में कुछ देर लगे, और इस बीच में उसको मारने का मौक़ा मिले। लोहे का टुकड़ा वज़न बढ़ाने के लिये रक्खा था, नहीं तो तुरन्त ही वह उसका धोखा समझ जाती। इसे वह जेब में रखकर चलने को ही था कि उसने नीचे से आवाज़ सुनी--"बड़ी देर हुई, छः बज गए।"

"ओह! बड़ी देर हो गई।" वह दरवाजे पर गया, कान लगाकर सुनता रहा, और बिल्ली की तरह चुपके-से चल पड़ा। अभी उसको बहुत आवश्यक काम करना था; क्योंकि रसोईखाने से कुल्हाड़ी चुरानी थी। कुल्हाड़ी से मारने की बात उसने बहुत दिनों से सोच रक्खी थी। उसके पास एक पुरानी छुरपी भी थी, परन्तु अपनी ताक़त के मुक़ाबले में उस छुरपी पर उसको विश्वास न था। इन सब बातों में एक विशेष बात यह थी कि जितना ही वह सोचकर सब कुछ तय कर लेता था, उतना ही उसको अपने विचार दूषित और भद्दे मालूम होते थे। कभी भी

उसको यह विश्वास न होता था कि मैं यह काम कर सकूँगा। परन्तु यदि ये सब प्रश्न हल हो जाते, संदेह की कोई बात न रहती, कठिनाई सामने न होती, तब भी कदाचित् वह ठीक समय पर, अपने काम को भद्दा, और घृणित समझकर, छोड़ देता। अभी उसको बहुत काम करना था। कुल्हाड़ी चुराने को तो वह कुछ काम समझता ही न था। नेस्टेसिया शाम को घर पर बहुत कम रहती थी। वह अपने मित्रों और दूकानदारों से बातें करने चली जाती थी, इसीलिये उसकी मालकिन उससे नाराज़ रहती थी। जब समय आवेगा, मैं चुपके से, रसोई-घर में जाकर, कुल्हाड़ी चुरा लूँगा, और फिर काम करके वहीं रख दूँगा। फिर उसने सोचा, यदि मैं कुल्हाड़ी रखने आऊँ, और नेस्टेसिया रसोई-घर में हो, तो मैं उसको तब न रखकर जब वह बाहर जायगी, रख दूँगा। परन्तु यदि उसने आकर, कुल्हाड़ी को न देखकर, शोर मचाना शुरू किया, तो मैं पकड़ा जाऊँगा!

परन्तु, ये छोटी-छोटी बातें हैं। इनके विचार करने का समय नहीं। वास्तविक बात का निर्णय हो चुका। छोटी-छोटी बातों के निर्णय करने का अभी बहुत समय है। असली बात का करना ही तो असंभव मालूम होता है। उसको यह ध्यान न था कि एक समय ऐसा आवेगा, जब वह बिना विचारे, खड़ा होकर सीधा चला जायगा। अपने पिछले अभ्यास में भी वह ठीक तरह अपना काम नहीं कर सका, और अपने ही ऊपर घृणा करता हुआ वहाँ से भागा। धार्मिक विचार से तो रोडियन इसका निर्णय कर ही चुका था। उसने सब आक्षेपों के उत्तर अपने हृदय में दे लिए थे। अब वह चाहता था कि मुझको कोई ईश्वरीय सहायता मिले, जिससे मैं यह काम करने से रुक जाऊँ। परन्तु पिछली शाम की बात-चीत से उसकी दशा ऐसी हो रही थी, जैसे उस मनुष्य की, जो अपना कोट मशीन के पहिए में फँसा देता है, और इस मशीन में, अपने आप को रोकते हुए भी, फँस जाता है। सबसे पहला प्रश्न, जो उसके ध्यान

में था, यह था कि हत्या करनेवाले क्यों इतनी सुगमता से पकड़े जाते हैं, और क्यों उनका पता लग जाता है ?

बहुत-सी बातें उसने सोची थीं। उसकी समझ में यह आया था कि हत्यारा स्वयं अपने ही व्यवहारों से अपने को प्रकट कर देता है। हत्या का छिपाना कोई बड़ी बात नहीं। कदाचित् अन्त समय इसका संकल्प और शक्ति काम नहीं देती, और इसलिये वह लड़कपन की विचार-हीन बातें कर बैठता है। रोडियन इस विचार-हीनता को एक रोग समझता था, जो धीरे-धीरे आदमी को आ घेरता है, और ठीक हत्या करने के पहले बड़ा भयंकर रूप धारण कर लेता है। हत्या के बाद भी कुछ दिन तक रहकर, धीरे-धीरे यह रोग चला जाता है। एक बात का वह निर्णय नहीं कर सका था कि हत्या, मनुष्य इस रोग के कारण करता है, या हत्या करने से यह रोग हो जाता है।

इन सब बातों को सोचकर उसको यह विश्वास हो गया कि मैं ऐसी बातें ही न करूँगा, और मेरी बुद्धि अन्त समय तक मेरा साथ देगी; क्योंकि यह हत्या नहीं है। हमको इस समय वे सब बातें लिखने की आवश्यकता नहीं, जिनको सोचकर वह इस परिणाम पर पहुँचा था। परंतु इन सब बातों को सोचकर उसके सामने से सब कठिनाइयाँ दूर ज़रूर हो गई थीं। मैं अपना होश-हवास ठीक रक्खूँ, तो मैं काम के समय सब बाधाओं पर जय प्राप्त करूँगा। परन्तु फिर भी इसने काम करना आरंभ न किया, और इस समय तो उसको विश्वास हो गया कि मैं यह काम नहीं कर सकता। किंतु जब ७ बजे का घंटा सुनाई दिया, तो वह स्वप्न की-सी दशा से उठा, और उठकर चल पड़ा। जब वह सीढ़ी के नीचे पहुँचा, तो उसको विदित हुआ कि इसके सभी संकल्पों पर पानी फिर गया। रसोई का दरवाज़ा तो खुला हुआ था, परन्तु नेस्टेस्यिा वहाँ कपड़े फैला रही थी। युवा को देखकर वह इसकी ओर ध्यान से देखने लगी। उसकी आँख बचाकर बिना कुछ कहे वह वहाँ से

पड़ा। कुल्हाड़ी ही नहीं, तो काम कैसे बनेगा ? वह बहुत दुःखी हो गया। परन्तु इस समय उसके भाव निराशा के कारण जानवरों-जैसे हो गए। और, वह हँसता हुआ नीचे उतर गया। वह फाटक पर खड़ा हो गया, और सोचने लगा। गलियों में घूमना और कमरे में वापस जाना, दोनों ही उसको बुरे लगते थे। वह कुली की कोठरी के दरवाजे के सहारे खड़ा होकर यह सोचने लगा—आहा, कैसा अच्छा अवसर निकल गया !" तुरंत ही कुली के अँधेरे कमरे में किसी वस्तु ने उसका चित्त आकर्षित किया। उसने इधर-उधर देखा, कोई समीप न था। दो सीढ़ियाँ वह पंजों के बल उतरा और कुली को आवाज़ दी। कोई उत्तर न मिला। वह कमरे में घुस गया, और लकड़ियों में से कुल्हाड़ी निकालकर, उसको छिपाकर, चल पड़ा। उसको किसी ने नहीं देखा। वह हँसता हुआ चला। अब उसका साहस और बढ़ गया था।

वह सड़क पर नीचो निगाह किए, पथिकों की आँख बचाए, चला जा रहा था। तुरंत ही उसको अपनी टोपी का ख़याल आया। हे ईश्वर ! मेरे पास पैसा था, और मैंने यह न बदली। एक दूकान में उसने देखा कि, सात बजकर दस मिनट हो गए हैं। उसको अभी दूर जाना था; क्योंकि वह टेढ़े रास्ते से जा रहा था। इस समय वह अपने विचारों को दूर रक्खे हुए था, और राह में यह सोच रहा था कि किस प्रकार बाग़ीचों में उन्नति की जा सकती है, फौवारे कहाँ-कहाँ लगने चाहिए, तथा लोग यों बग़ीचे और फौवारे छोड़कर कीचड़, चूने और ईंटों में रहते हैं, जहाँ से बड़ी दुर्गन्ध आती है। फिर उसके मन में यह विचार आया कि मनुष्य किस प्रकार अपने असली विचार को छिपाकर दूसरी बातों का ध्यान करता है। लो, फाटक पर पहुँच गए। मकान पर पहुँचते ही साढ़े सात का घण्टा बजा।

उसको किसी ने देखा नहीं। एक घास की गाड़ी जा रही थी, उससे वह बिलकुल छिप गया। गाड़ी की दूसरी ओर झगड़ा हो रहा

था। उधर ध्यान न देकर वह एक क्षण में बुढ़िया के ज़ीने पर पहुँच गया। अपनी साँस को सम्हालकर, अपने धड़कते हुए दिल पर हाथ रखकर, कुल्हाड़ी को पकड़े हुए वह धीरे-धीरे चढ़ने लगा। सुनने के लिये वह बीच में रुक भी जाता था। सीढ़ी पर सन्नाटा था, सब दरवाजे बन्द थे, कोई उसको मिला नहीं। दूसरी मंजिल में एक खाली कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था। यहाँ दो चित्रकार काम कर रहे थे। उन्होंने सिर उठाकर नहीं देखा। वह ठहर गया, और सोचने लगा, अच्छा होता यदि ये यहाँ न होते। परन्तु फिर भी काम अभी दो मंजिल ऊपर करना है। वह फिर ऊपर चढ़ा, और एलेन के दरवाजे पर पहुँचा। एलेन के सामने का कमरा खाली था। तीसरी मंजिल का कमरा भी, जो बुढ़िया के कमरे के नीचे था, खाली था। रोडियन ने खड़े होकर सोचा, क्या यह अच्छा न होगा कि मैं वापस चला जाऊँ? इस प्रश्न का उत्तर दिए बिना ही उसने इधर-उधर देखा। बुढ़िया के कमरे से कोई आवाज़ नहीं आती थी। सीढ़ियों पर बिलकुल सन्नाटा था। उसने अपनी कुल्हाड़ी फिर टटोली। सोचा, मैं कुछ पीला पड़ गया हूँ, मैं घबराया हुआ हूँ। कहीं वह कुछ सन्देह न करे। अच्छा, कुछ देर ठहरकर अपने भावों को शान्त कर लूँ।

शान्त होने के बजाय उसका दिल और ज़ोर से धड़कने लगा। अब वह ठहर न सका, और उसने घंटी बजाई। आधे मिनट बाद फिर बजाई; पर कोई उत्तर न मिला। बुढ़िया घर में थी, परन्तु संदिग्ध प्रकृति की और इस समय अकेले होने के कारण वह और भी सशंकित हो गई। रोडियन एलेन का स्वभाव जानता था। उसने अपना कान दरवाजे पर लगाया। उसे यह पता लगा कि किसी का हाथ ताले पर है, और अन्दर कपड़े दरवाजे से लगकर खड़-खड़ बोल रहे हैं। अन्दर भी कोई आदमी वैसे ही छिपकर दरवाजे से कान लगाए खड़ा है।

रहस्य जानने के लिये युवा इधर-उधर घूमने और ज़ोर-ज़ोर से बकने लगा। फिर उसने तीसरी बार घंटी बजाई। रोडियन अपने जीवन-भर इस क्षण को नहीं भूला। उसको पीछे भी बहुधा यह ख़याल आता था कि वह किस प्रकार उस समय, जब उसके भाव उसकी बुद्धि को दबाए हुए थे, इतना चतुर हो गया था। थोड़ी देर के बाद किसीने सिटकनी खींची।

—

सातवाँ परिच्छेद

बुढ़िया ने बहुत थोड़ा-सा दरवाज़ा खोला, और अँधेरे में संदेह की दृष्टि से देखने लगी। रोडियन के होश-हवाश जाते रहे, और उसने एक बड़ी भूल कर दी। पर इस भय से कि कहीं बुढ़िया फिर दरवाज़ा न बंद कर ले, उसने उसे अपनी ओर खींचा। परन्तु यह देखकर बुढ़िया दरवाजे से चिमट गई, और रोडियन ने उसे भी दरवाज़े के साथ खींच लिया। वह होश में आई, और भयभीत होकर राह रोककर खड़ी हो गई।

रोडियन ने शान्त भाव से कहा,—"एलेन सलाम, मैं कुछ गिरवी रखने को लाया हूँ। चलो, रोशनी में चलें।" वह उसको धक्का देकर कमरे में घुस गया। हक्की-बक्की होकर बुढ़िया उसके पीछे चली। वह बोली—"तुम कौन हो, और क्या चाहते हो?"

"एलेन, क्षमा करो। मैं तुम्हारा मित्र रोडियन हूँ। अपनी प्रतिज्ञानुसार मैं कुछ गिरवी रखने आया हूँ।" और, पैकेट निकालकर उसने बुढ़िया को दे दिया। बुढ़िया ने पैकेट देखने के पहले आगन्तुक की ओर बड़े ध्यान से देखा। एक मिनट तक संदिग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। रोडियन ने समझा, वह सब ताड़ गई। उसको मालूम हुआ कि मेरा रंग फीका पड़ गया, और यदि वह मेरी ओर बिना कुछ कहे और देखती रही, तो मुझे भागना पड़ेगा।

उसने क्रोध से कहा—"तुम मेरी ओर क्यों देखती हो? गिरवी रखना हो तो रक्खो, नहीं जवाब दो। समय नष्ट करने के लिये मैं नहीं आया हूँ।"

यह बात सुनकर वह शान्त हो गई।

"परन्तु बच्चे, तुम इतने अधीर क्यों हो? यह क्या लाए हो?"



उसकी उँगलियाँ कुल्हाड़ी पकड़ने में मानो इनकार कर रही थीं।

(पृष्ठ [illegible])

N. K. Press, Lucknow.

"यह चाँदी का सिगरेटकेस है, जिसके विषय में मैंने तुमसे उस दिन कहा था।"

"परंतु तुम इतने पीले क्यों पड़ गए हो, तुम्हारे हाथ क्यों काँपते हैं? बच्चे, क्या बात है?"

"ज्वर है; तुम्हारे पास भी अगर खाने को न हो, तो पीली पड़ जाओगी।"

उसका उत्तर सुनकर बुढ़िया ने गिरवी रखने की चीज़ ले ली। उसने उसकी ओर देखकर और हाथ से उसका वज़न अन्दाज कर कहा—"यह क्या है?"

"चाँदी का सिगरेट-केस। खोलकर देखो।"

"यह चाँदी तो नहीं मालूम होती। इसकी गाँठ तो बड़ी कड़ी है।"

वह रोशनी की ओर होकर गाँठ खोलने लगी। (गरमी होने पर भी सब खिड़कियाँ बंद थीं। उसकी पीठ रोडियन की ओर थी। कुछ देर तक उसने रोडियन की ओर ध्यान न दिया।) रोडियन ने कोट खोला, कुल्हाड़ी पर हाथ रक्खा; परन्तु उसको कोट के नीचे से निकाला नहीं। उसके हाथ-पैर निर्बल हो रहे थे। प्रतिक्षण उसको सनसनी मालूम हो रही थी। उसकी उँगलियाँ कुल्हाड़ी पकड़ने से मानों इनकार कर रही थीं। उसके सिर में चक्कर आने लगा।

एलेन ने क्रोध से उसकी ओर देखकर कहा—"यह क्या लाए हो?"

अब वक्त खोने का समय न था, उसने कुल्हाड़ी खींची, और दोनों-हाथों से उठाकर, बिना शक्ति लगाए उसके सिर पर मार दी। अब उस की शक्ति वापस आ गई। एलेन नंगे सिर रहा करती थी। उसके थोड़े-से सफ़ेद बाल जूड़े में बँधे थे, और एक सींग की कंघी उनमें लगी थी। कुल्हाड़ी उसकी गर्दन पर पड़ी। वह कुछ बोल न सकी, और ज़मीन पर ढेर हो गई। एक हाथ उसने बचाने को अपने सिर पर रक्खा, और दूसरे हाथ से गिरवीवाली चीज़ को पकड़े देखती रही। रोडियन को शक्ति

आ चुकी थी। उसने दो बार बुढ़िया की चाँद पर कुल्हाड़ी का वार किया। शरीर लोट गया, ख़ून की धारा बह चली। युवा कुछ पीछे हट गया। बुढ़िया धरती पर गिर पड़ी, और मर गई। उसकी आँखें निकली पड़ती थीं, और मृत्यु के कष्ट से उसकी आकृति भयंकर हो रही थी। रोडियन ने कुल्हाड़ी रख दी, और लाश की तलाशी लेना शुरू किया, परन्तु इस बात का ध्यान रक्खा कि वह ख़ून से भर न जाय। उसको याद था कि पिछली बार एलेन ने दाहनी जेब से चाबी निकाली थी। उसकी बुद्धि ठीक थी। उसको अब चक्कर नहीं आ रहे थे, परन्तु उसके हाथ काँप रहे थे। उसको यह ख़याल आता था कि मैंने बड़ी चतुरता से काम किया है, नहीं तो मैं ख़ून से भर जाता। चाबी उसे मिल गई। वह लोहे के छल्ले में थी। उनको लेकर रोडियन सोनेवाले कमरे में घुसा। यह बहुत छोटा कमरा था। एक ओर दीवाल में चित्र लगे थे, दूसरी ओर एक साफ़ बिछौना बिछा था, तीसरी ओर आलमारी थी। युवा ने आलमारी खोलने की चेष्टा की, और जैसे ही वह कुंजी लगाने लगा कि उसका सारा शरीर काँप उठा। उसे यह ख़याल आया कि चलो, वापस चलें। यह ध्यान थोड़ी ही देर के लिये था। अब इतना करके वापस जाना असंभव था।

वह अपने विचार पर हँसने लगा। तुरन्त ही वह चौंका, कहीं बुढ़िया जीवित न हो! कदाचित् होश में आ गई हो। कुंजियों और आलमारी को छोड़कर वह लाश की ओर गया, कुल्हाड़ी उठाई। परन्तु इसकी कोई आवश्यकता न थी। एलेन निःसन्देह मर चुकी थी। झुककर उसने देखा, उसकी खोपड़ी बिलकुल फट गई थी। वह उसको उँगली से छूना चाहता था, परन्तु व्यर्थ समझकर नहीं छुआ। फ़र्श पर ख़ून की नदी बह रही थी। उसने बुढ़िया की गर्दन में एक तागा बँधा हुआ देखा। युवा ने उसको खींचा, परन्तु वह नहीं टूटा। हत्यारे ने उसे निकालना चाहा फिर भी वह नहीं टूटा। तागा किसी चीज़ से अटककर

रुक गया था। अधीर होकर रोडियन ने कुल्हाड़ी उठाई, और तागे को लाश से अलग करने के लिये लाश को काटना चाहा। परन्तु उसने ऐसा किया नहीं। शायद उसको यह कार्य अमानुषिक विदित हुआ। अंत में, दो मिनट के बाद, अपने हाथों में .खून लगाकर, कुल्हाड़ी की सहायता से, उसने तागा काट लिया। इस तागे में रुपयों की थैली बँधी थी एक तग़ा था, और दो क्रॉस। यह चमड़े की थैली थी। और, जितने रुपए उसमें आ सकते थे, उसने भरकर थैली जेब में रख ली। क्रॉस बुढ़िया की छातीपर फेंक दिए, और कुल्हाड़ी लेकर सोनेवाले कमरे में घुस गया।

अब उसकी अधीरता बढ़ गई। कुंजिएँ लेकर अपना काम करना आरंभ किया। परन्तु बार-बार चाबी लगाने पर भी आलमारी के ख़ाने न खुलते थे; क्योंकि हमेशा वह कोई-न-कोई भूल कर देता था। वह जानता था कि चाबी इस ताले में नहीं लगेगी; परन्तु फिर भी लगा देता था। तुरन्त ही उसको ख़याल आया कि यह बड़ी कुंजी, जो छोटी चाबियों के साथ छल्ले में थी, ख़ानों की नहीं, किसी सन्दूक की है, जिसमें बुढ़िया अपना माल रखती थी। ख़ानों को छोड़कर उसने पलँग के नीचे देखना शुरू किया; क्योंकि बुड्ढी औरतें अपना माल आमतौर से पलँग के नीचे रखती हैं। वहाँ वास्तव में एक ट्रंक था, जो लोहे की कीलों से जड़ा हुआ था। रोडियन ने उसमें चाबी लगाई, सन्दूक खुल गया। सन्दूक में सबसे ऊपर एक खाल का लबादा था, जिसमें लाल गोट लगी हुई थी। उसके नीचे एक रेशमी ओढ़ा था, और फिर एक दुशाला। शेष सब चीथड़े थे। युवा ने अपने .खून-भरे हाथ लाल गोट में पोंछने शुरू किए। लाल गोट पर .खून कुछ मालूम न होगा। पर तुरन्त ही उसने अपना विचार बदल दिया, और उसने कहा, क्या मैं पागल हो गया हूं। इतने में कपड़ों के भीतर से एक सोने की घड़ी निकल पड़ी। तब उसने सन्दूक से एक-एक करके सब चीज़ें निकालीं। चीथड़ों में बहुत-सी सोने की चीज़ें निकलीं, जो बुढ़िया

के पास लोगों की गिरवी रक्खी थीं—हार, जंजीरें, कानों के बुंदे और छोटे-छोटे बहुत से गहने थे। कुछ तो ख़ानों में थे, और कुछ अख़बार के टुकड़ों में लिपटे हुए। रोडियन ने उनको खोलकर नहीं देखा, सीधे अपने कोट और पतलून की जेबों में भर लिया। इतने में उसको दूसरे कमरे में पैर की आहट सुनाई पड़ी।

वह डरकर चुप हो गया। परन्तु फिर कोई आवाज़ न सुनाई दी। इसलिये उसको ख़याल हुआ, कदाचित् मुझको धोखा हुआ। तुरन्त ही उसने एक बहुत ही धीमी-सी चीख़ सुनी, जैसे कोई स्त्री रो रही हो। एक या दो मिनट के बाद फिर सन्नाटा हो गया। रोडियन फ़र्श पर बैठा हुआ था। तुरन्त ही वह उठा। उसने कुल्हाड़ी उठाई, और दूसरे कमरे में पहुँचा। कमरे के बीच में एलिज़बेथ सिर पर गठरी लिए हुए अपनी बहन की लाश को भयभीत होकर देख रही थी। चिल्लाने की उसमें शक्ति नहीं रही थी। हत्यारे को देखकर वह काँपने लगी, और उसके चेहरे पर बल पड़ गए। उसने अपने हाथ उठाए, चिल्लाना चाहा, परन्तु आवाज़ नहीं निकली। वह रोडियन को देखती रही, और धीरे-धीरे कोने में चली गई। बेचारी इतनी शान्त थी, जैसे साँस ही न चलती हो। युवा कुल्हाड़ी लेकर उस पर झपटा। उस स्त्री के होठों का भाव ऐसा था, जैसा उन छोटे बच्चों का होता है, जो किसी चीज़ से डरकर उसकी ओर देखते जाते और चिल्लाना चाहते हैं। वह इतनी भयभीत हो गई थी कि उसने अपने हाथ भी अपने सिर पर उठाकर नहीं रक्खे, जैसा कि लोग अपने बचाव के लिये ऐसे मौक़े पर किया करते हैं। उसने अपना बायाँ हाथ धीरे-से उठाया, जैसे रोडियन से कह रही हो कि दूर रहो। पर कुल्हाड़ी उसकी खोपड़ी में लगी, और चोटी से माथे तक उसका सिर खुल गया। एलिज़बेथ भी मर गई। रोडियन ने उसकी गठरी छीनकर फेंक दी, और दूसरे कमरे में चला गया।

वह भयभीत हो गया था; क्योंकि इस दूसरी हत्या का उसने कुछ

विचार तक न किया था। वह शीघ्र भागना चाहता था। यदि वह इस समय अपनी दशा को समझता, यदि उसको यह ख़याल आता कि भागने में बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं, यदि वह यह समझता कि उसने बड़ा घृणित कार्य किया है, यदि वह यह समझता कि अब इस घर से भागने में बहुत-सी बाधाएँ हैं, तो वह उसी समय शीघ्र थाने में जाकर सब हाल कह देता। यह कायरता न होती, परन्तु भय के कारण ऐसा होता। उसको अब भागने की इतनी चिन्ता हो गई कि उसने ट्रंक के पास जाना और उस कमरे में फिर घुसना असंभव समझा। वह सोचते-सोचते ध्यान में मग्न हो गया, और अपनी दशा को भूलकर छोटी-छोटी बातों पर विचार करने लगा। थोड़ी देर में उसे रसोईघर में, एक तिपाई पर पानी का भरा हुआ पीपा देख पड़ा। उसको अपने हाथ और कुल्हाड़ी धोने का ख़याल आया। उसके हाथ लोहू से चिपचिपा रहे थे। कुल्हाड़ी का फल उसने पानी में डुबो दिया, और एक साबुन का टुकड़ा, जो पास ही खिड़की पर रक्खा था, उठाकर अपने हाथ, लोहे का फल और लकड़ी का बेंट साफ़ करने लगा।

धोकर उसने एक सूखे कपड़े से सब पोंछ डाला। खिड़की के पास जाकर उसने कुल्हाड़ी को देखना शुरू किया। ख़ून के दाग़ छिप गए थे; परन्तु बेंट अभी गीला था। उसने वहीं कोट के नीचे उसे रख लिया, और फिर अपने कपड़ों पर ध्यान दिया। धीमी रोशनी में उसको अपने कोट और पतलून में कोई दाग़ नहीं देख पड़ा, परन्तु जूते पर कुछ ख़ून के धब्बे थे। एक गीले चीथड़े की सहायता से उसने दाग़ पोंछे। धुँधली रोशनी में उसको यह विश्वास नहीं हुआ कि दाग़ सब मिट गए हैं। कमरे के बीच में वह चुपचाप खड़ा हो गया, और उसको यह ख़याल आया कि मैं पागल हो रहा हूँ, और मेरी दशा ऐसी है कि मैं अपनी रक्षा नहीं कर सकता। हे ईश्वर! अब मुझको भागना चाहिए। यह कहकर वह बाहरवाले कमरे की ओर झपटा।

परन्तु वह घबराकर खड़ा हो गया। बाहर का दरवाज़ा, जहाँ उसने, थोड़ी देर हुई, अभी घंटी बजाई थी, पूरी तरह खुला हुआ था। कदाचित् बुढ़िया उसमें ताला या सिटकनी लगाना भूल गई थी, और इसी के बाद एलिज़बेथ उसके अंदर इसी रास्ते से आई थी। "फिर उस समय मुझको क्यों नहीं ख़याल आया कि दरवाज़ा खुला हुआ है; क्योंकि एलिज़बेथ दीवाल के अन्दर से तो आ नहीं सकती थी"। उसने दरवाज़े की सिटकनी लगा दी। "परन्तु नहीं, मुझको अब यह सब न करना चाहिए, मुझे अब भागना चाहिए।" उसने सिटकनी खोली, और सुनने लगा। थोड़ी देर तक खड़ा रहा। नीचे दो मनुष्यों के लड़ने की आवाज़ आ रही थी। "ये लोग कौन हैं!" वह फिर सुनने लगा। अन्त में लड़नेवाले चले गए, और युवा भी जाने ही को था कि नीचे फिर गाने की आवाज़ आई। रोडियन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये लोग कौन हैं। दरवाज़ा बंद करके वह फिर खड़ा हो गया। फिर सन्नाटा हो गया। और, जैसे ही वह जाने को हुआ कि नीचे के ज़ीने पर उसको पैरों की आहट सुनाई दी। वह समझ गया कि कोई बुढ़िया के पास आ रहा है। इस आहट में क्या विशेष बात थी, जो उसको ऐसा ख़याल हुआ। यह चाप भारी थी, और धीरे-धीरे आनेवाले की थी। पहली मंजिल पर चढ़कर भी वह आदमी ऊपर चढ़ता रहा। चाप साफ़ सुनाई देने लगी, और प्रत्येक क़दम पर वह आदमी हाँफता है, ऐसा जान पड़ने लगा। उसने तीसरी मंजिल पर चढ़ना शुरू किया। वह शीघ्र ही चौथी पर पहुँचेगा, यह सोचकर रोडियन को जैसे पक्षाघात हो गया। रोडियन की दशा ऐसी हो गई, जैसी उस मनुष्य की होती है, जिसके पीछे स्वप्न में शत्रु दौड़ते और पकड़कर मारना चाहते हैं, परन्तु वह हिल नहीं सकता।

आगन्तुक अब चौथी मंजिल पर चढ़ रहा है, रोडियन ने यह समझ लिया, और अपने भय को हटाकर, कमरे में घुसकर, दरवाज़ा बंद

कर लिया। धीरे-से सिटकनी भी लगा दी, और पास ही चुपके-से खड़ा होकर सुनने लगा। आगन्तुक चौथी मंज़िल पर पहुँच गया। अब दोनों के बीच में केवल एक दरवाज़ा रह गया। आगन्तुक थोड़ी देर तक हाँफता रहा। युवा ने अपनी कुल्हाड़ी पकड़कर सोचा, यह कोई बलवान् मनुष्य प्रतीत होता है। उसको यह सब स्वप्न-सा प्रतीत होता था। आगन्तुक ने घंटी बजाई। और, उसको कोई अन्दर चलता हुआ जान पड़ा। वह थोड़ी देर तक चुप रहा। उसने फिर घंटी बजाई। अन्त को अधीर होकर उसने दरवाजे पर धक्का देना शुरू किया। रोडियन को ऐसा विदित हुआ, मानों सिटकनी टूटनेवाली है। इतने ज़ोर से वह धक्का दे रहा था। उसकी समझ में यह आया कि मैं सिटकनी को पकड़ लूँ; परन्तु उसको ध्यान आया कि इससे सब भेद खुल जायगा। उसके सिर में चक्कर आ गया, परन्तु शीघ्र ही उसको होश भी आ गया, और, आगन्तुक बाहर चिल्लाने लगा—"क्या दोनों सो गई हैं, या किसी ने इनका गला घोंट दिया है? अरी एलेन! जादूगरनी! अरी एलिज़बेथ! खोलो! अरी जादूगरनियो, क्या सो गई हो?"

निराशा की अवस्था में उसने इस बार ज़ोर से घंटा बजाया। ऐसा विदित होता था कि यह मनुष्य अनजान नहीं था, और उसकी आज्ञा ये लोग सदा मानते थे। उसी वक्त सीढ़ी पर कोई दूसरा चढ़ता हुआ आ रहा था। यह दूसरा आदमी चौथी मंज़िल पर आया। रोडियन को नए आगन्तुक की पहले खबर नहीं हुई।

नए आगन्तुक ने पुराने से, दोस्त की आवाज़ में, कहा—"सलाम, काश! क्या यह संभव है कि घर में कोई न हो?"

रोडियन ने सोचा, आवाज़ से तो यह नौजवान मालूम होता है।

काश ने उत्तर दिया—"यह तो भूत जाने? मैंने तो क़रीब-क़रीब ताला भी तोड़ डाला। परन्तु, तुम मुझको कैसे जानते हो?"

"कैसा सवाल है! अरे, अभी परसों तुमको तीन गेम बिलियर्ड के हराए थे।"

"ओह !"

"तो वह घर पर नहीं है। बड़े अचम्भे की बात है। बुढ़िया कहाँ गई होगी ? मुझे उससे कुछ काम है।"

"मुझको भी, बच्चे, उससे कुछ काम है।"

युवा ने कहा—"अब क्या किया जाय ? कदाचित् हमको अब वापस जाना पड़ेगा। मैं कुछ रुपया उधार लेने उसके पास आया था।"

"वापस जाना ही पड़ेगा। परन्तु फिर उसने समय क्यों नियत किया था ? उस बुढ़िया जादूगरनी ने ख़ुद ही यह वक्त मुझसे ठीक किया था। मैं यहाँ से बहुत दूर रहता हूँ। भगवान् जाने, वह कहाँ गई ! मेरी कुछ समझ में नहीं आता। वह तो साल-भर में एक दिन भी बाहर नहीं निकलती, यहीं सड़ा करती है। उसकी टाँगों में सदा कुछ-न-कुछ कष्ट रहता है। आज कहाँ छिप गई ?"

"चौकीदार से पूछना चाहिए।"

"क्या ?"

"यही कि वह गई कहाँ है, और कब वापस आवेगी ?"

"हुँ, क्या आपका प्रश्न है—वह कहीं नहीं जाती। उसको दैव ले जाय। अब वापस जाना पड़ेगा।" यह कहकर उसने दरवाजे पर फिर धक्का दिया।

युवा ने कहा—"ठहरिए, एक बात का तो आपने ख़याल ही नहीं किया। जब हम दरवाज़ा खींचते हैं, तो यह रुकता कैसे है ?"

"इससे क्या ?"

"इससे विदित होता है कि इसमें ताला नहीं लगा है, परन्तु चिटकनी लगी है देखिए, यह कड़कड़ क्यों बोलता है ?"

"तो फिर ?"

"इससे विदित होता है कि उनमें से एक तो घर में अवश्य ही है। यदि दोनों बाहर गई होतीं, तो ताला बन्द होता, चिटकनी न बंद होती। क्या आपको आवाज़ नहीं सुनाई देती ? चिटकनी बंद रहने का

तलब यह है कि उनमें एक घर में ज़रूर है। इससे यही परिणाम निकला कि कोई घर में है; परन्तु किसी कारण से किवाड़ नहीं खोलती।"

"हाँ, तुम्हारा विचार ठीक है। कोई तो अवश्य घर में है।" और, फिर उसने दरवाज़े पर ज़ोर से धक्का देना आरम्भ किया।

युवा ने कहा—"ठहरिए, इस तरह मत खींचिए। इसमें कुछ रहस्य है। आपने घण्टी बजाई, शक्ति-भर दरवाजे पर धक्के दिए; परन्तु कोई उत्तर न मिला। या तो वह मूर्छित है, या—।"

"क्या ?"

"हमको चौकीदार को ऊपर बुलाना चाहिए कि वह मालूम करे कि क्या बात है।"

"विचार तो अच्छा है।" दोनों नीचे की ओर चले।

"तुम यहीं ठहरो; मैं चौकीदार को बुला लाता हूँ।"

"यहाँ ठहरकर क्या होगा ?"

"कोई नहीं कह सकता कि क्या हो जाय ?"

"अच्छा।"

"देखिए, मुझको कदाचित् लोग मजिस्ट्रेट समझें। यह स्पष्ट है कि इसमें कोई रहस्य अवश्य है।" युवा यह कहकर, उत्तेजित होकर, नीचे की ओर शीघ्रता से चला गया।

काश ने फिर घण्टी बजाई, और दरवाजे का मुट्ठा इधर-उधर घुमाने लगा, जिससे उसको विदित हुआ कि खाली सिटकनी लगी है। इसके बाद उसने झुककर ताले के छेद से देखना चाहा। परन्तु उसमें चाबी लगी हुई थी, और वह कुछ देख न सका। उधर भीतर रॉडियन कुल्हाड़ी लिए खड़ा था। उसको सरसाम-सा हो रहा था, और वह इसलिये तैयार था कि यदि वे ज़बरदस्ती घुसेंगे, तो उन पर वार करूँगा। कई बार उसको यह ख़याल हुआ कि मैं दरवाज़ा खोलकर उनसे सब हाल कह दूँ। कभी उसकी यह भी इच्छा हुई कि उनको

गालियाँ दूँ। उसको यह बराबर ख़याल आता रहा कि जितनी जल्दी यह बात ख़त्म हो, अच्छा है।

"दैव उनको ले जाय। समय बीत गया, परन्तु कोई आया नहीं।" काश का धीरज जाता रहा। "दैव उनको ले जाय" यह कहकर वह भी नीचे युवा के पीछे चला। धीरे-धीरे उसके जूतों की चाप का सुनाई देना बंद हो गया।

"भगवान् मैं क्या करूँ?" रोडियन ने सिटकनी खोली, और दरवाज़े को थोड़ा-सा खोलकर देखा। सन्नाटा पाकर बिना कुछ सोचे-समझे वह बाहर निकल आया। फिर, धीरे से बंद करके, वह नीचे की ओर चला। परंतु छिपेगा कहाँ? छिपना असंभव है, यह सोचकर वह फिर ऊपर की ओर चला।

"मार डालूँगा, ठहरो।" यह कहता हुआ एक मनुष्य एक कमरे से निकलकर नीचे की ओर भागा। "डिमेट्री, डिमेट्री, तुझको दैव ले जाय।"

फिर शान्ति हो गई, और वह आदमी चिल्लाता हुआ बाहर निकल गया। परन्तु थोड़ी ही देर के बाद बहुत-से आदमी ज़ोर से बातें करते-करते ऊपर आते हुए मालूम हुए। तीन या चार होंगे। रोडियन ने युवा की आवाज़ पहचानी—वही है, अब बचने की आशा करना व्यर्थ है। यह सोचकर वह उनसे मिलने के लिये आगे बढ़ा। उसने सोचा, कि यदि उन्होंने मुझे रोका, तो सब समाप्त हो गया। यदि नहीं रोका तब भी समाप्ति है। उनको यह याद रहेगा कि मैं ज़ीने से नीचे जा रहा था। एक मंज़िल बीच में रह गई थी कि तुरन्त ही उसको ख़याल आया कि मैं बच गया। दूसरी मंज़िल में दाहनी ओर एक कमरा खुला हुआ था, और वह ख़ाली था। इसमें पहले चित्रकार काम कर रहे थे, और वे अभी-अभी चले गए थे। अभी कुछ मिनट हुए, वे ही कोलाहल करते हुए गए थे। फ़र्श पर ताज़ा रंग पड़ा था। सब चीज़ें कमरे में पड़ी थीं—एक छोटा टब था, कुछ रंग एक मिट्टी के पात्र में था, और एक बड़ा ब्रुश था। देखते-ही-देखते रोडियन इस कमरे में घुस गया, और दीवाल के पीछे छिप गया। उसी दम

उसका पीछा करनेवाले भी वहाँ पर पहुँचे; परन्तु वहाँ न रुककर बातें करते हुए चौथी मंज़िल पर चढ़ गए। कुछ देर ठहरकर जब वे कुछ ऊपर चले गए, वह पंजों के बल जल्दी-जल्दी नीचे उतरा। ज़ीने में कोई नहीं था, दरवाज़े पर भी कोई नहीं था। वह शीघ्रता से बाहर निकला, और सड़क पर पहुँचकर, बाएँ हाथ की ओर तेज़ी से चल दिया।

वह यह भली भाँति जानता था कि उसकी खोज करनेवाले इस समय बुढ़िया के कमरे में होंगे। उनको यह आश्चर्य होगा कि जो दरवाज़ा अभी तक बंद था, वह अब कैसे खुला हुआ है। वे अब लाशों को देख रहे हैं, और कम-से-कम एक मिनट में इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि हत्यारा—जब वे ज़ीने पर आ रहे थे—उनसे छिपकर निकल गया। कदाचित् उनको यह भी सन्देह हो कि हत्यारा दूसरी मंज़िलवाले ख़ाली कमरे में छिपा हुआ था, जब वे शीघ्रता से मकान के ऊपर के हिस्से में जा रहे थे। परन्तु इन विचारों के आने पर भी उसने अपना क़दम तेज़ नहीं किया। पहले मोड़ पर पहुँचने के लिये अभी उसको सौ क़दम चलना था। "यदि मैं किसी दरवाजे के पीछे, किसी उजड़ी हुई गली में, छिप रहूँ, और वहाँ कुछ देर ठहरा रहूँ? नहीं, इससे काम न चलेगा। मैं अपनी कुल्हाड़ी कहीं फेंक दूँ, और किराए की गाड़ी पर कहीं रवाना हो जाऊँ। नहीं, यह भी ठीक नहीं।" अन्त में वह एक तंग गली में पहुँचा। चोर की तरह उसमें घुसा। वह समझता था कि यहाँ मैं सर्वथा सुरक्षित हूँ। यहाँ मुझ पर कोई सन्देह नहीं कर सकता। परन्तु फिर उसको यह ख़याल आया कि भीड़ में मिल जाने से कोई मुझको पहचान नहीं सकता। इन सब बातों ने उसको इतना निर्बल कर दिया था कि उसको चलना कठिन हो गया था। पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें उसके माथे से टपक रही थीं, और उसकी गर्दन सर्वथा भीग गई थी। जब वह नहर के किनारे पहुँचा, तो एक मनुष्य ने उसको शराबी समझकर उससे कहा—

"मालूम होता है, तुमने आज ख़ूब पी है।"

वह नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। वह जितना ही दूर जाता था, विचार-शून्य होता जाता था। नहर पहुँच कर, वहाँ थोड़े-से मनुष्यों को देखकर, उसको यह भय हुआ कि कहीं मैं पकड़ न लिया जाऊँ। उसमें चलने की शक्ति नहीं थी, परन्तु फिर भी, वह बहुत लंबे रास्ते से घर की ओर चला। घर के चौखट पर पहुँचकर उसको होश आया; परन्तु कुल्हाड़ी का ख़याल ज़ीने पर पहुँचने के पहले नहीं हुआ। इस वक्त यह सवाल बड़ा मुश्किल था कि किस तरह से वह विना किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किए हुए कुल्हाड़ी को वहाँ रख दे, जहाँ से उठा ले गया था। यदि वह होश में होता, तो उसकी समझ में यही ठीक जान पड़ता कि उसके वहाँ रखने से तो यही अच्छा था कि किसी घर के अहाते में उसको फेंक दे।

अस्तु, उसको कोई अड़चन नहीं हुई। कुली की कोठरी बंद थी, परन्तु ताला नहीं लगा था, और यह विदित होता था कि कुली घर में है। लेकिन रोडियन की विचार-शक्ति इस योग्य नहीं थी कि वह कुछ सोच सके। वह दरवाज़ा खोलकर अन्दर घुस गया। यदि कुली उससे पूछता कि तुम क्या चाहते हो, तो वह कुल्हाड़ी उसके हाथ में रख देता। परन्तु कुली उपस्थित नहीं था। और, युवा ने कुल्हाड़ी को जिस तरह रक्खी हुई पाया था, उसी तरह रख दी। वह ऊपर चढ़ा, और अपने कमरे में पहुँचा। ज़ीने पर उसे कोई नहीं मिला। मालकिन का कमरा बन्द था। घर पहुँचकर वह पहले की तरह कोच पर लेट गया। उसको नींद नहीं आई, लेकिन क़रीब-क़रीब आधा बेहोश पड़ा रहा। यदि कोई उस समय उसके सामने आता, तो वह खड़ा होकर चिल्लाने लगता। उसका सिर चक्कर खा रहा था, नाना प्रकार के विचार उठ रहे थे। वह बहुत प्रयत्न करने पर भी कोई स्थिर विचार न कर सका।

पवित्र पापी

दूसरा भाग

परिवर्तन

पहला परिच्छेद

रोडियन कोच पर देर तक पड़ा रहा। कभी-कभी वह जाग पड़ता था। उसे जान पड़ता था कि रात बहुत बीत गई। परन्तु उसकी समझ में नहीं आया कि करना क्या चाहिए। रात बीत चुकी, और प्रातःकाल तक वह उसी प्रकार, उसी दशा में, चुपचाप पड़ा रहा। राह में शोर-गुल होने लगा, सड़क पर झगड़े-झाँसे होने लगे, वह जग गया। और, यद्यपि वह रोज़ ही सुबह को यह सब शोर-गुल सुना करता था, फिर भी वक्त का उसे कभी ख़याल नहीं आया। आज उसने समझा कि दो बज गए, और शराब पीना समाप्त हो गया। वह कुछ सोचकर उठ खड़ा हुआ। क्या अभी दो बज गए? कोच के किनारे वह बैठ गया, और उसको सब बातें एक के बाद एक याद आ गईं। उसने समझा, मैं पागल हो रहा हूँ। उसे जाड़ा लग रहा था। यह जाड़ा ज्वर का था। उसे नींद में बुख़ार चढ़ आया था। जाड़े के मारे उसके दाँत कटकटाने और हाथ-पैर हिलने लगे। वह दरवाज़े पर गया, और खोलकर सुनने लगा। मकान में सन्नाटा था। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ, और वह कमरे में चारों ओर देखने लगा। रात को मैं कैसे विना सिटकनी लगाए, विना

कपड़े उतारे, सिर पर टोपी लगाए ही सो गया। टोपी गिरकर बीचों-बीच कमरे में पड़ी थी। यदि इस समय कोई आता, तो क्या समझता ? यही कि मैं शराब पिए हूँ।

वह खिड़की के पास गया। उजाला हो गया था। उसने अपनी ओर सिर से पैर तक देखा कि कहीं कोई दाग़ तो नहीं है। उसको ऐसे देखने पर विश्वास न था, इसलिये उसने काँपते हुए अपने कपड़े उतारकर ध्यान-पूर्वक तीन बार इन्हें देखा। उसे कहीं कुछ नहीं देख पड़ा। केवल पतलून के मुड़े हुए भाग की निचली ओर कुछ ख़ून की बूँदें जान पड़ीं। एक चाकू निकालकर उसने पतलून के कोने काट डाले। उसको तुरन्त ही रुपयों की थैली और उन चीज़ों का ध्यान आया, जिन्हें उसने वहीं-की-वहीं तुरंत ही बुढ़िया की सन्दूक से निकालकर जेब में रख ली थीं। इनके छिपाने की उसको सुध तक न थी। जब वह अपने कपड़े देख रहा था, तब भी उसको ध्यान न था कि ये सब चीज़ें जेब में हैं। क्या यह संभव था ? एक क्षण में उसने सब चीज़ें निकालकर मेज़ पर ढेर लगा दिया। अब अपनी जेबों को उसने अच्छी तरह देखा कि उनमें कुछ रह तो नहीं गया। फिर वह उन चीज़ों को कमरे के एक कोने में ले गया, काग़ज़ के पीछे एक छेद में उनको भरना शुरू किया। फिर प्रसन्न होकर उसने सोचा, ओहो ! ये तो छिप गईं। खड़े-खड़े उसको ध्यान आया कि उस स्थान का काग़ज़ कुछ फूल-सा गया है। वह भय से काँपने लगा। उसने निराश होकर कहा—हे ईश्वर ! मुझको क्या हो गया है ! क्या इसी प्रकार चीज़ें छिपाई जाती हैं ?

वास्तव में उसको ऐसा माल पाने की आशा न थी। वह तो बुढ़िया का धन चाहता था। आभूषणों के छिपाने के लिये उसके पास स्थान तो था नहीं। उसने सोचा, मेरे प्रसन्न होने का कोई कारण नहीं है। क्या इसी तरह चीज़ें छिपाई जाती हैं ? मेरे होश-हवास ठीक नहीं हैं। वह फिर थककर कोच पर लेट गया। उसको जाड़ा लगने लगा।

उसने अपना पुराना लबादा ओढ़ लिया, और गहरी नींद में सो गया। उसको अपनी ही सुध न रही। पाँच मिनट बाद बड़ा उत्तेजित होकर वह फिर जगा, और बड़े कष्ट से अपने कपड़े देखने लगा। बिना कुछ किए मैं कैसे सो गया! मैंने अभी कुछ नहीं किया है। कुल्हाड़ी छिपाने का कपड़ा कोट में सिला हुआ है, मैं उसके विषय में तो भूल ही गया था। वह कैसा पक्का प्रमाण होता। उसने कपड़े को उधेड़ डाला, और फाड़-फाड़कर टुकड़े अपने तकिए के नीचे रख दिए। इन चिथड़ों से किसी को संदेह न होगा। कम-से-कम मुझे ऐसा विदित होता है। कमरे के बीच में खड़े होकर उसने चारों ओर देखा, और सोचा कि मैं कुछ भूल तो नहीं गया हूँ। उसको बड़ा दुःख हुआ कि स्मृति और बुद्धि, दोनों मुझसे किनारा कर रही हैं। क्या अभी से दण्ड शुरू हो गया? वास्तव में यही दण्ड है।

पतलून के कटे हुए टुकड़े फ़र्श पर, कमरे के बीच में, पड़े थे। पहले आगन्तुक की दृष्टि उन्हीं पर पड़ती। उसने पागल होकर कहा, मैं क्या सोच रहा हूँ। फिर उसके मन में एक विचित्र विचार उत्पन्न हुआ कि मेरे सब कपड़े ख़ून में भरे हुए हैं, और मैं उनको देखने के अयोग्य हो गया हूँ। उसको ध्यान आया कि रुपयों की थैली पर भी ख़ून के दाग़ होंगे, और उसकी जेबें खून से तर होंगी। वास्तव में ऐसा ही है। मेरी बुद्धि जाती रही है। मैं न मालूम क्या कर रहा हूँ। कुछ नहीं, निर्बलता है—सरसाम है। मैं शीघ्र अच्छा हो जाऊँगा। उसने अस्तर को फाड़ डाला। इसी समय सूर्य की किरणें उसके बाएँ जूते पर पड़ीं, जिसकी नोक पर ख़ून के साफ़ छींटे थे। मैंने उस ख़ून की नदी में पैर रख दिया होगा। मैं क्या करूँ? जूते, अस्तर, चीथड़े—ये सब कहाँ जाँयगे? इनको लपेटकर वह कमरे के बीच में खड़ा हो गया। हाँ-हाँ स्टोव है, उसमें जला न दूँ। परन्तु, दियासलाई नहीं। अच्छा, इनको फेंक दो। हाँ-हाँ, यही ठीक है, बिना विलम्ब किए शीघ्र फेंक दो। यह कहकर वह कोच

पर बैठ गया। उसका सिर तकिए पर गिर पड़ा। वह काँपने लगा, और लबादा ओढ़कर फिर सो गया। उसको ऐसा विदित हुआ कि घण्टों हो गए। नींद में वह कई बार गठरी फेंकने के लिये उठना चाहा, परंतु उठ न सका, जैसे किसी ने उसे बिछौने में जकड़ दिया हो। अन्त में वह जागा। दरवाज़े पर कोई खटखटा रहा था। नेस्टेसिया ने पुकारकर कहा—"खोलो, खोलो, कुत्ते की तरह मत सोओ। ग्यारह बज गए हैं।"

"कदाचित् वह अन्दर नहीं है।" यह किसी पुरुष ने कहा।

रोडियन उठा। उसका दिल धड़क रहा था। उसने सोचा, यह आवाज़ तो चौकीदार की जान पड़ती है। इसको क्या काम है ?

नेस्टेसिया ने कहा—"फिर सिटकनी किसने बंद की है ? —खोलो।"

"सब भेद खुल जायगा।" वह उठा, सिटकनी खोली, और फिर बिछौने कर लेट गया। चौकीदार और नेस्टेसिया, दोनों घुसे। नौकरनी रोडियन को देखती रही, और रोडियन चौकीदार की ओर देखने लगा।

चौकीदार ने कहा—"तुम्हारे लिये दफ्तर से नोटिस आया है।"

"कौन दफ्तर ?"

"पुलीस का दफ्तर।"

"किसलिये ?"

"मुझको क्या मालूम। तुम वहाँ बुलाए गए हो, जाओ।"

चौकीदार रोडियन की ओर देखकर जाने को मुड़ा। रोडियन बिना कुछ कहे, काग़ज़ को बिना खोले हाथ में लिए बैठा रहा।

नेस्टेसिया ने कहा—"यदि तुम बीमार हो, तो मत जाओ, और यहीं ठहरो। तुम्हारे हाथ में यह क्या है ?" उसने देखा, उसके दाहने हाथ में फटे हुए पतलून का टुकड़ा, जूता और कोट का अस्तर था। वह उनको लिए-ही-लिए सो गया था। उसे यह ख़याल आया कि इन्हीं को सोचते-सोचते वह सो गया होगा। नेस्टेसिया ने हँसकर कहा—"यह चीथड़े तुम्हारी जायदाद हैं, जिनको तुम छाती से लगाकर सोते हो !"

उसी क्षण उसने उनको कोट के नीचे छिपा लिया, और फिर नेस्टेसिया की ओर ध्यान से देखने लगा। यद्यपि उस समय उसका दिमाग़ काम नहीं करता था, तो भी उसको यह विश्वास हो गया कि यदि मैं हत्या के लिये पकड़ा जाता, तो यह मुझसे ऐसी बातें न करती। परन्तु फिर पुलीस से क्या मतलब?

"क्या तुमको कुछ चाहिए? ठहरो, मैं ला दूँगी।"

"नहीं, मैं शीघ्र जाता हूँ," यह कहकर वह खड़ा हो गया।

"बहुत अच्छा।" वह चौकीदार के पीछे चली गई, और जैसे ही वह चली गई, रोडियन ने प्रकाश में अपने जूतों को देखा, धब्बे थे, परन्तु साफ़ जान नहीं पड़ते थे, कीचड़ से भरे हुए थे। कौन इनको पहचान सकता है? ईश्वर को धन्यवाद है कि नेस्टेसिया कुछ नहीं समझी। उसने काँपते हुए हाथों से लिफ़ाफ़ा फाड़कर नोटिस पढ़ना शुरू किया। कुछ नहीं, साधारण नोटिस था—"साढ़े नौ बजे ज़िले के दफ्तर में उपस्थित हो।"

परन्तु आज ही क्यों?—उसने सोचा। "हे ईश्वर! अब जल्दी सब समाप्त करो" वह घुटनों के बल बैठकर भगवान् से प्रार्थना करने ही को था कि उसको हँसी आई। उसने कहा, मुझको अपने ऊपर विश्वास करना चाहिए, न कि प्रार्थना पर। उसने शीघ्र कपड़े पहने। फिर सोचा, जूते पहनूँ या फेंक दूँ, और सब चिह्न मिटा दूँ। परन्तु उसने पहन लिए, और फिर डरकर तुरंत फेंक भी दिए। उसको ख़याल आया कि मेरे पास और जूता तो है ही नहीं, हँसकर फिर पहन लिए। उसके मुख पर निराशा झलकने लगी, हाथ-पाँव काँपने लगे। उसने सोचा, यह थकावट नहीं, भय है। उसका सिर चक्कर खा रहा था, और कनपटिएँ काँप रही थीं। ज़ीने पर उसको ख़याल आया कि सब चीज़ें तो अभी दीवाल के छेद पर ही रक्खी हैं। और, मेरी उत्पत्ति का सर्टीफ़िकेट कहाँ है? परन्तु उसको फिर निराशा ने घेर लिया, और वह सिर हिलाते

हुए बाहर चला गया। "जितनी जल्दी समाप्त हो, उतना ही अच्छा।" खुली हवा में आने पर उसे फिर वही असहनीय गरमी लगने लगी। वही धूल थी, सड़कों पर वही शराबी लुढ़क रहे थे। सूर्य के प्रकाश में उसके नेत्र चौंधिया गए। उसका सिर ज्वर के समय की तरह चक्कर खा रहा था। सड़क के मोड़ पर पहुँचकर उसने उत्तेजित होकर मकान की ओर देखा, परन्तु फिर अपने नेत्र हटा लिए। दफ्तर में जाते हुए उसने सोचा, यदि वे मुझसे पूछेंगे, तो मैं सब स्वीकार कर लूँगा। दफ्तर दूर नहीं, एक नए मकान में चौथी मंज़िल पर था। अहाते में घुसकर दाहनी ओर उसने एक आदमी को पुस्तकें ले जाते देखा। बिना पूछे वह समझ गया कि यही दफ्तर होगा।

"मैं जाकर घुटनों के बल बैठकर सब स्वीकार कर लूँगा" यह सोचते हुए वह ज़ीने पर चढ़ने लगा। प्रत्येक मंज़िल में रसोईखानों के दरवाज़े खुले हुए थे, ज़ोर से धुआँ और बू आ रही थी। दफ्तर का दरवाज़ा भी पूरा खुला हुआ था। वह अन्दर घुस गया। बहुत-से मनुष्य बाहरवाले कमरे में बैठे हुए थे। असहनीय दुर्गंध आ रही थी। थोड़ी देर ठहरकर वह एक छोटे कमरे में घुस गया। जब उससे किसी ने कुछ न पूछा, तो वह अधीर हो गया। अन्दर के कमरे में कुछ बाबू लोग बैठे लिख रहे थे। वह एक बाबू के पास गया। बाबू ने कहा—"तुम क्या चाहते हो?"

रोडियन ने नोटिस दिखाया। नोटिस देखकर एक बाबू ने पूछा—"तुम विद्यार्थी हो?"

"हाँ, मैं था।" रोडियन ने उत्तर दिया। बाबू ने उसकी ओर देखा। रोडियन ने सोचा, इससे कुछ पता न लगेगा।

बाबू ने कहा—"बड़े बाबू के पास दूसरे कमरे में जाओ।"

वहाँ बहुत-से मनुष्य भरे हुए थे, और दो स्त्रियाँ भी थीं। एक स्त्री शोकसूचक वस्त्र पहने मेज़ के पास बैठी हुई कुछ लिख रही थी।

दूसरी हृष्ट-पुष्ट एवं सुन्दर थी, जो अच्छे कपड़े पहने थी, और एक तश्तरी के बराबर ब्रूच (पिन) लगाए हुए थी। रोडियन ने बाबू को नोटिस दिखाया। बाबू ने कहा—"ठहरो।" और, वह स्त्री से बातें करने लगा।

रोडियन ने साँस लेकर सोचा कि यह कुछ नहीं जानता। धीरे-धीरे उसको होश आने लगा, और वह शान्त हो गया। मैं क्यों इतना मूर्ख बन रहा हूँ, मैं तो सब हाल बता देता। यहाँ तो बड़ी गरमी है। उसका सिर और बुद्धि चक्कर खा रही थी। उसे मालूम हुआ कि मैं अपने ही ऊपर क़ाबू नहीं पा सकता। वह अपना ध्यान किसी नई बात में लगाना चाहता था, परन्तु यह असंभव था। वह बड़े बाबू की ओर देखने लगा, और आकृति से उसका हाल जानना चाहा। यह बाईस वर्ष का युवा था, फ़ैशन के कपड़े पहने था। उँगलियों में बहुत-सी अँगूठियाँ थीं, और वास्कट में एक सोने की चैन लगी थी। वह बहुत अच्छी फ्रांसीसी-भाषा में कभी-कभी किसी से दो-एक बातें कर लेता था।

उसने उस अच्छे कपड़े पहने हुई मेम से, जो खड़ी हुई थी, और जिसको कुरसी पास होने पर भी बैठने का साहस नहीं हुआ था, कहा—"लुई एवानोवना, तुम बैठ सकती हो।" स्त्री ने जर्मन-भाषा में उसको धन्यवाद दिया, और बैठ गई। शोकातुर स्त्री का काम समाप्त हो गया, और जैसे ही वह जाने को हुई कि एक अच्छा गठीला अफ़सर, विचित्र प्रकार से कन्धे हिलाता, खटपट करता हुआ अन्दर घुसा। अच्छे कपड़ेवाली स्त्री उचककर खड़ी हो गई, और बहुत नम्रता से उसे प्रणाम किया। परन्तु अफ़सर ने उसकी ओर कुछ ध्यान न दिया, और मेज़ के पास आराम-कुरसी पर बैठ गया। यह असिस्टेण्ट डिस्ट्रिक्ट-आफ़िसर था। उसकी मूछें लाल थीं, चेहरा भद्दा था, और सिवा परेशानी के और कुछ उसके चेहरे से नहीं मालूम होता था। अधीर होकर उसने रोडियन की ओर से देखा। रोडियन के गंदे वस्त्रों को देखकर उसको

कुछ घृणा उत्पन्न हुई। रोडियन भी उसकी ओर घूरने लगा, और यह बात अफ़सर को बुरी लगी। अफ़सर ने सोचा, यह कैसा फटे-हाल फ़क़ीर है कि मुझको देखकर नहीं घबराया। अफ़सर ने चिल्लाकर कहा—"तुम यहाँ क्यों आए हो?" रोडियन ने हकलाते हुए उत्तर दिया—"मैं बुलाया गया हूँ, इसलिये आया हूँ।"

बड़े बाबू ने एक कागज़ रोडियन की ओर फेंककर कहा—"देखो, इसे पढ़ो; उधार का रुपया तुमने अभी तक नहीं दिया है, उसी के लिये तुम बुलाए गए हो।"

"रुपया—कैसा रुपया? कम-से-कम यह बात तो नहीं है।" यह सोचकर रोडियन हँसी से काँपने लगा। सब बात उसको स्पष्ट हो गई, और उसके कंधों से बोझ-सा हट गया।

अफ़सर ने कहा—"जनाब, आपको यह नोटिस कै बजे मिला? इसमें तो नव बजे आने को लिखा है, इस वक्त तो बारह बजे हैं।"

रोडियन ने ज़ोर से उत्तर दिया—"पंद्रह मिनट हुए, मुझे नोटिस मिला। और, यह कह देना काफ़ी है कि मैं ज्वर से पीड़ित हूँ।"

अफ़सर ने कहा—"तो चिल्लाते क्यों हो?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"मैं चिल्लाया तो नहीं, साफ़ बात कही है। तुम स्वयं चिल्लाते हो। मैं विद्यार्थी हूँ, इस प्रकार का व्यवहार नहीं सह सकता।"

अफ़सर को क्रोध आ गया, उसके मुँह से मानो भाप निकलने लगी। उसने उचककर कहा—"चुप रहो, तुम कचहरी में हो। असभ्यता मत करो।"

"तुम भी कचहरी में हो, और चिल्लाने के अतिरिक्त तुम सिगरट भी पी रहे हो, इस कारण जो सब लोग यहाँ हैं, उनका तुम निरादर कर रहे हो।" रोडियन यह कहकर मन में प्रसन्न हुआ। बाबू को भी हँसी आ गई। परन्तु अफ़सर की समझ में कुछ न आया कि

क्या करूँ। अन्त में बड़े ज़ोर से उसने कहा—"इससे तुमको कुछ मतलब नहीं, तुम काग़ज़ पर लिख दो। एलेक्ज़ेण्डर, इसको दिखाओ। तुम्हारे विरुद्ध शिकायतें हुई हैं कि तुम अपना कर्ज नहीं चुकाते हो, कनकौआ उड़ाना जानते हो।"

रोडियन ने बात को अनसुनी करके काग़ज़ तो ले लिया, पर पढ़कर उसने कुछ समझा नहीं। उसने बाबू से पूछा—"यह क्या है ?"

"यह तुम्हारे लिखने के लिये है। या तो तुम सब रुपए ख़र्च-समेत अभी दाख़िल करो, और या लिखकर दे दो कि कब दे सकोगे। और, यह वचन दो कि जब तक दे न दोगे, तब तक अपनी कोई वस्तु न तो छिपाओगे, न बेचोगे। महाजन जब चाहे, तुम्हारी वस्तु बेचकर रुपए वसूल कर सकता है।"

"परन्तु मैं किसी का ऋणी नहीं हूँ।"

"इससे हमें कुछ मतलब नहीं। कॉलेज के प्रोफ़ेसर की विधवा को तुमने यह 'लिखितं' दिया था कि मुझे उसका १२० रूबल देना है।"

"देना है, तो फिर क्या ?"

बड़े बाबू ने उसकी ओर करुणा से देखा, और सोचा कि अब बेचारे पर न-जाने कितने ख़र्च पड़ेंगे। परन्तु रोडियन को अपने उस लिखे पत्र की कुछ चिन्ता न थी। वह मकान की मालकिन की शिकायतों की कुछ परवा न करता था। वह अपने को इस बात से चिन्तित करना व्यर्थ समझता था। ख़तरे से बचकर, अपने को सुरक्षित समझकर, वह ख़ुश हो रहा था। इस समय चिन्ता उससे कोसों दूर थी, प्रसन्नता छाई हुई थी। अफ़सर अभी तक इसकी असभ्यता को भूला न था, और उसे उसका अभिमान उससे बदला लेने के लिये मजबूर कर रहा था। शीघ्र ही उसने उसी अच्छे कपड़े पहने हुई स्त्री की ओर देखकर ज़ोर से कहा—"तुमको क्या हुआ है ? कल रात को तुम्हारे घर में क्या हुआ था ? तुम्हारी वजह से सारी

सड़क बदनाम है । शराबियों में तुम्हारे यहाँ बराबर लड़ाइयाँ हुआ करती हैं । क्या तुम जेलख़ाने जाना चाहती हो ? मैं तुमको दस बार समझा चुका, परन्तु तुम्हारी कुछ समझ में नहीं आता ।"

रोडियन ने हाथ से कागज़ रख दिया, उस स्त्री की ओर देखने लगा, और थोड़ी ही देर में सब समझ गया । वह सब सुनता रहा, और सुनकर उसको जी हँसने को चाहा ।

"एलापापेद्रोविश !" बड़े बाबू ने कहा । परन्तु तुरंत ही वह समझ गया कि इस समय मैं कुछ नहीं कर सकता; क्योंकि वह अपने अनुभव से जानता था कि यह अफ़सर एक बार बिगड़कर फिर नहीं समझता । वह स्त्री पहले तो काँपने लगी; और फिर ज्यों ज्यों उसको गालियाँ मिलती थीं, उतनी ही नम्रता से, तिरछी चितवन से वह अफ़सर की ओर देखती थी । और, नम्रता से वह इस बात की राह देखती रही कि उसको बोलने का अवसर मिले । अन्त में उसने शीघ्रता से कहा--"न कोई लड़ाई थी, न कोई बदनामी का कारण । आदमी शराब पिए हुए आया, और तीन बोतलें माँगी। फिर पैर से पियानो बजाने लगा, और उसके बहुत-से स्वर तोड़ डाले । मैंने उससे कहा, यह बात ठीक नहीं है । इस पर उसने बोतल उठाई । मैंने चौकीदार को बुलाया । उसने चौकीदार की आँख पर बोतल फेंककर मारी; हेनरेटा को मारा, और मुझको पाँच थप्पड़ मारे । हुज़ूर, मैं क्या करती । मैं सहायता के लिये चिल्लाई । वह खिड़की खोलकर सुअर की बोली बोलने लगा । क्या यह लज्जा की बात नहीं थी कि वह इस प्रकार सुअर की बोली बोले ? चौकीदार ने उसको खिड़की के पास से हटाते वक्त उसका कोट फाड़ डाला । वह इस हानि के १५ रूबल माँगने लगा । मैंने ही अपने पास से ५ रूबल उसको दिए । मैंने कुछ नहीं किया । सब उस असभ्य आगन्तुक के कारण बदनामी हुई ।"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । एक बार नहीं, कई बार तुमको—।"

"एलापापेद्रोविश !" फिर बड़े बाबू ने कहा। अफ़सर ने उसकी ओर देखा, और, बड़ा बाबू उसको सिर हिलाकर मना कर रहा था।

अफ़सर ने कहा—"ऐ माननीया लुई एवानोवना, मैं तुमको अंतिम बार समझाता हूँ। यदि अब तुम्हारे घर में फिर कुछ झगड़ा हुआ, तो मैं तुमको कटघरे में बंद कर दूँगा। सुन लिया? जाओ, होशियार रहो। अब मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।"

स्त्री नम्रता-पूर्वक सबको प्रणाम करके, जाने को मुड़ी ही थी कि एक बहुत ही सुंदर, हँसते हुए, बड़ी मूँछोंवाले अफ़सर से टकरा गई। यह 'निकोडेमिशटॉमिस' था, जो सबसे बड़ा अफ़सर था। लुई एवानोवना ने ज़मीन छूकर उसको प्रणाम किया, और दफ्तर से निकल गई।

बड़े अफ़सर ने मित्रता की वाणी में कहा—'एलापापेद्रोविश, यहाँ कितना कोलाहल हो रहा है, सब नीचे सुनाई देता है।"

एलापा ने कंधे हिलाते हुए कहा—"यह हैं एक भलेमानस—नहीं-नहीं, विद्यार्थी—नहीं, जो कभी विद्यार्थी था—अपना कर्ज नहीं चुकाता, और न अपना कमरा छोड़ता है। इसके विषय में बहुत शिकायतें हो चुकी हैं, और फिर भी अपनी उपस्थिति में, सिगरट जलाने के कारण, मुझ पर बिगड़ता है। ज़रा आपको देखिए तो—आप क्रोधित होते हैं।"

निकोडेमिशटॉमिस ने रोडियन की ओर देखकर कहा—"दरिद्रता कोई पाप नहीं है।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"यदि मैंने कुछ असभ्यता की है, तो उसके लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ। मैं विद्यार्थी हूँ, मेरा स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ है, मैं दरिद्रता का मारा हुआ हूँ। मैं विद्यार्थी था, परंतु अब धनाभाव के कारण नहीं पढ़ सकता। मुझको शीघ्र रुपया मिलनेवाला है। मेरी मा और बहन मुझे रुपए भेजेंगी, और मैं चुका दूँगा। मेरे मकान की मालकिन बड़ी भली स्त्री है, पर वह मुझसे नाराज़ है; क्योंकि मेरी पढ़ाने की नौकरी छूट गई है, और चार महीने से मैंने उसे कुछ नहीं दिया है

अब तो वह मुझको खाना तक भी नहीं देती । मुझको याद नहीं कि कितना रुपया उसका देना है । फिर भी आप स्वयं विचार कर लें कि क्या मैं इस समय दे सकता हूँ ?"

बड़े बाबू ने फिर कहा—"इससे हमें कोई मतलब नहीं ।"

रोडियन ने कहा—"सच है, परंतु, फिर भी, मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं उसके साथ तीन वर्ष से रह रहा हूँ । जब से मैं घर से आया हूँ, उसी के साथ हूँ, और आने के थोड़े ही दिन बाद मैंने उसकी पुत्री से विवाह करने का वचन दिया था । वचन मौखिक था । वह एक जवान लड़की थी, और मुझको अच्छी लगी । मैं उस पर आसक्त न था । स्पष्ट बात यह है कि मैं भी युवा था । मेरी मालकिन ने इस पर मेरा बड़ा भरोसा किया, और मैंने बहुत रुपए नष्ट किए ।"

एलापापेड्रोविश ने कहा—"आपकी गुप्त बातें सुनने का हमें समय नहीं है ।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"यह मैं समझता हूँ, परंतु मैं सब बातें आपसे कहना चाहता हूँ । साल-भर के बाद वह टाईफस-ज्वर से मर गई । मैं वहीं रहता रहा । उसकी मा ने—और मेरे मित्रों ने—मुझसे कहा कि मुझे तुम पर पूरा भरोसा है । और, जब मैंने उसका हिसाब चुकाया, तो उसने मुझसे कहा कि मैं तुमको उधार दूँगी, पर तुम्हारे 'लिखित' को तुम्हारे विरुद्ध कभी काम में नहीं लाऊँगी । अब मेरी नौकरी नहीं रही, खाने को नहीं, तो वह हिसाब माँगती है । आप समझे, यह बात है ।"

एलापा ने चिढ़कर कहा—"आपके दुःखों से हमको कोई प्रयोजन नहीं । आपको लिखकरके वचन देना है । आपके प्रेम का हाल और दुःख की बातें सुनने के लिये हमारे पास समय नहीं ।"

निकोडेमिशटो मिस बैठ गया, और बोला—"इतनी कठोरता मत करो ।"

बाबू ने रोडियन से कहा—"लिखिए ।"

रोडियन ने अनभ्यता-पूर्वक पूछा—"क्या लिखूँ ?"

"जो मैं लिखाऊँ ।"

बाबू ने साधारण रूप से लिखाना आरंभ किया—"मैं इस समय नहीं दे सकता। मैं राजधानी छोड़कर नहीं जाऊँगा, और न अपना असबाब बेचूँगा। इत्यादि-इत्यादि"

"तुम लिख नहीं सकते, तुम्हारी उँगलियों से कलम गिर रही है। क्या तुम बीमार हो?" बाबू ने उसकी ओर देखकर कहा।

"हाँ, मेरा सिर चक्कर खा रहा है, लिखाइए।"

"बस, समाप्त हो गया। हस्ताक्षर कीजिए।"

रोडियन ने कलम रख दी, और उठने ही को था कि फिर अपने हाथों पर सिर रखकर बैठ गया। उसके मन में एक बात आई—"मैं निकोडेमिशटॉमिस से सब स्वीकार कर लूँ, और फिर उसे अपने कमरे में ले जाकर सब चीजें दे दूँ। यह इच्छा उसकी इतनी प्रबल थी कि वह ऐसा करने के लिये उठ बैठा। उसको फिर यह ख़याल आया कि थोड़ा और सोच लो। वह चुपचाप खड़ा हो गया। नहीं, अब कुछ सोचना नहीं है। सिर का बोझा हटाओ। निकोडेमिशटॉमिस इस समय एलापापेट्रोश्शि से बड़ी सरगर्म बहस कर रहा था। रोडियन सुनने लगा—

"यह नहीं हो सकता, उन दोनों को छोड़ना पड़ेगा। पहले तो विरोध कितना है। सोचो, यदि उन्होंने यह काम किया था, तो चौकीदार को क्यों बुलाया? अपने-आपको पकड़वाने को? या यह उनकी चालाकी थी। नहीं, यह नहीं हो सकता। चौकीदार कहता है कि ठीक उसी समय उसने विद्यार्थी 'पेस्ट्रियाकाफ़' को फाटक पर देखा था, और उसके साथ और तीन साथी थे, जिनसे वह बातें कर रहा था। और काश तो बुढ़िया के पास जाने के पहले आधघंटे तक सुनार की दूकान में था। अब सोचो।"

"परंतु, वही तो उलटी-पुलटी बातें करते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने खटखटाया, और दरवाज़े को बंद पाया। फिर तीन मिनट के बाद चौकीदार के साथ गए, तो दरवाज़ा खुला था।"

"ठीक तो है। खूनी अंदर था, और उसने दरवाज़ा बंद कर लिया था। वह अवश्य पकड़ा जाता, यदि काश मूर्खता से चौकीदार की ओर न दौड़ता। इसी बीच में खूनी को भागने का अवसर मिल गया। काश कहता है, यदि मैं न जाता, तो वह अवश्य मुझको भी मार डालता।"

"तो क्या किसी ने खूनी को नहीं देखा?"

बाबू वार्तालाप सुन रहे थे। बोले—"कैसे देखता, मकान तो पूरा भूलभुलैयाँ है।"

निकोडेमिशटॉमिस ने कहा—"बात बिलकुल साफ़ है।"

एलापा ने उत्तर दिया—"ऐसी नहीं, जैसी आप समझते हैं।"

रोडियन ने टोपी उठाई, और दरवाजे की ओर चला। परंतु वहाँ तक नहीं पहुँचा। जब उसको होश आया, तो उसने अपने को एक कुरसी पर बैठे पाया। दाहनी ओर से उसको एक अनजान आदमी सहारा लगाए खड़ा था। बाईं ओर एक और आदमी पीले गिलास में पीला जल लिए खड़ा था। निकोडेमिशटॉमिस सामने खड़ा हुआ उसको घूर रहा था, रोडियन उठ बैठा।

अफ़सर ने तेज़ी से पूछा—"यह क्या बात है? क्या तुम बीमार हो?"

बाबू ने अपनी पुस्तकों की ओर वापस जाते हुए कहा—"हस्ताक्षर करने तक के लिये तो लेखनी नहीं पकड़ सकता"। एलापा ने अपनी मेज़ के पास वापस जाकर कहा—"क्या तुम बहुत दिन से बीमार हो?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"कल से।"

"तो तुम कल बाहर गए थे?"

"हाँ।"

"बीमारी की दशा में?"

"हाँ।"

"किस समय?"

"आठ बजे शाम को।"

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि कहाँ गए थे?"

"गलियों में।"

"बिलकुल ठीक।"

रोडियन ने ये सब उत्तर तेज़ी से, परंतु घबराई हुई आवाज़ में दिए। उसका चेहरा फीका पड़ गया था। और, उसकी काली, फूली हुई आँखों के कारण एलापा उसको भली भाँति जाँच नहीं सका।

निकोडेमिशटॉमिस ने कहा—"यह तो खड़ा तक नहीं हो सकता। क्या कुछ और पूछना चाहते हो?"

"कुछ नहीं।" एलापा ने उत्तर दिया।

निकोडेमिशटॉमिस कुछ कहना चाहता था, परंतु उसने बाबू की ओर देखा, और बाबू ने भी उसको कुछ संकेत किया। फिर सब चुप हो गए।

रोडियन बाहर चला गया। ज़ीने से उतरते हुए उसने सुना कि वहाँ फिर बहस छिड़ गई है, और निकोडेमिशटॉमिस की आवाज़ सबसे तेज़ हो रही है। सड़क पर पहुँचकर उसको होश आया। "तलाशी—तलाशी लेंगे, बदमाश! मुझ पर शक करते हैं।" और, पुराने भय के कारण वह फिर सिर से पैर तक काँप उठा।

दूसरा परिच्छेद

कमरे में सब चीजें वैसी ही रक्खी थीं। परन्तु हे ईश्वर ! मैंने ये सब चीजें यहाँ इसी तरह क्यों छोड़ दीं ? वह कोने में गया, और कागज़ के नीचे से सब चीजें निकालकर जेब में डाल लीं। कुल आठ चीजें थीं। रोडियन ने उनको अलग-अलग, कई स्थानों में, छिपाया; छिपाकर फिर बाहर निकला। दरवाज़ा बिलकुल खुला छोड़ दिया, और तेज़ी से बाहर की ओर चला गया। उसको यह भय था कि थोड़ी ही देर में उसकी गिरफ्तारी की आज्ञा हो जायगी; और इसलिये अपने होश में, उसको सब चोरी के चिह्न शीघ्र मिटा देने चाहिए। परंतु वह क्या करे।

यह पहले ही तय हो चुका था। नहर में फेंक देने से सब झगड़ा मिट जायगा, यह उसने रात को सरसाम में तय कर लिया था। परंतु यह काम सहज नहीं था। वह नहर के समीप गया, और आधघंटे तक टहलता रहा। जहाँ उसने चीज़ों को डुबोने का विचार किया था, वहाँ धोबी कपड़े धो रहे थे। कहीं नावें बँधी हुईं थीं। हर जगह लोगों की भीड़ थी। फिर यदि यह न डूबी, और तैरने लगी तो ? इससे काम न होगा। चलो, नीवा में कम लोग होंगे। वहाँ सुगमता से डुबो देंगे। वह आधघंटे तक बड़े भयंकर स्थानों में घूमता रहा। शीघ्रता से नदी पर पहुँचा, और फिर खड़ा हो गया। नीवा में क्यों फेंकूँ ? कहीं सुनसान जगह में, झाड़ियों के नीचे, छेद करके गाड़ न दूँ। वह सोचने में असमर्थ हो रहा था, परंतु यह विचार उसको सबसे अच्छा प्रतीत हुआ।

यह विचार भी क्रिया में नहीं बदला, और रास्ते में उसने एक अहाता देखा, जो चारों ओर से ऊँची दीवालों से घिरा हुआ था। अहाते



उसने बड़ी मुश्किल से पत्थर को उलटा, और उसके नीचे एक छोटा-सा छेद पाया।

(पृष्ठ १०३)

S. K. Press, Lucknow.

के दाहनी ओर एक बड़ी चौमंज़ली और इमारत थी, और बाईं ओर बहुत लकड़ी जमा थी। लकड़ियों के आगे एक जगह कूड़ा पड़ा था। थोड़ी दूर आगे बढ़कर एक बढ़ई के रहने का झोंपड़ा था। यही स्थान सबसे उत्तम था। दरवाजे के पीछे, लकड़ी के पास, एक बड़ा भारी पत्थर पड़ा था। यहाँ उसको कोई नहीं देख सकता था। उसने बड़ी मुश्किल से पत्थर को उलटा, और उसके नीचे एक छोटा-सा छेद पाया। उसने सब चीजें और रुपयों की थैली उसमें रख दी, और पत्थर को फिर ढल दिया। इधर-उधर पैर से मिट्टी दबा दी, और चल दिया।

वह सड़क पर पहुँचकर हँसने लगा। अब यहाँ कौन ढूँढ़ सकता है? और, अगर ढूँढ़ भी लिया, तो मुझ पर कौन संदेह कर सकता है? वह बड़ी देर तक धीरे-धीरे हँसता रहा। वह अब उस जगह पहुँचा, जहाँ उसको सड़क पर शराब पिए हुए एक लड़की मिली थी। उसके दिमाग़ में वही ख़याल आने लगा। इन बातों को भूल जाओ, यह सोचकर वह अपने चारों ओर देखने लगा। अब नए जीवन का आरंभ होगा। मैंने किस प्रकार झूठ बोलकर एलापा को ख़ुश करना चाहा, कैसी मैंने उनको डाँटडपट बताई, और कैसा उनको धोखा दिया। वह ठहरकर सोचने लगा कि मैंने यह सब जान-बूझकर किया या मूर्खता से। मैंने थैली को खोलकर भी न देखा कि उसमें क्या है। क्या यह मेरी कायरता थी? मैं विना देखे ही उसको नदी में फेंकने लगा था। मैं बीमार हूँ, और तभी ऐसे विचार आते हैं। मैं थक गया हूँ, और नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ। कल और परसों भी मेरी ऐसी ही दशा थी। मैं शीघ्र अच्छा हो जाऊँगा, और यदि अच्छा न हुआ—? मैं कितना थका हुआ हूँ। वह अपना दिल बहलाने के लिये चलता रहा। परन्तु उसकी समझ में न आया कि मैं क्या करूँ। उसके पुराने विचारों ने उसको घेर लिया। प्रत्येक वस्तु और मनुष्य से उसको घृणा हो गई, और उसने यह तय कर लिया कि अब मैं किसी से न बोलूँगा।

वह नीवा के किनारे रुका। "मैं यहाँ इस मकान में क्यों रहता हूँ?" मैंने सोचा था कि काम करने के बाद मैं राजूमिखेन से मिलूँगा, और उसी के यहाँ अब मैं जा रहा हूँ।" पांचवीं मजिल में अपने कमरे में राजूमिखेन कुछ लिख रहा था। दरवाज़ा खुला। चार महीने से दोनों मित्र नहीं मिले थे। राजूमिखेन फटे कपड़े पहने था। पुराने स्लीपर पैरों में थे, बाल बिखरे हुए थे, दाढ़ी बढ़ी हुई थी। रोडियन को देखकर वह आश्चर्य में आ गया। उसने सीटी बजाकर अपने साथी को सिर से पैर तक देखकर कहा—"ओहो, तुम हो!"

रोडियन के फटे कपड़े देखकर उसने कहा—"भाई से ज़्यादा मेरे भाई! आओ, बैठो।" और, रोडियन को पकड़कर उसने कोच पर बिठा दिया। राजूमिखेन समझ गया कि रोडियन बीमार है।

उसने रोडियन की नाड़ी देखने के लिये हाथ बढ़ाकर कहा—"क्या, तुम जानते हो कि तुम बीमार हो?"

रोडियन ने अपना हाथ खींच लिया, और कहा—"मैं तुम्हारे पास आया हूँ कि मुझको कहीं पढ़ाने की नौकरी लगा दो। नहीं-नहीं, मैं पढ़ाऊंगा नहीं।"

"तुमको सारसाम-सा मालूम होता है!"

"नहीं," रोडियन उठ पड़ा। वह इस समय किसी से विवाद नहीं करना चाहता था। वह क्रोध से भर गया। 'सलाम' कहकर वह दरवाजे की ओर चला।

"मेरे प्यारे दोस्त, ठहरो।"

"मैं जा रहा हूँ।"

"तो फिर आए क्या करने थे? क्या तुम पागल हो गए हो? मैं तुमको जाने न दूँगा।"

"मैं तुम्हारे पास इसलिये आया था कि तुम दयालु और बुद्धिमान् हो, और मेरी सहायता करोगे। परंतु यहाँ आकर मुझे मालूम हुआ कि

मुझे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं। मैं अपनी सहायता आप कर सकता हूँ। मुझे छोड़ दो, शान्तिपूर्वक रहने दो।"

"ठहरो, तुम पागल हो रहे हो। मैं स्वयं आजकल कहीं नहीं पढ़ाता। मैं इस समय एक प्रकाशक के लिये अनुवाद कर रहा हूँ। तुम मेरी सहायता कर सकते हो। मैं जर्मन अच्छी तरह नहीं जानता वह इन जर्मन-पृष्ठों का अनुवाद करने के लिये तीन रूबल देगा। तुम चाहो तो कर सकते हो। रोडियन ने कागज़ और रूबल ले लिए। राजू उसकी ओर आश्चर्य से देखता रहा। रोडियन लौटा, और मेज़ पर कागज़ और रुपए रखकर जाने लगा। तब राजू ने ज़ोरों से कहा—"तुमको बड़ा तेज़ बुखार है। क्या खेल कर रहे हो ? क्या करने तुम यहाँ आए थे ?" रोडियन यह कहकर कि 'मुझको कुछ अनुवाद नहीं चाहिए,' चला गया।

"तुम कहाँ रहते हो ?"

रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया।

"जाओ, अपनी ऐसी-तैसी में जाओ।"

रोडियन सड़क पर पहुँच गया। उसको एक गाड़ीवान के चाबुक से होश आया, जो उसको तीन-चार बार हटने को कह चुका था। चोट खाकर वह किनारे की ओर उचक गया। उसकी समझ में यह न आया कि मैं सड़क के बीच में कैसे आ गया। गाड़ी चली गई, और राहगीर उसकी पीठ सहलाने और हँसने लगे। इतने में उसके हाथ में किसी ने कुछ रुपए दे दिए। एक सौदागर की स्त्री ने भी उसके कपड़े और आकृति देखकर, उसको फ़क़ीर समझकर, ईश्वर के नाम पर कुछ दे दिया। चाबुक खाने पर बीस कृपक उसे मिले। रुपए जेब में रखकर वह नौका की ओर चल पड़ा। आकाश में बादल न थे। जल बिलकुल नीला था। गिरजे का गुंबज साफ़ दिखा रहा था।

चाबुक की चोट अब कम हो गई, और उसका दर्द रोडियन भूल गया। वह दूसरे ही ध्यान में मग्न था। इस स्थान में वह अपनी विद्यार्थी-दशा में

सैकड़ों बार आया था, और यहाँ की सुंदरता उसके नेत्रों को भली मालूम होती थी । ठंडी हवा लगी, और वह खड़ा होकर सोचने लगा । उसने सोचा कि पुराने ज़माने बीत गए, अब उनके याद करने से कुछ लाभ नहीं। उसने जेब में हाथ डाला, और कुछ सिक्के उसके हाथ में आ गए। वह उन्हें फेंककर घर की ओर चल पड़ा । प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक पुरुष से मैंने अपना नाता तोड़ दिया ।

वह आठ बजे रात को घर पहुँचा। किस मार्ग से गया, यह उसे याद न था । कपड़े उतारकर, ओवरकोट ओढ़कर, पिटे हुए घोड़े की तरह काँपते हुए, वह गहरी नींद में सो गया। प्रातःकाल बड़ा शोर-गुल सुनकर जगा। "हे ईश्वर, यह कौन चिल्ला रहा है ? दाँत कौन किटकिटा रहा है ? घूँसे कैसे मारे जा रहे हैं, गालियाँ कौन दे रहा है ? भयभीत होकर वह बिछौने पर बैठ गया। शोर और ज़ोर से होने लगा, और उसको मालकिन की आवाज़ सुनाई दी। वह चिल्ला-कर प्रार्थना कर रही थी कि मुझे मत मारो। उसका मारनेवाला अधिक ज़ोर से चिल्ला रहा था। रोडियन पत्ती की तरह काँपने लगा। उसने एलापा की आवाज़ पहचानी। वह मालकिन को क्यों मारेगा ? असंभव है। मैं स्वप्न देख रहा हूँ। प्रकाश कहाँ है ? चारों ओर से पास में रहनेवाले जमा होने लगे, और शोर बढ़ने लगा। हे ईश्वर, क्या वह यहाँ आ रहा है ? उसने सिटकनी खोलने को हाथ बढ़ाया, परन्तु फिर गिर पड़ा। भय से वह शून्यवत् हो गया। दस मिनट के बाद शोर बंद हो गया। मालकिन चिल्लाने लगी। एलापा गाली देने लगा, और फिर सब शान्ति हो गई । देखनेवाले अपने-अपने कमरों में चले गए।

एलापा की आवाज़ से भयभीत होकर रोडियन अपनी कोच पर लेट गया। वह अपने नेत्र बंद न कर सका, और उसकी दशा इतनी उत्तेजित हो गई, जितनी आज तक कभी न हुई थी। दरवाज़ा

खुला। नेस्टेसिया हाथ में रोशनी, कुछ रोटी और शोरबे का एक प्लेट लेकर घुसी। यह जानकर कि वह जगा हुआ है, उसने मेज़ पर खाना रख दिया, और यह सोचा कि इसने कल से कुछ नहीं खाया है, और शहर-भर में ज्वर की दशा में घूमता रहा है।

"नेस्टेसिया, मालकिन को किसने मारा।"

वह उसकी ओर देखने लगी, और उसके प्रश्न को दोहराया।

"हाँ-हाँ, आधघंटा हुआ। एलापा ज़ीने पर था, उसने क्यों मालकिन को मारा?"

नेस्टेसिया ने कुछ उत्तर न दिया।

रोडियन ने फिर कहा—"नेस्टेसिया, तुम चुप क्यों हो?"

"ख़ून" नेस्टेसिया ने धीरे से कहा।

"ख़ून? कैसा ख़ून?" कहकर रोडियन ने दीवाल की ओर करवट ले ली।

नेस्टेसिया ने उसकी ओर देखते हुए कहा—"किसी ने उसको नहीं मारा।"

रोडियन ने कहा—"वाह! मैंने स्वयं सब सुना, मैं सोया नहीं था। एलापा ने मारा, और सब लोग जमा थे।"

"कुछ नहीं हुआ है। तुम्हारा ख़ून ख़राब हो गया है, और इससे तुम स्वप्न देखते हो। कुछ खाओ तो।"

रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया। नेस्टेसिया उसको देखती रही।

"कुछ मुझको पीने को दो, नेस्टेसिया।" नेस्टेसिया पानी ले आई। रोडियन ने कुछ पानी पिया, और कुछ अपने सिर पर डाला। उसके बाद उसे कुछ होश न रहा।

———

तीसरा परिच्छेद

रोडियन को अपनी बीमारी की दशा की बातें कुछ-कुछ याद पड़ती थीं। उसको याद आता था कि कभी-कभी बहुत-से मनुष्य उसको घेरे रहते और उसके विषय में झगड़ते थे। कभी वह कमरे में अकेला रह जाता था, और लोग उससे डरकर भाग जाते थे, कभी-कभी वे झाँककर उसकी ओर देखते थे। कभी वे उसको भय दिखाते, कभी मुँह चिढ़ाते और कभी हँसते थे। उसको स्मरण आता था कि बहुधा नेस्टेसिया मेरे पलँग के पास बैठी रहती थी; और एक मनुष्य और पलँग के पास बैठता था, जिसको मैं पहचानता था, पर नाम उसका नहीं याद था। कभी वह समझता कि मैं महीने-भर से रोगी हूँ। कभी वह अपने को केवल एक ही दिन का बीमार समझता था। परन्तु एक बात, जो उसे याद रखनी चाहिए थी, वह भूल गया था। वह उसके याद करने का प्रयत्न करता था। कभी वह उठकर भागना चाहता था, परन्तु कोई-न-कोई उसको रोककर लिटा देता था। अंत में उसको होश आया।

एक दिन प्रातःकाल दस बजे उसने आँखें खोलीं। नेस्टेसिया और एक और आदमी, जिसको वह नहीं जानता था, उसके पलँग के पास बैठे थे। इस आदमी के दाढ़ी थी, वह मज़दूर मालूम पड़ता था। मकान की मालकिन अधखुले दरवाजे से झाँक रही थी। रोडियन ने ज़रा-सा सिर उठाकर, आदमी की ओर संकेत करके, कहा—"नेस्टेसिया यह कौन है ?"

नेस्टेसिया बोली—"हो-हो ! यह तो जग गए।" आदमी ने भी दोहराया कि यह जग गया। रोडियन को होश में आया जानकर मकान की मालकिन ने दरवाजा बंद कर दिया, और चली गई। वह थोड़ी-सी

शर्मीली औरत थी, और बातें नहीं करना चाहती थी। उसकी अवस्था ४० वर्ष की होगी। वह ठिगनी, गठी हुई, सुंदर और अच्छी प्रकृति की थी।

रोडियन ने मज़दूर की ओर देखकर कहा—"तुम कौन हो ?" इसी दम राज़ूमिखेन दरवाज़ा खोलकर, झुककर, अंदर घुसा।

"यह कैसा ख़राब कमरा है कि मेरा सिर सदा छत से टकराता है। यह कमरा कहलाने-योग्य नहीं। ओहो ! भाई तुम जग गए। मैंने पेशेनका से सुना था।"

नेस्टेसिया ने कहा—"हाँ-हाँ, अभी जगे हैं।"

मज़दूर ने भी हँसकर कहा—"हाँ-हाँ, अभी जगे हैं।"

राज़ूमिखेन ने मज़दूर से पूछा—"तुम कौन हो ?"

"मैं शियोलाफ़ के यहाँ से काम पर आया हूँ।"

राज़ूमिखेन ने रोडियन की ओर देखकर कहा—"अच्छा हुआ कि तुम जग गए। चार दिन से तुमने कुछ नहीं खाया, तुमको चम्मच से कभी-कभी चा दी गई थी। मैं दो बार जेसीमाफ़ को बुला लाया। जेसीमाफ़ को तुम जानते हो। उसने तुम्हारी भली भाँति परीक्षा की, और कहा है कि तुम्हारे दिमाग़ में कुछ ख़राबी है, बुरी खुराक और शराब के कारण। पर, तुम शीघ्र ठीक हो जाओगे।" फिर उसने मज़दूर से कहा—"हम तुमको रोकना नहीं चाहते। अपना काम बताओ।" और हाँ, रोडियन, शियोलाफ़ के यहाँ से एक बार एक आदमी और आया था ?"

"हाँ, वह एलेक्सिस हमारे दफ़्तर से परसों आया था। एथेनेसियस की आज्ञा से मैं तुम्हारी मा के भेजे हुए तीस रूबल देने आया हूँ। तुम इसके विषय में जानते होगे।" रोडियन ने उत्तर दिया—"हाँ, मुझे याद तो पड़ती है।"

"किताब पर हस्ताक्षर कर दीजिए।"

राजूमिखेन ने कहा—"लाओ, मुझको दो; रोडिया, उठो, हस्ताक्षर करो। धन मनुष्य की जान है।" रोडियन ने क़लम हटाकर कहा—"मुझको धन नहीं चाहिए।"

"नहीं चाहिए? उठो मित्र! मैं गवाही कर दूँगा। मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर हस्ताक्षर करा दूँगा। हाँ-हाँ, इसी तरह। लो, रसीद हो गई।"

"धन्यवाद।"

"अच्छा, अब बोलो, क्या खाओगे, कुछ शोरवा पिओगे?"

नेस्टेसिया, जो पास खड़ी थी, बोली—"हाँ, कल का शोरवा रक्खा है।"

"आलू और चावल भी।"

"अच्छा, मैं लाती हूँ।"

रोडियन आश्चर्य और भय के भाव से उनको देखता रहा। उसने यह निर्णय कर लिया कि मैं अब चुप रहूँगा। मुझको अब सरसाम नहीं है।"

थोड़ी देर में नेस्टेसिया शोरवा ले आई, और कहा कि चा आती है। चम्मच और तश्तरियाँ भी आईं, सब चीज़ें साफ़ चादर पर ठीक सजा दी गईं। राजूमिखेन ने कहा—"दो बोतलें शराब की भी ले आओ। हम दाम दे देंगे।" रोडियन देखता रहा। राजूमिखेन उसके पास बैठ गया, और अपने मित्र का सिर उठाकर उसे खिलाने लगा। रोडियन ने तीन चम्मच लिए, और कहा—"अब ठहरो, जेसीमाफ़ को आने दो।"

"रोडियन, मैं यहाँ दो-तीन दिन से खा रहा हूँ, और तुम्हारी मालकिन देती है। लो, नेस्टेसिया चा ले आई।" और, राजू ने दो प्याले चा बनाई, और बीमार का सिर बाएँ हाथ में लेकर, चा को ठंडी करके, उसको एक चम्मच पिलाई। रोडियन चुपचाप सब सेवा स्वीकार करता रहा, यद्यपि वह बिना सहायता के उठने के लायक हो

गया था। उसने सोचा, अब मक्कारी करनी चाहिए, और अपनी कम-ज़ोरी का बहाना कर पड़े-पड़े सब सुनना चाहिए। बारह चम्मच पीकर उसने हटा दिया, और तकिए पर लेट गया। उसका तकिया परों का बना हुआ था। रोडियन को यह बात विदित हो गई।

"अब रोडियन, मैं तुमको बताना चाहता हूँ कि मैं यहाँ कैसे पहुँचा। जब तुम मेरे यहाँ से बिना पता दिए चले आए, तो मुझे बहुत क्रोध आया, और तुम्हें दंड देने के लिये मैंने तुम्हारे यहाँ आने का संकल्प किया। तुम्हारा पता मुझे मालूम न था। पूछते-पूछते भटकता रहा। अंत को मैं पुलीस में गया, और थोड़ी ही देर में तुम्हारा पता मालूम हो गया। तुम्हारा पता वहाँ लिखा हुआ है।"

"मेरा?"

"हाँ, परंतु मेरा पता वहाँ नहीं है। वहाँ पर मुझे सब तुम्हारे हाल मालूम हो गए—निकोडेमिश्टाँमिस, एलापा, जेमटाफ़ (पुलीस-दफ़्तर का बड़ा बाबू) और तुम्हारी मकान की मालकिन, सबसे मेरा परिचय हो गया। मैं तुम्हें व्यर्थ की बातों में थकाना नहीं चाहता। मैंने पेशेनका को वश में कर लिया है। नेस्टेसिया से पूछो।"

"हाँ" नेस्टेशिया ने उत्तर दिया। "आपने उसको वश में कर लिया है।"

रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया, और अपने मित्र की नज़र की तरफ़ देखता रहा। राजू उसके न बोलने से कुछ चिढ़ गया था, परंतु बोलता रहा—"मेरे प्यारे मित्र, बड़े शोक की बात है कि तुमने अपनी मालकिन से अच्छा व्यवहार नहीं किया। ख़ैर, तुमने बिल पर हस्ताक्षर कर दिए। मुझे सब मालूम हो गया है। परंतु क्षमा करो, मैं भी क्या बातें करने लगा। मैं भी मूर्ख हूँ। परंतु यह सच है कि वह इतनी मूर्ख नहीं है, जैसी मालूम होती है।

रोडियन ने करवट लेकर उत्तर दिया—"नहीं।"

राजू ने कहा—"विचित्र चरित्र की स्त्री है। मैं उसको नहीं समझ सका। चालीस वर्ष की प्रतीत होती है; परंतु कहती है, मैं ३६ की हूँ। अस्तु, ऐसा उसको कहने का अधिकार है। यह झगड़ा इस प्रकार आरंभ हुआ। उसने देखा कि तुम विद्यार्थी नहीं रहे। तुमने पढ़ना छोड़ दिया, और उसकी पुत्री की मृत्यु के कारण उसका कोई दबाव तुम पर नहीं रह गया। इससे भयभीत होकर, बहुत दिनों तक सोचकर, जब उसने देखा कि तुम्हारी अवस्था बिगड़ रही है, तो उसने तुम्हें निकालना चाहा। उसको तुम्हारे बिल का ध्यान आया, जो, तुमने कहा था, मेरी मा अदा कर देगी।"

"यह मैंने बड़ी ओछी बात की। वह स्वयं तो भिक्षा पर निर्वाह करती है। यहाँ रहने के लिये मैं झूठ बोल गया।"

राजू ने उत्तर दिया—"तुमने बुद्धिमत्ता की। दुर्भाग्य से चैबराफ़ आ गया। उसके बिना पेशेनका कुछ न करती। वह बहुत शर्मीली औरत है। चैबराफ़ व्यवसायी पुरुष है। इसलिये उसने पहला प्रश्न यही किया होगा कि क्या यह बिल वसूल हो सकता है? उत्तर उसको यह मिला होगा कि उसकी मा एक सौ पैंतीस रूबल पाती है, और उसकी सहायता करती है। फिर उसकी बहन डोनिया तो भाई के लिये बिक तक जायगी। इसी पर उन्होंने भरोसा किया। मैंने सब तुम्हारी बातें सुन लीं। पेशेनका के दामाद हो सकने के कारण तुमने सब अपने भेद की बातें उसको बता दीं, और उसने इस समय उनसे अपना काम निकाला। चैबराफ़ को उसने बिल दे दिया, और उसने यह सब काररवाई कर डाली। सौभाग्य से मुझसे पेशेनका प्रसन्न है, और उसके प्रभाव से मैंने सब काररवाई रुकवा दी है। परंतु उसको यह विश्वास दिलाया है कि तुम सब पाई-पाई चुका दोगे। मैंने चैबराफ़ को दस रूबल खर्चे के देकर, बिल को वापस ले लिया है। अब केवल मौखिक वचन ही तुम्हारा उनके पास है। राजू ने बिल को मेज़ पर रख दिया। रोडियन ने उसकी ओर देखा, और बिना कुछ कहे दीवाल की ओर पीठ फेर ली।

राजू ने कहा—"मेरे मित्र, अभी तक क्यों मूर्ख बने हुए हो ? बातें करके मैं तुम्हारा दिल बहलाना चाहता हूँ, परंतु तुम क्रोध में आते जाते हो।"

रोडियन ने कहा—"क्या सरसाम में मैं तुम्हें पहचान नहीं सका था ?"

"हाँ, तुम मुझको देखकर उत्तेजित हो जाते थे, विशेषकर तब, जब जेमटाफ़ मेरे साथ आया था।"

रोडियन ने राजू की ओर देखकर कहा—"जेमटाफ़—पुलीस का बाबू ? उसको क्यों यहाँ लाए थे ?"

"क्यों—तुम घबराते क्यों हो ? वह तुमसे मिलना चाहता था; क्योंकि मैंने तुम्हारे विषय में उससे बहुत-कुछ कहा था। उसी से सब बातें मुझे मालूम हुईं। वह बड़ा अच्छा आदमी है, थोड़ा असाधारण अवश्य है। हम दोनों में अब बहुत मित्रता हो गई है, और मैं उसके पड़ोस में चला गया हूँ। तुम लुई एवानोवना को जानते हो ?"

"क्या मैं बहुत बकता था ?"

"हाँ। परन्तु उत्तेजित मत हो।"

"मैं क्या कहता था ?"

"जैसा लोग ऐसी दशा में कहते हैं। अच्छा, अब समय नष्ट न करो, और काम की बातचीत करो।" वह उठा, और अपनी टोपी उठाई।

"मैं क्या बकता था ?"

"दुहराने से कोई लाभ नहीं। क्या तुमको यह भय है कि तुमने अपना भेद कह दिया ? घबराओ नहीं। तुमने बेगम की कोई बातचीत नहीं की; परन्तु तुम एक बुलडाग की, कुछ कानों के बुन्दों और घड़ी की जंज़ीरों की बात करते थे। तुम चौकीदारों, निकोडेमिसटोमिस और एलापा के विषय में भी बहुत-कुछ बकते थे। और, एक हँसी की बात यह है कि तुम बार-बार अपना जूता माँगते थे।

जेमटाफ़ ने कोना-कोना ढूँढा, और ढूँढ़कर तुम्हें दे दिया। तुम इसे पाकर शान्त हो गए, और छाती से दिन-भर लगाए रहे। परन्तु अब काम की बात करो। ये ३५ रूबल हैं, जिनमें से दस मैं लिए लेता हूँ, जिसका हिसाब पीछे दूँगा। और, जेसोमाफ़ से तुम्हारा हाल कह दूँगा, यद्यपि उसको इस समय यहाँ होना चाहिए था। मैं पेशेनका से भी कहता जाऊँगा। अच्छा, सलाम—सलाम।"

नेस्टेसिया ने कहा—"कैसा मक्कार है, यह उसको पेशेनका कहता है।" नेस्टेसिया फिर नीचे गई। राजू और मालकिन की बात-चीत सुनने की उसकी बड़ी उत्कण्ठा थी। वह स्वयं राजू पर मोहित हो गई थी।

ज्यों ही दरवाज़ा बंद हुआ, रोगी ने कपड़े फेंक दिए, और पागल की तरह बिछौने से कूदकर अधीरता से प्रतीक्षा करने लगा। अब काम करना चाहिए। पर क्या? वह भूल गया कि मैं बिछौने से कूदा क्यों? मेरे ईश्वर, मुझको बताओ कि वह सब जान गए हैं या नहीं? क्या वे सब जानकर भी बनते हैं, और मुझको बनाते तथा सबसे जाकर यह कहते हैं? या केवल वे—मैं क्या करूँ? जैसे ही मैं सोचता हूँ, भूल जाता हूँ।

वह कमरे के बीचोबीच खड़ा हो गया, चारों ओर देखकर दरवाजे को खोला, और सुनने लगा। कोई पास नहीं था। वह फिर दौड़कर कागज़ की तरफ़ झुका, छेद में हाथ डाला; पर वहाँ कुछ नहीं पाया। तब वह राख में देखने गया। वहाँ फटी जेब के टुकड़े पड़े थे, किसी ने उनको देखा नहीं था। तब उसने अपने कपड़ों के बीच से जूता निकालकर देखा। वह इतना कीचड़ से भरा हुआ था कि जेमटाफ़ उसमें कुछ खोज नहीं निकाल सकता था।

"अरे जेमटाफ़! दफ़्तर में क्यों बुलाया गया हूँ, समन कहाँ है? मैं भूलता हूँ। वह तो दूसरे दिन बुलाया गया था—उसी दिन, जिस दिन मैंने

जूतों की परीक्षा की थी। उस दिन से तो मैं बीमार हूँ। परन्तु जेमटाफ़ यहाँ क्यों आता है ? राजू इसको क्यों लाता है ? यह क्या बात है ? मुझको अभी ज्वर है, नहीं तो मैं भाग जाता। परन्तु कहाँ ? मेरे कपड़े कहाँ हैं ? मेरे जूते कहाँ हैं ? निस्सन्देह छिपा दिए गए हैं। वह मेरा कोट तो है, रुपए भी हैं। मैं इसको लेकर दूसरे मकान में जाकर रहूँगा, जहाँ वे मुझको पा नहीं सकेंगे। परन्तु पुलीसवाले तो पा ही लेंगे। राजू खोज निकालेगा। अच्छा, अमेरिका भाग चलूँ, बिल भी ले लूँ, शायद काम आ । और भी क्या-क्या लेना चाहिए ? वे समझते हैं, मैं बीमार हूँ, और भाग नहीं सकता। उनके नेत्रों से यह प्रकट होता है कि वे सब हाल जानते हैं। यदि मैं नीचे तक उतर सकूँ ! कदाचित् पुलीस मेरी देख-भाल करती होगी। यह क्या है—चा, शराब की बोतल भी। इससे मेरा दिमाग ठीक होगा"। उसने बोतल उठाई, और एक गिलास-भर पी गया। जैसे, उसके गले में आग जल रही थी। थोड़ी देर के बाद उसको थोड़ी-सी कपकँपी आई, और नशा चढ़ गया। वह बिछौने पर लेट गया, कपड़े ओढ़ लिए, और शराब के नशे में, नए तकिए के सहारे, मीठी नींद सो गया। जब वह जगा, उसको विदित हुआ कि कोई मेरे कमरे में है। उसने देखा, राजूमिखेन दरवाज़े पर खड़ा सोच रहा है कि घुसूँ कि न घुसूँ ।

"आहा, तुम जग गए। नेस्टेसिया गठरी ले आओ।"

रोडियन ने चारों ओर देखकर कहा—"कितना बजा है ?"

"छः बजे हैं। और, तुम ६ घंटे सोए।"

"हे ईश्वर, मैं इतनी देर तक कैसे सोता रहा !"

"क्या बात है, जल्दी क्या है ? अभी बहुत समय पड़ा है। मैं यहाँ कई बार आया, परन्तु तुम गहरी नींद सो रहे थे । दो बार जेसीमाफ़ के यहाँ गया। वह भी नहीं मिला। आज मैं चचा के साथ दूसरे मकान में उठ गया हूँ। मेरे साथ मेरे चचा भी रहते हैं। खैर, नेस्टेसिया, मुझको गठरी दो। अच्छा, यह तो बताओ कि अब तुम कैसे हो ?"

"मैं बिलकुल अच्छा हूँ, बीमार नहीं हूँ। क्या तुम यहाँ बहुत देर से हो?"

"मैंने तुमसे कहा तो कि मैं, थोड़ी देर हुई, आया था।"

"परन्तु, उसके पहले?"

"उसके पहले—कब?"

"तुम पहलेपहल कब आए?"

"सब तो तुम्हें बता चुका, तुम भूल गए क्या?"

रोडियन ने सोचना चाहा, परन्तु उसके दिमाग़ ने काम न दिया। उसने राजू की ओर दीनता से देखा।

"अरे, तुम घबराए हुए हो। नींद ने तुमको लाभ पहुँचाया है, और तुम पहले की अपेक्षा अच्छे प्रतीत होते हो। मैं बहुत काम में लगा था। हम तुमको आदमी बनाना चाहते हैं। यह देखो।" यह कहकर उसने थैले से अच्छी, परंतु सस्ती, टोपी निकाली। "इसे पहनकर देखो।"

रोडियन ने उसको हटाकर कहा—"अभी नहीं।"

"कृपया पहनो, देर हो रही है। और, मुझको नींद न आवेगी, यदि मैं यह देख न लूँ कि तुम्हें यह ठीक आई या नहीं; क्योंकि मैंने बिना नाप के ख़रीदी है। यह नए प्रकार की टोपी है। बताओ, मैंने इसके क्या दाम दिए?"

रोडियन ने इसका कुछ उत्तर न दिया।

तब उसने नेरटेलिया से पूछा—"अच्छा, तुम बताओ?"

"मेरी समझ में बीस कूपक की होगी।"

वह उत्तेजित होकर बोला—"बीस कूपक! अस्सी में तो मिल नहीं सकती।" और, राजू ने फिर एक अच्छा पतलून निकाला, और एक वास्कट, जो बहुत बड़ी मालूम होती थी। "मैं समझता हूँ, यह ढीली है। परन्तु इससे क्या? आराम तो देगी। इसका ही तो आजकल फ़ैशन है। मौसम के ख़याल से भी अच्छी है। जब शिशिर आवेगा, तब दूसरी

ले लेना। अब इसके दाम तुम क्या समझते हो? सवा दो रूबल, और वही पुरानी प्रतिज्ञा कि अगर यह एक साल में फट जाय, तो दूसरी बिना मूल्य मिलेगी। अच्छा, अब जूते देखो। ये पहने हुए अवश्य हैं, परन्तु दो-एक महीने चल जाँयगे। अँगरेज़ी दूत के मंत्री को रुपए की आवश्यकता थी, इसलिये उसने बेच डाले। अभी, एक ही सप्ताह हुए, मँगाए थे। मूल्य सिर्फ़ डेढ़ रूबल।"

नेस्टेसिया ने कहा—"परन्तु ये ठीक नहीं होंगे।"

राजू ने उत्तर दिया—"ठीक नहीं होंगे?" यह कहकर उसने अपनी जेब से अपने मित्र के जूते का एक पैर निकाला। "मैंने इस बात को पहले ही सोचकर ठीक नापा था, और तब लाया हूँ। और, ये देखो, तीन कमीजें भी लाया हूँ। अच्छा, अब हिसाब जोड़ो—टोपी ८० कूपक, कपड़े २। रूबल, जूते १॥ रूबल, कमीजें ५ रूबल। कुल ९ रूबल ५५ कूपक; और ये ४५ कूपक अपने वापस लीजिए। अब तुम बिलकुल फ़ैशनेबिल हो गए। मोज़े और और चीजें तुम स्वयं ख़रीद लेना। तुम्हारे पास २५ रूबल बचे हैं न। किराए की चिन्ता न करो, मैंने उसका प्रबंध पेशेनका से कर लिया है। अब उठो, कपड़े बदलो।"

"मैं नहीं बदलूँगा," रोडियन, जो अब तक सब सुन रहा था, बोला। "परन्तु इन सबके दाम कहाँ से आए?" उसने पूछा।

"दाम? तुम्हारे ही दाम हैं। तुम्हारी मा ने जो तुम्हें भेजा था, तुम्हें याद नहीं?"

रोडियन ने देर तक सोचकर उत्तर दिया—"हाँ, याद आया।"

इसी क्षण एक लंबा, बलवान आदमी दरवाज़ा खोलकर घुसा। मालूम होता था कि उसे रोगियों के देखने का अभ्यास है। राजू प्रसन्न होकर चिल्ला उठा—"जेसीमाफ़ आ गया।"

चौथा परिच्छेद

जेसीमाफ़ एक लंबा, बलवान मनुष्य था। अवस्था ७० वर्ष की होगी। चेहरा गोल और मूँछें मुँड़ी हुई थीं। सिर के बाल खड़े थे, ऐनक लगाए था, और एक उँगली में सोने की अँगूठी पहने था। हलका गरमी का एक अच्छा सिला हुआ सूट पहने था। उसके कपड़े बहुत साफ़ थे, और एक बहुत भारी घड़ी की चेन लगाए था। उसका व्यवहार था तो बनावटी, परन्तु प्राकृतिक मालूम होता था। यद्यपि इस बनावटीपन के छिपाने का प्रयत्न सब पर प्रकट हो जाता था, उसके जान-पहचान-वाले उसको हर जगह असहनीय समझते थे, फिर भी रोगी के कमरे में वह अमूल्य था।

"मैं दो बार तुम्हारे यहाँ गया कि देखो, इसको होश आ गया है या नहीं।" राजू ने कहा।

रोगी की ओर देखकर, और आराम से उसके बिछौने पर बैठकर उसने पूछा—"कहो, अब चित्त कैसा है?"

राजू बोला—"अभी चिढ़ता बहुत है। हमने कपड़े बदलने को कहा, तो बिगड़ने लगा।"

"यदि कपड़े नहीं बदलना चाहता, तो इसकी जल्दी क्या है। नाड़ी तो कमज़ोर है। सिर में दर्द होता है कि नहीं?"

रोडियन ने चिढ़कर, अपने-आप थोड़ा-सा उठकर और प्रश्नकर्त्ता की ओर चमकती हुई आँखों से देखकर कहा—"मैं बिलकुल अच्छा हूँ।" परन्तु, इतने ही में वह थक गया, और फिर दीवाल की ओर मुँह करके लेट गया।

"ख़ैर, अच्छा हो रहा है, कुछ खाने को दिया या नहीं?"

"इस रोगी का खाने को क्या दिया जाय?"

"शोरवा, चा दो; खीरा मत देना, और न गोमांस। दवा उसी प्रकार देते रहो। कल मैं फिर देखूँगा। आज के लिये वही ठीक है।"

राजू ने कहा—"कल मैं इसको बाग़ में घुमाने ले जाऊँगा। और, फिर क्रिस्टलपैलेस जायँगे।"

"कल तक यह चलने के योग्य तो न होगा। ख़ैर, देखा जायगा।"

"कैसे दुःख की बात है। मैं आज अपने नए घर में, जो यहाँ से दो क़दम पर है, गृह-प्रवेश का भोज दूँगा। वहाँ हम इन्हें ले चलते; यह बीच में पलँग पर लेट जाते। क्या तुम आओगे, डॉक्टर?"

"धन्यवाद। यदि संभव हुआ, तो आऊँगा। परन्तु खिलाओगे क्या-क्या?"

"कुछ नहीं—यही चा, शराब, मछली, रोटी।"

"कोई विशेष व्यक्ति आवेगा?"

"कुछ युवा और मेरे चचा, जो अभी सेंटपीटर्सबर्ग में किसी साधारण काम से आए हैं। मैंने उनको ५ वर्ष से नहीं देखा।"

"वह है कौन?"

"वह जीवन-भर डिस्ट्रिक्ट-पोस्टमास्टर रहे हैं। अब ६५ वर्ष की अवस्था है, और पेंशन ले ली है। यों तो कुछ नहीं, परन्तु मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ। पेट्रोविश-ज़िले का मैजिस्ट्रेट भी आवेगा। कुछ विद्यार्थी, कुछ अध्यापक, एक गायक और एक अफ़सर—जेमटाफ़—होंगे।"

"जेसीमाफ़ ने पूछा—"जेमटाफ़-जैसे मनुष्यों से और तुमसे क्या मतलब?"

"उँह, तुम लोग हर बात में कोई कारण ढूँढ़ते हो, तबियत का ख़याल नहीं करते। वह एक अच्छा आदमी है, और मैं उसको पसन्द करता हूँ। यही मेरा सिद्धान्त है, और मुझे कोई कारण नहीं चाहिए।

जेमटाफ़ एक असाधारण मनुष्य है, और आजकल हम दोनों एक काम में लगे हुए हैं।"

"कौन-सा काम?"

"एक चित्रकार के विषय में। हम उसको छुड़ाना चाहते हैं। सब प्रबन्ध हो गया है। बात बिल्कुल साफ़ है।"

"वह कौन चित्रकार है ?"

"क्या मैंने तुमसे नहीं कहा ? हाँ, तुमने केवल थोड़ा-सा ही सुना है—वही जो बुढ़िया मार डाली गई है, उसी में एक चित्रकार को पुलीस ने फाँसा है।"

"हाँ, मैंने इस ख़ून के विषय में सुना था, अख़बारों में भी पढ़ा था। एक कारण से मैं उसके विषय में कुछ जानना चाहता हूँ।"

नेस्टेसिया, जो दरवाजे के पास खड़ी सब सुन रही थी, रोडियन से बोली —"उन्होंने एलिज़बेथ को भी मार डाला।"

"एलिज़बेथ !" रोडियन ने बहुत धीरे-से कहा।

"एलिज़बेथ को तुम जानते होगे। उसने कई बार तुम्हारी कमीज़ रफ़ू की है।"

रोडियन ने दीवाल की ओर मुँह फेर लिया, और गंदे, पीले कागज़ पर जो छोटे-छोटे सफ़ेद फूल बने थे, उनकी पत्तियाँ गिनने लगा। उसके हाथ-पैर सुन्न हो गए थे। मालूम होता था कि काट दिए गए हैं। परन्तु बिना हिलेडुले वह अपना काम करता रहा।

जेसीमाफ़ ने नेस्टेसिया की बात पर चिढ़कर कहा—"चित्रकार के विषय में क्या कहती हो ?"

नेस्टेसिया ठंडी साँस लेकर चुप हो गई।

राज़ू ने उत्तर दिया—"चित्रकार के ऊपर ख़ून का मुकदमा कायम है।"

"क्या प्रमाण है ?"

"प्रमाण कुछ भी नहीं। जिसको पुलीसवाले प्रमाण समझते हैं, वह प्रमाण नहीं है। उन्होंने यों ही पकड़ लिया है। जैसे, काश को और पेस्ट्रियाकाफ़ को पहले पकड़ा था। रोडियन, तुमने इसके विषय में कुछ सुना है। तुम्हारे बीमार होने के पहले ही यह बात हुई थी, और जब तुम पुलीस के दफ्तर में बेहोश हुए थे, तब यही बातें हो रही थीं।"

"जेसीमाफ़ ने रोडियन की ओर देखा, और राजू से कहा—"मैं तुम्हारे ऊपर दृष्टि रक्खूँगा। जिस बात से तुम्हें कुछ प्रयोजन नहीं, उसमें तुम दख़ल देते हो।"

"इसकी कुछ चिन्ता न कीजिए। हम इस अभागे मनुष्य को छुड़ाना चाहते हैं"—राजू ने मेज़ पर हाथ पटककर कहा—"कितनी शर्म की बात है। वे बकते रहते हैं, और समझते हैं कि हम सचाई पर पहुँच गए। अब पुलीसवालों की गड़बड़ देखिए। दरवाज़ा पहले बंद था, चौकीदार आया, दरवाजे को खुला पाया। काश और पेस्ट्रियाकाफ़ ने अवश्य हत्या की है। इसी प्रकार का उनका तर्क है।"

"यह तुमने कैसे समझ लिया? वे तो केवल रोके गए थे, और रोकना आवश्यक था। मैं एक बार इस काफ़ से मिला था। वह गिरवी की चीजें मोल लिया करता था।"

"हाँ, और प्रो-नोट भी ख़रीदता था। पूरा व्यवसाई है, परन्तु वह तो छूट गया। मैं इनके काम करने की विधि से उत्तेजित हो जाता हूँ। वे कहते हैं, हमारे सामने सत्य घटनाएँ हैं। परन्तु घटनाएँ कुछ नहीं, उन घटनाओं पर सोचकर अर्थ लगाना ही सब कुछ है।"

"तो तुम क्या इस काम को समझते हो?"

"हाँ, जिस समय आदमी समझता है कि मैं इस काम में सहायता कर सकता हूँ, तो चुप रहना असंभव हो जाता है।"

"मैं तो चित्रकार की कहानी सुनना चाहता हूँ।"

"अच्छा, सुनो।"

"खून के तीसरे दिन, जब वे काश को पकड़े हुए थे—यद्यपि उसके विरुद्ध में कोई प्रमाण न था—एक नई बात उत्पन्न हो गई। एक किसान—जिसका नाम डूसकिन है, और जिसकी शराब की दूकान बिलकुल उस घर के सामने है,—पुलीस के दफ़्तर में दो सोने की बालियाँ लेकर आया, और कहा—'परसों आठ बजे रात को एक चित्रकार, जिसका नाम मिकोला है, मेरे पास दो रूबल पर इन्हें गिरवी रखने के लिये लाया। जब मैंने उससे पूछा कि इन्हें तुम कहाँ से लाए, तो उसने उत्तर दिया कि मैंने सड़क पर पाई हैं। मैंने उससे और कुछ नहीं पूछा, और एक रूबल-नोट पर इनको गिरवी रखकर उधार दे दिया। मैंने सोचा कि यदि मैं न दूँगा, तो कोई और दे देगा। मिकोला उसी राज्य में रहता है, जहाँ मैं। यद्यपि वह शराबी नहीं है, तो भी कभी-कभी पी लेता है, और आजकल तो मित्री के साथ काम में लगा है। उसने शीघ्र नोट को भुनाया, दो गिलास चढ़ाए और शेष दाम लेकर चला गया। मित्री को मैंने नहीं देखा। दूसरे दिन जब मैंने खून की बात सुनी, मुझको ख़याल आया कि वे बालियाँ उस बुढ़िया ही की होंगी। मैंने पूछताछ शुरू की, उनके घर पर गया, और पूछा—मिकोला कहाँ है? मित्री ने उत्तर दिया—कहीं बाहर गया है। आज प्रातःकाल शराब पीकर आया था, और दस मिनट बाद फिर चला गया। और, फिर मैंने उसको नहीं देखा, और अकेला ही काम पर गया। डूसकिन ने कहा—तब मैं घर लौट आया। दूसरे दिन आठ बजे प्रातःकाल मिकोला फिर मेरी दूकान पर झूमता हुआ आया। वह बहुत नशे में नहीं था, और बातचीत कर सकता था। आकर बेंच पर चुपचाप बैठ गया। इस समय मेरी दूकान में एक अनजान आदमी था, दो लड़के थे, और एक आदमी सो रहा था। मैंने पूछा—तुम मित्री से मिले? उसने उत्तर दिया—नहीं। मैंने पूछा—रात को तुम

कहाँ रहे? उसने कहा—नदी के किनारे। मैंने फिर पूछा—बालिएँ तुमने कहाँ पाईं? उसने उत्तर दिया—सड़क पर। मैंने कहा—तुमको मालूम है कि उस घर में क्या हुआ है? उसके चेहरे की रंगत बदल गई। उसने कहा—नहीं; परन्तु मैंने कुछ सुना है। मैंने उसकी ओर घूरकर देखा। वह टोपी उठाकर चलने लगा। मैंने उसको रोकना चाहा, और कहा—मिकोला, ठहरो, एक गिलास पीते जाओ। और, मैंने लड़के से दरवाजा बंद करने का संकेत किया। परन्तु वह झपटकर निकल गया, और आँख से ओझल हो गया। मैं उसको खूनी समझता हूँ।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"ठीक तो है।"

"अन्त तक सुनो—पुलीसवालों ने डूसकिन और मिस्त्री को पकड़ लिया, और मिकोला की खोज नदी के किनारे की। वह उनको शराबख़ाने के पास मिला। वहाँ आकर उसने अपना चाँदी का क्रॉस उतारकर कुछ ब्रांडी लेनी चाही थी। कुछ मिनटों के बाद एक दूधवाली ने दराज़ से देखा कि वह अपने को फाँसी लगाना चाहता है। उन्होंने उसको पकड़ लिया। और, उसने कहा—मुझे पुलीस के दफ्तर में ले चलो, मैं सब स्वीकार कर लूँगा। पुलीस के दफ्तर पहुँचने पर निम्न-लिखित प्रश्नोत्तर उससे हुए—

प्रश्न—यह कैसी बात है कि जब तुम और मिस्त्री वहाँ काम कर रहे थे, तो उस वक्त तुमने ज़ीने पर किसी आदमी को नहीं देखा?

उत्तर—आए अवश्य होंगे, हमने ध्यान नहीं दिया?

प्र०—तुमने कोई शोरगुल या असाधारण बात सुनी?

उ०—नहीं।

प्र०—तुमने उस दिन सुना या नहीं कि अमुक समय पर एक विधवा और उसकी बहन का ख़ून किया गया और माल लूट लिया गया है?

उ०—मैंने पहलेपहल दो दिन बाद एक शराबखाने में प्लाटिश से यह सुना।

प्र०—तुमको बालिएँ कहाँ से मिलीं ?

उ०—सड़क पर।

प्र०—तुम दूसरे दिन मिस्त्री के संग काम पर क्यों नहीं गए ?

उ०—मैंने छुट्टी मनाई।

प्र०—कहाँ ?

उ०—इधर-उधर।

प्र०—डूसकिन के यहाँ से तुम क्यों भागे ?

उ०—मैं डर गया था।

प्र०—किससे डर गए ?

उ०—क़ानून से।

प्र०—जब तुम निर्दोषी थे, तो क्यों डर गए ?

जेसीमाफ़ तुम विश्वास करो या न करो; परन्तु ये प्रश्न इसके गंभीरता-पूर्वक किए गए।

"मैं समझता हूँ, सबूत काफ़ी मौजूद है।"

"मैं इस समय सबूत की बातचीत नहीं कर रहा हूँ, परन्तु प्रश्नों की। इन्होंने उसको परेशान किया, और मारा। अन्त में उसने स्वीकार किया—सड़क पर नहीं, जिस कमरे में मिस्त्री के संग काम कर रहा था, वहाँ मैंने बालिएँ पाईं। हम आठ बजे तक वहाँ काम करते रहे, और काम समाप्त कर जाने ही को थे, तो मिस्त्री मेरे मुँह पर गुलाबी रंग मलकर भागा। मैं उसके पीछे दौड़ा, और मैंने उसको फाटक पर पकड़ लिया। वहाँ चौकीदार और कुछ भलेमानस खड़े थे, उन्होंने शोर मचाने से हमें मना किया। हम नीचे ज़मीन पर पहुँच गए थे। मैंने मिस्त्री के बाल पकड़ लिए थे, और वह मुझसे कुश्ती लड़ रहा था। यह हम हँसी में कर रहे थे। आखिर मिस्त्री सड़क पर भाग गया। मैंने उसको पकड़ना चाहा, परन्तु

वह निकल गया। मैं तब कमरे में लौटकर सब सामान ठीक करने और मिस्त्री की प्रतीक्षा करने लगा। मैंने ब्रश भी फ़र्श पर पड़ा पाया। मैंने उनको (बालिएँ) उठा लिया। वे दरवाज़े के पास पड़ी थीं।"

रोडियन ने उत्तेजित होकर राज़ू की ओर देखा, और हाथ के सहारे पलंग पर उठकर कहा—"दरवाज़े के समीप? क्या इसने दरवाज़े के समीप कहा है?"

राज़ू ने उत्तर दिया—"हाँ; परन्तु तुमको इससे क्या मतलब?"

"कुछ नहीं," कहकर रोडियन ने दीवाल की ओर फिर मुँह फेर लिया। थोड़ी देर तक कमरे में शान्ति रही। राज़ू ने कहा—"मालूम होता है, यह सोते-सोते जग गया।" जेसीमाफ़ ने गर्दन हिलाकर कहा—"नहीं, फिर आगे क्या हुआ?"

"आगे क्या, यही कि वह मिस्त्री के विषय में सब भूल गया, डूसकिन के पास दौड़ा गया, रूबल लिया, और शराब पी। यही सारी कहानी है। तुम इससे क्या परिणाम निकालते हो?"

"मेरी समझ में तो कुछ बात अवश्य है।"

"तो पुलीसवाले चित्रकारों को ख़ूनी ठहराते हैं। और, इसमें उन्हें कोई सन्देह नहीं?"

"तो तुम क्यों अपने-आपको उत्तेजित करते हो? मेरे विचार में तुम यह तो स्वीकार करोगे कि वे बालिएँ बुढ़िया की सन्दूक से उसी दिन निकलीं इस बात पर भी तो ध्यान दो।"

"मुझे बड़ा आश्चर्य है कि तुम डॉक्टर होकर—जो इतने चतुर हो, और मनुष्य की प्रकृति को जानते हो—ऐसी बातें करते हो। क्या तुम नहीं समझ सकते? यही कहानी सच्ची है, और मिकोला को जिस प्रकार वह कहता है, उसी प्रकार से बालिएँ मिलीं।"

"परन्तु वह यह भी तो कहता है कि पहले मैं झूठ बोला था।"

"सुनो, सुनो। चौकीदार, कोश, पेस्ट्रियाकाफ़, चौकीदार की स्त्री और

८-९ आदमी इस बात के साक्षी हैं कि मिकोला मिस्त्री से अहाते में लड़ रहा था, और वे सब तमाशा देख रहे थे। यदि मिकोला ने या उन लोगों ने उसे मारा होता, तो—मैं आपसे यह प्रश्न पूछता हूँ—क्या वे वहीं खड़े रहते ? जिस समय शव मिले, वे गर्म थे। इससे विदित होता है कि मिकोला और मिस्त्री की लड़ाई के १०-५ मिनट पहले ही .खून हुआ था। अब मैं आपसे पूछता हूँ कि ऐसी दशा में यदि वे .खूनी हैं, तो लड़कर लोगों को क्यों वहाँ जमा करते ? यह अच्छी तरह जानते हुए भी कि थोड़ी ही देर में .खून का पता लग जायगा, वे वहाँ बच्चों की तरह खेल रहे थे, और दस आदमियों को और जमा कर लिया था।"

"बात तो आश्चर्य की है, और असंभव भी जान पड़ती है। परन्तु—।"

"परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं। यह बात ठीक है कि मिकोला के हाथ में उन बालियों का .खून के इतनी थोड़ी ही देर बाद आना उसके बहुत विरुद्ध पड़ता है। परन्तु उसके पक्ष में इससे कहीं अधिक बातें हैं। दुर्भाग्य हमारे मैजिस्ट्रेटों को इतनी बुद्धि नहीं कि वे प्राकृतिक दृष्टि से देखें। वे तो केवल घटनाएँ जानते हैं, और इसी से मुझको बड़ी परेशानी है।"

"तुम परेशान अवश्य हो; परन्तु यह तो बताओ कि इस बात का कोई प्रमाण भी है कि वे बालिएँ बुढ़िया की ही हैं ?"

"काश ने उनको पहचाना है, और जिसने उसके पास उनको गिरवी रक्खा था, उसने भी पहचाना है।"

"क्या काश और पेस्ट्रियाकाफ़ जिस समय ज़ीने पर चढ़ रहे थे, उस समय मिकोला को किसी ने नहीं देखा ?"

राज़ू ने दुखी होकर उत्तर दिया—"नहीं, काश और पेस्ट्रियाकाफ़ ने भी मिकोला की ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। उन्हें याद है; उसके कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था; परन्तु यह याद नहीं कि उसमें चित्रकार थे या नहीं।"

"तो फिर तुम किस तरह इन घटनाओं को समझते हो? यदि मिकोला की कहानी सच्ची है, तो उसके पास बालिएँ किस प्रकार पहुँचीं?"

"यह तो बिलकुल साफ़ है। जिस समय काश और उसके साथी ने खटखटाया, ख़ूनी अंदर था, और दरवाज़ा बंद किए हुए था। जब काश अपनी मूर्खता से चला आया, ख़ूनी भी उसके पीछे-पीछे उतरा। बाहर जाने का और कोई रास्ता न था। ज़ीने पर चौकीदार और काश के चढ़ने की आवाज़ ख़ूनी ने सुनी होगी। मिकोला और मिस्त्री उसी समय लड़ते हुए सड़क पर गए। ख़ूनी ख़ाली कमरे में छिप गया। सब लोग लड़ाई का तमाशा देख रहे थे, इसलिये ख़ूनी को जाते हुए किसी ने नहीं देखा। जब ख़ूनी दरवाज़े के पास खड़ा था, बालिएँ उसकी जेब से गिर गईं, और वे मिकोला को मिलीं। यही सारा रहस्य है।"

"नहीं-नहीं, मेरे मित्र, तुम बहुत चतुर हो। ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"ऐसा कभी हो सकता है? यह तो बिलकुल थिएटर का तमाशा मालूम होता है।"

राजू हँसने लगा। इसी क्षण दरवाज़ा खुला, और एक आदमी, जिसे कोई नहीं जानता था, कमरे में घुसा।

पाँचवाँ परिच्छेद

आगन्तुक युवा नहीं था । बड़ा बनावटी स्वभाववाला और अकड़कर चलनेवाला था । वह दरवाजे पर कुछ देर खड़ा रहा, और आश्चर्य से इधर-उधर देखता रहा; बनावटी भय और संदेह से रोडियन के छोटे, अँधेरे कमरे की परीक्षा करने लगा । फिर उसकी दृष्टि रोडियन पर पड़ी, जो विना नहाए, विना कपड़े बदले, गन्दे पलँग पर पड़ा था, और आगन्तुक की ओर बड़े ध्यान से देख रहा था । कुछ देर तक सब चुप रहे । अन्त में आगन्तुक ने जेसीमाफ़ की ओर मुड़कर, बड़ी अकड़ से, पूछा—"मैं रोडियन विद्यार्थी से मिलना चाहता हूँ। क्या वह यहाँ है ?"

जेसीमाफ़ मुड़ा, और संभव था कि उत्तर भी देता कि राजू बोल उठा—"वह कोच पर पड़ा है। आप क्या चाहते हैं ?"

"आप क्या चाहते हैं" इस वाक्य से आगन्तुक के अभिमान को कुछ धक्का-सा लगा, और वह बोलनेवाले की ओर घूरने लगा । फिर वह जेसीमाफ़ की ओर मुड़ा ।

जेसीमाफ़ ने गर्दन हिलाकर कहा—"यही रोडियन है" । यह कहकर जँमाई ली, और बड़ी देर तक मुँह बाए रहा । फिर घड़ी निकाली, और, धीरे-से देखकर जेब में रख ली ।

रोडियन चित्त लेटा हुआ आगन्तुक को देख रहा था । उसका रंग पीला पड़ गया था, और ऐसा प्रतीत होता था कि अभी-अभी इसको बड़ा कष्टदायक चीरा दिया गया है । आगन्तुक को देखकर पहले तो उसको उत्सुकता हुई, फिर संदेह हुआ, और फिर भय । वह उठ बैठा, और घबराई हुई आवाज़ में कहा—"मैं रोडियन हूँ; आप क्या चाहते हैं ?"

आगन्तुक ने उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा—"मैं पीटर पेट्रोविश लूशिन हूँ। कदाचित् तुम मुझको जानते हो।"

रोडियन कुछ और ही समझ रहा था। वह उदासीनभाव से उसकी ओर देखने लगा, और कुछ न बोला, जैसे उसने लूशिन का नाम पहले-पहल सुना हो।

"क्या यह संभव है कि तुमने मेरे विषय में अभी तक कुछ न सुना हो?" पीटर पेट्रोविश ने उत्तेजित होकर कहा। रोडियन ने फिर भी कुछ उत्तर न दिया, और अपना सिर तकिए पर रखकर छत की ओर देखने लगा। लूशिन का क्रोध प्रकट हो गया, और यह देखकर कि राजू और जेसीमाफ़ उसी को ताक रहे हैं, वह और बिगड़कर बोला—"मेरा ख़याल था कि जो पत्र तुमको १० या १५ दिन हुए, भेजा गया था—"

"सुनिए" राजू ने कहा, "आप दरवाज़े पर क्यों खड़े हैं? अगर कुछ कहना है, तो कुरसी पर बैठ जाइए। नेस्टॉसिया, अलग हटो। आइए, इस छोटी कुरसी पर बैठ जाइए।"

आगन्तुक राजू की टाँगों पर पैर रखता हुआ कुरसी पर, जो मेज़ के नीचे से खींची गई थी, बैठ गया। राजू बोला—"आप नाराज़ न हों। रोडियन ५ दिन से बीमार है। तीन दिन तो सरसाम में रहा, और अब अच्छा हुआ है। अब भूख भी लगती है। इन्हीं डॉक्टर साहब का इलाज हो रहा है। और, मैं रोडियन का मित्र हूँ, जो इसकी सेवा-शुश्रूषा करता हूँ। मैं भी विद्यार्थी हूँ। अच्छा, अब आप कहिए, आपको क्या काम है?"

लूशिन ने उत्तर दिया—"धन्यवाद, कदाचित् मेरी उपस्थिति और बातचीत से रोगी को कुछ हानि न पहुँचे!"

जेसीमाफ़ ने जँभाई लेते हुए उत्तर दिया—"नहीं, नहीं, संभव है, इसका दिल बहले।"

राजू बोल उठा—"प्रातःकाल से तो इसे होश काफ़ी आ गया है।"

लूशिन को राजू की आत्मीयता पसंद न आई। वह बोला—"तुम्हारी मा—"

राजू ने कहा—'हुँ'।

लूशिन उसकी ओर देखने लगा।

राजू ने कहा—"कुछ नहीं, कहिए, क्या कहते हैं ?"

लूशिन ने कंधे हिलाकर फिर कहना शुरू किया—"तुम्हारी मा ने, जब मैं वहाँ था, एक पत्र तुम्हें लिखा था। सेंटपीटर्सबर्ग में आकर मैं अब तक तुमसे इसीलिये नहीं मिला कि तुमको सब हाल मालूम हो जाय परन्तु बड़ा आश्चर्य है कि—"

रोडियन ने चिढ़कर उत्तर दिया—"मैं जानता हूँ, तुम दूल्हा हो वही न, बस।"

लूशिन क्रोध से झेरकर सुर्ख पड़ गया, कुछ उत्तर न दिया, और रोडियन को ओर देखने लगा। रोडियन भी उसकी ओर घूरने लगा, और और भी अच्छी तरह ताकने के लिये उठकर बैठ गया।

वास्तव में लूशिन की चालढाल में कुछ ऐसी खास बात थी कि वह बिलकुल दूल्हा मालूम होता था। यह बात साफ़ ज़ाहिर होती थी कि लूशिन अपनी दुलहिन के आने की प्रतीक्षा में अपने बनाव-चुनाव को ठीक कर रहा था। उसके वस्त्र अभी-अभी दरज़ी के यहाँ से सिलकर आए थे, और बिलकुल नए मालूम होते थे। उसकी छोटी सुन्दर टोपी भी नई जान पड़ती थी, और उसको वह बड़ी सावधानी से हाथ में लिए हुए था। उसके दस्ताने बहुत ही अच्छे, सफेद रंग के थे जिनको केवल दिखावे के लिये वह हाथ में लिए था। लूशिन की चाल-ढाल में ऐसी ही बनावट थी, जिससे वह युवा मालूम हो। उसकी चमकदार टाई में गुलाबी धारियाँ पड़ी थीं। उसका रंग साफ़ था, और अवस्था को देखते हुए वह नौजवान मालूम होता था। उसकी अवस्था ४...

वर्ष की थी। काली मूछें उसके मुख की शोभा को बढ़ा रही थीं। घुँघराले बाल बहुत ही कम कहीं-कहीं पर सफ़ेद हो गए थे। उसके चेहरे पर कोई भी ऐसी बात न थी, जिससे कोई उससे घृणा करे। परन्तु वे और बातें थीं। लूशिन के मुख को थोड़ी देर तक देखकर रोडियन हँसा, और तकिए पर लेटकर छत की ओर फिर देखने लगा।

लूशिन ने निर्णय कर लिया कि अब इसकी बातों पर ध्यान न दूँगा, और बोला—"मुझको शोक है कि मैंने तुमको इस दशा में पाया। यदि मुझको मालूम होता कि तुम बीमार हो, तो मैं पहले आता। परन्तु, तुम मेरी दिक़्क़तें समझ सकते हो। मुझको कचहरी में बहुत ज़रूरी और ज़िम्मेदार काम के अलावा और-और बातों का प्रबंध करना था। तुम्हारी मा और बहन की प्रतीक्षा में घंटे गिन रहा हूँ। मैंने उनके रहने का स्थान ठीक कर लिया है।"

रोडियन ने पूछा—"कहाँ?"

"यहाँ से बहुत दूर नहीं है। मकान का नाम बकलेफ़ा है।"

राज़ू बोला—"मैं जानता हूँ, यूजिन सौदागर का मकान है।"

"हाँ।"

"बड़ी गंदी जगह है, और वहाँ बदमाश आदमी ही रहते हैं। मैं एक बार वहाँ बड़ी लज्जाजनक अवस्था में पहुँचा था। ख़ैर, सस्ता है।"

लूशिन ने उत्तर दिया—"मैं यहाँ नया-नया आया हूँ, इसलिये शहर की बातें नहीं जानता। मैंने दो साफ़ कमरे चुन लिए हैं, और यह थोड़े ही दिन के लिये है, जब तक मेरा मकान ठीक न हो जाय। मैं इस वक्त लेपेजेटनो काफ़ के साथ, मिसेज़ लेपेवेशिल के मकान में, ठहरा हुआ हूँ। उसी ने मुझको वह स्थान बताया है।"

"लेपेजेटनो काफ़?" रोडियन ने दुहराया, जैसे इस नाम को सुनकर उसको कुछ याद पड़ा।

"हाँ, सरकारी दफ्तर में नौकर है। क्या तुम उसको जानते हो?"

"हाँ,—नहीं।" रोडियन ने उत्तर दिया।

"मेरे प्रश्न के लिये क्षमा करो। मैं उसका संरक्षक था। बड़ा अच्छा युवा है, उसके विचार भी अच्छे हैं। मैं युवा से मिलकर सदा प्रसन्न होता हूँ; क्योंकि उससे नई बातें मालूम होती हैं।" यह कहकर लूशिन ने चारों ओर देखा।

राजू ने कहा—"यह बात आप किस भाव में कहते हैं?"

लूशिन ने उत्तर दिया—"बहुत गंभीर भाव में। देखिए, मैं सेंट-पीटर्सबर्ग दस बरस बाद आया हूँ। नए सुधार और नई बातें हमारे यहाँ भी धीरे-धीरे पहुँच रही हैं। परन्तु प्रत्येक बात के समझने और देखने के लिये राजधानी में रहना आवश्यक है। और, मेरे विचार में युवाओं की संगति से ये बातें बहुत शीघ्र समझ में आ जाती हैं। मैं यह मानने को तैयार हूँ। संभव है, यह मेरी भूल हो; परन्तु मैं ऐसा समझता हूँ कि युवा ज्यादा समझदार, ज्यादा चतुर और अच्छे समालोचक होते हैं।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"बिलकुल ठीक है।"

लूशिन ने जेसीमाफ की ओर देखकर उत्तर दिया—"तुम मुझसे सहमत हो न कि यही उन्नति है?"

"यह तो बड़ी साधारण-सी बात है।"

"नहीं, देखिए। उदाहरणार्थ, लोग कहते हैं कि अपने पड़ोसी से प्रेम करो। यदि मैं ऐसा करूँ, तो उसका परिणाम क्या होता है? मैं अपना कोट फाड़ डालूँ, आधा अपने पड़ोसी को दे दूँ, अर्द्धनग्न अवस्था में फिरूँ, और रूसी कहावत के अनुसार—'जो बहुत-से खरगोशों के पीछे दौड़ता है, वह एक भी नहीं मार पाता'—मेरी हालत हो। परन्तु विज्ञान कहता है कि अपने ऊपर सबसे अधिक प्रेम करो; क्योंकि संसार स्वार्थ ही पर चल

रहा है। यदि तुम इस सिद्धान्त पर चलोगे, तो तुम्हारे कपड़े पूरे रहेंगे। अर्थशास्त्र भी यही कहता है कि यदि समाज इन सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे, तो लोग प्रसन्न रहते हैं, और समाज की नींव भी दृढ़ रहती है। इस सिद्धान्त पर चलने से मुझको सब कुछ मिल जाता है, और मेरा नंगा पड़ोसी भी आधे कोट के बजाय पूरा कोट पा लेता है। यह मेरे दान से नहीं, परन्तु उन्नति के कारण।"

राजू ने गरम होकर कहा—"क्षमा करें, मैं बहुत मूर्ख हूँ। मैंने किसी और मतलब से बात कही थी। परन्तु आप यह कहाँ की उड़ा रहे हैं। आप इस प्रकार की बातें करते हैं, जैसे आप बड़े विद्वान् हैं। यह बात क्षमा के योग्य है, पर मैं इसे क्षमा की दृष्टि से नहीं देखूँगा। पहले आप यह तो बताइए कि आप हैं क्या?"

लूशिन ने बड़ी शान से उत्तर दिया—"मेरे प्यारे श्रीमान्! क्या आप इस प्रकार से—"

राजूमिखेन जेसोमाफ़ की ओर मुँह करके कहने लगा—"बस, बस, अपनी बातें ख़त्म कीजिए।"

लूशिन ने इसके बाद ठहरना उचित नहीं समझा, और रोडियन से कहा—"मुझको आशा है कि तुम्हारे अच्छे होने पर, और हमारे रिश्ते के कारण, हमारी-तुम्हारी जान-पहचान बढ़ेगी। इस समय मैं यही चाहता हूँ कि ईश्वर तुम्हें आरोग्य प्रदान करे।"

रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया, और लूशिन कुरसी से उठ बैठा।

जेसोमाफ़ ने कहा—"उसको किसी क़र्ज़दार ने मारा होगा।"

"यह तो ठीक है, पारफीरियस ने मुझसे अपनी सम्मति नहीं प्रकट की। परन्तु वह उसके यहाँ गिरवी रखनेवालों की जाँच कर रहा है।" राजू ने कहा।

"गिरवी रखनेवाले ?" रोडियन के मुँह से निकल पड़ा।

"हाँ, तो फिर ? "

" कुछ नहीं।"

जेसीमाफ़ ने पूछा—"वह उनको कैसे जानता है ?"

"कुछ नाम तो काश ने बताए, कुछ गिरवी की चीज़ों पर लिखे थे, और कुछ अपनी-अपनी चीज़ें माँगने आए।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"कैसे धूर्त का यह काम है।"

राजू ने उत्तर दिया—"यह सब लोग कहते हैं; परन्तु मेरे विचार में यह काम धूर्त का नहीं है, यह किसी अनाड़ी का है। अचानक वह बच गया। परन्तु उसने सब काम बड़े भद्दे तरीके से किए। दस-बीस रूबल की चीज़ें ही लेकर वह भागा, और पुराने पीथड़ों और सन्दूकों में १,५०० रूबल नक़द और नोट रह गए । वह आदमी मारना तो जानता था, परन्तु चुराना नहीं।"

लूशिन, जो अभी तक टोपी और दस्ताने हाथ में लिए खड़ा था, और जाने के पहले कुछ और बुद्धि की बातें सुनाना चाहता था, तथा जो अभिमान के कारण, समझ के अनुसार, चला नहीं गया था, बोल उठा—" आप लोग दो औरतों के ख़ून की बातें कर रहे हैं ?"

"हाँ, क्या आपने भी कुछ सुना है ?"

"हाँ, समाज में—।"

"तो क्या आपको सब बातें मालूम हैं ?"

"मैं यह तो नहीं कह सकता, परन्तु इस ख़ून से मुझे एक और वजह से दिलचस्पी है । अब नीच जातियों में पाप बढ़ रहा है। परन्तु आश्चर्य है कि इन चोरियों और असाधारण आग की घटनाओं से यह विदित होता है कि ऊँची जातियों में भी

यह पाप बढ़ रहा है। इधर एक विद्यार्थी सड़क पर लूट रहा है, उधर बड़े आदमी जाली नोट बना रहे हैं, मास्को में एक पूरा गुट जाली नोट बनाने वालों का पकड़ा गया है, और उनका सरदार एक संसार-प्रसिद्ध प्रोफेसर है। धन के कारण ही हमारा मंत्री मार डाला गया, और अब यह बुढ़िया मार डाली गई है। लेकिन इसे डाकुओं ने नहीं मारा है; क्योंकि डाकू वहाँ गिरवी रखने नहीं आते थे। किसी ऊँची जातिवाले ने ऐसा काम किया है। समाज के सभ्य भाग में ऐसी बातें क्यों उत्पन्न हुईं?"

जेर्सीमाफ़ ने कहा—"दरिद्रता।"

राजू बोला—"यह तो बहुत सुगम है। अपने सिद्धान्तों पर काम कीजिए, तो यही परिणाम होगा।"

"मेरे सिद्धान्त!"

"हाँ-हाँ, आपके सिद्धान्त, जिन्हें आप अभी बघार रहे थे। उन पर आचरण किया जाय, तो लोग गला काटेंगे।"

लूशेन ने चिल्लाकर कहा—"कैसी बातें करते हैं?"

जेर्सीमाफ़ ने कहा—"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है।"

रोडियन के होंठ काँप रहे थे, साँस लेना उसे कठिन था, और उसका रंग भी पीला पड़ गया था।

लूशिन ने कहा—"दरिद्रता मारने के लिये नहीं कहती। और, यदि यह कहा जाय—"

रोडियन ने चिल्लाकर, काँपती हुई आवाज़ में कहा—"क्या यह सच नहीं कि तुमने अपनी भावी पत्नी से इस घर में यह कहा था कि मैं इसलिये खुश हूँ कि वह भिखारी है, और इस कारण उसको अपने वश में रख सकूँगा? और, तुमने यह भी कहा कि तुम एक स्त्री का दरिद्रता से उठना अच्छा समझते हो कि वह तुम्हारी अनुग्रहीत रहे।"

लूशिन ने चिढ़कर और लज्जित होकर उत्तर दिया—"किस प्रकार शब्द बदल जाते हैं! मुझको क्षमा करो, यह ख़बर, जो तुम्हें मिली है, बिलकुल झूठ है, और मुझको सन्देह है कि ये शब्द तुम्हें तुम्हारी मा ने कहे हैं। मुझको वह अच्छे चरित्र की विदित होते हुए भी कुछ विचित्र विचार की मालूम होती हैं। परन्तु मैं नहीं समझता था कि वह ऐसी बातें अपने मन में रक्खेंगी, और फिर उनको कहेंगी।"

रोडियन ने उठकर और उसकी ओर घूरकर कहा—"क्या तुम एक बात जानते हो?"

"कौन-सी बात?" लूशिन ने कहा।

"यही कि यदि तुमने मेरी माता के विरुद्ध एक शब्द भी मुँह से निकाला, तो मैं तुमको ज़ीने के नीचे फेंक दूँगा।"

राजू ने कहा—"रोडियन, क्या हो गया है?"

लूशिन पीला पड़ गया, और होंठ चबाते हुए बोला—"मैंने तुम्हारे भाव पहले ही से समझ लिए थे; परन्तु अच्छी तरह जानने के लिये मैं ठहरा रहा। बीमारी के कारण मैं बहुत कुछ क्षमा कर देता, परन्तु अब—।"

रोडियन ने कहा—"मैं बीमार नहीं हूँ।"

"तब तो और भी—।"

"तुमको खुदा समझे।"

लूशिन चला गया। राजू ने जाने को मार्ग दे दिया, और वह बिना किसी की ओर देखे कमरे से निकल गया।

रोडियन ने उत्तेजित होकर कहा—"जाओ, जाओ, सब चले जाओ। मैं किसी से नहीं डरता, मुझे अकेले रहने दो। जाओ, जाओ।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"चलो, चलें।"

"क्या इसी दशा में छोड़ जायँ?"

जेसीमाफ़ बाहर चला गया, और राजू भी उसके पीछे-पीछे गया। राजू ने ज़ीने में पूछा—"इसको क्या हो गया है?"

"कोई बात इसको सता रही है, जो प्रकट नहीं होती।"

"लूशिन से क्या बात है? यह तो स्पष्ट है कि वह उसकी बहन से ववाह करेगा, और रोडियन को भी इस विषय में पहले पत्र मिल चुका है।"

"दुर्भाग्य! एक बात ध्यान देने-योग्य है कि सब बातों पर तो वह उदासीन रहता है, परन्तु खून की बातों को ध्यान से सुनता है।"

राजू ने कहा—"हाँ, मुझको भी ऐसा ही मालूम हुआ। दफ्तर में भी वह ख़ून की बात सुनकर मूर्छित हो गया था।"

"हम शाम को फिर इस विषय में बातचीत करेंगे, और तब मैं फिर कुछ इस विषय में कह सकूँगा। आध घण्टे में मैं फिर इसको देखने आऊँगा।"

"धन्यवाद। मैं पेशेनका से जाकर कह दूँगा कि नेस्टेसिया इसकी देखभाल करती रहे।"

रोडियन नेस्टेसिया की ओर अधीरता से देखता रहा। वह अभी तक कमरे में खड़ी थी, और जाना नहीं चाहती थी। उसने कहा—"चा पिओगे?"

"अभी नहीं। मैं सोना चाहता हूँ, तुम जाओ।" उसने दीवाल की ओर करवट ले ली।

नेस्टेसिया चली गई।

छठा परिच्छेद

नेस्टेसिया जैसे ही कमरे से निकली, रोडियन उठा, और सिटकनी लगाकर राजू जो कपड़े लाया था, उन्हें पहनने लगा। उसके मन को शान्ति मिली। ज्वर और भय का नाम न था। उसके विचार शान्त थे। उसने कहा—"आज ही, आज ही।" वह निर्बल अवश्य था, परन्तु नई उत्पन्न हुई शक्ति पर उसका विश्वास था। वह कपड़े पहनकर जाने के लिये तैयार हो गया। मेज़ पर २५ रूबल पड़े थे। उन्हें जेब में रख, सिटकनी खोलकर, सड़क पर पहुँच गया।

आठ बज चुके थे, सूर्य अस्त हो चुका था। गरमी तेज़ थी, परन्तु वह धूल फाँकता हुआ निकल पड़ा। उसका सिर चक्कर खाने लगा। परन्तु उसके सूजे हुए नेत्र और निर्बल, पीले मुख में एक प्रकार का जोश आ गया। न उसने जाना, न उसने सोचा कि मैं क्या करने जा रहा हूँ। उसको एक यही ध्यान था कि बस, आज अन्त होना चाहिए। अब घर लौटकर न जाऊँगा। जीवित रहने की मुझे कोई इच्छा नहीं। इच्छा यही है कि किस प्रकार से अन्त हो। किसी प्रकार से भी हो, सोचने से क्या लाभ। उसने अपने विचारों को दूर हटाया, और इसी पर ध्यान रक्खा कि आज अन्त होना चाहिए। अभ्यास के कारण वह अपने पुराने मार्ग पर, घास की मण्डी की ओर, चल पड़ा। थोड़ी दूर चलकर उसने देखा कि एक युवा भावपूर्ण भजन बाजे पर गा रहा है। उसके पास एक १५ वर्ष की कन्या अच्छे कपड़े, दस्ताने और परवाली टोपी पहने (जो बहुत पुरानी हो गई थी) एक दूकान के सामने बड़े ज़ोर से गा रही है। रोडियन खड़ा हो गया, और सुनने लगा। फिर ५ कूपक निकालकर लड़की को दे दिए। लड़की ने गाना

समाप्त करके अपने आदमी से कहा—"चलो।" और, दोनों आगे बढ़ गए। रोडियन ने एक अधेड़ आदमी से, जो पास ही खड़ा था, कहा—"क्या तुमको गलियों का गाना अच्छा लगता है?" आदमी चकित होकर हँसने लगा। रोडियन ने कहा—" मुझको तो बहुत अच्छा लगता है, और विशेष कर जब वे सर्दी में शाम को बाजे पर गाते हैं, जब पथिकों के मुख पीले होते हैं, जब बर्फ़ विना हवा के गिरती है, और जब लैम्प जलते हैं।"

आदमी रोडियन का मुख देखकर और बातें सुनकर घबड़ा गया, और सड़क की दूसरी ओर जाकर कहने लगा—"मुझे क्षमा करें।" रोडियन आगे चला, और घास की मण्डी में उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ उसको उस दिन दूकानदार एलिज़बेथ के साथ मिला था। उस समय वहाँ पर कोई नहीं था। वह ठहर गया, और एक लड़के से, जो लाल कमीज़ पहने एक आटे की दूकान की ओर देख रहा था, बोला—"एक आदमी यहाँ पर अपनी पत्नी के साथ कुछ व्यवसाय करता है?" लड़के ने प्रश्नकर्त्ता को सिर से पैर तक देखकर कहा—"यहाँ तो प्रत्येक आदमी व्यवसाय करता है।"

"उसका क्या नाम है?"

"किसका क्या नाम है?"

"तुम ज़रेस के रहनेवाले हो कि नहीं? तुम किस राज्य के हो?"

लड़का रोडियन की ओर ताकने लगा, और बोला—"हमारे यहाँ कोई राजा नहीं, और न कोई बादशाह। परंतु ज़िले हैं। मैं तो घर पर रहता हूँ, और इस विषय में कुछ नहीं जानता। हाँ, मेरा भाई जानता है। इसलिये ऐ बादशाह! मुझे क्षमा करो।"

"क्या वह होटल है?"

"नहीं, यह शराब की दूकान है। यहाँ बिलियर्ड की मेज़ भी है, और बहुत-सी राजकुमारियाँ भी।"

रोडियन दूसरे कोने में गया, जहाँ बहुत-से लोग जमा थे। वह उनसे बात करना चाहता था; परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान न दिया। थोड़ी देर खड़ा रहकर वह दाहिनी ओर को मुड़ गया। अब वह बाजार से हटकर गली में पहुँच गया। पहले वह यहाँ बहुत सोच-विचार किया करता था, परन्तु इस समय उसे कुछ ध्यान न आया। सामने एक बड़ा मकान था, जहाँ से प्रतिक्षण अच्छे कपड़े पहने हुए स्त्रियाँ निकल रही थीं। दो-तीन स्थानों में वे गोल बाँधकर खड़ी हो गई थीं, विशेष-कर जहाँ नीचे की मंज़िल में घुसने का दरवाज़ा था, और जहाँ से सितार पर गाने की आवाज़ आ रही थी। स्त्रियाँ चारों ओर बातें कर रही थीं। कुछ रास्ते में बैठी थीं। एक सिपाही सिगरेट पीता हुआ, शराब में मस्त, गालियाँ बकता हुआ कहीं जाना चाहता था, परन्तु भूल गया था कि कहाँ जाऊँ। चारों ओर शराब पिए हुए लोग लुढ़क रहे थे। रोडियन ने स्त्रियों को देखना शुरू किया। सब गरमी के वस्त्र पहने हुए नंगे सिर थीं। उन सबकी अवस्था ४० वर्ष की थी, कोई भी १७ की न होगी। सबके चेहरे बिगड़े हुए थे, आँखों के इधर-उधर काले घेरे पड़े थे। एक ने कहा—"शराब पीने के लिये मुझको कुछ दो।" रोडियन ने पन्द्रह कूपक उसके हाथ में रख दिए, और खड़ा होकर सोचने लगा—"मैंने कहीं पढ़ा था कि एक आदमी, जिसको फाँसी की आज्ञा हो गई है, अपनी मृत्यु के समय कहता है कि यदि मृत्यु के बदले मुझसे कहा जाय कि तुम किसी चट्टान पर—जहाँ केवल दो पैर रखने की जगह हो—खड़े हो, और जिसके चारों ओर अथाह समुद्र हो, सदा अकेले रहना हो, बारहमासी अँधेरा और तूफ़ान हो—और वहाँ जीवन-भर, हज़ार वर्ष, प्रलय तक खड़े रहो, तो मैं यह स्वीकार करूँगा। परन्तु अभी मरूँगा नहीं। जीवित रहो, जीवित रहो, किसी प्रकार जीवित रहो। ऐ मनुष्य की अभागिनी जाति!"

वह दूसरी सड़क पर गया। सामने क्रिस्टल पैलेस था। राजू ने क्रिस्टल पैलेस की चर्चा की थी। मैं यहाँ क्या चाहता हूँ? जेसीमाफ़ ने कहा था कि मैंने यहाँ अख़बार पढ़े थे।

"यहाँ अख़बार होंगे?" उसने एक ख़ाली कमरे में घुसकर पूछा। दो-तीन आदमी चा पी रहे थे। दूर एक कमरे में कुछ लोग शराब पी रहे थे। रोडियन ने जेमटाफ़ को पहचाना। परन्तु फिर वह सोचकर कि होने दो। वह वहाँ घुस गया।

नौकर ने पूछा—"क्या शराब लाऊँ?"

"नहीं, चा लाओ, और पाँच दिन के पुराने अख़बार। मैं तुमको शराब पीने को कुछ दूँगा।"

चा और शराब आ गई, और रोडियन अख़बार में खोजने लगा। अन्त में जो वह चाहता था, उसे मिल गया, और वह वही पढ़ने लगा। उसने सब पढ़ डाला, और और हाल जानने के लिए लोगों की ओर मुड़ा। अधीरता से उसके हाथ काँप रहे थे। उसने देखा कि जेमटाफ़ उसके पास बैठा था। वही उसकी अँगूठिएँ और जंजीर थी, वही तेल से तर बाल, वही वासकट, और वही गंदे कपड़े। यह खुश मालूम होता था, और शराब के नशे में उसका रंग बदल गया था। हँसते हुए उसने रोडियन से कहा—"तुम यहाँ कैसे? राजू ने मुझसे कल कहा था कि तुम बेहोश पड़े हो। कैसे आश्चर्य की बात है! और, मैं तुम्हारे घर गया था।"

रोडियन ने अख़बार रख दिए, और छेड़ती हुई हँसी में कहा—"मुझको मालूम है, तुम मेरे यहाँ गए थे, और तुमने मेरे जूते ढूँढ़े थे। परन्तु तुम ऐसी बुरी जगह क्यों आते हो, और तुम्हें शराब पीने के लिये दाम कौन देता है?"

"हम दोनों ही तो यहाँ आए हैं। फिर तुम्हारा मतलब क्या है?"

रोडियन ने हँसकर, जेमटाफ़ के कंधे पर हाथ मारकर, कहा—

"कुछ नहीं, हँसता हूँ। वैसी ही हँसी है, जैसे उस .खूनवाले मुकद्दमे में मिकोला और मिस्त्री से हो रही थी।"

"तो क्या तुम उस .खून के विषय में कुछ जानते हो?"

"हाँ, तुमसे ज्यादा।"

"तुम अद्‌भुत मनुष्य प्रतीत होते हो। तुम बीमार हो, तुम्हें बाहर न आना चाहिए था।"

"क्या मैं अद्‌भुत मालूम होता हूँ?"

"हाँ, तुम यह क्या पढ़ रहे हो?"

"अख़बार।"

"आजकल कितनी जगह आग लग रही है!"

रोडियन ने जेमटाफ़ की ओर देखकर फिर छेड़ती हुई हँसी में कहा—"मैं आग के विषय में नहीं पढ़ रहा हूँ। आग लगाना मेरा काम नहीं है। अच्छा, यह तो बताओ, तुमको मेरे पढ़ने से क्या मतलब?"

"कुछ नहीं, यों ही पूछा। शायद मैं—।"

"सुनो, तुम पढ़े-लिखे हो कि नहीं?"

जेमटाफ़ ने शान से उत्तर दिया—"मैं छठी श्रेणी तक पढ़ा हूँ।"

"छठी, ओहो! बड़े अमीर हो तुम। तुम मुझे बड़े अच्छे मालूम होते हो।" रोडियन यह कहकर उसके मुँह के पास मुँह ले जाकर कुछ कहने-सा लगा।

जेमटाफ़ घबरा गया, और चकराया। बोला—"तुम अद्‌भुत आदमी हो, तुम्हें अभी भी ज्वर है, इसी से बकते हो।"

"आहा! मेरे अच्छे मित्र, क्या मैं अद्‌भुत हूँ? परन्तु तुम्हारे लिये तो मैं बहुत रोचक हूँ।"

"रोचक?"

"हाँ, तुम मुझसे पूछते हो कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। मैं बहुत-से अख़बार पढ़ रहा हूँ, और मैं बताऊँगा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। मेरा

बयान लिखो। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं यहाँ बुढ़िया के खून के बारे में पढ़ने आया था।" यह कहकर, आँख मटकाकर, वह जेमटाफ़ को घूरने लगा, और एक मिनट तक दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे।

जेमटाफ़ ने अधीर होकर कहा—"हुँ! तो तुम वह पढ़ रहे थे। उसमें क्या है?"

रोडियन ने जेमटाफ़ की बात पर ध्यान न देकर धीरे से कहा—"यह वही खी है, जिसकी बात तुम कर रहे थे, जब मैं दफ्तर में बेहोश हो गया था। यह तो तुमको ख़ूब याद होगा।"

जेमटाफ़ ने घबराकर कहा—"क्या याद होगा?"

रोडियन के चेहरे का रंग बदल गया, और वह हँसने लगा, मानों उसकी हँसी रोके न रुकती थी। उस समय उसके सामने अपना वह चित्र आ गया, जब वह हाथ में कुल्हाड़ी लिए, सिटकनी पकड़े खड़ा था, और वे दरवाज़े पर खड़खड़ा रहे थे। उस समय उसका चीख़ने को दिल चाहता था—यही दिल चाहता था कि दरवाज़ा खोलकर उनको मुँह चिढ़ाकर, डराकर, हँसने लगे।

"तुम या तो पागल हो, या—" जेमटाफ़ कहते-कहते रुक गया। उसके मन में एक नया विचार आया।

"या क्या—क्या—क्या? बोलो।"

जेमटाफ़ ने अपने मन में कहा—नहीं, यह असंभव है। दोनों चुप हो गए। इस हँसी के बाद रोडियन चिन्ता में मग्न हो गया, और दुखी देख पड़ने लगा। वह मेज़ पर हाथ और हाथों पर अपना सिर रखकर बैठ गया, और जेमटाफ़ को बिलकुल भूल गया। बड़ी देर तक दोनों चुप रहे। अन्त में जेमटाफ़ ने कहा—"चा पिओ, ठण्डी हो रही है।"

"क्या चा?" रोडियन ने गिलास उठाया, डबल रोटी का टुकड़ा मुँह में डाला, और जेमटाफ़ की ओर देखकर फिर उसके मुँह पर हँसी आ गई, और वह चा पीने लगा।

जेमटाफ़ ने कहा—"आजकल कितने बदमाश हो गए हैं ! थोड़े दिन हुए, मैंने मास्को के अख़बारों में पढ़ा था कि इस शहर में जाल बनाने वालों की एक टोली पकड़ी गई है।"

रोडियन ने लापरवाई से उत्तर दिया—"यह तो महीने-भर की पुरानी ख़बर है।" और फिर हँसकर कहा—"तुम उनको बदमाश कहते हो ?"

"क्यों, क्या बदमाश नहीं हैं ?"

"बदमाश ? अभी बिलकुल बच्चे हैं, पचास पकड़े गए, क्या यह संभव है। तीन काफ़ी थे। उनको एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए था। बच्चे तो हैं ही कि अविश्वासी मनुष्यों को नोट भुनाने का काम देते हैं—ऐसे मनुष्यों को, जिनके नोट भुनाते हुए हाथ काँपते हैं। ऐसे आदमियों पर उनका जीवन निर्भर है। इससे अच्छा तो फाँसी लगाकर मर जाना है। मनुष्य जाता है, रुपए भुनाता है, कुछ गिनता है, कुछ जेब में भरकर भागता है, और पकड़ा जाता है। यह मूर्खता नहीं, तो क्या है ?"

जेमटाफ़ ने उत्तर दिया—"हाथ तो अवश्य काँपेगा। कदाचित् तुम्हारा न काँपे। मैं तो यह काम नहीं कर सकता। सौ रूबल के लिये जाली नोट लेकर बैंक में जाना। मैं तो पागल हो जाऊँ। तुम क्या कहते हो ?"

रोडियन के मन में फिर प्रबल इच्छा हुई कि उससे हँसी करे। उसने कहा—"मैं ऐसी मूर्खता से काम न करूँगा। मैं पहले हज़ार को तो बड़े ध्यान से गिनूँ, कम-से-कम चार बार। फिर प्रत्येक नोट की अच्छी तरह परीक्षा करूँ; फिर दूसरा हज़ार गिनने लगूँ। बीच में गिनते-गिनते एक नोट को उजेले में देखूँ फिर उसको उलट कर देखूँ; और फिर प्रकाश में देखूँ, और कहूँ कि यह नोट ख़राब मालूम होता है। फिर एक खोए हुए नोट की कहानी छेड़ दूँ। फिर तीसरा हज़ार शुरू करूँ। तीसरा हज़ार रखकर फिर दूसरा हज़ार फिर से शुरू कर दूँ। इस तरह सब गिनकर दरवाजे तक जाऊँ खोलूँ, और फिर लौटकर दो-तीन प्रश्न करके चला जाऊँ।"

जेमटाफ़ ने हँसकर कहा—"ये सब कहने की बातें हैं, ज़रा करके देखो। देखो, इस साहूकारिन के ख़ून में एक बड़े छटे हुए बदमाश ने सब काम किया है; परन्तु उसका भी हाथ काँपता था। वह पूरा न कर सकता, और सब माल छोड़कर चला गया। उस वक्त उसका होश-हवाश जाता रहा।"

रोडियन उसको छेड़ने के लिये हँसकर बोला—"तुम्हारा ऐसा विचार है, तो फिर उसको पकड़ क्यों नहीं लेते?"

"घबराओ नहीं, हम पकड़ लेंगे।"

"तुम-तुम उसके विषय में कुछ नहीं जानते। तुम तो यही जानते हो कि कोई मनुष्य रुपए ख़र्च कर रहा है, या नहीं। अगर ख़र्च कर रहा है, तो वही ख़ूनी है।"

जेमटाफ़ ने उत्तर दिया—"यही तो वे करते हैं। ख़ून करके, जान पर खेलकर वे शराबख़ाने जाते हैं, और पकड़े जाते हैं। रुपए ख़र्च करने से उनका भेद खुल जाता है। तुम्हारी अपेक्षा वे चतुर नहीं होते। मैं समझता हूँ, तुम इस प्रकार से न करोगे।"

रोडियन ने जेमटाफ़ की ओर ध्यान से देखकर कहा—"क्या तुम जानना चाहते हो कि मैं किस तरह करता?"

जेमटाफ़ ने गंभीरता से उत्तर दिया—"हाँ, जानना तो चाहता हूँ।"

रोडियन ने उसके पास झुककर धीरे-धीरे बोलना शुरू किया—"अच्छा, सुनो। जितना रुपया मिलता, मैं ले लेता, और फिर चल देता। फिर भी किसी ख़ास तरफ़ न जाता। परन्तु चलते-चलते में किसी सुनसान, घिरे हुए स्थान में पहुँचता, जहाँ मनुष्य का नाम न होता। वहाँ इधर-उधर देखता। कोई पत्थर, जो इमारत बनाने के लिये लाया गया होता, पड़ा देख पड़ता, उसको उठाता। उसके नीचे एक छेद ढूँढ़ता। उस छेद में मैं सब रख देता, पत्थर को उस पर ढक देता, पैर से ठोंक देता, और लौट पड़ता। साल-दो साल, तीन साल वहीं पड़ा रहने देता। अब ढूँढ़ो, माल कहाँ है?"

जेमटाफ़ ने धीरे से कहा—"तुम पागल हो।"

रोडियन की आँखें चमकने लगीं, उसका मुँह पीला पड़ गया, ऊपर का होठ काँपने लगा। वह अपना मुँह जेमटाफ़ के मुँह के पास ले गया। कुछ बोलना चाहता था। कुछ क्षण बीत गए। रोडियन जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। परन्तु इच्छा ऐसी विचित्र और प्रबल थी कि वह अपने को रोक न सका, और बोला—"क्या ? यदि मैंने बुढ़िया और एलिज़बेथ को मार डाला है, तो..." इतने में उसको होश आगया।

जेमटाफ़ का रंग पीला पड़ गया। उसने मुसकराकर कहा—"क्या ऐसा हो सकता है ?" रोडियन ने घूरकर कहा—"तुम्हीं कहो, तुम क्या समझते हो ? ऐसा हो सकता है, या नहीं ?" जेमटाफ़ ने शीघ्रता से उत्तर दिया—"नहीं, अब तो मैं इसमें बिलकुल विश्वास नहीं करता।"

"पकड़े गए न। 'अब' का अर्थ यह कि कभी विश्वास करते थे।"

जेमटाफ़ ने घबराकर कहा—"नहीं; परन्तु तुम्हारी बातों से शक करने लगा था।"

"तो तुम्हारा विचार ऐसा नहीं है ? फिर दफ्तर में ये प्रश्न मुझसे क्यों किए गए थे ? मेरी मूर्छा के बाद लेफ्टिनेण्ट ने मुझसे क्यों पूछा था ?" यह कहकर उसने टोपी उठाई, और नौकर से पूछा—"कितना दाम हुआ ?"

नौकर ने उत्तर दिया—"तीस कूपक।"

"लो, ये तीस कूपक, और बीस कूपक तुमको इनाम। जेमटाफ़, देखो, मेरे पास आजकल कितना रुपया है।" उसने २५ रूबल निकाल कर दिखाए। "यह सब कहाँ से आया ? मेरे नए कपड़े कहाँ से आए ? तुम्हें मालूम है, मेरे पास कुछ नहीं था। मैं समझता हूँ, तुम मालकिन से पूछ चुके हो। ख़ैर, कुछ परवा नहीं। सलाम।"

वह हँसता हुआ, थका और घबराया हुआ, कमरे से निकला। मालूम होता था, अभी उसको कोई दौरा हुआ है, । ज्यों-ज्यों उसकी उत्तेजना बढ़ती थी, वह निर्बल होता जाता था।

जेम्स्टाफ़ होटल में बैठा सब बातें सोचता रहा। अन्त में उसने कहा—"एलापा बिल्कुल मूर्ख है।"

रोडियन ने जैसे ही दरवाज़ा खोला, राजू से उसका सामना हुआ। राजू चकित होकर क्रोध से बोला—"तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुमको बिछौने पर लेटना चाहिए। मैं तुमको ढूँढ़ रहा हूँ। रोडियन, तुमको क्या हो गया है?"

"तुम लोगों ने मुझको परेशान कर दिया है, मैं अकेला रहना चाहता हूँ।"

"अकेले—। इस दशा में, जब तुम चल नहीं सकते? तुम्हारा रंग सफ़ेद हो रहा है, और तुम्हारे शरीर में जान नहीं है। मुझको शीघ्र बताओ, तुम यहाँ क्या कर रहे थे?"

रोडियन ने राजू को धक्का देकर जाना चाहा, और कहा—"भाग जाओ।"

राजू क्रोधित हो गया। उसने रोडियन के कंधे पकड़कर कहा—"यह मुझसे 'भाग जाओ' कहने का साहस तुमको हो गया? मैं तुम्हारी कमर पकड़कर, गठरी बनाकर घर ले जाऊँगा, और वहाँ बंद कर दूँगा।"

रोडियन ने शान्त भाव से कहा—"क्या तुम नहीं समझते कि मैं तुम्हारी दया नहीं चाहता? उस आदमी पर दया करने से क्या लाभ, जो तुम पर थूकता है? तुमने मुझको बीमारी में क्यों ढूँढ़ा, जब मुझे मरने में प्रसन्नता थी? मैंने तुम्हें आज बतला दिया कि तुम मुझको परेशान करते हो, दुखी करते हो, और इसके कारण मेरे अच्छे होने में देर लग रही है। इसीलिये जेसीमाफ़ मुझको छोड़कर चला गया। तुम भी चले जाओ। तुमको मुझे रोकने का क्या अधिकार है? मैं होश में हूँ, मुझे छोड़ दो, और अपनी दया अपने पास रक्खो। मैं कृतघ्न हूँ, मैं नीच हूँ। परन्तु ईश्वर के लिये मुझे अकेला छोड़ दो। जाओ—जाओ।"

ये सब बातें उसने बहुत गंभीरता से कहीं। राजू कुछ देर तो सोचता रहा। फिर उसने अपने हाथ हटा लिए, और कहा—"अच्छा, जाओ।" फिर थोड़ी देर बाद चिल्लाया,—"ठहरो, सुनो। अपनी चिन्ताओं और विचारों को छोड़ दो। तुममें बिलकुल जान नहीं है, तुम्हारे शरीर में ख़ून नहीं है। तुमको विदित है कि आज मेरे यहाँ कुछ लोग आवेंगे। वहाँ मुझे जाना है। और, यदि तुम मूर्ख नहीं हो, तो तुम भी वहाँ आना, और इधर-उधर घूम कर जूते मत घिसो। बोलो, आओगे? जेसीमाफ़ भी वहाँ होगा।"

"नहीं।"

"नहीं? मैं तुमसे कहता हूँ, तुम नहीं समझते कि तुम क्या कर रहे हो। मेरा पता पोशनकाफ़, तीसरी मंजिल है।"

रोडियन ने फिर कहा—"मैं नहीं आऊँगा।"

राजू ने कहा—"मैं शर्त लगाता हूँ कि तुम आओगे। और, यदि न आए, तो आज से मेरी-तुम्हारी मित्रता की समाप्ति होगी, ऐसा समझो। क्या जेमटाफ़ अन्दर है?"

"हाँ।"

"उससे मिले थे?"

"हाँ।"

"उससे बातें हुईं?"

"हाँ।"

"क्या बातें कीं? क्या नहीं बताना चाहते? अच्छा, याद रखना पोशनकाफ़, ४७ नम्बर।"

रोडियन चला गया। राजू खड़ा हुआ सोचने लगा। फिर राजू ने अपना सिर हिलाया, और आगे बढ़ा। फिर रुककर कहने लगा—बातें तो समझ की करता है। मैं बिलकुल मूर्ख हूँ। सब पागल कभी-कभी समझ की बातें करते हैं। अब यह क्या करना चाहता

है ? शायद पानी में डूब मरे। यह सोचकर राजू पीछे दौड़ा। परन्तु रोडियन का पता न था।

राजू फिर क्रिस्टेल-पैलेस में चला गया।

रोडियन सीधा पुल पर गया, और बीच में खड़ा होकर दृश्य देखने लगा। वह खड़े होने में असमर्थ था। उसकी इच्छा हुई कि सड़क पर लेट जाऊँ। पानी पर झुककर वह सूर्यास्त की लालिमा का प्रतिबिम्ब देखने लगा। उसको सब घर घूमते हुए मालूम हुए। उसका सिर चक्कर खाने लगा, आँखों में खून आ गया, और बड़े ज़ोर से कँपकँपी हुई। उसने अपने पास एक लड़की को खड़े देखा, जो एक दुशाला ओढ़े थी, और जिसकी आँखों में गड्ढे पड़े हुए थे। उस लड़की ने उसकी ओर ध्यान से देखा, फिर कटहरे पर चढ़कर पानी में फाँद पड़ी। पानी की लहरें उसके ऊपर आ गईं; परन्तु डूबती हुई लड़की फिर पानी के ऊपर आ गई और धारा में बह चली। उसका सिर और पैर पानी के अन्दर थे, तथा कपड़े ऊपर तैर रहे थे। बहुत-से लोग चिल्लाए "नाव लाओ, नाव लाओ।"

एक स्त्री की आवाज़ आई—"बचाओ, यह मेरी अफ़रासिनका है। बचाओ, खींच लो।" लोग नाव-नाव चिल्लाते रहे। परन्तु नाव की आवश्यकता न पड़ी। एक पुलीसवाले ने सीढ़ियों से उसे खींच लिया, और एक मनुष्य की सहायता से सीढ़ियों पर उसे लिटा दिया। वह होश में आ गई, आँखें मलने लगी। दो-एक छींके आईं, वह मूर्खता से देखती रही। रोडियन भी देखता रहा। परन्तु यह दृश्य उसको बड़ा घृणित ज्ञात हुआ। पुलीस अपने काम में लग गई। किसी ने थाने ले जाने की बात कही।

रोडियन ने अपने मन में कहा—"वहाँ अभी जेमटाफ़ नहीं है, दस बजे पहुँचेगा।" फिर वह पुलीस के दफ़्तर की ओर चला। उसका दिल दुखी हो रहा था, और वह अपने विचारों को दूर हटाना चाहता था। अब उसके वे भाव नहीं थे, न वह शक्ति थी, जो उसको घर से निकालकर यह कहकर लाई थी कि आज सब समाप्त कर दो।

"इसका अन्त क्या होगा ? अन्त तो मेरे हाथों में है । आह ! हम लोग सब एक ही-से हैं, और एक पैर-भर ज़मीन मिलने से जाने के लिये तैयार हैं। क्या यही अन्त है ? क्या मैं जाकर सब स्वीकार कर लूँ कि नहीं ? मैं कितना थक गया हूँ। कहीं लेट जाऊँ, या बैठ जाऊँ । बीमारी से विरोध करना मूर्खता है । मेरे मस्तिष्क में क्या विचार आ रहे हैं।" यह सोचता हुआ वह नहर के किनारे झूमता हुआ कभी दाहनी, कभी बाईं ओर जा रहा था। धीरे-धीरे पुलीस के दफ्तर तक पहुँच गया। वहाँ रुक गया। फिर गली में मुड़कर दूसरी सड़क पर चला गया। उसने सोचा, कुछ और सोच लूँ । वह नीची गर्दन किए चला जा रहा था कि एक बार ही रुक गया, मानों उसके कान में किसी ने यह कहा—आँखें उठा-कर देखो। वह उसी मकान के फाटक पर पहुँच गया था।

बिजली के समान उसके मस्तिष्क में एक विचार आया, और वह हाते से होकर चौथी मंज़िल पर चढ़ने लगा। सदा के समान ज़ीने पर अँधेरा था जहाँ मिस्त्री और मिकोला काम कर रहे थे। मिस्त्री और मिकोला के काम करने पर कमरे का नया रंग हो चुका था। चौथी मंजिल पर पहुँचकर वह उस बुढ़िया के दरवाजे पर ठहर गया। दरवाज़ा खुला था, और अन्दर से आवाज़ आ रही थी। उसने इस बात का ख़याल न किया था कि अन्दर कोई होगा। थोड़ी देर ठहरकर वह सीधा अन्दर पहुँच गया। कमरे में कुछ कारीगर मरम्मत कर रहे थे। उनको देखकर वह चकित हो गया; क्योंकि वह यह समझता था कि कमरा उसी दशा में होगा। लाशें भी फ़र्श पर पड़ी होंगी । वह यह नहीं समझता था कि वहाँ का फरनीचर उठ गया होगा, और दीवालें सर्वथा नंगी होंगी । वह खिड़की पर बैठ गया। दो नौजवान कारीगर दीवाल में काग़ज़ लगा रहे थे । पुराने हरे रंग को सफ़ेद काग़ज़ से, जिस पर फूल बने थे, छिपा रहे थे; रोडियन ने इस परिवर्तन को अच्छा न समझा । वह हाथ बाँधकर खिड़की पर झुक गया । कारीगरों ने उसकी उपस्थिति पर कुछ ध्यान न दिया, और काम करके जाने की तैयारी करने लगे।

रोडियन कुछ देर के बाद उस कमरे में, जिसमें बिस्तर और आलमारी थी, घुसा। कमरा बहुत छोटा जान पड़ा। एक कारीगर ने अब उसको देखा, और कहा—"तुम वहाँ क्यों घुसे हो?"

रोडियन ने उत्तर देने के बजाय बाहर जाकर घण्टी खींचनी शुरू की—"हाँ, यही घण्टी थी"। उसने उसको तीन बार खींचा, और खड़ा होकर सोचने लगा। कारीगर ने बाहर आकर पूछा—"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं किराए पर कमरे लेना चाहता हूँ, इनको देखने आया था।"

"रात को लोग किराए पर मकान नहीं लेते। चौकीदार से बातचीत करो।"

रोडियन ने कहा,—"फ़र्श धो डाला गया है। क्या इसको रँगोगे भी? ख़ून कहाँ गया?"

"कैसा ख़ून?"

"बुढ़िया का और उसकी बहिन का। यहाँ तो नदी बह रही थी।"

कारीगर ने घबराकर कहा—"तुम कौन हो?"

"मैं?"

"हाँ-हाँ तुम।"

"अच्छा, आओ। चौकीदार के पास चलें। वहाँ बताऊँगा कि मैं कौन हूँ।"

"अच्छा चलो, हम भी काम कर चुके हैं। एलेशका, चलो।"

रोडियन ने उदासीनता से कहा, "चलो।" ज़ीने से उतरकर उसने बड़े ज़ोर से पुकारा—"चौकीदार"! कुछ लोग दरवाजे पर खड़े थे, और दो चौकीदार भी थे। एक चौकीदार ने पूछा—"क्या है?" रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया, और चुपचाप खड़ा हो गया।

कारीगर ने कहा,—"ये कमरे देखने आए हैं।"

"कौन-से कमरे?"

"जहाँ हम काम कर रहे हैं । इसने हमसे पूछा कि तुमने ख़ून क्यों धो डाला ? और, यह भी कहा कि इस कमरे में ख़ून हुआ था, मैं इसको लूँगा। फिर घंटा हिलाने लगा । फिर हमसे कहा, नीचे चलो, तो सब बात समझाकर बताऊँगा ।"

चौकीदार ने कहा—"आख़िर तुम कौन हो ?"

"मैं रोडियन रोमानोविश रैस्कालनिकाफ़ विद्यार्थी हूँ । मैं 'शिला'—नामक मकान में रहता हूँ, नंबर १४ है । वहाँ के चौकीदार से पूछना, वह मुझे जानता है ।" रोडियन ने यह बात बिना प्रश्नकर्ता की ओर देखे, नीची दृष्टि किए हुए, कही ।

"तुम इन कमरों में क्या कर रहे थे ?"

"देख रहा था ।" एक ऊँचे पूरे चौकीदार ने कहा—"ठीक-ठीक नहीं बताओगे, तो निकल जाओ ।" यह कहकर उसने रोडियन की गर्दन पकड़कर सड़क पर ढकेल दिया । रोडियन गिरते-गिरते बचा, और दर्शकों की ओर एक दृष्टि डालकर चुपके-से चला गया ।

रोडियम ने सोचा, अब मैं क्या करूँ ? पुल पर एक मोड़ के पास खड़ा होकर आशा करने लगा कि कोई मुझसे बात करेगा । परन्तु कोई उससे नहीं बोला । अँधेरा छाया हुआ था । दो सौ क़दम पर बड़े ज़ोर से आवाज़ होने लगी, और लोग जमा होने लगे । सड़क के बीच में एक गाड़ी खड़ी हुई थी, और लोग लालटेन लिए हुए पूछ रहे थे—"क्या मामला है ?" रोडियन भी वहाँ पहुँचा । उसको छोटी-छोटी-सी बातें रोचक मालूम होती थीं । वह वहाँ पहुँचकर हँसा, और उसने सोचा, मैंने निर्णय कर लिया है कि अब अन्त कर दूँगा, जाकर सब स्वीकार कर लूँगा ।



एक आदमी लालटेन लिए, गाड़ी के पहियों के पास, किसी चीज़ को देख रहा था। × × × × ज़मीन पर एक आदमी बेहोश पड़ा था। उसके सिर से ख़ून बह रहा था।

(पृष्ठ १५३)

N. K. Press, Lucknow

सातवाँ परिच्छेद

सड़क के बीच में एक गाड़ी खड़ी थी। उसमें दो सफ़ेद घोड़े जुते थे। कोचवान घोड़ों के सिर पकड़े था। पुलीस आ गई थी, और लोग जमा थे। एक आदमी लालटेन लिए, गाड़ी के पहियों के पास, किसी चीज़ को देख रहा था। प्रत्येक मनुष्य कुछ-न-कुछ कह रहा था, और कोचवान अपनी बचत की बातें कर रहा था। रोडियन धक्का देकर भीड़ में घुसा, और उसका कारण देखा। ज़मीन पर एक आदमी बेहोश पड़ा था। उसके सिर से ख़ून बह रहा था। वह घोड़ों की टापों के नीचे कुचल गया था। हँसने की कोई बात न थी।

कोचवान कह रहा था—"मैं बड़ी होशयारी से हाँक रहा था; परन्तु शराबी को मेरी रोशनी नहीं देख पड़ी। मैंने उसको सड़क पार करते देखा। घोड़ों के पास पहुँचकर वह घूम पड़ा। मैंने आवाज़ दी; परन्तु वह घोड़ों के नीचे आ चुका था। मैंने रासें खींची। लेकिन घोड़े नए और भड़कीले हैं, और, उन्होंने उसको कुचल दिया।"

भीड़ के दो-एक आदमी चिल्लाए—"बिलकुल ठीक है, हमने भी देखा है।" कोचवान घबराया या डरा हुआ नहीं था, और यह विदित होता था कि गाड़ी किसी बड़े धनवान आदमी की है, जो उसकी राह देख रहा होगा। पुलीस ने घायल आदमी को अस्पताल ले जाने की तैयारी करना आरम्भ कर दिया। रोडियन समीप पहुँच गया था। लालटेन की रोशनी से आदमी का मुँह देखकर वह चिल्ला उठा—"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, यह मारमेलेडाफ़ है। थोड़ी दूर पर इसका मकान है। डॉक्टर को बुलाओ, मैं फ़ीस दूँगा।" उसने रुपए निकालकर पुलीसवाले को दिखाए। रोडियन घबराया हुआ था। परन्तु पुलीस को विश्वास हो गया

कि वह उसे जानता है । रोडियन ने अपना नाम और पता बताया, और मारमैलेडाफ़ को उठा ले चलने के लिये लोगों से कहने लगा—"तीन मकान छोड़कर इसका मकान है। मैं इसको अच्छी तरह जानता हूँ। यह शराबी है, इसके एक स्त्री, बच्चे और एक लड़की है। इसको घर ले चलो, अस्पताल मत ले जाओ। उस घर में डॉक्टर भी है, मैं फ़ीस दूँगा।" सहायक मिल गए, और उस आदमी को उठाकर ले गए। मकान तीस क़दम पर होगा। रोडियन उसके सिर को सहारा दिए हुए आगे-आगे चला। "यह मकान आ गया, ऊपर ले चलो। मैं फ़ीस दूँगा। सबको धन्यवाद देता हूँ।"

कैथराइन साधारणतः रोगिणी थी, उस वक्त वह अपने सिर पर हाथ रक्खे टहल रही थी। कभी-कभी खाँसती भी थी। कभी ठहरकर दस वर्ष वाली लड़की पोलेनका से कुछ कहती थी, जो अपने छोटे भाई के कपड़े, सुलाने के लिये, उतार रही थी। उससे छोटी चोथड़े उतरवाने के लिये पास खड़ी थी। बाहर का दरवाज़ा तम्बाकू का धुआँ रोकने को बन्द था कि उस धुएँ से बेचारी रोगिणी की खाँसी न बढ़ जाय। कैथराइन की दशा इस सप्ताह में कुछ बिगड़ गई थी। उसके कपोलों पर लाल धब्बे चमक रहे थे।"

वह कह रही थी—"पोलेनका, तुम नहीं जानती कि तुम्हारे बाप के साथ मैं कैसे रहती थी। हम कैसे प्रसन्न थे। इस शराबी ने हमारा सबका नाश कर दिया। तुम्हारा बाप कर्नल था, गवर्नर से एक ही पदवी कम। सब उसको गवर्नर ही कहते थे।" उसे खाँसी आ गई। वह फिर बोली "जब मैं कमाण्डर के यहाँ नाच में गई थी, तो शाहज़ादी बेज़ीमेलनाया ने तुम्हारे पिता से पूछा कि क्या यह वही लड़की है, जो दुशाला ओढ़कर छुट्टियों से पहले नाची थी?—देखो, यह फटा हुआ है, इसको सी डालो। जैसा मैंने तुम्हें सिखाया है, वैसा रफ़ू करो। उफ़, मेरी खाँसी तो मुझे दम नहीं लेने देती।—फिर शाहज़ादा शेगेलास्की ने, जो उसी समय सेंटपीटर्स-

बर्ग से आया था, मुझसे अपने साथ नाचने को कहा । दूसरे ही दिन शाहज़ादे ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया । मैंने धन्यवाद देकर उससे कहा कि मैं अपना दिल दूसरे को दे चुकी हूँ । वह दूसरे तुम्हारे पिता थे । मेरे पिता मुझसे बहुत क्रोधित हुए ।—क्या पानी गरम हो गया है ? लीडा, लाओ, तुम्हारी कमीज़ और मोज़े आज रात को धो डालूँ । हे ईश्वर ! यह क्या, यह क्या बात है !'' वह चिल्ला उठी, जब उसने यह देखा कि दरवाज़ा खुला, और लोग कुछ उठाए हुए घुस रहे हैं ।

"यह आप क्या ला रहे हैं ?"

पुलीसमैन ने चारों ओर देखकर पूछा–"इसको हम कहाँ लिटावें ?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"पलँग पर सँभालकर लिटा दो ।"

उन लोगों में एक चिल्लाया—''शराब पिए हुए था, सड़क पर कुचल गया ।''

कैथराइन पीली पड़ गई थी, साँस लेना कठिन था । बच्चे डर गए । छोटी लीडा, चिल्लाने लगी, और पोलनका चिमट गई । मारमैलेडाफ़ को अच्छी तरह लिटवाकर रोडियन उसकी स्त्री की ओर मुड़ा, और बोला— ''ईश्वर के लिये घबराओ नहीं, शान्त हो । सड़क पार करते समय गाड़ी से टक्कर खा गए हैं । तुम घबराओ नहीं, अभी होश में आ जायँगे । मैं इनको यहाँ उठवा लाया । तुम मुझे जानती हो, तुमको याद होगा, एक बार पहले भी मैं यहाँ आया था । यह ठीक हो जायँगे । डॉक्टर की फ़ीस मैं दे दूँगा ।"

वह अपने पति के पास दौड़कर गई, और निराशा से चिल्ला उठी—"यह अच्छे नहीं होंगे !'' रोडियन ने जान लिया कि यह स्त्री घबरानेवाली नहीं । उसने उसके सिर के नीचे तकिया रख दिया, और कपड़े खोलने लगी । बड़ी कठिनाई से उसने अपनी चीख़ को रोका । रोडियन ने किसी से कहा कि डॉक्टर इसी घर में रहता है, बुला लो । फिर कैथराइन से कहा,—''घबराओ नहीं । मैंने डॉक्टर को बुलाया है । मैं फ़ीस दूँगा । पानी

है ? तौलिया लाओ। विश्वास रक्खो, उनको चोट लगी है, मरे नहीं हैं। देखें, डॉक्टर क्या कहता है ?"

कैथराइन खिड़की पर गई और एक कोने से पानी भरी हुई चिलमची, जो बच्चों और पति के कपड़े धोने के लिये रक्खी थी, उठा ले आई। सप्ताह में दो बार जब सब सो जाते थे; वह कपड़े धोती थी; क्योंकि उसी समय वे कपड़े उतरते थे। कैथराइन अपने आराम को त्याग कर सफ़ाई में लगी रहती थी। चिलमची उठाने में वह गिरते-गिरते बची। रोडियन ने तौलिया उठाकर, पानी में भिगोकर, मारमैलेडाफ़ के मुँह के खून के दाग़ धोने आरंभ किए। कैथराइन पास खड़ी थी। उसके मुँह से दुःख टपक रहा था। वह हाथ से उसका गला पकड़े थी। उसको भी सहायता की आवश्यकता प्रतीत होती थी। रोडियन ने विचार किया कि घायल आदमी को यहाँ लाकर मैंने बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं किया। पुलीसवाला संदेह में खड़ा था। कैथराइन ने कहा—"पोलिया, सुनिया के पास दौड़ जा। यदि वह घर पर न मिले, तो कह आना, पिताजी कुचल गए हैं, शीघ्र आवे।" कमरा दर्शकों से भर गया था। तिल रखने की जगह न थी। पुलीसवाले चले गए थे, केवल एक आदमी भीड़ को पीछे हटा रहा था। प्रत्येक मंज़िल के रहनेवाले चले आ रहे थे। पहले बाहर कुछ देर खड़े रहकर फिर अन्दर घुस आए। कैथराइन यह देखकर क्रोध से जल उठी। उसने चिल्लाकर कहा—"क्या तुम उसको मार डालना चाहते हो ? यहाँ क्या देखने आए हो सिगरट पीते हुए, टोपिएँ दे-देकर ? क्या मरते हुए मनुष्य का भी आदर करना नहीं जानते ? जाओ, भागो।"

खाँसी के मारे वह आगे न बोल सकी। परन्तु इतने ही शब्दों से काम निकल गया। कैथराइन से लोग डरते थे। भीड़ धीरे-धीरे पीछे हटने लगी। कुछ लोगों को गुप्त प्रसन्नता यह देखकर हुई कि इन पर और भी मुसीबत पड़ी। कुछ को दया और करुणा आई। भीड़ से किसी ने कहा,—"इनको अस्पताल ले जाओ"। कैथराइन

यह सुनकर दरवाज़े पर फिर भीड़ को डाँटने के लिये आई। यहाँ उसकी मैडम लैपेवेशल से मुठभेड़ हो गई, जो यह हाल सुनकर कमरे में आ रही थी। वह बहुत ही बेहूदा और क्रोधी औरत थी। उसने हाथ मलते-मलते कहा—"तुम्हारा शराबी पति घोड़े से कुचल गया है। उसको अस्पताल ले जाओ। मैं मकान की मालकिन हूँ।"

कैथराइन ने अभिमान से उत्तर दिया—"एमेलिया लिडविगोवना, तुम समझती हो कि तुम क्या कह रही हो ? (वह मकान की मालकिन को सदा इसी नाम से पुकारती थी कि वह अपना पद ठीक-ठीक समझती रहे।) एमेलिया लिडविगोवना—"

"मैं तुमसे कई बार कह चुकी कि मुझको एमेलिया लिडविगोवना मत कहा करो, प्रत्युत एमेलिया इवानोवना कहा करो।"

"तुम एमेलिया इवानोवना नहीं, एमेलिया लुडविगोवना हो। मैं तुम्हारी चापलूसी करनेवाली नहीं हूँ, जैसे मि० लैनिजेडपेकाफ़, जो द्वार पर खड़ा है, करता है। मैं तुमको एमेलिया लिडविगोवना के नाम से पुकारूँगी,। मेरी समझ में नहीं आता कि यह नाम तुमको क्यों नहीं अच्छा लगता। तुम देख रही हो, मेरे पति को क्या हो गया है। मैं तुम से कहती हूँ, दरवाज़ा बंद कर दो, और किसी को आने मत दो, नहीं तो तुम्हारी शिकायत गवर्नर जनरल से की जायगी। शाहज़ादा मुझको लड़कपन से जानता है। साईमन को भी जानता था। उसके साथ उसने बहुत भलाई की थी। प्रत्येक मनुष्य जानता है कि मेरे पति के कैसे-कैसे धनवान मित्र थे, जिनको उसने स्वयं अपने शराबी स्वभाव के कारण छोड़ दिया। अब भी (रोडियन की ओर दिखाकर) यह प्रतिष्ठित युवा, जो बड़ा धनवान है, और जिसको मेरा पति बचपन से जानता है, हमारी सहायता कर रहा है। एमेलिया लुडविगोवना धैर्य रक्खो।"

वह यह सब बहुत जल्दी-जल्दी कह गई; परन्तु बीच-बीच में खाँसी आती जाती थी। इस मरते हुए आदमी को कुछ होश आया, और वह

कुछ थरथराया । उसकी स्त्री उसके पास दौड़ गई । मारमैलेडाफ़ ने आँखें खोलीं, और रोडियन की ओर देखने लगा । कठिनाई से साँस चलती थी । पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें माथे पर थीं, होठों से ख़ून निकल रहा था। कैथराइन ने उसको तीव्र दृष्टि से देखा; परन्तु आँखों से आँसू निकल रहे थे । हे ईश्वर ! इसकी छाती को क्या हो गया है । ओह ! ख़ून ! हमको इसकी वास्कट उतारनी चाहिए। ज़रा करवट तो लो। मारमैलेडाफ़ ने उसको पहचाना, और भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"पादरी को बुलाओ।"

कैथराइन खिड़की पर गई, और अपना माथा पकड़कर बोली—"ओह। अब तो सहा नहीं जाता।" मारमैलेडाफ़ ने एक क्षण चुप रहकर फिर कहा—"पादरी को बुलवाओ।"

"हश !" उसकी स्त्री ने कहा। उसने स्त्री की आवाज़ पहचानी, और चुप हो गया। वह उसके तकिए के पास गई, और वह उसकी ओर देखने लगा । वह बहुत देर चुप न रहा, उसकी दृष्टि छोटी लड़की, प्यारी लीडा, पर पड़ी, जो कोने में खड़ी एकटक पिता की ओर देख रही थी । "ओह ! आह !"—उसने कुछ बोलने का यत्न करते हुए कहा।

कैथराइन ने कहा-"क्या कहते हो ?"

बच्चे को अर्द्धनग्न दशा में देखकर उसने कहा—"टाँगें नंगी हैं।"

कैथराइन ने कहा—"चुप रहो, तुम्हारे ही कारण तो ऐसा है।"

रोडियन ने प्रसन्न होकर कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है। लो, डॉक्टर आ गया।" डॉक्टर ने आकर कैथराइन की सहायता से उसके पति की ख़ून से भरी हुई कमीज़ उतारी, और उसके गले और छाती को देखने लगा । ये भाग बुरी तरह कुचल गए थे। दाहिनी पसलियाँ टूट गई थीं । बाईं ओर दिल के पास एक काला दाग था, जो घोड़े की टाप की चोट मालूम होता था ।

डॉक्टर ने रोडियन से कहा—"अब कुछ नहीं हो सकता।"

"क्या ?"

"वह मर रहा है ।"

"क्या कोई आशा नहीं ?"

"नहीं, अब अन्त समय है। मैं ख़ून रोक सकता हूँ, परन्तु उससे कुछ लाभ न होगा। ५ मिनट में यह मर जायगा।"

दरवाजे पर से लोगों की भीड़ कुछ इधर-उधर होने और एक बुड्ढे, सफ़ेद बालोंवाले पादरी के लिये जगह करने लगी, जो हाथ में पवित्र पुस्तक लिए हुए कमरे में घुसा। डॉक्टर हट गया, और पादरी को स्थान दे दिया। रोडियन ने डॉक्टर से ठहरने के लिये कहा। यद्यपि व्यर्थ था, फिर भी कंधे हिलाकर वह ठहर गया। सब पीछे हट गए। संस्कार करने में देर न लगी। परन्तु मारमैलेडाफ़ एक शब्द भी न समझा। कभी-कभी वह बोलने का यत्न करता था। कैथराइन ने लीडा को पकड़कर और मेज पर से बच्चे को लेकर अपने सामने खड़ा किया, और घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगी। आँसू पोछने के लिये होठ चबाने लगी। प्रार्थना करते-करते बच्चों के कपड़े भी सँभालती जाती थी। अन्दर दर्शक बढ़ने लगे। बाहर तो बहुत भीड़ हो गई थी। केवल एक मोमबत्ती जल रही थी।

इस समय भीड़ हट गई, और पोलेनका को जाने का रास्ता दिया, जो बहन को बुलाने गई थी। उसकी साँस फूल रही थी। मा को देखकर उसने कहा—"सुनिया मुझे रास्ते में मिली, वह आ रही है। इसी समय एक दूसरी कन्या शान्ति से धीरे-धीरे आगे आ रही थी। उसका वेष इस समय दरिद्रता, दुःख और मृत्यु की दशा में भी चकित करनेवाला था। उसके कपड़े फटे थे, परन्तु लोगों को दिखाने के लिये जैसे इस पेशेवाली करती हैं, उनमें बेल-बूटे बने थे। सुनिया चौखट पर खड़ी हो गई, और चकित होकर चारों ओर देखने लगी। उसका बनावटी वेश, उसका रंगीन रेशमी वस्त्र, जिसका हाशिया उधड़ गया था, उसके जूते और

उसकी गोल टोपी, जिसमें सुनहले पर लगे थे, इस दृश्य में अद्भुत मालूम होते थे। इस टोपी के नीचे से एक डरा हुआ पीला मुँह देख पड़ रहा था, जिसकी आँखें खुली हुई थीं। सुनिया ठिगनी और कमज़ोर थी। उसके बाल और रंग अच्छा था। उसके नेत्रों में आकर्षण था। वह वहाँ खड़ी हुई ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थी। उसने लोगों को अपने विषय में कुछ कानाफूसी करते सुना। अपना सिर झुकाकर उसने आगे बढ़ने का प्रयत्न किया। अन्तिम संस्कार हो चुका। कैथराइन अपने पति की ओर बढ़ी। पादरी जाने लगा, और जाते-जाते संतोष दिलाने के लिये कैथराइन की ओर मुड़ा।

उसने कहा—"इनका (बच्चों की ओर संकेत करके) क्या होगा?"

पादरी ने उत्तर दिया—"ईश्वर दयालु है, उसकी दया का भरोसा करो।"

"परन्तु, हम पर वह दया नहीं करता।"

पादरी ने सिर हिलाकर कहा—"देवी, यह तुम्हारी भूल है।"

"क्या मेरी भूल है?" यह कहकर उसने अपने पति की ओर संकेत किया।

"निस्सन्देह, जिन लोगों ने तुम्हारे पति को चोट पहुँचाई है, वे तुम्हारी हानि का हर्जा देंगे, और तुम्हारी सहायता करेंगे।"

कैथाराइन ने हाथ हिलाकर कहा—"मेरा यह अभिप्राय नहीं। वे उस शराबी के लिये, जो घोड़ों के पैरों के नीचे चला गया, भला क्या हर्जा देंगे? इसने हमारी कभी कुछ सहायता नहीं की, केवल दुःख पहुँचाया। शराब पीने के लिये इसने हमारी चोरी की, और मेरी और मेरे बच्चों की ज़िन्दगी का नाश कर दिया। इसके मरने से हानि बहुत नहीं है।"

"मरते समय क्षमा करना चाहिए, देवी, ऐसा विचार करना बड़ा पाप है।"

कैथराइन फिर अपने पति की ओर मुड़ी, उसकी भौं का पसीना और खून पोंछा, और तकिए को साफ़ करके पानी पीने को दिया।

"महात्माजी, आप तो केवल क्षमा ही के लिये कहते हैं। यदि आज यह शराब पीकर साधारण रीति से आता, तो मैं रात-भर इसके कपड़े धोती, कहीं सुबह तक सुखाती, प्रकाश होने पर सीती, और रफ़ू करती। इसी तरह मेरी रातें कटी हैं। मैं क्षमा क्या जानूँ ...."

खाँसी ने उसे आगे कहने न दिया, और एक हाथ से उसने अपना गला पकड़कर दूसरे से अपने मुँह में रूमाल दी। जब खाँसी रुकी, तो वह रूमाल पादरी को दिखाई। रूमाल खून से भरी हुई थी। पादरी ने बिना कुछ कहे मुँह मोड़ लिया। मारमैलेडाफ़ को अब बहुत कष्ट हो रहा था। उसकी आँखें स्त्री की ओर लगी हुई थीं, जो उसके पास झुकी हुई खड़ी थी। वह कुछ कहना चाहता था। उसके होंठ भी हिले, परन्तु आवाज़ साफ़ न निकली। कैथराइन समझ गई कि वह क्षमा-प्रार्थी है, और उसने कहा—"शान्त रहो। कोई आवश्यकता नहीं। मैं जानती हूँ, तुम क्या कहना चाहते हो।" मरते हुए पति ने फिर बोलने का साहस किया, परन्तु उसी क्षण उसकी दृष्टि सुनिया पर पड़ी। पहले उसने उसे नहीं पहचाना; क्योंकि वह अँधेरे में थी। उसने भर्राई हुई आवाज़ में पूँछा—"वह कौन है?" उसके मुख ने भयंकर रूप धारण कर लिया, और वह अपनी पुत्री की ओर देखता रहा।

कैथराइन ने कहा—"चुपचाप लेटे रहो।"

उसने उठने की कोशिश की, और सुनिया की ओर देखता रहा। वह उसको इस वेष में पहचान नहीं सका। एकबारगी उसने उसको पहचान लिया। दुःख में भरी हुई सुनिया पिता से अन्तिम बिदा लेने को खड़ी थी।

"सुनिया, मेरी पुत्री, क्षमा करो।" उसने उसका हाथ पकड़ना चाहा; परन्तु शक्ति ने काम न दिया। वह लुढ़क पड़ा, उसका सिर

पलँग से लटक गया। लोगों ने सिर उठाकर पलँग पर कर दिया। सुनिया चीखकर, दौड़कर चिमट गई। वह उसकी गोद में मर गया।

कैथराइन पति के शव को देखकर चिल्लाई—"वह तो चला गया! मैं क्या करूँ? कैसे गाड़ने का प्रबन्ध करूँ? कहाँ से बच्चों को खिलाऊँ?"

रोडियन कैथराइन के पास आया, और बोला—"पिछले सप्ताह में तुम्हारे पति ने मुझको सब अपना हाल बताया था। उसने तुम्हारी बड़ी प्रशंसा की थी। उसी दिन मुझे पता लगा कि वह तुमसे कितना प्रेम करता है। विशेष कर, कैथराइन, वह तुमसे बड़ा प्रेम करता था। उसी क्षण हम मित्र हो गए। अब मित्रता का ऋण अदा करने की मुझे आज्ञा दो। ये बीस रूबल हैं, इनको लेकर अपना काम पूरा करो। मैं कल—हाँ कल ही अवश्य आऊँगा। सलाम।" यह कहकर, भीड़ को पार करके, वह नीचे जाने लगा। रास्ते में नेकोडेम्शि टॉमिस सामने आ पड़ा। पुलीस-दफ्तर के दृश्य के बाद वे नहीं मिले थे। परन्तु उसने रोडियन को तुरन्त पहचान लिया।

वह कहने लगा—"तुम यहाँ!"

रोडियन ने उत्तर दिया—"मृत्यु हो गई। डॉक्टर और पादरी भी हो गए। सब नियमानुसार हुआ। अब विधवा को दुखी न करो। उसको धीरज दो, वह भी निर्बल हो रही है। तुम बड़े दयालु हो।" यह कह-कर वह हँसने लगा। टॉमिस ने उसकी वासकट पर खून के धब्बे देख-कर कहा—"तुम तो खून से भरे हुए हो!"

रोडियन ने एक विचित्र दृष्टि डालकर, हँसते हुए सिर हिलाकर, कहा—"हाँ, आज-कल मैं खून से भरा हुआ हूँ।" इतना ही कहकर वह नीचे चला गया।

उसको ऐसा विदित हुआ जैसे नया जीवन उसकी देह में संचार कर रहा है। उसके मन में वे भाव उठे, जैसे सूली पाए हुए आदमी के समा

मिलने पर उठते हैं। रास्ते में उसको पादरी मिला। उसको उसने बहुत नम्रता-पूर्वक प्रणाम किया। वह नीचे पहुँचा ही था कि उसको पीछे से किसी ने पुकारा। यह छोटी लड़की पोलेनका थी, जो पुकार रही थी—"महाशय, महाशय!"

वह उसकी ओर मुड़ा। लड़की हँसकर उससे बोली—"महाशय, क्या आप अपना नाम और पता बताएँगे?" रोडियन ने अपने दोनों हाथ उसके कन्धों पर रक्खे। उसको उसमें बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने पूछा—"तुमको किसने भेजा है?"

बच्ची ने हँसकर जवाब दिया—"मेरी बहन सुनिया ने।"

"मैं समझता था कि तुम्हारी बहन सुनिया ने भेजा होगा।"

"जब सुनिया ने कहा, तब मा ने भी कहा कि हाँ, दौड़कर पूछो।"

"क्या तुम अपनी बहन सुनिया को प्यार करती हो?"

बच्चे ने उत्सुक होकर कहा—"मैं सबसे अधिक उसको प्यार करती हूँ।"

"क्या तुम मुझको प्यार करोगी?"

उत्तर देने के बजाय बच्चे ने अपने फूले हुए होंठ उसके चूमने के लिये सामने कर दिए। उसने अपने नन्हें-नन्हें, पतले हाथों से रोडियन को प्यार कर लिया, और सिसकियाँ भरकर रोने लगी। फिर अपने हाथों से आँसू पोंछकर कहा—"मेरे प्यारे पिता—"

"क्या तुम्हारे पिता तुम्हें प्यार करते थे?"

उसने गंभीरता से उत्तर दिया—"वह लीडा को सबसे अधिक प्यार करते थे। वह उसको इसलिये प्यार करते थे कि लीडा सबसे छोटी और सुकुमार है। वह उसके लिये चीज़ें लाते थे, और हमको उन्होंने बाइबिल और व्याकरण पढ़ाया था। मा ने कुछ नहीं कहा; परन्तु पिता जानते थे, और हम भी जानती हैं कि वह खुश थी। मा चाहती थी कि हम फ्रेंच-भाषा सीखें।"

"तुमको ईश्वर से प्रार्थना करनी आती है?"

"हाँ-हाँ, बहुत दिनों से। मैं और कोलिया, और लीडा मा के संग प्रार्थना करती थीं। हम पहले कुमारी की प्रार्थना करती थीं, और फिर कहती थीं—हे ईश्वर, हमारी प्यारी बहन सुनिया को क्षमा कर। उसके अनन्तर अपने पहले पिता के लिये प्रार्थना करती थीं। हमारे पहले पिता मर चुके थे। यह हमारे दूसरे पिता थे। इनके लिये भी हम प्रार्थना करती थीं।"

"अच्छा पोलिया, मेरा नाम रोडियन है। अब मेरे लिये भी प्रार्थना किया करो।"

"जीवन-पर्यन्त मैं आपके लिये प्रार्थना करूँगी।" यह कहकर कन्या हँसने लगी, और एक बार फिर रोडियन ने प्यार किया।

रोडियन ने अपना नाम और पता बताकर दूसरे दिन आने का वचन दिया। कन्या प्रसन्न होकर चली गई। ग्यारह बज चुके थे। ५ मिनट में वह फिर पुल पर पहुँच गया—ठीक वहीं, जहाँ अभी एक कन्या आत्म-हत्या करते हुए उसे मिल चुकी थी।

उसने धीरे-धीरे कहा—मेरे विचारो, भग जाओ। अब मैं जीवित रहूँगा। मेरा जीवन उस बुढ़िया के संग नहीं गया। उसको स्वर्ग मिले। बस, अब प्रकाश और बुद्धि का समय आ गया। फिर उसको ख़याल आया कि मैं केवल पैर रखने की जगह पाकर जीवित रहना चाहता हूँ। मैं बहुत निर्बल हूँ। परन्तु अब रोग गया। मैं जानता था कि बाहर आने से मैं ठीक हो जाऊँगा। राजू का मकान समीप है; चलो, वहीं चलें। नहीं, उसको खुशी मनाने दो—नहीं, चलो। शक्ति बहुत आवश्यक है। शक्ति के विना कुछ नहीं हो सकता। और, शक्ति से शक्ति आती है। वह संतुष्ट होकर आगे बढ़ा। उसमें यह परिवर्तन क्यों हो गया, यह वह स्वयं नहीं समझता था। अब उसको ध्यान आया कि मुझे जीवित रहना चाहिए, जीवन में अभी मुझे सुख मिल सकता है। इस परिणाम पर पहुँचकर उसने सोचना छोड़ दिया। वह राजू के कमरे की ओर प्रफ़ु

ल चल पड़ा। चौकीदार ने उसको राजू का कमरा बता दिया। सीढ़ी पर ज़ोर की आवाज़ें आ रही थीं। दरवाज़ा खुला हुआ था। राजू का कमरा बड़ा था। २५ अतिथि वहाँ बैठे थे। रोडियन दरवाज़े ही पर खड़ा गया। मालकिन के दो नौकर चा, डबल रोटी और शराब बाँट रहे थे। डियन ने राजू को पुकारा, और वह दौड़कर दरवाज़े पर आ गया। राजू कुछ ज्यादा शराब पिए हुए था, यद्यपि उसके ढंग से यह मालूम होता था कि वह शराब पिए हुए है।

"मैं केवल तुमसे यह कहने आया हूँ कि तुम जीत गए। मैं ठहर नहीं सकता। मैं बहुत निर्बल हो रहा हूँ, और गिरा चाहता हूँ। बस, इतना ही कहना था। सलाम, कल मेरे पास आना।"

"तुम बहुत निर्बल हो। चलो, तुम्हें घर पहुँचा आऊँ।"

"अपने अतिथियों की सेवा करो। यह कौन है, जो मेरी ओर देख रहा है?"

"यह मेरे चचा के मित्र हैं, मैं इन्हें नहीं जानता। मेरे चचा बड़े अच्छे आदमी हैं। मुझे शोक है कि तुम नहीं ठहर सकते, नहीं तो मैं तुम्हारा परिचय उनसे करा देता। मेरे अतिथियों की कुछ चिन्ता न करो। पहले तुम्हारी सेवा करना मेरा धर्म है। एक क्षण ठहरो। मैं जेसीमाफ़ को बुला लाता हूँ।"

जेसीमाफ़ बड़ी प्रसन्नता से बाहर आया, और अपने रोगी को उत्सुकता से देखने लगा। फिर उसकी परीक्षा करके बोला—"तुमको नींद की आवश्यकता है। मैं तुमको एक चूर्ण दूँगा, मेरे पास यहीं है। क्या तुम उसको खाओगे?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"निस्सन्देह।"

जेसीमाफ़ ने राजू से कहा—"यह अच्छी बात है कि तुम इसे घर पहुँचाने जा रहे हो। देखें, कल इसकी दशा कैसी रहती है। आज तो बुरी नहीं है। अद्भुत परिवर्तन हो गया है।"

ज्यों ही वे सड़क पर पहुँचे, राज़ू ने कहा—"क्या तुम जानते हो कि जेसीमाफ़ ने चलते समय मेरे कान में क्या कहा ? उस समय मैंने नहीं कहा; क्योंकि वहाँ पर बहुत-से मूर्ख थे। जेसीमाफ़ ने मुझको आज्ञा दी है कि मैं तुमसे बातें करता जाऊँ, और तुमको बोलने न दूँ। और, फिर उसने कहा कि उसके विचार में या तो तुम पागल हो गए हो, या होनेवाले हो। मुझे इस बात पर हँसी आती है; क्योंकि एक तो तुम उससे दुगने बुद्धिमान् हो। दूसरे, तुम इतने मूर्ख नहीं कि उसके इस बेहूदा विचार पर नाराज़ हो। और तीसरे, उस में ऐसा विचार उस बातचीत को सुनकर हुआ, जो तुममें और जेमटाफ़ में हुई थी।"

"क्या जेमटाफ़ ने सब बातें तुम लोगों से कह दीं ?"

"हाँ, अब मैं तुम्हारे हर ख़याल को अच्छी तरह समझ सकता हूँ, और जेमटाफ़ भी समझ सकता है। हाँ, एक बात यह है। मुझको भय है कि मैं कुछ नशे में हूँ। ख़ैर, इसे जाने दो। बात यह है कि उन लोगों को ज़ोर से बातें करने का साहस नहीं हुआ, और इसलिये कहानी आगे न बढ़ी। और, जब चित्रकार पकड़ कर आ गया, तो सब बात साफ़ हो गई, तथा संदेह दूर हो गया। क्या वे इतने मूर्ख हैं ? मैंने जेमटाफ़ को एक घूँसा मारा। (यह मैं तुमसे कहता हूँ, किसी से कहना नहीं।) परन्तु आज यह बात बिल्कुल साफ़ हो गई ? एलापा उस समय उपस्थित था, जब तुम बेहोश हुए थे।"

रोडियन राज़ूमिस्खेन की नशे की बातें सुनता रहा, और फिर बोला—"रोग़न और गंदी हवा से मुझको मूर्छा आ गई थी।"

"संभव है; परन्तु यह केवल रोग़न ही के कारण न हुआ था। जेसीमाफ़ के कथनानुसार एक महीने से तुमको ज्वर हो रहा था। आज क्रिस्टल-पैलेस में तुमने जेमटाफ़ को बहुत डरा दिया। वह तुम्हारी बेहूदा बातें सुनकर घबरा गया, और फिर तुमने एकबारगी उससे कहा कि उससे हँसी कर रहे थे। हे ईश्वर, मैं वहाँ क्यों न हुआ ! अब पारफ़ीरियस तुमसे मित्रता करना चाहता है।"

"निःसन्देह। परन्तु सब लोग मुझे पागल क्यों समझते हैं ?"

"पागल नहीं, मेरे मित्र। मैं इस समय ज़रा नशे में हूँ, इसलिये मैंने ऐसा शब्द कह दिया। परन्तु, हाँ, उसका ऐसा ख़याल है।"

"सुनो राजू, मैं सब तुमसे कहना चाहता हूँ। मैं अभी एक ऐसे स्थान से आ रहा हूँ, जहाँ एक आदमी कुचलकर अभी मर गया। मैंने सब रुपए दे डाले, और वहाँ मेरा एक ऐसे जीव ने स्वागत किया कि यदि मैंने किसी को मार डाला होता—या, यों कहो कि मैंने वहाँ एक जीव ऐसा देखा, जो अग्नि के रंग के पर लगाए था। मैं मूर्ख हूँ, मुझको पकड़ो। मैं गिरा।—लो, सीढ़ी आ गई।"

राजू ने घबराकर कहा—"क्या बात है ?"

"मेरा सिर चकरा रहा है। परन्तु इससे और उस मामले से कोई संबंध नहीं। लेकिन कैसे दुःख को बात है—बड़े दुःख की बात है। बेचारी स्त्री ! देखो, यह क्या ? देखो—"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"मेरे कमरे में यह रोशनी क्यों हो रही है।"

दोनों ज़ीने पर मालकिन के दरवाज़े से देखने लगे। निस्सन्देह रोडियन के कमरे में प्रकाश हो रहा था।

राजू ने कहा—"बड़े आश्चर्य की बात है ! नेस्टेसिया होगी।"

"नहीं, वह इस समय कभी नहीं आती। वह तो, देर हुई, सो गई होगी। सलाम।"

"तुम क्या कहते हो ? मैं तुमको ऊपर तक पहुँचाऊँगा। चलो, ऊपर चलें।"

"हाँ—हाँ। परन्तु मैं तुमसे यहीं हाथ मिलाना चाहता और विदा होना चाहता हूँ। लाओ, हाथ दो। सलाम।"

"रोडियन, तुमको क्या हो गया है ?"

"कुछ नहीं। अच्छा, आओ, चलो। तुमको साक्षी देनी होगी।"

वे ऊपर चढ़े । राजू यही सोचता था कि जेसीमाफ़ का विचार ठीक है । कदाचित् मैंने बातें करके उसको घबरा दिया । दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने बातचीत सुनी ।

राजू चिल्लाया—"कौन हो सकता है !"

रोडियन ने आगे बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया । उसकी मा और बहन कोच पर बैठी हुईं आध घण्टे से उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। वह उनको देखकर चकित हो गया । यद्यपि वह सुन चुका था कि वे जाने-वाली हैं, तथापि इस समय आश्चर्य में आ गया। आध घण्टे से नेस्टेलिया उनका मन बहला रही थी। वह उनके सामने खड़ी हुई उनको सारी कहानी सुना रही थी, और अपने गुप्त विचार भी बता रही थी। वे यह सुनकर डर गईं कि वह बीमारी की दशा में बाहर सड़क पर निकल गया है, और फिर उसका कोई समाचार नहीं मिला। हे ईश्वर ! उसको क्या हो गया ? दोनों रोने लगीं, और आध घण्टे तक घोर चिन्ता में मग्न रहीं। रोडियन को देखकर उन्होंने बड़ी ख़ुशी से उसका स्वागत किया । दोनों उसकी ओर दौड़ीं। परन्तु वह पत्थर की नाईं ज्यों-का-त्यों रह गया। भयंकर विचार से उसका शरीर काँप उठा, और उसका हाथ उनसे हाथ मिलाने को न उठा। उसकी मा और बहन हाथ फैलाकर उसकी ओर दौड़ीं, उसके मुख को चूमा, हँसने और रोने लगीं । वह एक पग आगे बढ़ा, लड़खड़ाया, और फिर मूर्छित होकर गिर पड़ा। राजू, जो दरवाजे पर खड़ा था, तुरन्त ही उसकी ओर दौड़ा, और मूर्छित रोडियन को अपनी बलिष्ट भुजाओं से उठाकर पलँग पर लिटा दिया। उसके नातेदार रोने और चिल्लाने लगे ।

उसने उनसे कहा—"कुछ नहीं, मूर्छा है । पानी लाओ, अभी होश में आ जायगा। डॉक्टर ने पहले ही ऐसा कहा था ।"

राजू ने डोनिया का हाथ पकड़कर, आगे खींचकर, कहा—"देखो, अभी होश में आता है । मा और बहन राजू की ओर कृतज्ञता-भरी

दृष्टि से देखने लगीं, जैसे वह ईश्वर का भेजा हुआ दूत हो। वे पहले ही नेस्टेसिया से सुन चुकी थीं कि राजू ने किस प्रकार रोडियन की बीमारी में सेवा की है।

पवित्र पापी

तीसरा भाग

सन्देह

पहला परिच्छेद

रोडियन कुछ उठकर बैठा, और राजू को रोककर, अपनी मा और बहन को पकड़कर, दो मिनट तक उन्हीं को देखता रहा। उसके मुँह से उदासी और चिन्ता टपकती थी। उसकी मा रोने लगी, उसकी बहन पीली पड़ गई, उसका हाथ अपने भाई के हाथों में काँपने लगा।

राजू को दिखाकर रोडियन ने लड़खड़ाते हुए शब्दों में कहा—"जाओ उसके साथ अपने स्थान पर जाओ, कल तक के लिये जाओ। परन्तु तुम कब आई?"

मा ने उत्तर दिया—"हम अभी आ रही हैं। गाड़ी लेट हो गई थी। परन्तु, रोडियन, मैं तुमको अकेला नहीं छोड़ सकती। रात-भर तेरे पास बैठूँगी।"

उसने चिढ़कर कहा—"मुझको परेशान मत करो।"

राजू ने कहा—"मैं इसके पास रहूँगा, और एक क्षण भी यहाँ से न हटूँगा, चाहे मेरे मेहमान नाराज़ क्यों न हो जाँय। और, मेरे चचा तो वहाँ उनका सत्कार करने के लिये हैं ही।

मा ने रोडियन का हाथ दबाते हुए राजू से कहा—"मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूँ!"

रोडियन ने उत्तेजित होकर कहा—"नहीं, मुझे परेशान मत करो। जाओ, शीघ्र जाओ। यहाँ तुम्हारा रहना मुझे सहन नहीं।"

डोनिया ने चिन्तित वाणी में कहा—"मा, चलो, इस समय चली चलो। हमारी उपस्थिति से इनकी तबियत ख़राब होती है।"

मा ने उत्तर दिया—"तीन वर्ष के बाद मिली हूँ, क्या १ मिनट भी उसके पास न बैठूँ?"

रोडियन ने कहा—"हाँ, देखो, तुम लोग बीच में बातें करके मुझको भुला देते हो कि मैं क्या कहना चाहता था। क्या तुम लूशिन से मिलीं?"

मा ने डरते-डरते कहा—"नहीं रोडियन! परन्तु उसने हमारे आने का हाल सुन लिया है। हमको मालूम हुआ है कि लूशिन आज तुम्हारे पास भी आया था।"

"हाँ, कृपा तो की थी। डोनिया, मैंने लूशिन से कहा है कि मैं तुमको ठोकर मारकर नीचे फेंक दूँगा। कमबख़्त का सत्यानाश हो जाय।"

मा ने भयभीत होकर कहा—"रोडियन, यह क्या कहते हो? क्या तुमने सचमुच ऐसा कहा? असंभव है।"

डोनिया ने मा को संकेत से आगे कुछ कहने से रोका, और भाई की ओर एकटक देखने लगी। दोनों स्त्रियाँ चिन्तित थीं। वे झगड़े का कुछ हाल नेस्टेसिया से सुन चुकी थीं।

रोडियन ने कहा—"डोनिया, यह विवाह नहीं हो सकता। कल लूशिन को बिदा कर दो। मैं अब उसका नाम फिर नहीं सुनना चाहता।"

मा ने कहा—"हे ईश्वर!"

डोनिया बोली—"भाई, ज़रा सोचो, तुम कह क्या रहे हो? तुम इस समय थके हुए हो, इसलिये तुम ऐसी बातें करते हो।"

"क्या तुम समझती हो कि मैं पागल हूँ? नहीं, तुम मेरे कारण लूशिन से विवाह करती हो। मैं इस स्वार्थत्याग को स्वीकार नहीं

करूँगा। कल सुबह उसको पत्र लिख दो कि विवाह नहीं हो सकता, और वह पत्र प्रातःकाल मुझे दिखा देना।"

डोनिया ने क्रोधित होकर कहा—"मैं ऐसा नहीं कर सकती। किस अधिकार से......?"

मा ने हकलाते हुए कहा—"डोनिया, क्रोधित मत हो, कल देखा जायगा। इस समय चली चलो।"

राजू ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा—"इस समय यह होश में नहीं है, नहीं तो कदापि......। कल होश में आ जायगा। यह सच है कि इसने उस भलेमानस को निकल जाने को कहा और इसे बहुत कुछ चिढ़ाया था। वह यहाँ आकर अपनी लियाक़त छाँट रहा था। परन्तु फिर टाँगों के बीच दुम दबाकर भागा।"

"तो यह सब सच है।" मा ने कहा।

डोनिया ने शान्त भाव से कहा—"भाई, बिदा दो। चलो मा, चलें। कल आवेंगी।"

रोडियन फिर बोला—"मैं बेहोश नहीं हूँ। बहन, इस विवाह से अपमान होगा। मैं बदमाश हूँ, परन्तु इस कारण मेरी बहन को ऐसा नहीं होना चाहिए। बस, यदि तुमने उससे विवाह किया, तो मैं चाहे जितना गिरा हुआ होऊँ, परन्तु मेरा-तुम्हारा नाता कुछ भी नहीं। अब मेरे और लूशिन के बीच में तुम्हें चुनाव करना है।"

राजू ने कहा—"तुम होश में नहीं हो, राजों की-सी बातें करते हो।"

रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया, थककर पलँग पर गिर पड़ा, और दीवाल की ओर करवट ले ली। डोनिया की दृष्टि राजू के ऊपर पड़ी। वह उसकी दृष्टि से लड़खड़ा गया। मा ने राजू से कहा,—"मैं यहाँ से नहीं हट सकती। मैं इसके समीप कहीं छिपकर रहूँगी। तुम डोनिया को उसके स्थान में पहुँचा दो।"

राजू ने उत्तर दिया—"तुम सब बिगाड़ दोगी। इस वक्त चलो, और तुम, नेस्टेसिया, रोशनी दिखाओ।" ज़ीने पर पहुँचकर उसने कहा—"अभी यह मुझे और डॉक्टर को पीटनेवाला था। फिर, डोनिया को भी उस स्थान में अकेले रहना उचित नहीं। तुम नहीं जानतीं कि वह कैसा मकान है। बदमाश लूशिन को और कोई उचित स्थान नहीं मिला। ख़ैर, मैं इस समय ज़रा नशे में हूँ, इसलिये शायद कहीं कोई बात कह गया। क्षमा करो।"

मा ने कहा—"मैं रोडियन की मालकिन से मिलूँगी। डोनिया और मैं कहीं यहीं, इसी स्थान में, रात काटूँगी। मैं इस दशा में इसे अकेला नहीं छोड़ सकती।"

यह बातचीत मालकिन के दरवाज़े पर हुई। नेस्टेसिया सीढ़ी पर खड़ी रोशनी दिखा रही थी। राजू बहुत घबराया हुआ था। आध घण्टे पहले जब वह रोडियन को घर पहुँचाने आ रहा था, तब खूब बातें कर रहा था। उसका दिमाग़ ठीक था, यद्यपि उसने उस दिन अधिक शराब पी थी। इस समय वह विक्षिप्त दशा में था। उसने दोनों स्त्रियों के हाथ पकड़ लिए थे, उनको समझा रहा था, और अपनी बात पर ज़ोर देने के साथ-साथ उनकी उँगलियाँ दबाता तथा डोनिया को एक टक देखता जाता था। बेचारी स्त्रियों को इससे कष्ट हो रहा था। और, जब वे अपनी उँगलियाँ उसके बलिष्ट हाथों से छुड़ाना चाहती थीं, तो वह और ज़ोर से उनको दबाता और उनके कष्ट का कुछ ख़याल नहीं करता था। यदि इस समय वे कहतीं कि सिर के बल फाँद पड़ो, तो वह फाँद पड़ता। मा ने राजू को सनकी समझा, और उसकी पकड़ को भयानक। परन्तु रोडियन का खयाल करके उसने इस युवा के अजीब तरीक़े पर कुछ ध्यान न दिया। डोनिया भी अपनी मा की तरह चिन्ता में थी। यद्यपि वह शर्मीली औरत थी, फिर भी वह अपने भाई के मित्र का घूरना बरदाश्त न कर सकी। वह कुछ बेचैन और घबराई हुई थी। नेस्टे-

सिया ने उसके विषय में इतनी अच्छी बातें न कही होतीं, तो वह अपनी मा को लेकर उसके पास से भाग जाती। किन्तु वह समझती थी कि इस समय इसके विना काम न चलेगा। पर राजू की दशा कैसी भी रही हो, लेकिन दस मिनट के बाद उसका असली रूप दिखाई देने लगा।

उसने कहा—"तुम ऐसी मूर्खता की बातें न करो। तुम रोडिया की मा हो; परन्तु यदि तुम यहाँ ठहरोगी, तो ईश्वर जाने, क्या हो। मेरी बात सुनो। अभी नेस्टेसिया उसकी देखभाल करेगी। मैं तुमको घर तक पहुँचा आऊँ; क्योंकि सेंटपीटर्सवर्ग में दो स्त्रियों का रात में अकेली सड़क पर जाना ठीक नहीं। तुमको पहुँचाकर मैं फिर यहाँ आऊँगा, और वचन देता हूँ कि पंद्रह मिनट के अन्दर ही उसकी दशा तुमका बता जाऊँगा कि उसको नींद आ गई है या नहीं। फिर मैं अपने घर जाऊँगा। वहाँ मेरे मेहमान शराब पिए हुए मस्त बैठे होंगे। डॉक्टर जेसीमाफ, जो रोडियन का इलाज कर रहा है—भो मेरे मकान पर है। पर वह शराब नहीं पिए हैं; क्योंकि वह कभी शराब नहीं पीते। मैं उन्हें ले आऊँगा, और रोगी को दिखाकर डॉक्टर को घण्टे-भर के अन्दर तुम्हारे पास पहुँचाऊँगा। इस तरह तुमको रोडियन की ख़बर दो आदमियों से मिलेगी—एक तो मुझसे, और दूसरे डॉक्टर से। यदि उसकी हालत अच्छी न होगी, तो तुमको फिर यहीं वापस ले आऊँगा। यदि अच्छी हुई, तो तुम सो जाना। मैं बरामदे में रात बिताऊँगा। उसको कुछ पता न चलेगा। डॉक्टर को भी मालकिन से कहकर यहीं कहीं सुला दूँगा कि ज़रूरत पड़े, तो काम आवें। इस समय रोडियन के पास डॉक्टर का होना तुम्हारे होने से अधिक आवश्यक है। मालकिन तुमको रहने का स्थान नहीं देगी, परन्तु मुझको दे देगी। वह बेवकूफ़ है, और मुझसे प्रेम करती है। यदि डोनिया को उसने मेरे संग देखा, तो वह डाह करेगी। वह बड़ी विचित्र स्त्री है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं भी मूर्ख हूं। परन्तु मुझ पर विश्वास करो। बोलो, करोगी कि नहीं?"

डोनिया ने कहा—"मा, चलो। मुझको विश्वास है कि यह अपने वचन का पालन करेंगे। मेरा भाई इन्हीं के कारण जीवित है। और, यदि डॉक्टर रहने को सहमत हो गया, तो इससे बढ़कर क्या हो सकता है।"

राजू ने कहा—"तुम समझ गईं, तुम देवी हो। चलो। नेस्टेसिया, जाओ, ऊपर उसके पास ठहरो। मैं पन्द्रह मिनट में आता हूँ।"

मा को सन्तोष तो नहीं हुआ था, परन्तु उसने कुछ नहीं कहा। राजू दोनों स्त्रियों के हाथ पकड़कर खींच ले चला। मा को चिन्ता थी कि यह मनुष्य शराब पिए हुए है, और यद्यपि यह हमारा भला चाहता है, फिर भी ऐसी दशा में कहे हुए वचनों का क्या विश्वास हो सकता है। राजू उसके विचार समझ गया। वह बोला—"तुम समझती हो कि मैं शराब के नशे में हूँ। परन्तु मैंने शराब अवश्य बहुत पी है, तो भी उसका नशा मुझे नहीं है। जैसे ही मैंने तुमको देखा, मुझको नशा हो गया। मेरे शब्दों पर ध्यान न दो, मैं बेहूदा बक रहा हूँ। मैं तुमसे बहुत नीच हूँ। तुम्हें घर पर पहुँचाकर मैं नहर पर जाऊँगा, और दो डोल पानी सिर पर डालकर फिर ठीक हो जाऊँगा। तुम नहीं जानतीं, मैं तुम दोनों को कितना प्यार करता हूँ। हँसो नहीं, न नाराज़ हो। और किसी से क्रोधित हो; पर मुझसे नहीं। मैं उसका मित्र हूँ, इसलिये तुम्हारा भी हूँ। तुमको देखकर प्रतीत होता है कि तुम जैसे आकाश से आई हो। आज मैं पलक भी न भाँजूँगा। डॉक्टर ने कहा है कि रोडियन पागल हो रहा है, इसीलिये हमें उसको न छेड़ना चाहिए।"

मा ने चिल्लाकर कहा—"तुम क्या कहते हो?"

डोनिया ने घबराकर पूछा—"क्या डॉक्टर ने ऐसा कहा है?"

"हाँ, कहा तो है। परन्तु यह उसकी भूल है। उसने रोडियन को कुछ चूर्ण दिया था। उसी समय तुम आ गईं। अच्छा होता, यदि तुम कल आतीं। हम लोगों ने वहाँ से चले आकर अच्छा किया। घण्टे-भर बाद डॉक्टर

आकर उसकी दशा तुमको बतलावेगा। डॉक्टर शराब नहीं पीता। मैं भी उस समय तक ठीक हो जाऊँगा। परन्तु मैंने इतनी पी क्यों ली? उन लोगों ने मुझसे विवाद आरम्भ किया, और अब मैं प्रण करता हूँ कि कभी बहस नहीं करूँगा। यदि वह और कुछ कहते, तो मैं उनका गला घोंट देता। मैं अपने चचा को वहाँ छोड़ आया हूँ। वे लोग बड़े तार्किक हैं। हम रूसी दूसरों के विचारों को ले लेते हैं, और उन्हीं पर विवाद करते हैं। क्या मैं सच नहीं कह रहा हूँ?" यह कह राजू ने दोनों स्त्रियों के हाथ दबाए।

मा ने कहा—"मैं तुम्हारी बात कुछ नहीं समझी।"

डोनिया ने गंभीरता से कहा—"आप ठीक कहते हैं, यद्यपि उसकी प्रत्येक बात से मैं सहमत नहीं हूँ।" यह कहकर वह चिल्लाई; क्योंकि राजू ने उसका हाथ बड़े ज़ोर से दबा दिया था।

राजू ने खुश होकर कहा—"हाँ-हाँ, ठीक है। तुम भलाई, पवित्रता, बुद्धि और समझ का स्रोत हो। अपना हाथ मुझको दो कि मैं घुटनों के बल बैठकर उसको इस समय चूमूँ।" यह कहकर वह सड़क पर बैठ गया। सौभाग्य से इस समय कोई यात्री नहीं था।

मा ने घबराकर कहा—"तुम यह क्या करते हो!"

डोनिया भी घबराई हुई थी, परन्तु हँसकर बोली—"कृपया उठिए।"

"जब तक तुम हाथ न दोगी, मैं न उठूँगा। लो, अब उठ गया, अब चलो। मैं बड़ा अभागा मूर्ख हूँ, तुम्हारे अयोग्य हूँ, और इस बात की मुझे लज्जा है कि इस समय शराब पिए हूँ। मैं तुमसे प्रेम करने के योग्य नहीं हूँ। परन्तु प्रत्येक पुरुष, जो जानवर नहीं, तुम्हारे सामने सिर झुकावेगा। इसीलिये मैं भी शिर झुकाता हूँ। लो, तुम्हारा ठहरने का स्थान आ गया। और, लूशिन इसी लायक़ था कि रोडियन उसको निकाल दे। ऐसे स्थान में तुमको ठहराना बड़ी लज्जा की बात है। क्या तुम जानती हो कि यहाँ कैसे आदमी रहते हैं? तुम्हारा विवाह ऐसे आदमी से होगा? मुझे कहना पड़ता है कि तुम्हारा पति बड़ा विचित्र मनुष्य है।"

मा ने कहा—"राजू, सुनो, तुम भूलते हो—।"

राजू बोल उठा—"हाँ-हाँ, आप ठीक कहती हैं, मैं भूल गया। मैं बड़ा लज्जित हूँ। परन्तु आप बुरा न मानें। मैंने यह बात इसलिये कही कि मैं मुँहफट हूँ, और इसलिये नहीं......। यह कमीनो बात होगो। इसलिये नहीं कि......मैं अपना वाक्य पूरा नहीं कर सकता। परन्तु जैसे ही वह आदमी गया, हम लोगों को प्रतीत हुआ कि वह हमारे-जैसा नहीं है। बस, यह तो ठीक है। अब मुझे क्षमा करो। चलो, आगे चलें। मैं इस बरामदे को जानता हूँ, यहाँ पहले भी मैं आ चुका हूँ। नम्बर ३ में एक बड़ी लज्जाजनक घटना हो चुकी है। तुम्हारा नंबर ८ है। रात को अन्दर से ताला बन्द कर देना, और किसी को घुसने न देना। पन्द्रह मिनट के बाद मैं आऊँगा, फिर आधा घण्टे बाद डॉक्टर के साथ आऊँगा। नमस्कार।"

मा ने बेटी से चिन्तित होकर कहा—"डोनिया, क्या होनेवाला है?"

डोनिया ने अपनी टोपी उतारकर कहा—"मा, घबराओ मत। ईश्वर ने हमारी सहायता के लिये इसको भेजा है, हमें इस पर भरोसा करना चाहिए। यद्यपि वह नशे में है, फिर भी स्मरण करो, उसने भाई के लिये क्या-क्या किया है।"

"अरी डोनिया, ईश्वर जाने वह आवेगा कि नहीं। मैं रोडियन को छोड़कर क्यों चली आई। मैं यह नहीं समझती थी कि उसकी ऐसी दशा है। हमारा बड़ा विचित्र स्वागत उसने किया। जैसे हमारा आना उसको बुरा लगा।" मा के नेत्र सजल हो गए।

"नहीं, माँ, तुमने भाई को अच्छी तरह नहीं देखा। तुम चिल्लाती ही रहीं। बीमारी के कारण वह बहुत निर्बल हो गए हैं, और इसी के कारण ऐसा व्यवहार उन्होंने किया।"

मा ने बेटी की ओर देखते हुए कहा—"इस बीमारी का अन्त कैसे होगा, डोनिया? उसने तुमसे कैसी विचित्र बातें कहीं!"

मा को यह जानकर बड़ा सन्तोष हुआ कि डोनिया अपने भाई की ओर से बोलती है, और विदित होता है कि उसको क्षमा कर दिया है। फिर भी बेटी के दिल का हाल जानने के लिये उसने कहा—"मुझे विश्वास है कि वह कल तक अपनी सम्मति बदल देगा।"

डोनिया ने उत्तर दिया—"मुझे विश्वास है कि वह अपनी सम्मति नहीं बदलेगा।"

इस नाज़ुक मामले में मा अधिक बात न चला सकी। डोनिया ने मा का मुख चूमा, और मा ने उसको प्यार किया। दोनों राजू की प्रतीक्षा करने लगीं। मा अपनी आँख पुत्री की ओर लगाए रही, जो ध्यान में मग्न, हाथ जोड़े हुए, कमरे में इधर से उधर टहल रही थी। डोनिया को जब कोई चिंता आ घेरती थी, वह ऐसा ही करती थी, और फिर मा उससे कुछ न बोलती थी।

राजू ने मूर्खता अवश्य की कि नशे के प्रभाव में वह डोनिया से इतना प्रेम करने लगा। परन्तु उस कन्या का चित्र, जब वह विचारों में मग्न हाथ जोड़कर इधर-उधर घूम रही थी, ऐसा ही था, कि वह प्रत्येक युवा को अपनी ओर आकर्षित करता। वह लंबी और सुन्दर थी, उसका शरीर सुडौल था, और उसकी हर बात से आत्म-विश्वास प्रकट होता था। चलने में उसके नज़ाकत थी। वह अपने भाई से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी। उसके बाल कुछ ज्यादा भूरे थे। उसकी चमकदार काली आँखें अभिमान प्रकट करती थीं, जो किसी-किसी समय बहुत प्यारी मालूम होती थीं। उसका रङ्ग पीला था, परन्तु वह बीमार न थी। और, उसके मुख से पूर्ण स्वास्थ्य टपकता था। मुँह उसका छोटा था, और नीचे का लाल होठ कुछ आगे को निकला हुआ था, कुछ ठोढ़ी भी आगे को निकली हुई थी। यही दो त्रुटियाँ उसके मुख पर थीं। उसके मुख का भाव बहुत गंभीर था, जो हँसने पर विचित्र सुन्दरता प्रकट करता था। राजू ने आज तक ऐसी सुंदर कन्या नहीं देखी थी। वह उत्साही, सच्चा, ईमानदार और

स्पष्टवक्ता था। शराब के कारण वह और भी प्रेम में फस गया, और अचानक उसने डोनिया को पहले-पहल ऐसे समय देखा, जब भाई को देखकर उसके मुख पर प्रेम-रस टपक रहा था। फिर भाई को आज्ञा सुनकर जो उसके मुख पर अभिमान का भाव आया, उसको देखकर तो राजू उसका ग़ुलाम हो गया।

उसने यह सच कहा था कि मकान की मालकिन डोनिया को देखकर डाह करने लगेगी। डोनिया की मा में भी कुछ सौन्दर्य बाक़ी था, और यद्यपि वह तेंतालीस वर्ष की हो चुकी थी, फिर भी उसको अवस्था कम मालूम होती थी। जैसे, प्रत्येक उस स्त्री की, जिसने पवित्र और ईमानदारी का जीवन व्यतीत किया हो। उसके बाल कुछ-कुछ सफ़ेद हो चले थे, मुख पर लकीरें पड़ चली थीं, कपोलों पर चिंता और शोक अंकित था। परन्तु, फिर भी, वह सुन्दर थी। वह अब भी यदि अपना चित्र खिचवाती, तो लोगों को डोनिया का धोखा होता। मा का प्रेमी स्वभाव था। वह थोड़ा-सी बात को बहुत अनुभव करती थी; परन्तु निर्बल न थी। और, यद्यपि दूसरे की बात मान लेती थी, फिर भी जहाँ सिद्धान्त, ईमानदारी और विश्वास की बात हो, वह किसी की न सुनती थी।

बीस मिनट के अन्दर राजू ने दरवाज़ा खटखटाया। वह अन्दर नहीं घुसा, बाहर ही से यह कहकर चला गया कि मुझको अन्दर आने का समय नहीं है। रोडियन मीठी नींद सो रहा है, और मुझे आशा है, वह दस घण्टे सोवेगा। मैं नेस्टेसिया को वहाँ छोड़ आया हूँ। अब डॉक्टर के पास जा रहा हूँ, वह आकर सब बात तुमसे बयान करेगा। तब तुम लोग सो जाना; क्योंकि तुम भी बहुत थकी हुई हो। यह कहकर वह भाग गया।

मा ने खुश होकर कहा, कैसा चलता पुरजा उपकारी स्वभाव का युवा है।

डोनिया ने उत्तर दिया—"बड़ा दयालु मनुष्य है।" और, यह कहकर वह फिर कमरे में घूमने लगी।

घण्टे-भर बाद किसी ने फिर दरवाज़ा खटखटाया। दोनों स्त्रियाँ राजू की प्रतीक्षा ही कर रहीं थीं। वह डॉक्टर के साथ आया। डॉक्टर रोडियन को देखने तो उसी क्षण चला गया था, परन्तु स्त्रियों के पास जाने से घबराता था; क्योंकि राजू शराब पिए हुए था, और इस कारण वह उसका विश्वास नहीं करता था। परन्तु वहाँ पहुँचकर डॉक्टर का आत्माभिमान बढ़ गया; क्योंकि उसने उसको ईश्वर का अवतार समझा। उसने मा की चिंता तो दस मिनट में दूर कर दी। रोगी पर उसने अपना बहुत अनुराग दिखाया, जैसा कि एक सत्ताईस वर्ष का डॉक्टर, जो बड़े टेढ़े रोग में बुलाया जाय, दिखावेगा। उसने इस विषय के अतिरिक्त और किसी बात पर बातचीत नहीं की। यद्यपि उसने डोनिया की सुन्दरता को देख लिया था, तो भी उसने उसकी ओर ध्यान न देकर सब बातें मा से कीं। मा इन बातों से बहुत प्रसन्न हुई। डॉक्टर ने कहा कि रोडियन की दशा अब सन्तोष-जनक है। उसने रोग के कारण दो बताए—एक तो वह ख़राब खाना महीनों से खा रहा है; दूसरे, उसको कोई कठिन मानसिक वेदना है, जिससे वह सदा चिन्तित, और भयभीत रहता है। डॉक्टर ने एक बार ध्यानपूर्वक देखा कि डोनिया उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रही है। मा ने चिंता से पूछा कि मेरे पुत्र के कोई पागलपन के लक्षण तो नहीं हैं। डॉक्टर ने हँसकर उत्तर दिया—मेरी बात बहुत बढ़ाकर कही गई है। मैंने उसमें कुछ थोड़ी-सी विक्षिप्तता के लक्षण पाए हैं, और आज-कल मैं इसी रोग के विषय में अध्ययन कर रहा हूँ। परन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि आज तक मेरा रोगी सरसाम में था, और उसके मित्रों के आने से उसको कुछ शान्ति होगी, शक्ति उत्पन्न होगी, और अच्छा प्रभाव होगा, यदि कोई नई चिन्ता उसको न हो। यह कहकर वह उठा, प्रणाम किया, और धन्यवाद, आशीर्वाद तथा कृतज्ञता का प्रसाद पाकर वहाँ से चला गया। डोनिया ने अपना हाथ उससे मिलाने को बढ़ाया; परन्तु उसने उसके छूने की भी इच्छा न की। डॉक्टर प्रसन्न-चित्त वहाँ से लौटा।

राजू ने डॉक्टर के साथ जाते हुए मा से कहा—"अब कल सब बातचीत होगी। काफ़ी देर हो गई है, आप आराम करें। मैं प्रातःकाल ही आकर आपको सूचना दूँगा।"

जेसोमाफ़ ने सड़क पर पहुँचकर कहा—"डोनिया बड़ी नमकीन लड़की है।"

राजू ने झपककर डॉक्टर का गला पकड़ा, और उसको दीवाल से दबाकर कहा—"नमकीन—तुम उसको नमकीन कहते हो? यदि फिर ऐसा कहने का साहस किया, तो समझ लो—। समझ गए न?"

जेसोमाफ़ ने अपने को छुड़ाकर कहा—"मुझको जाने दो। तुम शराब पीकर बिलकुल मूर्ख हो गए हो।" फिर उसने राजू की ओर देखा। राजू भयानक चेहरा बनाए खड़ा था। डॉक्टर हँसने लगा।

राजू ने कहा—"निस्सन्देह मैं गधा हूँ। पर तुम भी तो हो।"

"नहीं, मेरे मित्र। मेरे दिल में वे बातें नहीं हैं, जो तुम्हारे दिल में हैं।"

राजू ने रोडियन के मकान के पास पहुँचकर कहा—"डॉक्टर, तुम बड़े अच्छे आदमी हो। परन्तु तुममें भी कुछ दोष है। मैं जानता हूँ कि तुम बड़े विषयी हो। तुम अच्छा खाना चाहते हो, और आराम से रहकर अपनी वासनाओं को तृप्त करना चाहते हो। मैं इसको बुरा समझता हूँ; क्योंकि इसी से पाप उत्पन्न होता है। तुम इतने नाज़ुक हो कि मैं नहीं समझ सकता कि तुम ऐसे अच्छे डॉक्टर जो रोगी में इतना अनुराग रखते हो, कैसे हुए। तुम परों के बिछौने पर लेटने वाले भला किस प्रकार से रात को रोगी को देखने जाते हो? आज से तीन वर्ष बाद तो तुमको रात का जागना कठिन होगा। परन्तु इस समय वह प्रश्न नहीं है। मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि मैं रसोईघर में सोऊँगा, और तुम्हारे लिये, बड़ी कठिनाई से, मैंने माउकिन के यहाँ सोने का प्रबंध किया है। तुम उनसे जान-पहचान कर सकते हो, परन्तु उस इच्छा से नहीं, जैसा तुम चाहते हो।"

"मेरी तो कोई इच्छा नहीं है।"

"मेरे मित्र, वह बड़ी हजीला स्त्री है, शांत स्वभाव की है, कुमारी के समान पवित्र है। परन्तु बड़े प्रेमी स्वभाव की है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे उससे छुड़ाओ। वह मुझसे बहुत प्रेम करती है। मैं उससे ऊब गया हूँ, और उसका प्रेम तुम्हें देता हूँ।"

डॉक्टर ज़ोर से हँसा, और बोला—"तुमने अपनी रक्षा अच्छी तरह नहीं की। परन्तु मैं क्यों उससे प्रेम करने लगा?"

"मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि तुम सहज ही में उसके विश्वास-पात्र बन जाओगे। उसके पास कुरसी ले जाकर उससे बातें करना। तुम डॉक्टर हो, उसका रोग दूर कर सकते हो। मैं विश्वास करता हूँ कि तुम पछताओगे नहीं। उसके पास एक पियानो भी है। मैंने कुछ थोड़ा-सा एक करुण रस का राग गाया था। वह उसको अच्छा लगा। इसी प्रकार हमारा प्रेम आरंभ हुआ। तुम तो पूरे तानसेन हो। तुम उसको वश में कर लोगे। मुझे विश्वास है, तुम्हें पछताना न पड़ेगा।"

"तुम यह क्या बक रहे हो?"

"क्या मैं अभी तक साफ़-साफ़ नहीं कह सका? तुम दोनों एक दूसरे के सर्वथा योग्य हो। और, यह बात मैंने बहुत दिन पहले विचार ली है। एक-न-एक दिन ऐसा होना ही है। यहाँ तुमको परों का बिछौना और जो कुछ चाहो, सब मिलेगा। अच्छी-से-अच्छी डबल रोटी, मजेदार खाना और गरम बिछौना मिलेगा। कब्र-जैसा सब आराम मिलेगा। और, फिर प्रसन्नता का जीवन है। अच्छा, अब बहुत बातें हो चुकीं, चलो, सोवें। मैं रात को जागा करता हूँ। और, यदि रोडियन को देखने जाऊँ, तो घबराना नहीं। यदि तुम्हारा जी चाहे, तो तुम भी देख आना। कोई असाधारण बात हो, तो मुझे जगा लेना।"

दूसरा परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातःकाल ७ बजे राजू जगा। वह आज इतना चिन्तित था, जितना पहले कभी आयु-भर में नहीं हुआ। पिछली शाम की बातें याद करके उसको यह विदित हुआ कि मुझ में एक नया परिवर्तन हो गया है। वह यह भली भाँति जानता था कि मेरा स्वप्न कभी क्रिया में नहीं परिवर्तित हो सकता। वह उसको ऐसी मूर्खता समझता था कि पिछली शाम की बातें याद करने में भी उसको लज्जा आती थी। फिर वह उन बातों को छोड़कर और बातों का ध्यान करने लगा। उसको इस बात का बड़ा दुःख था कि मैंने कल बड़ी नीच चेष्टा की। शराब पिए हुए होने के अतिरिक्त मैंने उस लड़की के भाई की सहायता करने के कारण अनुचित लाभ उठाया। मैंने मूर्खता की कि डाह से उसके प्रेमी के विरुद्ध, विना यह जाने हुए कि परस्पर उनका कैसा व्यवहार और उस भलेमानस की सच्ची दशा क्या है, बातें कहीं। लूशिन के विषय में निर्णय करने का मुझे क्या अधिकार था? मेरी सम्मति किसने माँगी थी? मैं यह नहीं विश्वास कर सकता कि डोनिया केवल सांसारिक लाभ के लिये किसी अयोग्य पुरुष से विवाह करेगी। लूशिन में कोई-न-कोई बात अच्छी अवश्य होगी। मकान के विषय में शायद वह न जानता हो। फिर ये दोनों स्त्रियाँ वहाँ थोड़े ही दिन तो रहेंगी। फिर तो नए मकान में चली ही जायँगी। ऐसे वार्तालाप का केवल शराब पिए रहना ही बहाना हो सकता है; परन्तु उस बहाने से मेरा चरित्र और बुरा बनता है। सच तो यह है कि शराब के नशे में मैंने अपने हृदय की नीचता तथा मूर्खता की डाह प्रकट कर दी है। मुझको यह स्वप्न क्यों हुआ? कहाँ मैं कल का शराबी, कहाँ वह सुन्दर कन्या

क्या कोई बात ऐसी घृणित या निन्दित हो सकती है, जैसे मेरा और उसका विवाह ?

फिर युवा को ज़ोने पर की बात याद आई, जब उसने यह कहा था कि मकान की मालकिन मुझसे प्रेम करती है, और ज़ोनिया को देखकर वह डाह करेगी। यह विचार उसके लिये अत्यन्त असह्य हो गया, और उसने अपनी मुट्ठी चूल्हे पर दे मारी। उसके हाथ में चोट लगी, और नीचे के फ़र्श की एक ईंट टूट गई। दूसरे ही क्षण उसने सोचा, कि जो होना था, हो गया। अब उसका विचार व्यर्थ है। मैं अब उनके पास जाकर कुछ न कहूँगा, अपना धर्म पालन करूँगा, और कोई बहाने न बनाऊँगा। अब कुछ कहना व्यर्थ है, बात तो हो ही चुकी।

उसने बड़े अच्छे कपड़े पहिने। उसके पास एक ही सूट था। और, यदि बहुत-से भी होते, तो भी वह उसी को पहनता, जो शाम को पहने था; क्योंकि वह यह नहीं प्रकट करना चाहता था कि मैंने कोई विशेष तैयारी की है। परन्तु जान बूझकर गंदे रहना भी बुरा है। और, उसको, जब वह ख़ास तौर से बुलाया गया है, कोई ऐसी बात न करना चाहिए, जो अप्रासंगिक हो। उसने अपने कपड़े ब्रुश से साफ़ किए, और नेस्टेसिया से साबुन लेकर सिर और गर्दन धोई। उसने हाथों के साफ़ करने में विशेष ध्यान दिया। अब उसे यह निर्णय करना था कि दाढ़ी बनावे कि नहीं। (मकान की मालकिन के पास उसके मृत पति के कुछ उस्तरे थे)। उसने चिढ़कर यही निर्णय किया कि दाढ़ी नहीं बनाऊँगा। जैसा हूँ, वैसा ही रहूँगा। कहीं उनका यह ख़याल न हो कि मैंने दाढ़ी बनाई है—नहीं-नहीं, ऐसा विचार न होने दूँगा।

वह बड़-बड़ कर ही रहा था कि जेसीमाफ़, जो रात-भर वहीं रहा और सुबह घर चला गया था, लौटकर अपने रोगी को देखने आया। उसने राज़ू से कहा कि वह खूब सो रहा है, और आज्ञा दी—"इसको

सोने दो। मैं दस-ग्यारह बजे फिर आऊँगा, यदि तुम वहाँ मिलोगे। ऐसे झक्की रोगी पर कोई विश्वास नहीं। क्या तुम जानते हो कि वे लोग यहाँ आवेंगे, या रोडियन वहाँ जायगा?"

राजू ने उत्तर दिया—"मेरा ख़याल है कि वे ही आवेंगी। उनको बहुत-सी कौटुम्बिक बातों का निर्णय करना है। मैं वहाँ न ठहरूँगा। परन्तु तुम डॉक्टर होने के कारण वहाँ ठहरने का अधिकार रखते हो।"

"मैं पादरी नहीं हूँ कि दूसरों के रहस्य सुनूँ। मुझे और भी काम करने हैं। मैं भी चला आऊँगा।"

राजू ने अपनी भौंएँ सिकोड़कर कहा—"एक बात मुझको दुःख दे रही है। कल नशे में मैंने रोडियन से कहा कि डॉक्टर को भय है कि तुम्हारा दिमाग़ बिगड़ रहा है।"

"तुमने स्त्रियों से भी तो यह बात कल कही थी!"

"मैं बड़ा मूर्ख हूँ, मुझको मारो। परन्तु गंभीरता से मुझे विश्वास-पात्र समझकर यह बताओ कि तुम्हारी राय क्या है?"

"मेरी सम्मति क्या? तुम जब मुझे बुलाने गए थे, तो तुम्हीं ने कहा था कि वह विक्षिप्त है। फिर कल हम लोगों ने उसे और परेशान किया। मैं 'हम' कहता हूँ, परन्तु वास्तव में वह तुम्हारा ही काम था। तुम उसके सामने चित्रकार की बातें करते रहे। ऐसे मनुष्य के सामने जिसका दिमाग़, संभव है, इसी कारण ख़राब हुआ हो, इस विषय की बात न होनी चाहिए। यदि मुझको पुलीस-दफ़्तर के दृश्य का पता होता, और यदि यह मालूम होता कि वह जानता है कि लोग उस पर संदेह करते हैं, तो मैं तुमको रोक देता। विक्षिप्त आदमी छोटी-छोटी-सी बातों को बड़ा समझ लेते हैं। मैं तब इसको कुछ-कुछ समझा, जब जेमटाफ़ ने दावत में उसकी बात कही। जेमटाफ़ बड़ा भला मनुष्य है। परन्तु उसको सबके सामने ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।"

"हमारे और तुम्हारे अतिरिक्त वहाँ और कौन था ?"

"क्यों, पारफ़ीरियस भी तो था।"

"तो उससे क्या हुआ ?"

"ख़ैर, तुम मा और बहन से कह देना कि आज उससे सावधानी से बातचीत करें।"

"मैं कह दूँगा।"

"अच्छा, सलाम। मेरी ओर से मकान की मालकिन को धन्यवाद देना। उसने मेरा बड़ा सन्मान किया। स्वयं अपने को कमरे में बंद कर लिया, और जब मैं सलाम करने गया, तो कोई उत्तर न दिया। मैं जानता हूँ, वह सात बजे उठ गई थी। परन्तु मुझको अपने सामने बुलाना अनुचित समझती होगी।"

राजू ९ बजे स्त्रियों के पास पहुँच गया। सात ही बजे से वे उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। वहाँ पहुँचकर उसने भद्दे ढंग से सिर झुकाया, और इस प्रकार अपना शोक प्रकट किया। इसको देखकर मा दौड़ी, दोनों हाथ पकड़ लिए, और प्यार करने ही को थी कि राजू ने डोनिया की ओर देखा, और उसके मुख पर घृणा के भाव के स्थान में कृतज्ञता और प्रेम की सहानुभूति पाकर वह घबरा गया। यदि वह उससे घृणा से मिलती, तो वह न घबराता। उसके बातचीत करने के लिये उसके पास सामग्री थी। मा यह सुनकर कि रोडिया सो रहा है, खुश हुई, और बोली कि रोडियन से मिलने के पूर्व मैं तुमसे कुछ बातचीत करना चाहती थी। फिर उन्होंने उससे पूछा—तुमने कुछ जलपान किया है या नहीं ? यह जानकर कि उसने कुछ जलपान नहीं किया है, उन्होंने उसको निमंत्रण दिया।

मा ने घण्टी बजाई, और एक फटे कपड़े पहने हुए नौकर आया। उसको चा लाने की आज्ञा दी गई, जो ऐसी गंदी तरह से लाई गई कि स्त्रियों को लज्जा आने लगी। राजू कुछ कहना चाहता था, परन्तु लूज़िन

का स्मरण करके चुप हो गया, और मा के प्रश्नों का उत्तर देने लगा। पैंतालीस मिनट तक उनमें उसके विषय में बातें होती रहीं। रोडियन के जीवन और बीमारी का हाल भी राजू ने सब वर्णन किया। जो कहने-योग्य बातें न थीं —जैसे पुलीस के दफ्तर का दृश्य और उसका परिणाम इत्यादि— उन्हें नहीं कहा। दोनों स्त्रियों ने उत्सुकता-पूर्वक उसकी सब बातें सुनीं, और जब वह सब हाल कह चुका, तब भी वे तृप्त न हुईं।

मा ने कहा—"कहो-कहो, तुम्हारा क्या विचार है? हाँ, अपना नाम तो मुझे बताओ?"

"डिमिट्री प्रोकोफ़िश राजूमिखेन।"

"अच्छा राजू, मैं यह जानना चाहती हूँ कि उसे कौन-सी बातें अच्छी लगती हैं, और कौन-सी बुरी? क्या वह हर समय चिड़चिड़ा रहता है? उसकी इच्छाएँ और स्वप्न क्या हैं? आजकल वह किन बातों को सोचा करता है?"

"मैं क्या बताऊँ, मैं रोडियन को अट्ठारह महीने से जानता हूँ। चिन्तित, अभिमानी और दुःखी वह ज़रूर रहता है। कुछ दिनों से शकी और झक्की भी हो गया है। दयालु और उदार है, परन्तु अपने भावों को प्रकट नहीं करना चाहता। कभी-कभी वह झक्की नहीं मालूम होता, प्रत्युत भाव-रहित और प्रेम-शून्य प्रतीत होता है। उसमें जैसे दो प्रकृति हैं, जो बारी-बारी से प्रकट होती हैं। कभी तो वह इतना संदिग्ध हो जाता है कि प्रत्येक वस्तु और मनुष्य उसको विद्रोही प्रतीत होता है, और वह बिछौने ही में पड़ा रहता है। वह किसी से हँसी तक नहीं करता। यद्यपि उसका हँसी करने का स्वभाव है, फिर भी वह व्यर्थ बकना नहीं चाहता। वह दूसरों की बातें नहीं सुनना चाहता, और दूसरे के विचारों में उसे कोई रुचि नहीं। अपनी योग्यता का उसको बड़ा ध्यान है। और, यह ठीक भी है। और मैं क्या कहूँ। आपके आगमन का कुछ अच्छा प्रभाव पड़ रहा है।"

मा रोडियन का चरित्र सुनकर, घबराकर, बोली—"ईश्वर करे, वैसा ही हो।"

अब राजू को डोनिया की ओर देखने का साहस हुआ। बातें करते-करते चोरी से उसने देख लिया था। कभी ता वह बैठी हुई ध्यान से उसकी बातें सुनती थी, और कभी बीच-बीच में उठकर टहलने लगती थी। उसका यह अभ्यास था कि वह लोगों की पूरी बात न सुनती थी। वह एक महीन, काली, ऊनी पोशाक पहने थी, और एक सफ़ेद कपड़ा गर्दन में लपेटे थी। राजू समझ गया कि दोनों स्त्रियाँ बहुत दरिद्र हैं। यदि वह रानी की तरह वस्त्र पहने होती, तो राजू इतना न घबराता। परन्तु दरिद्रता के कारण वह और घबरा गया।

डोनिया ने हँसकर कहा—"आपने बड़ी निष्पक्षता से मेरे भाई की बहुत-सी बातें बताईं। मैं आपसे सहमत हूँ। मैं समझती हूं कि आप उसके प्रशंसकों में हैं। मेरा ख़याल है, किसी स्त्री के प्रेम से उसकी यह दशा हुई है।"

"मैंने तो यह कभी नहीं कहा। संभव है, आपका विचार ठीक हो। परन्तु—"

"क्या— ?"

"वह किसी से प्रेम नहीं करता, और कदाचित् न कभी करेगा।"

"क्या वह प्रेम करने के अयोग्य है ?"

"डोनिया, तुम प्रत्येक बात में बिलकुल अपने भाई-सरीखी हो।" ये ही शब्द राजू के मुँह से निकले। फिर यह याद करके कि अभी रोडियन के विषय में मैंने क्या कहा है, वह पछताया, और उसके चेहरे पर झाईं पड़ गईं। डोनिया उसकी ओर देखकर हँस पड़ी।

मा ने कहा—"तुम दोनों ही रोडियन का चरित्र नहीं समझे हो। मैं इस समय का हाल या लूशिन ने जो इस पत्र में लिखा है, वह नहीं कहती।

परन्तु, राजू, तुम इसको सच मानो या न मानो, वह बड़ा चालाक और झक्की है। जब वह पन्द्रह वर्ष का था, उसका चरित्र मुझको अचम्भे में डाल देता था। अब भी वह ऐसी बातें करने के योग्य है, जो दूसरों को न सूझें। अभी अठारह महीने की बात है कि उसने मेरे हृदय को तोड़ दिया था; क्योंकि वह मालकिन की लड़की से विवाह करने की इच्छा रखता था।"

डोनिया ने पूछा—"क्या आप इस कहानी को जानते हैं ?"

मा बोलती रही—"क्या तुम समझते हो कि वह मेरे आँसुओं से, प्रार्थना से, दुखित होने से, बीमार होने से या मेरी मृत्यु होने के भय से भी मेरी बात मान लेता ? कदापि नहीं। वह अपनी इच्छाओं को बिना कुछ विचारे शान्तिपूर्वक पूर्ण करता। और, फिर भी हमसे प्रेम करता !"

राजू ने कहा—"उसने मुझसे तो कभी इस विषय में कुछ नहीं कहा। परन्तु मैंने मैडम ज़ानिटज़ीन से जो कुछ सुना है, वह तो बड़ा आश्चर्य पूर्ण है।"

दोनों स्त्रियाँ एक ही बार पूछ उठीं—"आपने क्या सुना है ?"

"यही कि विवाह बिलकुल पक्का हो गया था, और होने ही वाला था कि वह स्त्री मर गई। मैडम ज़ानिटज़ोन को इस विवाह का यश बदा न था। कुछ लोग कहते हैं कि वह कन्या बिलकुल सुन्दर न थी, साधारण थो, बीमार मालूम होती थी, और बड़ी अद्भुत थी। परन्तु फिर भी कुछ बात तो उसमें अवश्य होगी; नहीं तो मेरी समझ में नहीं आता, क्यों वह—।"

डोनिया ने कहा—"अवश्य हो उसमें कुछ अच्छी बातें होंगी।"

मा बोली—"ईश्वर, मुझे क्षमा करे, मैं उसका मृत्यु-समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुई हूँ। मैं नहीं कह सकती कि इन दोनों में विवाह करके कौन अधिक दुःखी होता।" फिर डोनिया की ओर देखकर, जो

ऐसी बातें करने को मना कर रही थी, वह चुप हो गई, और इस विषय को छोड़कर रोडियन और लूशिन की भेंट के विषय में पूछने लगी। इस घटना से उसको बहुत दुःख होता था। राजू ने पूरा वृत्तान्त कह सुनाया, और अन्त में कहा कि रोडियन ने जान-बूझकर उसका अपमान किया है, बीमारी के कारण नहीं। मैं समझता हूँ कि बीमार पड़ने के पहले ही उसने उसको अपमानित करने का विचार कर लिया था।

मा ने कहा—"मैं भी ऐसा ही समझती हूँ।" परन्तु मा को यह आश्चर्य था कि राजू अब लूशिन के विषय में नम्रता और प्रशंसा के शब्दों में बातचीत करता है। डोनिया को भी यह बात आश्चर्यजनक मालूम हुई।

मा ने पूछा—"तो लूशिन के विषय में तुम्हारा यही विचार है?"

राजू ने शान्त भाव से कहा—"आपकी लड़की के भावी पति के विषय में और कोई विचार करना असंगत है। साधारण सदाचार के कारण मैं ऐसा नहीं कहता हूँ। परन्तु जिस मनुष्य को डोनिया ऐसी स्त्री ने स्वीकार किया है, उसको भला मैं किस प्रकार बुरा समझ सकता हूँ। यदि कल मैंने उसके विषय में कुछ बुराई की थी, तो शराब का प्रभाव था। मैं होश में नहीं था। कल की बातों के लिये मैं बहुत लज्जित हूँ।"

यह कहते-कहते उसके मुँह पर लाली आ गई, और वह चुप हो गया। डोनिया के कपोलों पर भी लालिमा आ गई; परन्तु वह चुप ही रही। जब से लूशिन के विषय में बातचीत आरंभ हुई थी, वह चुप बैठी थी। मा डोनिया की सहायता न पाकर दुखित थी। अन्त में वह कुछ रुक-रुककर, डोनिया की ओर देखकर, बोली—"मैं इस समय घबरा रही हूँ।" फिर वह बोली—"राजू, तुमसे हम स्पष्ट बातें कर सकते हैं?"

डोनिया ने उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, ठीक है।"

मा बोली—"बात यह है कि आज प्रातःकाल हमको लूशिन का एक पत्र मिला, जिसे उसने हमारे आगमन की सूचना पाकर भेजा था।

कल उसने स्टेशन पर आने का भी वचन दिया था, परन्तु उसके स्थान में उसका नाकर आया, और हमको यहाँ पहुँचा गया। वह कह गया है कि लूशिन स्वयं आज आवेगा। पर आज उसके स्वयं आने के बजाय उसका यह पत्र आया है। तुम इसको पढ़ो। इसको पढ़कर मैं बेचैन हूँ। पढ़कर अपनी सम्मति मुझको दो। तुम रोडियन का चरित्र भी अच्छी तरह समझते हो। इसलिये हमको तुमसे अच्छा सलाहकार नहीं मिल सकता। डोनिया ने तो एक ही क्षण में निर्णय कर लिया; परन्तु मैं नहीं जानती कि क्या करूँ। मैं तुम्हारी सम्मति चाहती हूँ।"

राजू ने पत्र खोला। पिछली शाम की तारीख़ उस पर पड़ी थी। पत्र इस प्रकार था—

"श्रीमतीजी,

मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं एक काम के कारण स्टेशन पर न आ सका। परन्तु मैंने अपने स्थान में एक विश्वासपात्र मनुष्य को भेजा था। कचहरी के काम के कारण सुबह भी न आ सकूँगा। और, फिर मैं यह भी नहीं चाहता कि मा अपने बेटे से न मिले, या मैं डोनिया को उसके भाई से न मिलने दूँ। इस कारण मैं आठ बजे रात को आऊँगा। परन्तु मैं यह आपसे प्रार्थना करता हूँ कि रोडियन उस समय वहाँ उपस्थित न हो; क्योंकि उसने मेरा—जब मैं उसको देखने गया था—बड़ा निरादर किया था। इसके सिवा मैं आपसे कुछ बातें साफ़-साफ़ करना चाहता हूँ। मैं आपको पहले से सूचना देता हूँ कि यदि अपनी इच्छा के विरुद्ध रोडियन को मैंने वहाँ पाया, तो मैं तुरन्त ही वहाँ से चला आऊँगा, और दोष सब आप पर रहेगा। यह मैं इसलिये लिखता हूँ कि मुझे पता लगा है कि रोडियन, जो मेरी भेंट के समय इतना रोगी विदित होता था, दो घण्टे में शक्ति प्राप्त कर इधर-उधर घूमने लगा, और कदाचित वह आपके पास भी पहुँच जाय। कल मैंने अपनी आँखों देखा कि वह एक शराबी के घर, जो गाड़ी से कुचल

गया था, गया, और उसकी लाश उठाने के व्यय के बहाने उसने २५ रूबल उसकी कन्या को, जो बड़ी दुष्ट चरित्र की है, दिए। मुझको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि यह मैं जानता हूँ कि आपको कितनी कठिनाई से ये रूबल मिले थे। अन्त में आपकी प्रशंसा-योग्य पुत्री को मेरी ओर से आदर और भक्ति स्वीकार हो।

आपका दास,

लूशिन"

मा ने आँखों में आँसू भरकर पूछा—"राजू, अब मैं क्या करूँ? रोडियन को कैसे यहाँ आने से रोकूँ? कल वह कहता था कि लूशिन को बिदा कर दो, और आज उसको आने से रोकूँ। यदि रोडियन को यह मालूम हो, तो वह अवश्य आवेगा, और तब क्या होगा?"

राजू ने बिना सोचे-विचारे उत्तर दिया—"डोनिया जो कुछ कहे, वैसा करो।"

"वह तो कहती है—ईश्वर जाने, वह क्या कहती है। कोई कारण अपनी बातों का नहीं बताती। उसके अनुसार तो यह अच्छा होगा— नहीं-नहीं। आवश्यक यह है कि रोडियन आठ बजे यहाँ लूशिन से मिले। मैं यह चाहती हूँ कि रोडियन को तो यह पत्र न दिखाऊँ, और उसको यहाँ आने से रोकूँ। और, तुम इसमें मेरी सहायता कर सकते हो। मेरी समझ में नहीं आता कि शराबी का मृत्यु और उसकी पुत्री के बारे में, रुपए देने के विषय में, क्या लिखा है। रोडियन कभी ऐसे व्यक्ति को रुपए न देगा, जिसमें— ।"

डोनिया ने कहा—"मा, वह रुपए तुमने कितने कष्ट से पाए थे।"

राजू ने गंभीर होकर कहा—"कल वह होश में न था। यदि आपको मालूम हो कि किस प्रकार उसने एक होटल में जाकर अपना दिल बहलाया, तो आप समझेंगी कि उसकी क्या दशा थी। वह कल

एक आदमी के मरने और एक लड़की के विषय में, जब मैं उसको घर ला रहा था, कुछ कह रहा था। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आया। कल मैं भी—।"

डोनिया ने अपनी घड़ी में, जो उसके और वस्त्र देखते हुए बहुत मूल्यवान प्रतीत होती थी, समय देखकर कहा कि, "दस बज गए हैं, चलो भाई के पास चलें।"

राजू ने सोचा, यह घड़ी लूशिन ने भेट की होगी।

मा ने घबराकर कहा—"हाँ-हाँ, चलने का समय तो हो गया है। यदि हम न जायँगे, तो वह कदाचित् यह समझे कि हम उसके कल रात के स्वागत से रुष्ट हैं।" यह कहकर दोनों ने शाघ्रता से वस्त्र पहनना आरंभ किया। डोनिया के दस्ताने पुराने ही नहीं, प्रत्युत फटे हुए भी थे। राजू को उनमें छेद देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके पुराने वस्त्रों ने उसको और सुन्दर बना दिया था। मा ने कहा—"हे ईश्वर, मैं अपने पुत्र, प्यारे रोडियन से मिलने में भी झिझकती हूँ।"

डोनिया ने मा से प्रेमपूर्वक कहा—"मा, घबराओ नहीं। रोडियन में विश्वास रक्खो। मुझको उस पर पूर्ण विश्वास है।"

मा ने उत्तर दिया—"मैं भी उस पर विश्वास करती हूँ। परन्तु मुझे रात-भर नींद नहीं आई। प्रातःकाल मेरी आँख ज़रा झपकी थी कि मैंने स्वप्न में स्वर्गवासिनी मारफ़ा को देखा। वह सफ़ेद कपड़े पहने थी। राजू, तुमने मारफ़ा की मृत्यु के विषय में कुछ नहीं सुना है?"

"नहीं, मारफ़ा कौन?"

"वह एकदम मर गई। और, विचार करो—।"

डोनिया बीच में बोल उठी—"इसकी बात फिर करना। यह मारफ़ा को नहीं जानते।"

"हैं! तुम क्या उसको नहीं जानते? मैं समझती थी कि मैंने उसकी सब बातें तुमसे कह दी हैं। क्षमा करो, राजू। मैं दो दिन से होश में नहीं

हूँ। मैं तुमको ईश्वर का अवतार समझती हूँ, और इसलिये मैं समझती थी कि तुम हमारी सब बातें जानते हो । बुरा न मानना, मैं तुमको नातेदार समझती हूँ। यह तुम्हारे हाथ में क्या चोट लगी है?"

प्रसन्न-चित्त राजू ने कहा—"हाँ, चोट लगी है।"

"मैं कभी-कभी बहुत बकती हूँ, और इसलिये सोनिया मुझ पर क्रोधित होती है । परन्तु रोडियन यह कैसी कोठरी में रहता है ? वह जग गया होगा । मकान की मालकिन इसको कमरा कैसे कहता है? तुम अभी कहते थे कि वह दिल का हाल नहीं बताता । कदाचित् मैं अपनी मूर्खता की बातों से उसको दुखी करूँ । इसलिये मुझको पहले से बता दो कि उसके साथ कैसा व्यवहार करूँ ?"

"उसको यदि क्रोधित देखो, तो उससे बहुत प्रश्न न करो, और स्वास्थ्य के विषय में तो उससे कुछ पूछो ही नहीं।"

"राजू, मा कभी-कभी कैसी दुखी होती है । लो, सीढ़ी आ गई।"

सोनिया ने मा से कहा—"प्यारी मा, तुम पीली क्यों पड़ गई हो ? अपने-आपको शान्त करो । कदाचित् वह हमको देखकर प्रसन्न हो।"

"अच्छा ठहरो, मैं देख आऊँ कि वह जगा है या सोया।" राजू ने कहा।

दोनों स्त्रियाँ धीरे-धीरे राजू के पीछे चलीं । चौथी मंज़िल पर उन्होंने देखा कि मकान की मालकिन का दरवाज़ा खुला है, और उसमें से दो चमकती हुई आँखें इनको देख रही हैं । जब उनकी आँखें मिलीं, तो उसने इतने ज़ोर से दरवाज़ा बंद किया कि मा घबरा गई ।

तीसरा परिच्छेद

जेसीमाफ़ ने उन स्त्रियों को आते हुए देखकर कहा—"वह अच्छा हो रहा है"। डॉक्टर वहाँ दस मिनट हुए, आ गया था, और पलँग पर बैठा था। रोडियन कपड़े बदलकर, मुँह-हाथ धोकर, बालों में कंघी लगाकर पलँग के दूसरे कोने पर बैठा था। यद्यपि कमरा राजू और स्त्रियों के आने से सर्वथा भर गया, फिर भी नेस्टेसिया बीच में घुसकर बातें सुनने के लिये ठहर गई। रोडियन की दशा आज बहुत अच्छी थी। उसका रंग पीला अवश्य था, परंतु वह चिन्तित न मालूम होता था। जब मा और बेटी घुसीं, तब डॉक्टर ने देखा कि रोगी का रंग बदल गया। वह प्रसन्न न था, उदासीनता उसके मुख पर छाई हुई थी। घण्टे-भर से वह अपनी शक्ति का किसी दुःख के भुलाने के लिये संचय कर रहा था। बातचीत आरंभ होने के बाद डॉक्टर ने यह देखा कि प्रत्येक शब्द से उसको दुःख होता है। परन्तु रोगी का आत्मसंयम प्रशंसनीय था; कल का भयंकर विक्षिप्त आज अपने भावों को वश में करने के योग्य हो गया था।

रोडियन ने अपनी मा और बहन को प्यार करते हुए कहा—"मैं बहुत अच्छा हो गया हूँ।" और, राजू से हाथ मिलाकर कहा—"कल की-सी बातें न करूँगा।" मा के कपोलों पर प्रसन्नता की रेखा झलकने लगी।

डॉक्टर ने कहा—"मुझको आश्चर्य है कि आज यह बहुत अच्छा हो गया। यदि ऐसी ही उन्नति होती रही, तो तीन-चार दिन में यह बिलकुल अच्छा हो जायगा। अथवा, कम-से-कम ऐसा हो जायगा, जैसा एक-दो महीने पहले था। मेरी समझ में यह बीमारी बहुत दिनों से है।" डॉक्टर ने मुसकिराकर डरते-डरते रोडियन से पूछा—"क्या तुम बता सकते हो कि यह बीमारी कब से आरंभ हुई?"

रोडियन ने रूखे तौर से उत्तर दिया—"संभव है।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"यदि मैं तुमसे अब बातचीत कर सकता हूँ, तो मैं तुमको यह बताना चाहता हूँ कि इस रोग को हटाने के लिये सबसे आवश्यक बात यह है कि इसके कारणों को हटाओ। यदि ऐसा कर सकते हो, तो आरोग्य हो जाओगे; नहीं तो बीमारी बढ़ेगी। मैं कारणों से बिलकुल अनभिज्ञ हूँ; परन्तु तुम अवश्य जानते हो। तुम बुद्धिमान् हो, और अपनी दशा को समझ सकते हो। मेरे विचार में विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद ही तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ा। तुम बिना कुछ काम किए नहीं रह सकते। इसलिये मेरी सम्मति में कोई काम अपनी दृष्टि में रखकर, परिश्रम से उसको करो।"

"हाँ-हाँ, ठीक है। मैं पढ़ना फिर आरम्भ करूँगा, और तब सब ठीक हो जायगा।"

डॉक्टर ने यह उपदेश स्त्रियों पर प्रभाव डालने के लिये किया था। जैसे ही उसने बोलना बंद किया, उसने देखा कि रोडियन उसको मुँह चिढ़ा रहा है। परन्तु जेसीमाफ़ को इस बात से सांत्वना हुई कि मा ने उसको धन्यवाद दिया, और रात को सूचना देने के लिये कृतज्ञता प्रकट की।

रोडियन ने बेचैन होकर पूछा—"रात को यह तुम्हारे पास क्या करने गया था? यात्रा के बाद तुमने कुछ आराम भी न किया!"

"रोडियन, केवल दो बजे थे, और मैं और डोनिया इससे पहले भी नहीं सोती।"

रोडियन ने भौएँ चढ़ाकर, नीचा मुँह करके, कहा—"मैं नहीं जानता कि तुम्हारा धन्यवाद किस तरह से करूँ। रुपए का प्रश्न छोड़-कर मैं नहीं समझ सकता कि तुम क्यों मुझसे इतना अनुराग करते हो। तुम्हारी दया से मुझे कष्ट होता है; क्योंकि वह अकारण है।"

जेसीमाफ़ ने बनावटी हँसी हँसकर कहा—"तुम इस बात का ख़याल न करो। समझ लो कि तुम मेरे पहले रोगी हो। हम डॉक्टर लोग

आरम्भ में रोगियों से बड़ा अनुराग करते हैं, और उन्हें अपना नातेदार समझते हैं। हममें से बहुत-से तो उनसे प्रेम भी करने लगते हैं। और, मेरा कार्य अभी बहुत नहीं चलता।"

रोडियन ने राजू की ओर संकेत करके कहा—"मैं इससे तो कुछ नहीं कह सकता। मैं सदा इसको अपमानित एवं दुखित करता रहा हूँ।"

राजू ने कहा—"क्या बेहूदा बकते हो? आज तो तुम धन्यवाद की लहर में हो।"

यदि वह ध्यान से देखता, तो उसे विदित होता कि उसमें मित्र के भाव का बिलकुल भाव न था। डोनिया यह बात जानकर अपने भाई की ओर देखने लगी।

रोडियन फिर बोला—"मा, तुमसे क्या कहूँ। आज प्रातःकाल मेरी समझ में आया कि कल रात को मेरी प्रतीक्षा करने में तुमने कितना दुःख उठाया होगा।" यह कहकर वह हँसा, और अपना हाथ बहन की ओर बढ़ाया। बहन ने उससे कुछ नहीं कहा। परन्तु मुसक्किराहट उसके सच्चे हार्दिक भाव प्रकट कर रही थी। डोनिया ने कृतज्ञता से उसका हाथ पकड़ लिया। कल झगड़े के बाद यह पहला अवसर था कि उसने डोनिया की ओर ध्यान दिया। मा को यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भाई और बहन में मेल हो गया।

राजू कुरसी पर उछलने लगा, और सोचने लगा—"बस, इसी बात के लिये मुझे रोडियन से प्रेम करना चाहिए। कैसा उत्तम भाव इसने प्रकट किया है।"

मा ने सोचा, कैसी अच्छी बात रोडियन ने हाथ बढ़ाकर और प्रेम की दृष्टि से देखकर की है। मेल करने का सबसे अच्छा यही उपाय है।

फिर उसने कहा—"रोडियन, तुम नहीं समझ सकते कि मैं और डोनिया कल कितनी दुखी थीं। परन्तु वह बात हो गई, और हम फिर सुखी

हैं। तुम विचार करो कि हम स्टेशन से सीधे यहाँ आईं, और यह स्त्री (नेस्टेसिया को नमस्कार करके) हमसे बोली कि तुम बुख़ार में पड़े थे, और सरसाम की दशा में सड़क पर निकल गए थे। और, ये सब तुमको ढूँढ़ने गए। तुम उस समय के हमारे भाव नहीं समझ सकते।"

रोडियन ने कहा—"हाँ-हाँ, सब दुखी करनेवाली बातें थीं।"

यह बात ऐसी उदासीनता से कही गई थी कि डोनिया आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी। रोडियन फिर बोला—"मैं कुछ कहना चाहता हूँ। हाँ, बात यह है कि तुम यह न समझना कि मैं तुम्हारे और डोनिया के पास आज न आता, या मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

मा ने आश्चर्य में आकर कहा—"रोडियन, कैसी बातें करते हो।"

डोनिया ने सोचा, यह तो बिलकुल बनावटी बातें मालूम होती हैं। मेल करते हैं, और क्षमा माँगते हैं। जैसे, शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हैं।

"जैसे ही मैं जगा, मैं तुम्हारे पास आने को था; परन्तु मेरे पास कपड़े न थे। मैं कल नेस्टेसिया से यह कहना भूल गया कि खून को धो डाले। मैं अभी-अभी कपड़े पहनकर तैयार हुआ हूँ।"

मा ने घबराकर पूछा—"खून ? कैसा खून ? "

"कुछ नहीं, कुछ नहीं, घबराओ नहीं। सरसाम की दशा में जब मैं सड़कों पर घूम रहा था, मैं एक बाबू से मिला, जो गाड़ी से कुचल गया था। और, उसी से मेरे कपड़े खून से भर गए थे।"

राजू ने कहा—"सरसाम की दशा की सब बातें तुम्हें याद हैं ?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, मुझको छोटी-से-छोटी बात भी याद है, और आश्चर्य है कि मैं यह भी बता सकता हूँ कि मैंने क्या बात क्यों कही, और मैं अमुक स्थान में क्यों गया।"

जेसीमाफ़ ने कहा—"यह तो बड़ी साधारण बात है। बहुधा सरसाम में आदमी योग्यता की बातें करता है। परन्तु यह सिद्धान्त है कि जो बातें वह करता है, वह विक्षिप्त की-सी होती हैं।"

'विक्षिप्त' शब्द सुनकर सभी घबरा गए। डॉक्टर अपनी योग्यता दिखाने में भूल से ये शब्द कह गया था। रोडियन ध्यान में मग्न था, उसने डॉक्टर के शब्दों को नहीं सुना।

राजू ने कहा—"कौन आदमी कुचल गया?"

रोडियन बोला—"हाँ-हाँ, उस कुचले आदमी को घर ले जाने में मेरे कपड़े खून से भर गए। मा, मैंने एक और अपराध किया। मैं होश में न था। तुमने जो रूबल भेजे थे, वह मैंने उसकी विधवा को दे दिए। बेचारी दया का पात्र है, क्षय-रोग से ग्रस्त है, तीन बच्चे हैं, और रोटी का कोई सहारा नहीं। एक लड़की भी है। यदि तुम उनकी दरिद्रता देखतीं, तो मेरी तरह तुम भी रूबल दे डालतीं। मैं समझता हूँ कि मुझे रूबल देने का कोई अधिकार नहीं था; क्योंकि वह तुमने बड़े कष्ट से मुझे भेजे थे।"

मा ने कहा—"रोडियन, उसकी चिंता न करो। मैं जानती हूँ कि तुम सदा भला काम करते हो।"

रोडियन ने मुँह बनाकर कहा—"ऐसा न कहो।"

बातचीत होती रही, और प्रत्येक व्यक्ति ने यह अनुभव किया कि रोडियन के शब्दों में मिलावट और क्षमा में बनावट है।"

मा ने पूछा—"क्या तुमने मारफ़ा की मृत्यु का हाल सुना है?"

"कौन मारफ़ा?"

"मारफ़ा पेट्रोवना स्विड्रीगेलफ़, जिसके विषय में मैंने तुमको पिछले पत्र में लिखा था।"

"हाँ-हाँ, याद आया। तो वह मर गई! क्या सचमुच मर गई? कैसे मर गई?"

मा ने पुत्र की उत्सुकता जानकर, उत्साहित होकर, कहा—"बस, गिरी, और मर गई। जिस दिन मैंने पत्र डाक में डाला, उसी दिन मर गई। जहाँ तक हम समझते हैं, उसकी मृत्यु का कारण वही भयंकर पुरुष है। लोग कहते हैं, उसने उसे इतना मारा कि उसकी नसें नीली पड़ गईं थीं।"

रोडियन ने अपनी बहन की ओर देखकर पूछा—"क्या उनके घर में ऐसे दृश्य हुआ करते थे?"

डोनिया ने कहा—"नहीं, वह उससे बहुत नम्रता का व्यवहार करता था, बहुत अपराधों को क्षमा करता था। और, इस प्रकार सात वर्ष तक परस्पर मेल रहा। परन्तु अब वह अधीर हो गया था।"

"यदि वह सात वर्ष तक धीरज रक्खे रहा, तो ऐसा कठोर काम नहीं कर सकता। डोनिया, तुम कुछ उसका पक्ष करती हो।"

बहन क्रोधित होकर बोली—"वह बड़ा भयंकर आदमी है। उससे अधिक भयंकर मैं किसी को नहीं समझ सकती।"

"यह दृश्य प्रातःकाल हुआ, और फिर उसने गाड़ी कसवाई; क्योंकि वह खाना खाकर नगर में आना चाहती थी। अच्छी तरह खाना खाकर—।"

"क्या नीली पड़ जाने के बाद वह आना चाहती थी?"

"हाँ, यह उसकी आदत थी। खाना खाकर वह नहाने गई थी; क्योंकि उसको रोज़ नहाने के लिये डॉक्टर ने कहा था। पानी में उतरते ही उसको दौरा हुआ।"

डॉक्टर बोला—"कोई आश्चर्य की बात नहीं

"और, उसके पति ने उसको बहुत मारा था।"

डोनिया बोली—"मा, इसका क्या मतलब?"

रोडियन ने चिढ़कर कहा—"मा, क्या बेहूदा कहानी कह रही हो!"

"मेरे प्यारे, मैं नहीं जानती कि मैं और क्या बात करूँ।"

रोडियन ने हँसकर कहा—"तुम दोनों मुझसे डरती हो ?"

डोनिया ने उत्तर दिया—"हाँ, मा ज़ीने पर डर के मारे लड़खड़ाने लगी थी।"

मा घबराकर बोली—"डोनिया क्या कहती है ? रोडियन, बुरा न मानो। तुमसे मिलने की मुझे इतनी प्रसन्नता थी कि मुझे यात्रा के कष्ट बिलकुल न मालूम हुए, और अब तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"मा, मा, अब कुछ न कहो। बातें करने के लिये बहुत समय पड़ा है।"

इन शब्दों के निकलते ही उसका रंग पीला पड़ गया, उसको जाड़ा लगने लगा, और अब बातचीत बंद हो गई। अपने अतिथियों का ध्यान छोड़कर वह उठा, और दरवाजे की तरफ़ गया।

राजू ने उसको पकड़कर कहा—"करते क्या हो ?"

रोडियन चुप होकर बैठ गया। सब लोग उसकी ओर देखने लगे। फिर वह बोला—"तुम लोग क्या गूँगे हो ? कुछ बातचीत करो। यहाँ बिना बातचीत किए बैठने से क्या लाभ ?"

मा ने कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है। मैंने तो समझा था, कि फिर दौरा हो गया।"

डोनिया ने चिन्तित होकर पूछा—"भाई, तुमको क्या हुआ ?"

रोडियन ने हँसकर उत्तर दिया—"मेरे मस्तिष्क में फिर कुछ बेहूदा बात आ गई थी।"

डॉक्टर ने खड़े होकर कहा—"यदि केवल बेहूदा बात ही आई थी, तब तो ख़ैरियत है। मैंने तो कुछ और समझा था। अब मैं जाता हूँ, दिन को फिर किसी वक्त आऊँगा।" वह प्रणाम करके चला गया।

मा ने कहा—"कैसा भला आदमी है।"

रोडियन ने कहा—"हाँ, बहुत ही भला, बहुत ही चतुर और बहुत ही बुद्धिमान मनुष्य है। मुझे याद नहीं पड़ता कि बीमारी के पहले मैं इससे कहाँ मिला था। परन्तु मिला अवश्य था।"

राजू की ओर संकेत करके कहा—"और, यह दूसरा भला मनुष्य है। परन्तु, राजू, तुम कहाँ चले ?"

राजू ने कहा—"मुझे कुछ काम है।"

"संसार में तुमको क्या काम है ? यहाँ ठहरो। तुम जाते हो; क्योंकि डॉक्टर चला गया। मत जाओ। क्या बारह बज गए ? डोनिया, तुम्हारी घड़ी तो बड़ी सुन्दर है। तुम लोग सब चुप क्यों हो ? मुझे ही बोलना पड़ता है !"

डोनिया ने उत्तर दिया—"यह घड़ी मारफ़ा ने मुझे भेट की थी।"

मा ने कहा—"बड़ी क़ीमती घड़ी है।"

"मैं समझा था कि लूशिन ने दी होगी।"

"लूशिन ने अभी तक डोनिया को कोई चीज़ नहीं दी।"

रोडियन ने एकदम बात पलटकर मा से कहा—"मा, क्या तुम्हें याद है कि मैं एक बार प्रेम में फसकर विवाह करनेवाला था ?"

मा ने डोनिया और राजू की ओर संकेत करके कहा—"हाँ, प्यारे रोडियन, याद है।"

"हाँ, मैं क्या कहना चाहता था, भूल गया। हाँ-हाँ, वह रुग्ण रहती थी, दीनों को दान देती थी, और सदा किसी मठ में प्रवेश करने का विचार करती थी। मुझे याद है, एक दिन रोते-रोते उसने यह विचार मुझसे प्रकट किया था। वह सुन्दर न थी, साधारण रूप की थी। मैं नहीं कह सकता कि मैं क्यों उससे प्रेम करने लगा। कदाचित् मैं उसके रोगी होने के कारण ही उससे प्रेम करने लगा था। यदि वह लँगड़ी होती, या और कुछ दोष उसमें होता, तो मैं और अधिक उससे प्रेम करता। कोई विशेष बात न थी, केवल बचपन था।"

डोनिया बोली—"नहीं, बचपन न था।"

रोडियन ने अपनी बहन को ध्यान से देखा, परन्तु उसकी बात को वह नहीं समझा। वह दुखी होकर उठा, अपनी मा का मुख चूमा, और फिर बैठ गया।

मा ने विह्वल होकर कहा—"क्या अब भी तुम उससे प्रेम करते हो?"

"उससे? अब भी? उसको एक युग हो गया। मुझे इस समय भी प्रेम सता रहा है। तुम यहाँ हो; परन्तु मेरा हृदय हज़ारों मील दूर है। मैं नहीं जानता कि मैं क्यों ऐसी बातें करता हूँ, और मेरा ऐसी बातें करने का क्या अभिप्राय है।"

यह कहकर वह फिर अपने ध्यान में मग्न हो गया, और अपने नाखून दाँतों से काटने लगा।

मा ने कहा—"रोडियन, तुम्हारा रहने का स्थान तो श्मशान-सा है। मैं समझती हूँ, तुम इसी के कारण विक्षिप्त हो गए हो।"

"यह कमरा?" रोडियन ने कहा। "हाँ, इसी के कारण मैं विक्षिप्त हो गया हूँ। मा, तुम नहीं समझतीं कि तुमने क्या बात इस समय कही।"

रोडियन मा और बहन की उपस्थिति को सहन नहीं कर सकता था। यद्यपि वे तीन वर्ष के बाद मिले थे, फिर भी उसकी समझ में न आता था कि क्या बात करूँ। एक विषय पर वह कुछ कहना चाहता था, और उसी क्षण उसने उसका कहना उचित समझा। कर्कश वाणी में उसने कहा—"डोनिया, सुनो। मैं कल के वार्तालाप के लिये तुमसे क्षमाप्रार्थी हूँ। परन्तु यह कहना अपना धर्म समझता हूँ कि तुमको लूशिन और मेरे बीच में चुनाव करना है। मैं बदमाश होऊँ; परन्तु इस कारण तुमको बदमाश न होना चाहिए। एक ही पर्याप्त है। यदि तुमने लूशिन से विवाह किया, तो उसी क्षण से तुम मेरी बहन नहीं रहीं।"

मा ने दुखित होकर कहा—"रोडियन, फिर तुम कल की-सी बातें करने लगे। तुम अपने-आपको बदमाश क्यों कहते हो? मैं यह सहन नहीं कर सकती। यही शब्द तुमने कल भी कहे थे।"

डोनिया ने रूखे भाव से कहा—"भाई, तुम भूल करते हो। मैंने कल इस विषय में सोचा, और मेरी समझ में यह आया कि तुम्हारा विचार है कि मैं किसी और के लिये अपना त्याग कर रही हूँ। यह तुम्हारी भूल है। मैं अपने ही कारण लूशिन से विवाह करना चाहती हूँ; क्योंकि मेरी दशा शोचनीय है। यह ठीक है कि यदि मैं उससे विवाह करके अपने नातेदारों की सहायता कर सकूँ, तो मैं प्रसन्न रहूँगी। परन्तु इस बात का मेरे निर्णय करने में कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा।"

रोडियन ने मन में सोचा, यह झूठ बोल रही है, अभिमान के कारण अपना त्याग प्रकट नहीं करती। ऐसी घृणित जीवात्माओं का प्रेम भी उतना ही बुरा है, जितनी कि उनकी घृणा। मैं ऐसे लोगों से बड़ी घृणा करता हूँ।

डोनिया ने कहा—"मैं लूशिन से विवाह करती हूँ; क्योंकि वही मेरे लिये अच्छा है। मैं उसको प्रसन्न रखने की चेष्टा करूँगी, और उसकी आशाओं के अनुसार काम करूँगी।......परन्तु तुम हँसे क्यों?" यह कहकर उसका रङ्ग बदल गया, और उसकी आँखें क्रोध से चमकने लगीं।

रोडियन ने हँसकर कहा—"उसकी आशाओं—?"

डोनिया बोली—"लूशिन ने जिस प्रकार से विवाह का प्रस्ताव किया है, मैं उसी से समझ गई कि वह कैसा मनुष्य है। वह अपने-आपको बहुत कुछ समझता है। परन्तु मैं आशा करती हूँ कि मैं उसको समझा दूँगी कि मैं उसकी सेवा करके उसको कैसे प्रसन्न कर सकती हूँ।......परन्तु, तुम फिर क्यों हँसने लगे?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"तुम्हारा मुख क्यों लाल हो गया? डोनिया, तुम झूठ बोलती हो। तुम्हारे हृदय में लूशिन के लिये कोई प्रेम नहीं हो सकता। मैंने उसको देखा है, और उसकी बातें सुनी हैं। किसी स्वार्थ से तुम उससे विवाह करती हो। यह बात चरित्र का कमीनापन बतलाता है। परन्तु मुझको यह प्रसन्नता है कि कम-से-कम तुम्हारा मुख लाल हो जाता है।"

डोनिया ने क्रोधित होकर कहा—"यह बिलकुल झूठ है। मैं झूठ नहीं बोलती। मैं इससे कदापि विवाह न करूँगी, जब तक मुझे यह विश्वास न हो जाय कि मैं इससे प्रेम कर सकूँगी। सौभाग्य से आज ही वह अवसर मिलेगा। इस विवाह में कुछ स्वार्थ नहीं है। परन्तु यदि स्वार्थ भी हो, और यदि स्वार्थ के कारण ही मैं ऐसा काम करती हूँ, तो भी तुमको ऐसी निर्दयता से मुझसे व्यवहार न करना चाहिए। तुम्हारी यह निर्दयता असहनीय है। यदि मैं किसी को हानि नहीं पहुँचा रही, केवल अपने ही को हानि पहुँचाती हूँ, तो मेरे सिर किसी की हत्या का पाप नहीं है।······तुम पीले क्यों पड़ गए? रोडियन, प्यारे रोडियन!"

मा ने कहा—"हे ईश्वर, यह तो बेहोश होने लगा! डोनिया, यह सब तुम्हारी करतूत है।"

रोडियन बोला—"नहीं-नहीं, केवल मेरे सिर में चक्कर आ गया था। बेहोश केवल स्त्रियाँ होती हैं। हाँ, मैं क्या कह रहा था। हाँ, यह बताओ कि तुमने यह क्या कहा कि आज तुमको यह अवसर प्राप्त है कि मैं यह जान सकूँ कि तुम लूशिन से प्रेम कर सकती हो, या नहीं, और लूशिन तुम्हारा मूल्य जानता है, या नहीं। यही तो तुमने कहा न?"

डोनिया ने कहा—"मा, मा, भाई को लूशिन का पत्र दे दो।"

मा ने काँपते हुए हाथों से पत्र दे दिया। रोडियन ने ध्यान से दो बार उसे पढ़ा। सब समझते थे कि इसके पढ़ने के अनंतर वह कुछ बकेगा। परन्तु रोडियन ने एक मिनट कुछ सोचकर पत्र को वापस दे दिया, और बोला—"मैं नहीं समझ सकता कि यह कैसा बैरिस्टर है, और लोगों की ओर से कैसी वकालत करता है। इसको बात करने की तमीज़ नहीं। वह पत्र अनपढ़ों का-सा लिखता है। अनपढ़ नहीं, तो कम-से-कम इसके लिखने का ढंग गवाँरू है। व्यवसायी पुरुष की तरह लिखता है।" इन शब्दों से सब चकित हो गए; क्योंकि वे कुछ और ही आशा कर रहे थे।

डोनिया ने उत्तर दिया—"लूशिन यह नहीं कहता कि मैंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है, न उसे इस बात का अभिमान है कि स्वयं ही उसने इतना उपार्जन किया है।"

"मुझको इस बात में कोई आक्षेप नहीं है। उसको अभिमानी होना चाहिए। बहन, तुम दुखी मत हो। यह न समझो कि मैं छोटी-छोटी बातें तुमको चिढ़ाने के लिये कहता हूँ। परन्तु उसके लिखने के ढंग से हमें बहुत-सी बातों का पता लगता है। उसके इस वाक्य से कि 'दोष सब आप पर होगा' स्पष्ट प्रकट करता है कि यदि मैं वहाँ होऊँ, तो वह विवाह का विचार छोड़ देगा। इस धमकी का यह अर्थ है कि यदि तुम उसकी आज्ञा का पालन न करोगी, तो वह सेंटपीटर्सबर्ग में लाकर तुम्हें छोड़ देगा। इन वाक्यों के विषय में तुम क्या कहती हो? क्या लूशिन की लेखनी से निकला हुआ यह वाक्य तुमको बुरा नहीं लगता?"

डोनिया ने उत्तर दिया—"नहीं। मैं समझती हूँ कि उसने स्पष्ट बात लिख दी। यह ठीक है कि उसको लिखने का ढंग नहीं मालूम।"

"इस पत्र को देखते हुए मैं उसको व्यवसायी पुरुष समझकर कुछ इस विषय में अधिक न कहूँगा। परन्तु एक वाक्य और है, जो बिलकुल झूठ है, और जो मुझको तुम्हारी दृष्टि में गिराने के लिये लिखा गया है। मैंने कल कुछ रुपए एक क्षय-रोगवाली स्त्री को दिए थे, मुरदा लाश उठाने के व्यय के बहाने से नहीं, जैसा वह लिखता है, वरन् लाश उठाने ही के लिये। और, वह रुपए मैंने विधवा को दिए थे, मरे हुए आदमी की लड़की को नहीं, जिसको वह बड़ी चरित्रहीना लिखता है। यह सब मुझे तुम्हारी दृष्टि में नीचा करने के लिये लिखा गया है। वह वकालत के ढंग से लिखता है। वह बुद्धिमान है, परन्तु धोका देने के लिये बुद्धि के अतिरिक्त और भी किसी चीज़ की आवश्यकता होती है। इन सब बातों से प्रकट है कि वह तुमसे प्रेम नहीं करता। यह मैं तुम्हारे भले के लिये कहता हूँ।"

डोनिया चुप हो गई। वह शाम की प्रतीक्षा कर रही थी। मा ने अपने पुत्र की बातें सुनकर, चिन्तित होकर, पूछा—"फिर, रोडियन, तुम क्या कहते हो?"

"तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

"तुमने लूशिन का पत्र पढ़ा? वह आज रात को तुम्हारी उपस्थिति नहीं चाहता, और कहता है कि यदि तुम होगे, तो वह लौट जायगा। तो अब तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं निर्णय करनेवाला कौन? निर्णय करना तुम्हारा और डोनिया का काम है। तुम लूशिन की इच्छानुसार काम करना चाहती हो कि नहीं? मैं तुम्हारी इच्छानुसार करूँगा।"

मा ने कहा—"डोनिया ने तो निर्णय कर लिया है, और मैं उससे सहमत हूँ।"

डोनिया ने कहा—"तुम्हारा होना आवश्यक है। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि अवश्य आओ। बोलो, आओगे?"

"हाँ।"

उसने फिर राजू से कहा—"बड़ी कृपा होगी, यदि आप भी आठ बजे आवें। मा, मैं राजू को भी बुला रही हूँ।"

"डोनिया, ठीक है, जैसा चाहो, करो।" मा ने उत्तर दिया।

"मैं बात का साफ़ हो जाना अच्छा समझती हूँ। चोरी की बात मुझे पसन्द नहीं। लूशिन यदि बुरा माने, तो माने, मानने दो।"

चौथा परिच्छेद

उसी क्षण दरवाज़ा खुला, और एक लड़की चारों ओर देखती हुई घुसी। उसको देखकर सब चकित हो गए। रोडियन को याद नहीं पड़ा कि वह कौन है। वह सुनिया थी। रोडियन ने कल उसको पहली बार देखा था; परन्तु उस समय उसका वेश और ही था। इस समय वह शीलवती प्रतीत होती थी, और उसके मुख से चिन्ता टपक रही थी। वह पुरानी चाल के सादे कपड़े पहने थी। वहाँ सबको एकत्रित देखकर वह घबरा गई, और वापस जाने लगी।

रोडियन ने घबराकर कहा—"आहा! तुम हो!" उसको लूशिन का पत्र याद आया, जिसे उसने अभी-अभी पढ़ा था, और जिसमें एक चरित्रहीना कन्या की चर्चा थी। अभी वह उसके विरोध में कुछ कह रहा था। उसने कहा था कि कल मैंने उस कन्या को पहली ही बार देखा था, और वही कन्या सामने आ गई। उसको यह भी याद पड़ा कि मैंने चरित्रहीना के शब्दों पर कुछ आक्षेप नहीं किया था। कन्या को देखकर उसको इतनी लज्जा आई कि वह उस पर दयार्द्र हो गया। और, जब वह घबराकर जाने लगी, तो उसके हृदय में न-जाने क्या-क्या विचार आए।

वह संकेत से उसे ठहराकर बोला—"मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा तो नहीं कर रहा था। खैर, बैठ जाओ। क्या तुम्हारी मा ने तुमको भेजा है? यहाँ नहीं, वहाँ बैठो।"

सुनिया के आने पर राजू कुरसी पर, दरवाजे के पास, बैठा था, और कन्या को रास्ता देने के लिये खड़ा हो गया था। रोडियन ने पहले उसको अपने पलँग पर, जहाँ जेसीमाफ़ बैठा था, बुलाना चाहा। परन्तु फिर ध्यान आया कि यह मेरा बिछौना है, यहाँ उसको बिठाना ठीक

नहीं। उसने उसे राजू की कुरसी पर बैठने को कहा, और अपने मित्र से बोला—आओ, मेरे पास पलँग पर बैठो।

सुनिया काँपते-काँपते बैठ गई, और दोनों स्त्रियों की ओर चकित होकर देखने लगी। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि मैंने इनके पास बैठने का साहस कैसे किया। इस विचार से उसे इतना कष्ट हुआ कि वह खड़ी होकर कहने लगी—"क्षमा करो, मुझे कैथराइन ने भेजा है; क्योंकि और कोई आनेवाला न था। उसने तुमसे प्रार्थना की है कि कल कृपा करके सेंट-मिट्राफेन के गिरजे में, उसके अन्तिम संस्कार में सम्मिलित होने को आओ। और, फिर हमारे यहाँ आकर कुछ जलपान करो। उसे आशा है कि तुम स्वीकार करोगे।" यह कहकर सुनिया चुप हो गई।

रोडियन ने हकलाते हुए खड़े होकर उत्तर दिया—"मैं आने का प्रयत्न करूँगा। कृपा करके बैठ जाओ। तुम्हें जाने की जल्दी क्या है? मैं तुमसे दो-चार बातें करना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने सुनिया को बैठने का संकेत किया। सुनिया बैठ गई, और दोनों स्त्रियों की ओर कनखियों से देखने लगी।

रोडियन के पीले मुख पर लालिमा आ गई। उसकी आँखों से अग्नि टपकने लगी। उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा—"मा, मा, यही सोफ़ाया सेमेनाविश मारमैलेडाफ़, मिस्टर मारमैलेडाफ़ की पुत्री है, जो कल कुचला गया था, और जिसके विषय में अभी बातचीत हो रही थी।"

मा ने सुनिया की ओर देखकर आँखें बंद कर लीं। डोनिया ने उसकी भली भाँति समीक्षा की। सुनिया ने अपना नाम सुनकर दुखित होकर ऊपर देखा।

रोडियन ने सुनिया से पूछा—"कोई दुःख तो तुमको नहीं हुआ? पुलीस ने तंग तो नहीं किया?"

"नहीं, मृत्यु का कारण स्पष्ट था। परन्तु मकान के और रहनेवाले नाराज़ हैं।"

" क्यों ?"

" वे कहते हैं कि लाश देर तक घर में रक्खी रही। गरमी का समय है, दुर्गन्ध उठ रही है। इसलिये हम आज शाम को लाश को क़ब्रस्तान ले जायँगे, और वहीं कल तक रक्खेंगे। पहले कैथराइन इस बात को स्वीकार न करती थी; परन्तु अब राज़ी हो गई है।"

" तो क्या आज ही लाश उठाई जायगी ?"

"कैथराइन आशा करती है कि तुम कल अन्तिम संस्कार में सम्मिलित होगे, और फिर हमारे यहाँ खाना खाओगे। "

" क्या खाना भी होगा ? "

" हाँ, कुछ होगा। उसने मुझसे कहा है कि आपकी सहायता के लिये आपका धन्यवाद करूँ। बिना आपकी सहायता के हम कुछ नहीं कर सकते थे।"

यह वाक्य कहते हुए सुनिया के मुख के नीचे का भाग काँपने लगा; परन्तु अपने भावों को दबाकर वह फिर नीचे की ओर देखने लगी। रोडियन उसे बड़े ध्यान से देख रहा था। सुनिया का मुँह पतला और पीला था, नाक छोटी और ठोड़ी नुकीली थी। मुख के सब अंग समान नहीं थे, इसलिये हम उसको सुन्दर नहीं कह सकते। उसके नीले नेत्र जब चमकते थे, तो उसके मुख पर एक ऐसा भाव उत्पन्न करते थे, जिससे लोग उसकी ओर आकर्षित हो जाते थे। एक और विशेष बात यह थी कि अवस्था में वह छोटी मालूम होती थी। यद्यपि वह १८ वर्ष की थी, तथापि वह बिलकुल बच्ची मालूम होती थी। उसकी कुछ बातें तो हँसा देती थीं।

रोडियन ने पूछा—" क्या इतने ही धन से सब काम हो जायगा, और खाना भी हो जायगा ?"

"कफ़न बहुत सस्ता मिलेगा, और प्रत्येक वस्तु सस्ती पड़ेगी। कैथराइन ने और मैंने हिसाब लगाया है कि सब व्यय के बाद भी खाने के लिये कुछ बच जायगा। कैथराइन को खाना खिलाने के बाद ही कुछ शान्ति मिलेगी। आप जानते हैं कि वह—।"

"हाँ, मैं जानता हूँ। तुम मेरे कमरे को क्या देख रही हो? मेरी मा ने अभी कहा कि यह क़ब्र मालूम होती है।"

सुनिया ने नीचा मुँह करके कहा—"कल आपने अपना सर्वस्व हमको दे डाला।" उसके होंठ और ठुड्डी काँपने लगी। घुसते ही उसने यह देखा कि रोडियन बड़ा दरिद्र है, और इसीलिये बिना समझे हुए उसके मुँह से ये शब्द निकल गए। डोनिया की आँखें चमकने लगीं, और मा ने सुनिया की ओर अनुराग से देखा।

मा ने उठकर कहा—"रोडियन, शाम को हमारे संग खाना खाना। डोनिया, चलो। रोडियन, तुम घूमकर कुछ आराम करके शीघ्र हमारे यहाँ आना। हमने तुमको आज बहुत थका दिया है।"

"हाँ-हाँ, मैं आऊँगा। मुझको और भी कुछ काम करना है।"

राजू ने कहा—"मैं समझता हूँ कि तुम अकेले न खाओगे।"

"नहीं-नहीं, मैं अवश्य आऊँगा। परन्तु तुम एक क्षण ठहरो। मा, तुमको राजू की कोई आवश्यकता तो नहीं है? मैं राजू को तुमसे छीनता नहीं हूँ।"

"नहीं-नहीं। हाँ, मैं आशा करती हूँ कि राजू, तुम भी हमारे साथ खाना खाओगे?"

डोनिया ने कहा—"कृपा करके अवश्य आइएगा।"

राजू ने सिर झुका लिया। एक क्षण सभी निस्तब्ध रहे।

"अच्छा रोडियन, नमस्ते। नेस्टेसिया नमस्ते।"

मा ने सुनिया को भी नमस्कार करना चाहा; परन्तु उसका मन नहीं हुआ। वह कमरे से निकल गई। डोनिया इसी क्षण की प्रतीक्षा

कर रही थी। और, मा के पीछे-पीछे जाते हुए सुनिया को बड़ी नम्रता से सिर नवाया।

सुनिया घबरा गई, और उसने भी नम्रता से सिर झुकाया। परन्तु उसका मुख शोकातुर हो गया। डोनिया की नम्रता ने उसको बहुत ही कष्ट पहुँचाया।

रोडियन ने कहा—"डोनिया, नमस्ते। लाओ, अपना हाथ दो।"

डोनिया ने कहा—"अभी तो हाथ दिया था, क्या तुम भूल गए?"

"लाओ, फिर दो।" यह कहकर रोडियन ने अपनी बहन की उँगलियाँ दबाईं। डोनिया हँसी, और हाथ छुड़ाकर मा के पीछे-पीछे चली गई। वह बहुत प्रसन्न थी, यद्यपि यह नहीं मालूम कि वह क्यों प्रसन्न थी।

रोडियन ने सुनिया की ओर देखकर कहा—"ईश्वर, स्वर्गवासी की आत्मा को शान्ति दो, और जीवितों को जीवित रक्खो। ठीक है न?"

सुनिया ने आश्चर्य से देखा कि रोडियन के मुख पर चमक आ गई है। वह चुपचाप सोचती रही। रोडियन ने राजू को खिड़की की ओर खींचकर कहा—"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

सुनिया ने उठकर कहा—"तो मैं कैथराइन से कह दूँ कि आप आवेंगे!"

"मैं अभी तुम्हारी बात का उत्तर देता हूँ। मैं तुमसे दो-चार बातें करना चाहता हूँ। घबराओ नहीं, हम कोई रहस्य की बातें नहीं कर रहे हैं।" फिर राजू से बोला—"तुम जानते हो, उसका क्या नाम है?—पारफीरियस पेट्रोविश।"

राजू ने चकित होकर उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, वह मेरा नातेदार है। फिर उससे क्या?"

"कल तुम्हीं तो कह रहे थे कि वह ख़ून की जाँच कर रहा है!"

राजू ने आँखें खोलकर पूछा—"हाँ, तो उससे क्या?"

"मेरा ख़याल है, तुमने कहा था कि जो लोग बुढ़िया के पास गिरवी रखते थे, उनकी वह जाँच कर रहा है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने भी उसके पास कुछ चीज़ें गिरवी रक्खी थीं—एक छोटी अँगूठी, जो मेरी बहन ने मुझको दी थी, और एक पिता की चाँदी की घड़ी। यद्यपि उनका मूल्य ५, ६ रूबल से अधिक नहीं है, फिर भी मेरे लिये वे बहुत मूल्य की हैं। अब मैं क्या करूँ? मैं नहीं चाहता कि वे खो जायँ—खासकर घड़ी। मुझको अभी डोनिया की घड़ी देखकर भय हुआ था कि कहीं मा घड़ी देखने को न माँग बैठे। मेरे पिता की, बस, वही एक चीज़ मेरे पास है। अगर वह खो गई, तो मेरी मा बीमार हो जायगी। मुझको बताओ कि मैं क्या करूँ? मैं जानता हूँ कि पुलीस हलफ़नामा माँगेगी। क्या यह अच्छा न होगा कि मैं सीधा पारफ़ोरियस के पास जाऊँ? मैं इसका प्रबंध शीघ्र करना चाहता हूँ। कदाचित् खाने के समय ही मा घड़ी माँग बैठे।

राजू ने घबराकर कहा—"पुलीस के पास मत जाओ, पारफ़ीरियस के पास चलो। वह यहाँ से थोड़ी ही दूर पर रहता है, और इस समय घर ही पर होगा।"

"अच्छा चलो, चलें।"

"वह तुमसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगा। तुम्हारे विषय में कई बार हम बातें कर चुके हैं। अभी कल ही हम बातें कर रहे थे। चलो। तो तुम बुढ़िया को जानते थे?—हाँ, सोफ़ाया इवानोवना—।"

रोडियन ने ठीक करके कहा—"सोफ़ाया सेमेनोवना, यह मेरा मित्र राजू बड़ा अच्छा आदमी है।"

सुनिया इस परिचय से घबराकर, और राजू से आँख न मिलाकर बोली—"यदि आपको कहीं काम से जाना है, तो—।"

रोडियन ने कहा—"चलो, मैं आज दिन को किसी समय, सोफ़ाया सेमेनोवना, तुमसे मिलूँगा, यदि तुम मुझे अपना पता

बता दो।" यह बात उसने शीघ्रता से लड़की की दृष्टि बचाकर कही।

सुनिया ने लज्जित होकर अपना पता बता दिया। तीनों बाहर चले गए।

राजू ने पूछा—"क्या तुम घर का दरवाज़ा नहीं बंद करते ?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"कभी नहीं। दो वर्ष से मेरे पास ताला नहीं है। मेरे पास कुछ है ही नहीं, ताला रखकर क्या करूँ।"

फाटक के चौखट पर तीनों ठहर गए।

"सोफ़ाया सेमेनोवना, तुम दाहनी ओर जाओगी ? तुमने मेरा पता कैसे लगा लिया ?" यह बात वह यों ही कह गया, और कन्या की मधुर एवं रसीली आँखें देखने लगा।

"आपने कल पोलेचका को अपना पता बताया था न !"

"कौन पोलेचका ? ओह, तुम्हारी छोटी बहन ! तो क्या मैंने उसको पता बताया था ?"

"क्या आप भूल गए ?"

"हाँ, मुझे याद आ गया।"

"मेरे पिता ने आपके विषय में कई बार बातें की थीं। परन्तु मैं आपका नाम नहीं जानती थी, न वह जानता था। कल आपका नाम मालूम होने पर आज मैंने पूछा—क्या मि० रेस्कालनिकाफ़ यहाँ रहते हैं ? मैं नहीं जानती थी कि आप किराए के मकान में रहते हैं। मैं कैथराइन से कह दूँगी। सलाम।"

सुनिया नीचा मुँह किए तेज़ी से चल पड़ी। वह मोड़ पर शीघ्र पहुँचना चाहता था; क्योंकि वह इन दोनों युवा पुरुषों की दृष्टि से बचना चाहता थी। आज तक उसने ऐसा अनुभव कभी नहीं किया था। नया संसार उसके नेत्रां के सामने आ गया। उसे याद आया कि रोडियन ने स्वयं उसके यहाँ आने को कहा है। कदाचित् वह सुबह या तुरन्त ही आवे। हे ईश्वर ! अच्छा होता कि वह वहाँ न आता। मेरे घर में—मेरे कमरे में वह मुझको उस दशा में देखेगा।

वह ध्यान में इतनी मग्न थी कि उसने यह न देखा कि एक अनजान आदमी उसका पीछा कर रहा है। जिस वक्त रोडियन, राजू और सुनिया दरवाज़े पर खड़े बातें कर रहे थे, यह अनजान आदमी भी अचानक उनके पास होकर गुज़रा। सुनिया का यह वाक्य कि "मैंने पूछा-क्या मि० रेस्कालनिकाफ़ यहाँ रहते हैं?" अनजान आदमी के कानों में पड़े, और वह काँप गया। तीनों की ओर उसने तिरछी निगाह से देखा—विशेष कर रोडियन को—जिससे लड़की बातें कर रही थी। फिर उसने घर को पहचानने के लिये अच्छी तरह देखा। एक क्षण में यह काम करके वह धीरे-धीरे आगे चला, जैसे वह किसी की राह देख रहा हो। वह सुनिया की राह देख रहा था। उसने देखा था कि दोनों युवाओं को सलाम करके वह अपने घर की ओर चली है। उसने सोचा, यह कहाँ रहती है? इसको तो मैंने पहले भी कहीं देखा है।

जब वह मोड़ पर पहुँचा, तो दूसरी ओर जाकर उसने मुड़कर देखा कि लड़की भी उसी ओर जा रही है, जिस ओर वह। लेकिन लड़की ने उसे नहीं देखा। अब वह उसके पीछे-पीछे पचास क़दम गया, और फिर उसके बराबर आकर थोड़ा पीछे चलने लगा। इस मनुष्य की अवस्था ५० वर्ष की होगी। परन्तु देखने में यह युवा मालूम होता था। उसका क़द मँझोला था; बदन गठा हुआ, कंधे चौड़े और झुके हुए थे। उसके वस्त्र सुन्दर और सुहावने थे। उसके दस्ताने नए थे। हाथ में एक सुन्दर बेत लिए हुए था, जिसे वह सड़क पर टेकता जाता था। हर बात से यही विदित होता था कि यह कोई भलामानस है। उसके मुख पर प्रसन्नता थी, और उसके होठ और रंग से मालूम होता था कि वह सेंटपीटर्सबर्ग का रहने वाला नहीं है। उसके सिर के भूरे बाल कुछ-कुछ सफ़ेद हो चले थे। उसकी दाढ़ी के बाल हलके रंग के थे। उसके नीले नेत्रों में रूखापन, गंभीरता और स्थिरता थी। अनजान आदमी ने यह देख लिया कि सुनिया सन्नाटे में बढ़ी चली जा रही है। मकान

पर पहुँचकर वह घुसी, और अहाते को पार करके दाहनी ओर के ज़ीने पर चढ़ी। अनजान आदमी भी "वाह" कहकर उसी ज़ीने पर चढ़ा। तीसरी मंज़िल पर पहुँचकर उसने नं० ९ की घण्टी बजाई, जिसके दरवाजे पर खड़िया-मिट्टी से लिखा था—रैपर्ड नेसूमाफ़ दर्ज़ी। अनजान आदमी ने फिर "वाह-वाह" कहा, और नं० ८ की घण्टी बजाई। दोनों दरवाज़ों में ६ क़दम का अन्तर था।

उसने हँसकर सुनिया से पूछा—"क्या तुम रैपर्ड नेसूमाफ़ के यहाँ रहती हो? कल उसने एक मेरी वास्कट बनाई थी। मैं तुम्हारे पास ही कमरे में रहता हूँ।" सुनिया ने उसकी ओर ध्यान से देखा, और बड़ी मोटी आवाज़ से कहा—"हम पड़ोसी हैं।"

"मैं सैंटपीटर्सबर्ग परसों ही आया हूँ, अच्छा फिर मिलेंगे।" सुनिया ने कुछ उत्तर न दिया। दरवाज़ा खुला, और वह अन्दर घुस गई। वह डर गई थी।

राजू अपने मित्र को पारफ़ोरियस के यहाँ ले जाते हुए बड़ा प्रसन्न-चित्त था। उसने कई बार कहा—"मेरे मित्र, मुझको बड़ी प्रसन्नता है। मुझको नहीं मालूम था कि तुम भी बुढ़िया के यहाँ गिरवी रखते थे। क्या बहुत दिन हुए, गिरवी रक्खा था। कितने दिन हुए, जब तुम वहाँ गए थे?"

रोडियन ने कहा—"कहाँ?" और, याद करते हुए कहा—"मेरा ख़याल है,—मैं उसके मरने के दो दिन पहले वहाँ गया था। मुझको अभी गिरवी छुड़ाने की शीघ्रता नहीं है। मेरे पास कल की मूर्खता के कारण केवल एक रूबल बचा है।"

राजू ने उत्तर दिया—"अब मेरी समझ में आया कि तुम सरसाम में अँगूठी और घड़ी की चेन की क्यों घड़ी-घड़ी याद करते थे। उस समय मैं नहीं समझा था।"

रोडियन ने दिल में कहा, मैं देखता हूँ कि इन लोगों के दिमाग़ में वही बात घुसी हुई है। ख़ैर, अब राजू इस बात का साक्षी होगा कि

सरसाम में मैं अँगूठियों का नाम लेता था। मेरी बातों ने उनके संदेह को पुष्ट कर दिया है। फिर राजू से जोर से बोला—"क्या वह घर पर मिलेगा ?"

राजू ने उत्तर दिया—"अवश्य। वह बड़ा अच्छा आदमी है। ज़रा भद्दा है, यह नहीं कि बदतमीज़ हो। परन्तु दूसरी दृष्टि से भद्दा है। मूर्ख नहीं है, बहुत तेज़ है; परन्तु साधारणतः अविश्वासी और सनकी है। उसको लोगों को रहस्य में डालना अच्छा लगता है। पुरानी रीति से वह काम करता है, केवल आवश्यक गवाही को स्वीकार करता है। परन्तु अपने काम में बहुत चतुर है। पिछले साल उसने एक खून के मुकद्दमे में, जिसमें साक्षी नहीं मिलती थी, बड़ी चतुरता से काम किया था। वह तुमसे परिचित होने के लिये बहुत उत्सुक है।"

"क्यों, मुझसे क्यों मिलना चाहता है ?"

"यों ही। तुम्हारी बीमारी के कारण हम तुम्हारी बातें किया करते थे, और वह भी सुना करता था। जब उसने सुना कि तुम वकालत पढ़ रहे थे, और आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण तुमको युनिवर्सिटी छोड़नी पड़ी, तो उसने कहा—कैसे दुःख की बात है। कल, रोडियन, जब मैं तुमको घर ले जा रहा, मैं शराब पिए हुए था, और बकता जाता था। मुझे भय है कि एकाध बात मैंने तुमसे अनुचित कह दी हो।"

रोडियन ने बनावटी हँसी हँसकर कहा—"तुमने क्या कहा था, यही न कि लोग मुझे पागल समझते हैं ? संभव है, लोगों का कहना ठीक हो।"

अब वे दोनों चुप हो गए। रोडियन को यह सुनकर चिन्ता हुई कि मजिस्ट्रेट मेरे विषय में पूछता था। राजू ने कहा—"लो, मकान आ गया।"

रोडियन ने मन में सोचा, आवश्यक बात जानने-योग्य यह है कि पारफ़ोरियस को यह बात मालूम है कि नहीं कि कल मैं बुढ़िया के यहाँ गया था। वह ख़ून के विषय में पूछता था। यदि उसके नेत्रों से यह मालूम हुआ कि वह बनता है, तो मैं सब स्वीकार कर लूँगा, चाहे मेरी जान ही क्यों न जाय। फिर उसने राजू से कहा—"मेरे मित्र, आज प्रातःकाल से मैं तुमको बहुत उत्तेजित पाता हूँ। ठीक है न।"

राजू ने उत्तर दिया—"नहीं तो।"

"मैं ठीक कहता हूँ। अभी तुम कुरसी पर इधर-उधर उछल रहे थे। जैसे, तुम्हारा पैर सुन्न हो गया हो। ऐसा पहले तुम कभी नहीं करते थे। तुम घड़ी-घड़ी चकित हो जाते थे, तुम्हारे स्वभाव में परिवर्तन होता था। कभी तुम क्रोधित, और कभी शहद और शक्कर की तरह मीठे हो जाते थे। तुम्हारे मुख पर लालिमा आ जाती थी, और जब तुम्हें खाने के लिये निमंत्रण दिया गया, जो तुम लाल हो गए।"

"क्या बेहूदा बातें बकते हो।"

"तुम स्कूलों के लड़कों की तरह क्या शरमाते हो? इस समय भी तुम्हारे मुख पर लालिमा है।"

"तुम असहनीय बातें करते हो।"

"परन्तु, तुम क्यों घबराते हो? मजनू साहब, यदि तुम चाहो, तो मैं आज इसका वर्णन कहीं करूँ। अहाहा! मेरी मा बहुत खुश होगी, और एक व्यक्ति और खुश होगा।"

"ठहरो, बात गंभीर हो रही है। तुम क्या कहोगे? मेरे मित्र, तुम बड़े बेहूदा हो।"

"अब तो आपका रंग गुलाब का-सा हो गया। कैसा भला मालूम होता है। परन्तु मैं समझता हूँ, तुमने आज बाल भी ठीक सँवारे हैं। ज़रा सिर तो सूँघने दो, सिर में क्या लगाया है?"

"दुष्ट।"

रोडियन बड़े ज़ोर से हँसा, और हँसते-हँसते पारफ़ीरियस के दरवाज़े पर दोनों पहुँच गए। आगन्तुकों की हँसने की आवाज़ अन्दर सुनाई देती थी। रोडियन भी चाहता था कि वह सुनाई दे।

राजू ने रोडियन का कंधा पकड़कर कहा—"अब कुछ बोले, तो पीटूँगा।"

पाँचवाँ परिच्छेद

रोडियन मजिस्ट्रेट के यहाँ मुँह बनाए हुए घुसा, और उसके पीछे राजू लाल मुख किए, मुँह बनाए हुए। राजू को देखकर हसी आती थी। पारफ़ीरियस कमरे के बीच में खड़ा दोनों आगन्तुकों की ओर देख रहा था। रोडियन ने सिर झुकाकर उससे हाथ मिलाया, और साधारण बातों का उत्तर देने के लिये ऐसा विदित होता था कि बड़ी मुश्किल से हँसी को रोक रहा है। कुछ उत्तर देकर उसकी आँखें राजू से मिलीं। वह फिर हँसने लगा। राजू ने क्रोधित होकर कहा—"तुम क्यों हँसते हो, दुष्ट?" और, यह कहकर उसने घूँसा ताना, जिससे एक छोटी मेज़ हिल गई, और एक चा-भरा शीशे का ग्लास गिर पड़ा।

पारफ़ीरियस ने कहा—"ऐ भलेमानसो, फ़रनीचर क्यों ख़राब करते हो? सरकार का नुक्सान मत करो।"

"रोडियन ज़ोर से हँसने में अपना हाथ मजिस्ट्रेट के हाथ से छुड़ाना भूल गया। फिर ध्यान आते ही उसने अपना हाथ छुड़ाया। राजू मेज को हिलाकर, ग्लास को तोड़कर, घबराकर खिड़की के पास जाकर बाहर देखने लगा। पारफ़ीरियस भी हँसने लगा, यद्यपि वह इस हँसी का कारण जानना चाहता था। जेमटाफ़ कोने में बैठा था, आगन्तुकों को देखकर, खड़ा होकर, रोडियन को ध्यान से देखने लगा। रोडियन को इसके यहाँ मिलने की आशा न थी, और उसकी उपस्थिति यहाँ उसको अच्छी न लगी। उसने सोचा, यह बात भी ध्यान देने योग्य है। बनावटी दुःख से उसने कहा—"क्षमा कीजिए। राजू मिखेन—।"

"बस, बस, रहने दीजिए। आप लोगों ने घुसते ही हँसी मचा दी। राजू ने तो मुझसे यह भी न पूछा कि मैं कैसा हूँ।" यह कहकर

पारफ़ीरियस ने राजू की ओर मुँह कर लिया।

रोडियन बोला—"मैं नहीं जानता कि वह क्यों मुझसे नाराज़ है। मैंने तो उससे केवल यही कहा कि वह 'मजनू' हो रहा है, और इसका प्रमाण भी दे दिया। बस, यही बात थी।"

राजू ने बिना मुँह फेरे कहा—"दुष्ट!"

पारफ़ीरियस ने हँसकर कहा—"तुम्हारी हँसी को बुरा मानने के लिये राजू के पास कोई विशेष कारण होगा।"

राजू ने अब हँसकर उत्तर दिया—"अब मजिस्ट्रेट साहब बोले। ईश्वर आप लोगों का नाश करे।" और, पारफ़ीरियस से बोला—"अब बेहूदा बातें खत्म करो। मैं तुमको अपने मित्र रोडियन रोमानोविश रेस्कालनिकाफ़ से परिचित कराता हूँ, जो तुमसे मिलने को बड़ा उत्सुक था, और कुछ बातें करना चाहता है। ओहो! जेमटाफ़! तुम यहाँ कैसे आए? तुम्हारी पारफ़ीरियस से कब की जान-पहचान है?"

रोडियन मन में सोचने लगा, देखें अब क्या होता है।

जेमटाफ़ राजू के प्रश्न से कुछ क्षुब्ध हो गया। फिर सँम्हलकर बोला—"कल तुम्हारे ही घर पर तो जान-पहचान हुई थी।"

"पारफ़ीरियस, एक सप्ताह हुआ, जेमटाफ़ ने तुमसे परिचित होने की मुझसे इच्छा प्रकट की थी। परन्तु अब वह बिना मेरे मिलाए ही तुमसे मिल गया। अच्छा, कुछ तम्बाकू तो ले आओ।"

पारफ़ीरियस प्रातःकाल के कपड़े पहने हुए था। उसकी अवस्था ३५ वर्ष की होगी। कद उसका छोटा और शरीर मोटा था। दाढ़ी-मूँछ, कुछ न थी और बाल बहुत छोटे-छोटे थे। गर्दन पर बहुत मांस था। उसके फूले हुए गोल कपोलों से प्रसन्नता प्रकट होती थी। रंग कुछ काला था, और स्वास्थ्य अच्छा नहीं मालूम होता था। उसके छोटे नेत्र, जो कुछ-न-कुछ संकेत ही किया करते थे, प्रकट करते थे कि उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। पहले-पहल देखने में तो वह बड़ा हृष्ट-

पुष्ट मालूम देता था; परन्तु ध्यान देने से ऐसी बात नहीं मालूम पड़ती थी।

ज्यों ही उसने सुना कि रोडियन उससे कुछ बात करना चाहता है, उसने रोडियन को अपने पलँग पर बिठाया, और बातें सुनने को तैयार हो गया। यह साधारण बात है कि जब कोई मनुष्य—जिससे हमारी जान-पहचान कम हो—हमारी बातें सुनने की उत्सुकता प्रकट करे, और वे बातें कोई आवश्यक भी न हों, तो हमको मन में कुछ ग्लानि-सी होती है। रोडियन ने अपनी गिरवी की बात बताई, और उसने देखा कि पारफ़ीरियस बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहा है। राज़ू अधीरता से उन दोनों की ओर देखता रहा—कभी मजिस्ट्रेट की ओर, और कभी रोडियन की ओर। रोडियन ने अपने मन में कहा—मूर्ख।

पारफ़ीरियस ने सहज स्वभाव से उत्तर दिया—"तो यह बात पुलीस में लिखकर भेज दीजिए। यह लिख दीजिए कि उस खून की बात सुनकर हम मजिस्ट्रेट को यह सूचना देना चाहते हैं कि हमारी भी कुछ चीजें उसके पास गिरवी थीं, और उनको हम छुड़ाना चाहते हैं। इसका उत्तर आपको मिल जायगा।"

रोडियन ने बनावटी घबराहट से कहा—"दुर्भाग्य से मेरे पास इस समय धन नहीं है कि मैं उन छोटी-छोटी चीजों को भी छुड़ा सकूँ। मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि वे चीज़ें मेरी हैं, और जब संभव होगा—।"

पारफ़ीरियस ने उत्तर दिया—"उसकी चिन्ता न कीजिए। और, यदि आप चाहें, तो सीधे मुझी को लिखकर दे दीजिए।"

रोडियन ने पूछा—"क्या विना सरकारी टिकट लगाए काग़ज़ पर मैं लिख सकता हूँ?"

पारफ़ीरियस ने रोडियन की ओर देखकर कहा—"किसी भी काग़ज़ पर।"

उसकी दृष्टि से रोडियन को विदित हुआ कि वह सब कुछ जानता है।

"आप मुझे इन छोटी-छोटी बातों के विषय में पूछने के लिये क्षमा करें। इन चीज़ों का मूल्य ५ रूबल से अधिक नहीं है, परन्तु मेरे लिये ये विशेष मूल्य की हैं। और, मुझे यह सुनकर—।"

राजू ने पूछा—"क्या इसीलिये कल, जब मैंने जेसोमाफ़ से कहा कि पारफ़ोरियस गिरवी रखने वालों की जाँच कर रहा है, तुम परेशान हो गए थे?"

रोडियन इसे सहन न कर सका, और राजू को घूरने लगा। फिर उसको यह ध्यान आया कि घूरने में मैंने बड़ी भूल की। वह बात बनाकर बोला—"तुम मुझसे हँसी करते हो। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं उन बातों में रुचि लेता हूँ, जो तुम्हारी दृष्टि में छोटी हैं। परन्तु इस कारण तुम मुझे स्वार्थी और लोभी मनुष्य मत समझो। छोटी बात मेरे लिये बहुत मूल्य रखती है। मैंने अभी तुमसे कहा कि चाँदी की घड़ी, जिसका मूल्य कुछ भी नहीं, मेरे पिता की मेरे पास अकेली वस्तु है। तुम्हारा जी चाहे, हँसी करो; परन्तु मेरी मा अभी आई है। यदि उसको मालूम हो कि मेरे पास वह घड़ी नहीं है, तो वह बहुत दुखी होगी। स्त्रियों का स्वभाव ऐसा ही होता है।"

राजू लज्जित होकर बोला—"मेरा यह अभिप्राय नहीं था, तुम उलटा अर्थ लगाते हो।"

रोडियन ने मन में सोचा कि मैंने ठीक किया या नहीं। मैंने स्वाभाविक बात कही कि नहीं। सब स्त्रियों को मैंने क्यों खींचा?

पारफ़ीरियस ने पूछा—"क्या तुम्हारी मा आई हैं?"

"हाँ।"

"कब?"

"कल रात को।"

मजिस्ट्रेट चुप हो गया, और सोचने लगा। फिर उसने शान्ति-भाव से कहा—"ख़ैर, तुम्हारी चीज़ें खोवेंगी नहीं। और, मैं तो तुम्हारे

आने की प्रतीक्षा कर रहा था ।" यह कहकर उसने राजू की ओर राख डालने के लिये तश्तरी बढ़ाई; क्योंकि राजू दरी पर राख फेक रहा था। रोडियन भाँप गया। परन्तु ऐसा विदित हुआ कि मजिस्ट्रेट ने इस बात को नहीं देखा; क्योंकि वह अपनी दरी की रक्षा करने की चिन्ता में था।

राजू ने कहा—"तुम इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, तुमको कैसे मालूम कि इसने भी उसके पास चीज़ें गिरवी रक्खी होंगी?"

पारफ़ीरियस बिना उत्तर दिए हुए रोडियन से बोला—"तुम्हारी अँगूठी और घड़ी उसके यहाँ एक कागज़ के टुकड़े में लपेटी हुई मिली हैं, तुम्हारा नाम पेंसिल से उस कागज़ पर लिखा है, और तारीख भी तभी की पड़ी है, जिस दिन तुमने चीजें गिरवी रक्खी थी।"

रोडियन ने बनावटी हँसी हँसकर और मजिस्ट्रेट से आँख मिलाने का प्रयत्न करके कहा—"आपकी सम्मति बहुत अच्छी है; क्योंकि गिरवी रखनेवाले बहुत होंगे, और सबको याद रखना बड़ा कठिन काम है।"

पारफ़ीरियस ने मुँह बनाकर उत्तर दिया—"परन्तु सब हो गए, एक तुम्ही अभी तक नहीं आए थे।"

"मेरा स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं रहता।"

"हाँ, मैंने सुना था। मैंने यह भी सुना कि तुम्हें बहुत कष्ट था, और अब भी तो तुम पीले मालूम होते हो।"

रोडियन ने कुछ तेज़ आवाज़ में कहा—"नहीं, मैं पीला तो नहीं हूँ। मैं बिलकुल अच्छा हूँ।" उसके हृदय में बड़ा क्रोध हो रहा था। फिर उसने सोचा, क्रोध में मैं बड़ी मूर्खता की बातें कह जाऊँगा। पर यह मुझको तंग क्यों करते हैं?

राजू ने कहा—"यह ख़ूब कही कि मेरा स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं रहता। सच तो यह है कि कल तक यह बिलकुल बेहोश था। पारफ़ीरियस,

विश्वास करो, यह ठीक खड़ा तक नहीं हो सकता था। पर जेसीमाफ़ के जाने के बाद कपड़े पहनकर, चोरी से, इधर-उधर मारा-मारा घूमता रहा। ईश्वर जाने, आधी रात तक पागलों की तरह कहाँ घूमता रहा। क्या इसका तुम विश्वास कर सकते हो? यह बड़ी अद्भुत बात है।"

पारफ़ोरियस ने रूसी देहातियों की तरह सिर हिलाकर कहा—"पागलों की तरह?"

रोडियन ने कहा—"बेहूदा बकता है। आप इसका विश्वास न करें।"

ऐसा विदित हुआ कि पारफ़ोरियस ने ये वाक्य नहीं सुने।

राज़ू ने क्रोधित होकर कहा—"यदि तुम्हें सरसाम नहीं था, तो तुम गए क्यों थे? तुम्हारा क्या उद्देश्य था, और चोरी से क्यों गए थे? बोलो, सच-सच कहो कि तुम पागल थे या नहीं? अब भय नहीं रहा है, इसलिये तुम्हारे मुँह पर कहता हूँ।"

रोडियन ने मुसक्किराते हुए मजिस्ट्रेट से कहा—"कल इन लोगों ने मुझे बहुत तंग किया, और इनसे पीछा छुड़ाने के लिये मैं मकान किराए पर लेने चला गया कि वहाँ मैं छिपकर रह सकूँ। उसके लिये मेरे पास धन भी था। मि० जेमटाफ़ ने मेरी रकम देखी थी, और यह कह सकते हैं कि कल मैं होश में था या सरसाम में। बस, यही मेरा निर्णय कर सकते हैं।" रोडियन की इस समय बड़ी प्रबल इच्छा हो रही थी कि पारफ़ोरियस का गला घोंट दे; क्योंकि वह उसके मुँह बनाने के ढंग को सह नहीं सकता था।

जेमटाफ़ ने कहा—"मेरी सम्मति में तुम कल समझ और चतुरता की बातें कर रहे थे, ज़रा चिड़चिड़े ज़रूर थे।"

पारफ़ोरियस ने कहा—"अभी निकोडेमिश टामिस कहता था कि कल उसने तुम को एक अफ़सर के घर पर, जो कुचल गया था, देखा था।"

राज़ू ने कहा—"यह बात मेरे इस कथन को कि यह पागल है, प्रमाणित करती है। कल तुमने पागल की तरह लाश उठवाने के लिये

अपना सब धन दे डाला । मैं मानता हूँ कि आप विधवा को सहायता करना चाहते थे। परन्तु १५-२० रूबल दे देते, और कुछ अपने पास भी रखते, तो ठीक था। यह पागलपन नहीं, तो और क्या है।"

"परन्तु तुम यह कैसे समझते हो कि कल मुझे ख़ज़ाना नहीं मिला? कल मैं खर्च करने में शाह हो रहा था। मि० जेमटाफ़ को मालूम है कि कल मुझे खज़ाना मिला था।" फिर काँपते हुए होठों से उसने पारफ़ोरियस से कहा—"मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ, मैंने अपनी बक-बक से आपका आध घण्टा ख़राब किया। मैं समझता हूँ कि आप थके हुए हैं।"

"क्या?—तुम मुझको बहुत अच्छे लगते हो! मैं तुम्हारी बातें सुनना और तुमको देखना चाहता हूँ। तुम्हारे आने से मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"

राजू ने कहा—"कुछ चा मँगाइए।"

"अच्छा विचार तो है। परन्तु चा के पहले कुछ और खाओ।" यह कहकर पारफ़ोरियस चा के लिये आज्ञा देने गया। रोडियन का दिमाग़ बड़े ज़ोरों से काम कर रहा था। वह उत्तेजित हो गया था। वह यह सोच रहा था कि ये तो साफ़-साफ़ बातें करते हैं, मुझसे कुछ नहीं छिपाते। पारफ़ोरियस जब मेरे विषय में कुछ नहीं जानता, तो निकोडेमिश टामिस से क्यों मेरे विषय में पूछा? ये यह भी नहीं छिपाते कि कुत्तों की तरह ये मेरे पीछे लगे हैं। अच्छा-अच्छा, जो जी चाहे, तुम करो। परन्तु बिल्ली की तरह, मुझे चूहा समझकर, मुझसे खेल न करो। पारफ़ोरियस, यह बात अच्छी नहीं है। मैं तुमको यह करने न दूँगा। मैं तुम्हारे मुँह पर साफ़-साफ़ बातें कहूँगा, और तुमको बताऊँगा कि तुम्हारे विषय में मेरी क्या सम्मति है। परन्तु कदाचित् यह सब बात ठीक न हो। शायद मैं ठीक नहीं समझा। इससे यही अच्छा है कि ऐसे ही चलने दो, और क्रोध में अंधे होकर, मूर्ख की तरह, कुछ बक न पड़ो। इनके वाक्यों में कोई विशेष बात तो नहीं है,

परन्तु दोहरे अर्थ अवश्य हैं। पारफ़ीरियस ने बुढ़िया के विषय में बातें करते हुए यह क्यों कहा—"उसके स्थान में।" जेमटाफ़ ने यह क्यों कहा—"कल मैंने समझ की बातें कीं।" इनका कहने का ढंग निराला है। कदाचित् इनका बातें करने का ढंग यही हो। परन्तु राजू क्यों नहीं समझता? इस बुद्धू की समझ में कुछ नहीं आता। मुझको फिर ज्वर चढ़ रहा है। पारफ़ीरियस ने अभी मेरी ओर आँख मारी थी, या मुझे धोखा है। वह मेरी ओर क्यों आँख मारने लगा। कदाचित् वे मुझको तंग करके यह चाहते हैं कि मैं सब स्वीकार कर लूँ। या तो मेरी यह भूल है, या वे सब कुछ जानते हैं। जेमटाफ़ भी बदतमीज़ है। कल से मेरी बातों को सोच रहा होगा। मैं पहले ही समझता था कि यह अपनी सम्मति पलटेगा। यहाँ तो यह बिलकुल घर की तरह है, यद्यपि यह उसकी पहली भेंट है। लेकिन पारफ़ीरियस उसको अतिथि नहीं समझता। उसकी ओर पीठ फेरकर बैठा था। इतनी जल्दी ये दोनों गाढ़े मित्र हो गए। इनकी घनिष्ठता का कारण मैं ही हूँ। निस्सन्देह जब हम आए, ये मेरी ही बातें कर रहे थे। मैं जानना चाहता हूँ कि कल बुढ़िया के यहाँ का जाना इनको विदित है या नहीं। जब मैंने कहा कि मैं कल मकान किराए पर लेने गया था, तो पारफ़ीरियस कुछ न बोला। मैंने भी अच्छा किया, जो यह कह दिया। पीछे काम आवेगा। उसे मालूम है कि मैं कल शाम को कहाँ रहा। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि मेरी मा कल आई है। और, उस बुढ़िया का, जिसने मेरी गिरवी रखने की तारीख़ पेंसिल से लिखी है——। नहीं-नहीं, तुम्हारी बनावट से मुझे धोखा नहीं हो सकता। अभी तक तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं, केवल संभावना है। एक भी प्रमाण सामने लाओ। बुढ़िया के यहाँ जाना और कुछ भी प्रमाणित नहीं करता, केवल मेरा पागलपन बताता है। परन्तु क्या ये जानते हैं कि मैं वहाँ गया था? मैं आज बिना सब हाल जाने यहाँ से न उठूँगा। परन्तु मैं यहाँ क्यों

आया ? क्रोध करना ठीक नहीं । मैं क्यों चिड़चिड़ा हो रहा हूँ। खैर, यह भी अच्छा है। मैं रोगी बना रहूँगा। यह मुझको क्रोध में लाकर कुछ स्वीकार करवाना चाहते हैं। मैं यहाँ क्यों आया ? ये विचार बिजली की तरह उसके मस्तिष्क में आए।

पारफ़ारियस बड़ा प्रसन्न-चित्त लौटकर आया, और मुसकिराते हुए राजू से बोला—"कल जब मैं तुम्हारे यहाँ से आया, मेरा स्वास्थ्य ठीक न था। परन्तु अब अच्छा हूँ।"

"क्या तुम लोगों ने संध्या अच्छी तरह बिताई ? मैं तो चला गया था। सबसे अच्छा कौन रहा ?"

"कोई नहीं, सब पुरानी युक्तियाँ कहते रहे।"

राजू ने कहा—"रोडियन, कल इस बात पर विवाद चलता था कि संसार में पाप है या नहीं। और, इसी विषय पर सब बेहूदा बक रहे थे।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"इसमें क्या विशेषता है ? यह तो बहुत पुराना प्रश्न है।"

पारफ़ीरियस ने कहा—"नहीं, यह प्रश्न नहीं था।"

राजू बोल उठा—"मैं मानता हूँ कि इस प्रकार से नहीं था। रोडियन तुम अपनी सम्मति दो। कल जब मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था, ये लोग अपने-अपने सिद्धान्त छाँट रहे थे। ये कहते थे कि पाप एक बुरी सामाजिक अवस्था का विरोध है। इसके सिवा पापों का ये और कोई कारण नहीं बता सकते। इनकी सम्मति में पाप मनुष्य किसी ऐसे प्रभाव से करता है, जिसको वह वश में नहीं कर सकता। यही इनका विषय था।"

पारफ़ीरियस ने रोडियन से कहा—"पाप की बात चलने पर मुझको आपका एक लेख याद आया, जो मुझे बहुत अच्छा लगा था। आपने पाप पर एक लेख लिखा था। दो महीने हुए, मैंने पीरियॉडिकल वर्ड में उसे पढ़ा था।"

"पीरियाँडिकल वर्ल्ड में मेरा लेख? यह सच है कि छः महीने हुए, मैंने किसी पुस्तक के संबंध में एक लेख 'हेवडामेडल वर्ल्ड' में लिखा था। पीरियाडिकल वर्ल्ड में तो मैंने कोई लेख नहीं लिखा। हेवडामेडल वर्ल्ड का निकलना बंद हो गया, इसलिये वह लेख नहीं छपा।"

"ठीक है, हेवडामेडल वर्ल्ड पीरियाँडिकल वर्ल्ड में सम्मिलित हो गया है। इसलिये आपका लेख दो महीने हुए, इस पत्र में निकला था। क्या आपको नहीं मालूम?"

रोडियन को यह मालूम न था।

"तो जाइए, और अपने लेख का पुरस्कार वसूल कीजिए। आप भी कैसे मनुष्य हैं कि ऋषियों की तरह रहते हैं। आपका लेख निकले, और आपको पता ही न हो!"

राजू बोला—"शाबाश रोडियन! आज ही जाकर मैं रीडिंग रूम में पढ़ूँगा। दो महीने हुए, निकला था? कौन तारीख़ थी? ख़ैर, मैं ढूँढ़ लूँगा। आज तक बताया भी नहीं।"

"परन्तु आपको यह कैसे मालूम हुआ कि लेख मेरा था। मैंने तो अपना संक्षिप्त नाम लिखा था।"

"मुझको अचानक मालूम हो गया। मुख्य सम्पादक मेरा मित्र है। उसी ने यह रहस्य कि तुम उसके लेखक हो, मुझे बताया है। वह लेख मुझको बहुत अच्छा लगा।"

"जहाँ तक मुझको याद है, उस लेख में मैंने हत्या के समय हत्यारे के मस्तिष्क की दशा दिखाने का प्रयत्न किया है।"

"हाँ, और आपने यह कहा है कि उस क्षण हत्यारा कुछ-न-कुछ पागल हो जाता है। यह बिलकुल नई बात है। परन्तु आपके लेख का यह भाग मुझे कुछ रुचिकर न लगा। मुझको उस लेख के अन्त में जो एक विशेष विचार प्रकट किया गया है, और जिसको आपने सामान्य रीति से

लिखा है, वह रुचिकर प्रतीत हुआ। यदि आपको स्मरण हो, तो उसमें आपने यह दिखाने की चेष्टा की है कि संसार में ऐसे मनुष्य हैं, जिनको प्रत्येक प्रकार के पाप और हत्या करने का अधिकार है। इन मनुष्यों के लिये कोई क़ानून नहीं है।"

रोडियन अपने विचारों का उलटा अर्थ सुनकर हँसने लगा।

राजू चिन्तित होकर बोला—"क्या? पाप करने का अधिकार! या यह लिखा है कि हत्यारे की हत्या करने के समय ऐसी दशा हो जाती है कि वह अपनेको रोक नहीं सकता।"

"नहीं" पारफ़ीरियस ने उत्तर दिया। "इस लेख में मनुष्यों के दो भाग किए गए हैं—एक साधारण और दूसरे असाधारण। साधारण मनुष्यों को राजा की आज्ञा माननी चाहिए, और इनको क़ानून तोड़ने का कोई अधिकार नहीं; क्योंकि वे साधारण मनुष्य हैं। परन्तु असाधारण मनुष्यों को असाधारण होने के कारण अधिकार है कि प्रत्येक प्रकार का पाप करें, और प्रत्येक क़ानून तोड़ें। यही आपका अभिप्राय है या नहीं?"

राजू ने घबराकर कहा—"ऐसा नहीं लिखा होगा।"

रोडियन फिर हँसा। वह समझ गया कि पारफ़ीरियस मुझसे कुछ निकलवाना चाहता है। परन्तु वह भी अपने लेख के अर्थ बताने के लिये तत्पर हो गया, और हँसते हुए बोला—"नहीं, नहीं, यह अभिप्राय नहीं था। परन्तु मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आपने मेरे सिद्धांत को ठीक-ठीक कहा है। मैंने यह नहीं लिखा है कि असाधारण मनुष्यों का धर्म है कि वे हर समय हर प्रकार का पाप करें। यदि मैं ऐसा लिखता, तो सेंसर (Sensor) कभी उसको छपने न देता। मेरा अभिप्राय यह था कि असाधारण मनुष्य को सरकारी तौर से नहीं, परन्तु अपने असाधारण होने के कारण यह अधिकार है कि वह सीमा से बाहर चला जाय, यदि उसके विचारों की सफलता के लिये उसकी आवश्यकता हो, और वे विचार ऐसे हों, जिनसे मनुष्यमात्र का भला होता हो। आप

कहते हैं, मेरा लेख स्पष्ट नहीं है। मैं इसके स्पष्ट करने और आपकी इच्छा पूर्ण करने को कहता हूँ। मेरे सिद्धांत के अनुसार यदि केपलट और न्यूटन एक हज़ार या इससे भी अधिक मनुष्यों को मारे विना मनुष्यमात्र की भलाई के लिये अपने आविष्कार नहीं कर सकते, तो उनको अधिकार था—नहीं नहीं—उनका धर्म था कि वे इन सैकड़ों मनुष्यों को मारकर अपने आविष्कार उनसे अधिक सैकड़ों मनुष्यों को बताते। इसका अभिप्राय यह नहीं कि न्यूटन को केवल अपना मन बहलाने के लिये मनुष्यों के मारने या चोरी करने का अधिकार था। फिर मैंने अपने लेख में यह भी दिखाने की चेष्टा की है कि सब शास्त्रकार और राजा आदि काल से लेकर लाईसरज़स, सोलन, मुहम्मद, नेपोलियन आदि तक पापी हुए हैं; क्योंकि उन्होंने नए क़ानून बनाकर पुराने क़ानूनों को तोड़ा, जिनको समाज उस समय तक मान रही थी। इन लोगों ने मनुष्य-मात्र की भलाई करने के लिये ख़ून करने से अपनेको नहीं रोका। परन्तु कहना यों चाहिए कि इन मनुष्य-मात्र के आचार्यों और शुभचिन्तकों में ख़ून की प्यास अधिक थी। इसीलिये मैं कहता हूँ कि बड़े आदमियों ही को नहीं, परन्तु उनको भी, जो किसी प्रकार से साधारण मनुष्यों से ऊँचे होकर संसार में कुछ नई बात कर सकते हैं, पाप करने का अधिकार है; नहीं तो क़ानून और नियमों से जकड़े हुए वे संसार का कुछ भला नहीं कर सकते। यह आपको मानना पड़ेगा कि मेरे लेख में कोई नई बात नहीं। ये विचार हज़ारों बार प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु, हाँ, मनुष्यों के साधारण और असाधारण विभाग करना कदाचित नई बात हो। लेकिन मुझे इस बात की चिन्ता नहीं; क्योंकि मेरा विश्वास है कि मेरा सिद्धान्त ठीक है। प्रकृति ने दो प्रकार के मनुष्य उत्पन्न किए हैं—एक तो साधारण, जिनका काम केवल अपनी तरह के और मनुष्य उत्पन्न करना है; दूसरे, असाधारण, जिनको यह शक्ति मिली है कि नया विचार संसार के सामने प्रकट करें। और भी बहुत-से भिन्न-भिन्न

प्रकार के मनुष्य हैं। परन्तु मुख्य यही दो प्रकार के होते हैं। साधारण मनुष्यों में तो वे लोग हैं, जो क़ानून का ख़याल रखते और उससे डरते हैं, क्योंकि उनके भाग्य में यही लिखा है, और वे इसको कुछ अपमान नहीं समझते। दूसरे वे लोग हैं, जो क़ानून को तोड़ते या अपनी शक्ति के अनुसार तोड़ने की चेष्टा करते हैं। यदि उनके विचारों की सफलता के लिये उनको खून करना पड़े, लाशों पर चलना पड़े, तो उनको मैं पाप करने का अधिकार देता हूँ। इसके लिये कुछ चिन्ता की बात नहीं। आम तौर से लोग उनको यह अधिकार नहीं देते, या उनको लोग बेकार कर देते या फाँसी पर टाँग देते हैं। और, फिर फाँसी पर टाँगकर उनके स्मारक बनाते हैं। साधारण मनुष्य इस समय प्रबल हैं; परन्तु असाधारण भविष्य के मालिक होंगे। पहले प्रकार के मनुष्य संसार में जन-संख्या बढ़ाते हैं, और दूसरे मनुष्यमात्र को जगाकर काम करने को कहते हैं। जीवित रहने का दोनों को प्रलय-पर्यंत अधिकार है।"

"तो क्या तुम प्रलय में विश्वास करते हो?"

रोडियन ने ज़ोर देकर कहा—"हाँ।"

"क्या तुम ईश्वर की सत्ता में विश्वास करते हो? मेरे प्रश्न के लिये क्षमा करना।"

रोडियन ने पारफ़ीरियस से आँख मिलाकर कहा—"अवश्य।"

"लेज़रस के उद्धार में विश्वास करते हो?"

"हाँ; परन्तु इन प्रश्नों से क्या प्रयोजन?"

"क्या पूर्ण विश्वास करते हो?"

"हाँ।"

"मेरे इन प्रश्नों के लिये क्षमा करो। अच्छा, फिर जो कह रहे थे, वह कहो।"

"हाँ, कुछको जीवन में सफलता प्राप्त होती है।"

"और, यही शायद दूसरों को फाँसी लटकवा देते हैं!"

"हाँ, अधिकतर ऐसा ही होता है। आपका विचार ठीक है।"

"परन्तु मुझको यह बताओ कि असाधारण मनुष्यों को हम कैसे पहचान सकते हैं? क्या कोई विशेष चिह्न होता है? इस बात को ज़रा स्पष्ट कर दो। मैं क्रियात्मक होने के कारण यह जानना चाहता हूँ; क्योंकि इन असाधारण आदमियों को किसी विशेष श्रेणी में रखना चाहिए, जिससे हम उन्हें पहचान सकें। नहीं तो साधारण मनुष्य अपने को असाधारण समझकर, प्रत्येक बाधा को दूर करने के लिये, पाप करने में पाप न समझेंगे।"

"हाँ, ऐसा बहुधा होता है। और, तुम्हारी दूसरी बात तुम्हारी चतुरता प्रकट करती है।"

"धन्यवाद।"

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु यह याद रखिए कि यह बात केवल साधारण मनुष्यों ही में संभव है; क्योंकि यद्यपि उनको केवल नियम में रहने का अभ्यास है, फिर भी कभी-कभी वह अपने को अगुवा समझकर और अवतार मानकर ऐसी बातें कर बैठते हैं, और यह उनकी भूल सच्ची होती है। वे सच्चे अवतारों को नहीं पहचानते, बहुधा उनको हँसते हैं। परन्तु मेरी सम्मति में इस बात से कुछ भय न करना चाहिए; क्योंकि ये लोग कुछ नहीं करते। उनको दण्ड मिलने पर समझ में आ जाता है कि वे साधारण मनुष्य हैं, और फिर वे अपनी सीमा में आ जाते हैं।"

"मैं स्वीकार करता हूँ कि इस विषय में अब मुझे कुछ चिन्ता नहीं रही। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि संसार में क्या बहुत-से असाधारण मनुष्य हैं, जिनको दूसरों को मारने का अधिकार है? मैं एक-दो की चिन्ता तो नहीं करता; परन्तु यदि बहुत-से हैं, तो समाज के लिये उनका रहना हानिकारक है।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"आप घबराइए नहीं, ऐसे नए विचार-वाले आदमी नहीं के बराबर हैं। मेरी समझ में भी प्रकृति का यह नियम

अभी नहीं आया कि मनुष्य किस प्रकार से दो विभागों में विभक्त होता है; परन्तु मुझे विश्वास है कि थोड़े दिनों में समझ मे आ जायगा। मैं समझता हूँ कि बहुत-से लोग परस्पर विवाह करके एक ऐसा असाधारण आदमी पैदा करते हैं। ज्यों-ज्यों स्वतंत्रता बढ़ती जायगी, त्यों-त्यों दस हज़ार, एक लाख या कई लाखों में एक आदमी हमको असाधारण मिलेगा, जो संसार में नई बात उत्पन्न करेगा। मैंने इस नियम को अभी नहीं समझा। परन्तु कोई नियम है अवश्य। बिना कारण ऐसा नहीं होता।"

राजू बोला—"तुम लोग हँसी कर रहे हो, या एक दूसरे को मूर्ख बनाते हो? क्या, रोडियन, तुम गंभीर भाव से ऐसा कह रहे हो।"

रोडियन ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया। राजू को पारफ़ीरियस की बातों पर क्रोध आ रहा था। उसने कहा—"मेरे प्यारे मित्र, यदि तुम गंभीर भाव से ऐसा कहते हो, तो यह तो नई बात नहीं है। यह तो हज़ारों जगह पढ़ी है। परन्तु मुझे यह देखकर दुःख होता है कि तुम्हारी सम्मति में, आचार-शास्त्र की दृष्टि से, मनुष्य को अधिकार है कि दूसरों का खून गिरावे। यही तुम्हारे लेख का प्रयोजन है। मेरी सम्मति में आचार-शास्त्र का अधिकार सरकारी क़ानूनी अधिकार से अधिक भयंकर है।"

पारफ़ीरियस ने कहा—"बिलकुल ठीक।"

राजू ने कहा—"कहने में आदमी बहुत-सी बातें कह जाता है, किंतु सचमुच उसकी सम्मति ऐसी नहीं होती। वास्तव में तुम्हारा विचार ऐसा नहीं हो सकता। ख़ैर, मैं तुम्हारा लेख पढ़ूँगा।"

रोडियन ने कहा—"मेरे लेख में तुमको इस विषय पर कुछ अधिक न मिलेगा।"

पारफ़ीरियस ने कहा—"मैं अब तुम्हारी बातों को समझ गया। परन्तु मैं एक बात पूछता हूँ कि यदि एक युवा पुरुष अपने को आई-

सरज़स या मुहम्मद समझे, तो पहला काम उसका यही होगा कि अपने संदेश के पूरा करने के लिये बाधाओं को तोड़ डाले, और जो कोई उसकी राह में आवे, उसे मार डाले।"

रोडियन ने कहा—"वह मन में सोचेगा कि मुझको यह काम करना है, और इसके लिये मुझे रुपए की आवश्यकता है। फिर वह किसी प्रकार से रुपया प्राप्त करेगा। क्या तुम समझ सकते हो, कैसे"?

जेमटाफ़ ने कोने में बैठकर ध्यान से सुनना आरंभ किया। रोडियन ने उधर देखा भी नहीं। रोडियन ने कहा—"मैं यह मानता हूँ कि बहुधा ऐसी बातें हो जाती हैं, और मूर्ख और अहंकारी पुरुषों को फसाने के लिये जाल फैलाए जाते हैं, और उसमें वे फस भी जाते हैं।"

"तो तुम यह समझते हो?"

रोडियन ने हँसकर उत्तर दिया—"क्या यह मेरा अपराध है? इस प्रकार की बातें तो रोज़ होती हैं। अभी राजू मुझको यह उलाहना दे रहा था कि मैं हत्या में सहायता करता हूँ। पर मुझे क्या? क्या समाज की रक्षा कालापानी, जेलखाना और मजिस्ट्रेट नहीं कर सकते? फिर बेचैनी क्या है, अपने चोर को पकड़ो।"

"और, यदि हम उसको पकड़ लें!"

"तो उसका दुर्भाग्य।"

"ख़ैर, तुम्हारा तर्क ठीक है। परन्तु उसकी जीवात्मा क्या कहेगी?"

"इससे तुम्हें क्या प्रयोजन?"

"मनुष्य-मात्र की रुचि का प्रश्न है, इसलिये पूछा।"

"यदि किसी मनुष्य की जीवात्मा है, तो उसका पाप ही उसका दण्ड है, फाँसी को जाने दो।"

राजू ने पूछा—"तो मेरा विचार है कि असाधारण मनुष्य को, जिसको हत्या करने का अधिकार है, मानसिक वेदना नहीं होती।"

"इस बात से क्या प्रयोजन ? मानसिक वेदना उसको हो, या न हो। यदि वह मारने-योग्य मनुष्य को करुणा की दृष्टि से देखे, और उसका हृदय कोमल हो, तो अवश्य उसको वेदना होगी। यदि मनुष्य वास्तव में असाधारण है, तो उसको अवश्य वेदना होगी।" यह कहकर उसने टोपी उठाई, और खुमारी-भरी आँखों से सबकी ओर देखकर, मुसकिराकर खड़ा हो गया। सभी खड़े हो गए।

पारफ़ीरियस बोला—"ठहरो, एक बात मैं और पूछना चाहता हूँ। एक छोटी-सी बात इस समय मेरे ध्यान में आई। उसको पूछ लूँ, शायद भूल न जाऊँ।"

रोडियन ने उसे गंभीरता से देखकर कहा—"अपनी छोटी-सी बात भी पूछ लीजिए।"

"मैं नहीं जानता कि किस प्रकार अपने भाव को प्रकट करूँ। मेरा विचार विचित्र है। जब आप अपना लेख लिख रहे थे, उस समय, बहुत संभव है, आप अपनेको उन्हीं असाधारण मनुष्यों में गिन रहे हों, जिनकी बातचीत आप अभी कर रहे थे ? ठीक है, या नहीं ?"

रोडियन ने घृणा से उत्तर दिया—"बहुत संभव है, कि मैं समझता होऊँ।"

राजू चलने लगा।

"यदि मेरा विचार ठीक है, तो क्या आप उस समय सांसारिक दुःखों का विचार न करके, मनुष्य-मात्र की सहायता करने के लिये, बाधाओं को दूर करने के लिये तैयार हुए कि नहीं ? उदाहरणार्थ, किसी को मार डालने को और चोरी करने को।" यह कहकर पारफ़ीरियस ने अपनी बाईं आँख मारी, और नीचा मुँह करके मुसकिराया।

रोडियन ने अहंकार से उत्तर दिया—"यदि मैं तैयार भी हुआ, तो कम-से-कम आपसे तो न कहूँगा।"

"नहीं, नहीं, केवल आपके लेख का अर्थ समझने के लिये मैंने यह प्रश्न किया।"

रोडियन ने मन में सोचा, कैसा जाल फैला रहा है। और, फिर कहा—"न मैं अपनेको मुहम्मद समझता हूँ, न नेपोलियन। और, न उनकी तरह का मैं मनुष्य हूँ। इसलिये मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। यदि मैं उनकी तरह होता, तो उत्तर दे सकता था।"

मजिस्ट्रेट ने बड़ी मित्रता के भाव से कहा—"इस समय देश में कौन है, जो अपने को नेपोलियन नहीं समझता?"

जेमटाफ़ ने कोने से कहा—"किसी भावी नेपोलियन ने एलेन की हत्या की है!"

बिना कुछ कहे रोडियन ने पारफ़ीरियस की ओर घूरकर देखा। कुछ देर से उसे सन्देह होने लगा था। सब चुप थे। वह जाने को तैयार हो गया।

पारफ़ीरियस ने बड़ी नम्रता से हाथ बढ़ाकर कहा—"क्या अभी से चल दिए। आपसे परिचित होकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। अपने प्रार्थना पत्र की चिन्ता न करें। जैसा बताया है, वैसा लिख दें। अच्छा होगा, कल आकर मुझसे मिलें। मैं यहाँ ग्यारह बजे रहूँगा। हम सब काम ठीक कर देंगे, और फिर बातचीत करेंगे। आपसे मुझको बड़ी सहायता मिलेगी। आप अन्तिम पुरुष हैं, जो बुढ़िया के घर गए थे। इसलिये आप बहुत कुछ बता सकेंगे।"

रोडियन ने पूछा—"तो आप नियम-पूर्वक मेरी परीक्षा करना चाहते हैं?"

"मुझे कोई आवश्यकता नहीं। इस बात का तो ख़याल ही न कीजिए। आप मेरा अभिप्राय नहीं समझे। मैं प्रत्येक बात को जानना चाहता हूँ। प्रत्येक पुरुष से, जो बुढ़िया के यहाँ जाता था, मैं बातचीत कर चुका हूँ, और बहुत लाभदायक बातें मुझको मालूम हो चुकी हैं। और, चूँकि आप अन्तिम पुरुष थे—हाँ-हाँ खूब याद आया—

(राजूमिखेन की ओर देखकर) तुम मिकोलका की बात उस दिन मुझसे कह रहे थे न। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह निरपराधी है। (फिर रोडियन की ओर देखकर) परन्तु हम क्या करें, उसको पकड़ना आवश्यक था। हाँ, मैं पूछना चाहता था कि सात और आठ बजे के बीच में तुम बुढ़िया के घर गए थे?"

"हाँ।" यह कहकर रोडियन पछताया कि मैंने क्यों ऐसा कहा।

"तो ऊपर जाते हुए सात-आठ बजे के बीच में, दूसरी मंज़िल पर, एक कमरे में, जिसका दरवाज़ा खुला हुआ था, तुमको अवश्य याद होगा कि तुमने दो या एक चित्रकार को बैठे हुए देखा होगा। वह कमरे में सफेदी कर रहे थे। तुमने उन्हें अवश्य देखा होगा। उनकी रक्षा के लिये यह परम आवश्यक है।"

रोडियन ने ऐसा मुँह बनाया, जैसे वह याद करने की चेष्टा कर रहा हो। उसको मजिस्ट्रेट का जाल समझ में आ गया। वह बोला—"चित्रकार? मैंने किसी को नहीं देखा। मैंने कोई कमरा खुला हुआ भी नहीं पाया। हाँ, चौथी मंज़िल पर, मुझे याद है, एक आदमी का असबाब उठ रहा था। मुझे यह अच्छी तरह याद है; क्योंकि वहाँ कुछ गोरे सिपाही थे, जिनके कारण मुझे दीवाल से लगकर खड़ा होना पड़ा। चित्रकारों का तो मुझे याद नहीं आता, न मैंने कोई कमरा ही खुला हुआ देखा।"

राजू, जो अब तक चुपचाप खड़ा सुन रहा था, एकबारगी चिल्ला उठा—"क्या कह रहे हो? चित्रकार तो हत्या के दिन वहाँ थे, और रोडियन तो दो दिन पहले वहाँ गया था। यह प्रश्न क्यों करते हो?"

पारफ़ीरियस ने माथा ठोककर कहा—"हुँ, भूल हो गई। इस काम ने तो मेरा दिमाग़ ख़राब कर दिया है। मैं यह जानना बड़ा आवश्यक समझता हूँ कि चित्रकारों को वहाँ किसने ७ और ८ के बीच में देखा। मेरा विचार था कि तुमसे इस विषय में मुझे कुछ मालूम होगा। परन्तु मुझसे भूल हो गई।"

राजू ने कहा—"होश से बातें किया करो।"

पारफ़ीरियस ने दोनों आगन्तुकों को बाहर तक पहुँचा दिया। दोनों दुखी थे, और थोड़ी दूर तक बिना बोले चले गए। रोडियन इस प्रकार से साँस लेता था, जैसे कोई बड़ी कड़ी परीक्षा के अनन्तर साँस लेता है।

छठा परिच्छेद

राजू ने कहा—"मैं विश्वास नहीं कर सकता।" अब वे उस घर के समीप पहुँच गए थे, जहाँ डोनिया और मा उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। विवाद से उत्तेजित होकर राजू बीच सड़क में खड़ा हो गया। रोडियन ने हँसकर उत्तर दिया—"विश्वास न करो, न सही। तुमने कुछ नहीं देखा। मैंने एक-एक शब्द पर ध्यान दिया है।"

"तुम अविश्वासी हो, इसीलिये तुम प्रत्येक वाक्य का अर्थ लगाते हो। इसमें संदेह नहीं कि पारफ़ोरियस की बातें अद्भुत थीं, और वह बदमाश जेमटाफ़ भी वहीं था। उसने अवश्य कुछ बातें कहीं।"

"कल तक वह अपनी सम्मति बदल देगा।"

"तुम्हारी भूल है। यदि उनको ऐसा संदेह होता, तो वे तुमसे खुलकर बातें न करते। उनका व्यवहार ऐसा भद्दा न होता।"

"यदि उनके पास कुछ प्रमाण होता, तब तो वे मुझसे खुलकर बातें न करते, और अब तक मेरे घर की तलाशी ले चुके होते। अब तक उनके पास कोई प्रमाण नहीं। केवल सन्देह करते हैं, इसीलिये खुलकर बातें करते हैं। मुझे पारफ़ीरियस से इसी कारण भय लगता है कि उसको कोई प्रमाण नहीं मिलता। उसकी न-जाने क्या इच्छा है। बुद्धिमान मनुष्य है, कदाचित् मुझे डराना चाहता है। और, काम करने का उसका नया ढंग है। इस प्रकार के मुक़दमे बड़ी कठिनाई से साफ़ होते हैं। ख़ैर, अब इन बातों को जाने दो।"

"बड़ी घृणा की बात है। हमने जो आज खुलकर बातें की हैं, तो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ कि मेरा भी यह ख़याल था कि वे लोग तुम पर संदेह करते हैं। उन्हें कहने का साहस नहीं पड़ता। परन्तु उनको संदेह अवश्य है।"

"परन्तु उनको ऐसा सन्देह हुआ क्यों ? तुम मेरा स्वभाव जानते हो। मैं—एक ग़रीब विद्यार्थी—दरिद्रता और पागलपन से लड़ रहा हूँ। कठिन रोग मुझको घेरनेवाला था। अहंकार मुझको ज़रूर थोड़ा-सा है, अपने को कुछ समझता हूँ। छः महीने से किसी मनुष्य से नहीं मिला। फटे कपड़े पहने, विना जूते और मोजे के पुलीस के अफ़सरों के सामने बैठा हुआ उनके अपमान को सहन कर रहा हूँ। बिल के रुपए नहीं चुका सकता। कचहरी में लोग भरे हुए हैं। गरमी तेज़ पड़ रही है। नया रंग वायु को असहनीय बना रहा है। अभागा मनुष्य विना खाए-पिए जब यह सुनता है कि उस व्यक्ति का, जिससे वह एक दिन पहले मिला था, ख़ून हो गया, तो क्यों उसे ऐसी दशा में मूर्छा न आ जाय ? और, उसी मूर्छा के ऊपर उन्होंने सारा अपराध का महल खड़ा किया है। ईश्वर इन सबका नाश करे। मैं मानता हूँ कि इससे मैं दुखित हो रहा हूँ।"

राजू ने कहा—"रोडियन, यदि मैं तुम्हारे स्थान में होता, तो मैं हँसी में टाल देता। या उनको घृणा की दृष्टि से देखता। खुश रहो ! सब बातें घृणित और निन्दित हैं।"

रोडियन ने अपने मन में सोचा राजू तो मुझे बिलकुल निर्दोष समझता है। यह कहना सुगम है कि मैं घृणा की दृष्टि से उन्हें देखूँ। परन्तु कल फिर मेरी परीक्षा होगी, और मुझे सब बातें समझा कर कहनी पड़ेंगी। मैंने क्यों जेमटाफ़ से होटल में बातचीत की ?

राजू ने कहा—"मैं स्वयं पारफ़ोरियस के पास जाऊँगा। वह मेरा नातेदार है। उससे पूछूँगा, और स्वीकार करवा लूँगा। जहाँ तक जेमटाफ़ का सम्बन्ध है—।"

रोडियन ने मन में सोचा, जाल पड़ गया।

राजू ने अपने मित्र का कन्धा थामकर कहा—"तुम क्या बकते हो ? मैंने ख़ूब समझ लिया है कि कोई जाल नहीं है। तुम

कहते हो कि चित्रकारों के विषय का प्रश्न मुझको फसाने के लिये किया गया था। ज़रा सोचो, यदि तुम वहाँ होते, और तुमने खून किया होता, तो क्या तुम ऐसे मूर्ख थे कि तुम कह देते, हाँ, मैंने चित्रकारों को काम करते हुए देखा था। यदि तुमने देखा भी होता, तो भी कदापि न मानते। अपने फसाने की बात को कौन मानता है?"

रोडियन को यह वार्तालाप अच्छा नहीं लग रहा था। उसने कहा—"यदि मैंने ऐसा किया होता, तो अवश्य कह देता कि मैंने चित्रकारों को वहाँ देखा था।"

"अपने फसाने का बयान कैसे कर देते?"

"यह मूर्खों का काम है कि वे प्रत्येक बात से इनकार कर देते हैं। जो समझदार अभियुक्त हैं, वे प्रत्येक बात को, जिसका मुकदमे पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता, और जिसके इनकार करने से वे झूठे समझे जायँगे, स्वीकार कर लेते हैं, उसको दूसरे ढंग से दिखाते हैं, और उसके नए अर्थ बतलाते हैं। कदाचित् पारफ़ीरियस समझता था कि मैं भी इसी प्रकार उत्तर दूँगा। वह समझता था कि मैं कहूँगा, हाँ, मैंने चित्रकारों को देखा था, और फिर मैं अपने को फसा दूँगा।"

"परन्तु, फिर वह शीघ्र कहता कि हत्या के दो दिन पहले चित्रकार वहाँ नहीं थे, इसलिये तुम ख़ून के ही दिन सात और आठ बजे के बीच में वहाँ गए थे। और, इस प्रकार वह तुमको पकड़ लेता।"

"यह तो वह समझता कि मुझको सोचकर उत्तर देने का समय नहीं है। इसलिये इस बात को भूलकर कि हत्या के दो दिन पहले चित्रकार वहाँ नहीं हो सकते थे, मैं उसकी बात को मान लेता।"

"परन्तु यह कैसे तुम भूल सकते थे?"

"बड़ा सहज है, छोटी-छोटी बातें याद नहीं रहतीं। और, परीक्षा समय इन्हीं छोटी बातों के उत्तर देने में मनुष्य पकड़ा जाता है। पारफ़ीरियस यह ख़ूब समझता है। वह जैसा मूर्ख जान पड़ता है, वैसा वह है नहीं।

"यदि उसका यह ढंग है, तो वह बड़ा बदमाश है।"

रोडियन हँसने लगा। उसी क्षण उसे यह ख़याल आया कि मैंने इसको ख़ूब धोखा दिया। उसने सोचा, क्या मैं ऐसे प्रश्न पसंद करता हूँ? फिर उसको किसी घोर चिन्ता ने घेर लिया। अब दोनों उस मकान के दरवाजे पर पहुँच गए, जहाँ मा प्रतीक्षा कर रही थी। रोडियन ने कहा—"अन्दर चलो, मैं अभी आता हूँ।"

"तुम कहाँ जाते हो?"

"मुझे एक जगह और जाना है, आध घण्टे में आऊँगा। तुम पहले जाकर कह दो—।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

"क्या तुम भी मुझको दुःख-पर-दुःख पहुँचाना चाहते हो?"

रोडियन ने यह बात ऐसे स्वर में कही कि राजू फिर कुछ न बोल सका। कुछ देर बाहर खड़ा हुआ रोडियन की ओर देखता रहा, जो लंबे डग बढ़ाए चला जा रहा था। फिर दाँत पीसकर, मुट्ठी बाँधकर उसने कहा—"मैं आज पारफ़ोरियस को नीबू की तरह निचोड़ूँगा।"

वह ऊपर स्त्रियों के कमरे पर चढ़ा कि मा को इतनी देर में आने का कारण बताकर धीरज दे। जब रोडियन घर पहुँचा, उसके माथे पर पसीना आ रहा था, और साँस लेने में कठिनाई होती थी। जल्दी-जल्दी ज़ीने पर चढ़कर उसने कमरा बंद कर लिया। कागज़ के पीछे दीवाल में हाथ डालकर अच्छी तरह छेद में देखा, कोई वस्तु वहाँ न पाकर उसका हृदय शान्त हुआ। इसी समय आते हुए उसको यह ख़याल आया था कि चोरी की एक चीज़ दीवाल में रह गई है। यदि एक भी वस्तु या कागज़ का टुकड़ा—जिसमें वे लिपटे हुए थे, और जिन पर कुछ बुढ़िया के हाथ का लिखा हुआ हो—वहाँ मिल जाय, तो मेरे विरुद्ध कैसा भयंकर प्रमाण होगा! यह सोचते-सोचते उसके सिर में चक्कर आने लगा। वह हँसता हुआ, टोपी उतारकर बाहर चला। उसके विचार

विश्रृङ्खल हो रहे थे। वह फाटक पर पहुँचा। किसी ने ज़ोर से कहा—"वह लो, वह खड़ा है।"

चौकीदार दरवाजे पर खड़ा हुआ एक छोटे आदमी को इशारे से रोडियन को दिखा रहा था। यह व्यक्ति एक प्रकार का लम्बा-सा चोग़ा पहने था, और दूर से ग्रामीण सी प्रतीत होता था। उसकी टोपी आगे को झुकी हुई थी, कंधे उसके गोल थे। ५० से ऊपर अवस्था विदित होती थी। उसकी छोटी आँखें बड़ी भयंकर जान पड़ती थीं।

रोडियन ने चौकीदार के पास जाकर पूछा—"क्या मामला है?"

"अभी एक मनुष्य तुम्हारे विषय में पूछता था। तुम्हारा नाम लिया, और पूछा, तुम किसके संग रहते हो? तुम नीचे आ रहे थे, मैंने उसे दिखा दिया, और वह चला गया।"

चौकीदार भी चक्कर में था। कुछ देर सोचकर वह अपनी कोठरी में चला गया।

रोडियन उस अनजान व्यक्ति के पीछे चला। उसने देखा कि वह अनजान व्यक्ति सड़क के दूसरी ओर आँखें नीची किए, ध्यान में मग्न चला जा रहा है। रोडियन उसके समीप पहुँच जाता; परन्तु वह पीछे ही रहा। अन्त में सामने पहुँचकर वह उसकी ओर देखने लगा। उस व्यक्ति ने भी तेज़ी से इसकी ओर देखा, और फिर ध्यान में मग्न हो गया। एक क्षण तक दोनों बराबर-बराबर विना बोले चले गए।

रोडियन ने पूछा—"तुम्हीं ने मेरे विषय में अभी चौकीदार से पूछा था?"

उस व्यक्ति ने कुछ उत्तर न दिया—प्रश्नकर्त्ता की ओर देखा तक नहीं। फिर रोडियन इतना और कठिनाई से कह सका—"तुम अभी मेरे विषय में पूछते थे न? अब क्यों नहीं पूछते, क्या बात है?"

अब की वार उस व्यक्ति ने आँखें उठाईं, और रोडियन की ओर घृणा से देखा। धीरे से परन्तु साफ़-साफ़ उसने कहा—"ख़ूनी!"

रोडियन अब उसके बराबर पर था। उसकी टाँगें थरथराने लगीं, उसको जाड़ा लगने लगा, उसका दिल बैठने और फिर ज़ोर से धड़कने लगा। दोनों व्यक्ति थोड़ी दूर तक विना कुछ बोले साथ-साथ चले गए। अनजान व्यक्ति ने रोडियन की ओर फिर नहीं देखा।

रोडियन ने हकलाते हुए कहा-"तुम क्या जानते हो? कौन ख़ूनी है?"

अनजान व्यक्ति ने ज़ोर से कहा—"तुम खूनी हो।" उसके होठों पर मुसकिराहट थी, और वह रोडियन के पीले मुख और शीशे की-सी आँखों की ओर देख रहा था।

अब दोनों एक विस्तृत स्थान में पहुँच गए थे। अनजान व्यक्ति विना रोडियन की ओर देखे बाईं ओर को मुड़ गया। रोडियन ने उसको चले जाने दिया, और देखता रहा। ५० कदम चलकर अनजान व्यक्ति ने घूमकर युवा की ओर देखा, जो चुपचाप खड़ा था। रोडियन ने देखा, वह मुसकिरा रहा है। भयभीत होकर, काँपती हुई टाँगों से, वह अपने घर को लौट आया। टोपी फेंककर चुपचाप खड़ा रहा। फिर थककर, ठंढी साँस लेकर कोच पर लेट गया। आध घण्टे के अनन्तर ज़ीने में खड़खड़ाहट हुई, और राजू की आवाज़ सुनाई दी। रोडियन ने आँखें बंद कर लीं। राजू कमरे में घुसा, और कुछ सोचकर कोच के पास गया।

नेस्टेसिया ने चुपके से कहा—"सोने दो, मत जगाओ।"

राजू ने कहा – "ठीक है।" और, दोनों पंजे के बल बाहर निकल गए।

रोडियन ने आध घण्टे बाद आँखें खोलीं, और सिर के नीचे हाथ रखकर सोचने लगा—यह कौन व्यक्ति है? पाताल-लोक से निकल आया है? यह कहाँ था, और इसने क्या देखा है? अवश्य इसने सब कुछ देखा है; परन्तु उस समय यह कहाँ से छिपकर सब कुछ देख रहा था? अभी तक यह क्यों नहीं आया? फिर इसने कैसे देखा? क्या ऐसी बात संभव है? फिर रोडियन ने सोचा—यह भी बड़े अचम्भे की बात है कि मिकोल्का को एक आभूषण दरवाजे के पीछे मिल गया।

वह निर्बल होता जाता था। उसकी शक्ति काम नहीं देती थी। अन्त में उसने सोचा, मुझको यह सब पहले ही मालूम होना चाहिए था। मैंने क्यों जान-बूझकर, कुल्हाड़ी लेकर, यह ख़ून किया। मैं अवश्य जानता था कि असाधारण मनुष्य ऐसे नहीं होते। सच्चा राजा, जिसको सब कुछ करने का साहस रहता है, टूलन में बम फेकता है, पेरिस में कत्ले-आम करता है, मिसर में फ़ौज छोड़ता है, मास्को में अपने ५० हज़ार आदमी मरवा डालता है, हेलना से भाग निकलता है। लेकिन जब वह मर जाता है, लोग उसकी बुत बनाते हैं। उसके लिये सभी कुछ है। ऐसे मनुष्य मांस के नहीं, लोहे के बने होते हैं। फिर उसको ख़याल आया, कहाँ नेपोलियन, कहाँ वाटरलू! और, कहाँ एक कॉलेज के प्रोफ़ेसर की विधवा बुढ़िया, जो अपने लाल चमड़े के बॉक्स में सब चीज़ें छिपाकर रखती है। क्या नेपोलियन इस विधवा के बिछौने में घुसकर ऐसा काम करता? कभी नहीं।

उसको विदित होता था कि मुझको सरसाम हो गया है। बुढ़िया की उसको कुछ चिन्ता न थी, उसको तो वह जीवधारी वस्तु समझता ही न था। उसको मारना तो एक सिद्धान्त का काम था। परन्तु इसके अनन्तर मुझको कुछ नहीं करना चाहिए था। बस, केवल मारने ही का अधिकार मुझे था। और, इसमें भी मैं पूरा सफल न हुआ। कैसा सिद्धान्त! मूर्ख राजू अभी सामाजिक क्रांतिवादियों को गालियाँ दे रहा था। वे बेचारे मिहनती मनुष्यमात्र के भले के लिये सब काम करते हैं। मैं अपना भला चाहता हूँ, मनुष्यमात्र का नहीं। मैं जीवित रहना चाहता हूँ; नहीं तो जीने से क्या लाभ? मैं अपनी भूखी मा की रक्षा करना चाहता हूँ, और इसीलिये धन चाहता हूँ। इसीलिये समझता हूँ कि एक-न-एक दिन सब प्रसन्न होंगे। मनुष्य-मात्र की प्रसन्नता का मंदिर बनाने के लिये मैं अपना पत्थर रखता हूँ। और, इसी से मुझको निश्चिन्त होना चाहिए। तुम मुझको क्यों भूल गए? मुझे कुछ दिन

जीवित रहना है, तो मैं यह जीवन क्यों न प्रसन्नता से बिताऊँ। मैं नास्तिक कीड़ा हूँ, इससे अधिक कुछ नहीं।

वह बार-बार यही सोचने लगा। वास्तव में मैं कीड़ा हूँ; क्योंकि मैं प्रथम तो अपने को कीड़ा समझता हूँ; और दूसरे, महीने-भर से मैं ईश्वर को नहीं मानता। फिर मैंने यह काम धन के लोभ से नहीं किया, प्रत्युत मनुष्य-मात्र का भला करने के लिये। और, मैं यह करने के समय न्याय करने की चिन्ता में था। मैंने सब कीड़ों में सबसे घृणित कीड़े को मारा, और यह समझकर कि बस, उतना ही धन उससे लूँगा, जितना मुझे जीवन आरंभ करने के लिये आवश्यक हो। शेष सब धन मठ में, उसकी वसीयत के अनुसार, जायगा। फिर उसने दाँत पीसकर कहा—मैं भी कीड़ा हूँ, और उस कीड़े से, जो मार डाला गया है, बुरा कीड़ा हूँ; क्योंकि मैं समझता था कि काम करके मैं ऐसा ही कहूँगा। क्या मेरे भय के समान किसी का भय हो सकता है? मुझको इस समय मुहम्मद का वह चित्र याद आता है, जब वह घोड़े पर बैठा हुआ, खञ्जर हाथ में लिए कह रहा था—ऐ बन्दो! अल्लाह का यही हुक्म है, इसलिये उसका हुक्म मानो। मुहम्मद ने उस समय फ़ौज जमा करके, अच्छों और बुरों को मारकर ठीक ही कर दिया। ऐ काँपते हुए बन्दे! ईश्वर का हुक्म मान; क्योंकि तेरी स्वाधीनता कुछ नहीं है। मैं कभी भी बुढ़िया को क्षमा नहीं कर सकता।

पसीने से उसके बाल भीग गए थे, और वह एक टक छत की ओर देख रहा था। उसने मन में कहा—मैं अपनी मा और बहन से कितना प्रेम करता था, अब मैं उनसे क्यों घृणा करता हूँ? मैं उनकी उपस्थिति अपने पास सहन नहीं कर सकता। मैंने अभी अपनी मा का मुख चूमा। यदि उसको मालूम हो जाय...। मैं उस बुढ़िया को कितना घृणा करता हूँ। यदि वह फिर जी जाय, तो मैं उसको फिर मार डालूँगा, जैसा मैंने पहले किया। अभागिनी एलिज़बेथ! तुम क्यों

वहाँ आ गई । एलिज़बेथ, तुम्हारा तो मुझे कभी ध्यान भी नहीं आता। सुनिया बेचारी भलेमानस मृगनयनी ! ये सब रोते क्यों नहीं हैं ? अपने को कर्मों के ऊपर छोड़कर प्रत्येक बात सहन करते हैं। सुनिया ! सुनिया ! शरीफ़ सुनिया !

वह मूर्छित हो गया, और उसने स्वप्न देखा—"वह सड़क पर है, अँधेरा हो रहा है, चँद्रमा का प्रकाश बढ़ रहा है। परन्तु फिर भी वायुमंडल गरम है। लोग सड़कों पर चल रहे हैं । काम-काजी लोग घर लौट रहे हैं। कुछ इधर-उधर घूम रहे हैं। हवा में चूना, धूल और गंदे पानी की दुर्गंध आ रही है। रोडियन अपने ध्यान में उदास चला जा रहा है। उसको यह ख़याल आया कि मैं घर से किसी काम के लिये चला था, वह भूल गया। वह रुक गया, और उसने देखा कि सड़क के दूसरी ओर कोई उसको बुला रहा है। वह उसके पास गया, परन्तु वह मनुष्य सिर झुकाए, विना उसकी ओर देखे, दूसरी ओर चल पड़ा। उसने सोचा, क्या मैंने भूल की ? फिर उसने उस मनुष्य को पहचाना, और भयभीत हो गया। यह वही मनुष्य था, जो ज़मीन पर नज़र डाले हुए, झुके हुए, वही कपड़े पहने हुए उसे अभी मिला था। रोडियन का दिल धड़कने लगा। वे दोनों एक मकान में घुसे। आदमी ने मुड़-कर न देखा। रोडियन भी द्वार पर पहुँच गया, परन्तु वह आदमी लापता था। वह समझकर कि वह ज़ीने पर चढ़ा है, वह भी चढ़ गया। सचमुच उसके पैरों की आवाज़ दो मंजिल नीचे तक सुनाई देती थी। उसने उस ज़ीने को पहचान लिया। यह पहली मंजिल की खिड़की थी, जिससे चन्द्रमा की किरणें आ रही थीं। यह दूसरी मंजिल है, जहाँ चित्रकार काम कर रहे हैं। मैंने इस घर को पहले ही क्यों न पहचाना ? अब उस आदमी के पैरों की आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। वह रुक गया होगा, कहीं छिप गया होगा। क्या मैं आगे बढ़ूँ ? बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ है। वह चढ़ता गया। उसके पैरों की आवाज़ ने उसे

भयभीत कर दिया । हे ईश्वर, कितना अँधेरा है ! अवश्य ही वह मनुष्य कहीं कोने में छिपा हुआ है। कमरे का दरवाज़ा खुला था। रोडियन उसमें घुसा। अन्दर अँधेरा था । वह पंजों के बल बैठक में गया । चन्द्रमा अपना पूर्ण प्रकाश यहाँ डाल रहा था। फ़रनीचर को किसी ने नहीं छुआ था, कुरसियाँ, शीशा, पलँग और चित्र अपने-अपने स्थान पर थे। खिड़की से पूर्णमासी के चन्द्रमा के दर्शन होते थे । बिलकुल सन्नाटे में वह प्रतीक्षा करने लगा। उसने कुछ शब्द सुने, जैसे कोई चीज़ फाड़ी जा रही है। फिर सन्नाटा हो गया। एक मक्खी खिड़की में फँसकर भन-भन करने लगी।

उसी क्षण उसने एक कोने में किसी स्त्री के कपड़े लटकते हुए देखे। ये कपड़े तो यहाँ पहले न थे। वह धीरे से उनके पास गया। उसको संदेह हुआ कि अन्दर कोई छिपा है । वह बहुत धीरे से वहाँ जाकर खड़ा हो गया। उसने कपड़े हटाए। एक कुरसी देखी। कुरसी पर एक स्त्री सिर नीचा किए बैठी थी। वह उसका मुँह नहीं देख सका। वह समझ गया कि यह एलेन है। मैं समझता हूँ, वह डर गई है। यह सोचकर रोडियन ने कुल्हाड़ी निकाली, और दो बार उसकी खोपड़ी पर मारी । परन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि वह उसी प्रकार कुरसी पर बैठी रही । रोडियन ने झुककर देखा । वह और झुक गई। उसने भी और झुककर देखा, और उसका मुँह देखकर भयभीत हो गया। स्त्री हँसने लगी, परन्तु इतने धीरे से हँसी कि कोई सुन न सकता था। रोडियन को विदित हुआ कि कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ है, और वहाँ भी हँसी हो रही है। क्रोध में आकर उसने पूरी शक्ति से बार-बार मारना आरंभ किया । हँसी बढ़ती गई, स्त्री तड़पने लगी । उसने भागना चाहा, कमरे में लोग चले आ रहे हैं। दरवाज़ा खुला हुआ था, ज़ीने पर और इधर-उधर लोग चुपचाप खड़े हुए यह दृश्य देख रहे हैं। उसका दिल धड़का, उसके पैर शिथिल हो गए। उसने चिल्लाना चाहा।" और, इतने में वह जग गया।

उसने कठिनाई से साँस ली । उसको यह ख़याल हुआ कि मैं अब भी स्वप्न देख रहा हूँ; क्योंकि एक मनुष्य, जिसको इसने कभी नहीं देखा था, दरवाजे के पास खड़ा उसको ध्यानपूर्वक देख रहा है। रोडियन ने आँखें खोलीं, और फिर बन्द कर लीं। चित लेटकर वह सोचने लगा कि क्या मैं अब भी स्वप्न देख रहा हूँ। उसने फिर ज़रा आँख खोलकर अनजान आदमी को देखा। वह आदमी भी वहीं पर खड़ा हुआ सब देख रहा था। अब वह अन्दर घुसा, और धीरे से दरवाजा बंद करके, मेज़ के पास आकर, थोड़ी देर ठहरकर, कोच के पास कुरसी पर बैठ गया; परन्तु रोडियन को लगातार देखता रहा। उसने अपनी टोपी उतारकर रख दी, अपने हाथ लकड़ी की मूठ पर रखकर, अपनी ठोढ़ी को अपने हाथों पर रख दिया, जिससे यह विदित हुआ कि वह जल्दी जानेवाला नहीं है। रोडियन ने जो आँख खुलते ही देखा, तो उसे विदित हुआ कि आगन्तुक युवा नहीं है, बलवान शरीर का है, और उसके घनी दाढ़ी है।

इस प्रकार दस मिनट बीत हो गए। अभी कुछ-कुछ प्रकाश था। कमरे में बिलकुल शान्ति थी। ज़ीने पर कोई शब्द नहीं हो रहा था, केवल मक्खी की भिनभिनाहट खिड़की के पास हो रही थी। अब यह असह्य होता जाता था। रोडियन उठकर बैठ गया, और बोला—"तुम बोलते क्यों नहीं हो? क्या चाहते हो?"

आगन्तुक ने शान्तिपूर्ण हँसी से कहा—"मैं भली भाँति जानता था कि तुम सोए नहीं हो, ख़ाली बन रहे हो। मेरा परिचय सुनो—मेरा नाम आरकेडियस एवानोविश स्विड्रीगेलफ़ है।"

पवित्र पापी

चौथा भाग

एक मार्ग

पहला परिच्छेद

क्या मैं सचमुच जगा हुआ हूँ? रोडियन ने सोचा। उसने ज़ोर से कहा—"स्विड्रीगेलफ़? नहीं, असंभव।" इस बात से आगन्तुक को तनिक भी आश्चर्य न हुआ।

"मैं तुम्हारे पास दो कारणों से आया हूँ। प्रथम तो मैं तुमसे परिचय करना चाहता हूँ; क्योंकि कुछ दिन हुए, मैंने तुम्हारी बड़ी प्रशंसा सुनी थी। दूसरे, मुझको आशा है, तुम अपनी बहन डोनिया के लाभ के लिये मेरे एक काम में मेरी सहायता करोगे। अकेले विना परिचय के मुझसे वह न मिलेगी; क्योंकि वह मेरे विरुद्ध है। परन्तु तुम्हारी सहायता से सब कुछ हो सकता है।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"तुम मेरे पास व्यर्थ आए हो।"

"क्या कल स्त्रियाँ आई हैं?" रोडियन ने कुछ उत्तर न दिया। वह फिर स्वयं कहने लगा—"मैं जानता हूँ, कल ही आई हैं। मैं स्वयं परसों आया हूँ। अब मुझको इस विषय में यह कहना है, और मैं तुमसे पूछता हूँ कि यदि तुम हठधर्मी को छोड़कर सोचो, तो मेरा कोई अपराध नहीं है।"

रोडियन चुपचाप उसकी ओर देखता रहा।

कदाचित् तुम मुझसे यह कहना चाहते हो कि मैंने अपने घर में एक निःसहाय कन्या से अनुचित प्रस्ताव करके उसका अपमान किया। मैं तुम्हारे दोषारोपण को समझ गया। परन्तु यह भी सोचो कि मैं भी मनुष्य हूँ, मुझे भी मोह हो सकता है, मैं भी अनुराग में फस सकता हूँ। विना सोचे-समझे यह प्रत्येक मनुष्य के लिये संभव है। प्रश्न केवल यह है कि मैं देव हूँ, या भूत हूँ, या मैं स्वयं शिकार हो गया हूँ। जब मैंने उससे यह प्रस्ताव किया कि मेरे साथ अमेरिका या स्विज़रलैंड भाग चलो, तो मैं उसको आदर की दृष्टि से देखता था, और उसका सुख ही चाहता था। इससे मैंने अपनी ही हानि की।"

रोडियन ने घृणा से उत्तर दिया—"प्रश्न यह नहीं है। तुम शुद्ध हो या अशुद्ध, तुमसे मैं घृणा करता हूँ, और परिचय नहीं करना चाहता। जाओ, इस दरवाजे से चले जाओ।"

स्विड्रीगेलफ़ हंस पड़ा, और बोला—"तुमको फसाने का कोई उपाय नहीं है। मैं चालाक बनकर तुमको फसाना चाहता था, परन्तु तुम न फसे।"

"उसी क्षण से तुम मुझको फसाने का प्रयत्न कर रहे हो।"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर कहा—"मेरी चालाकी बिलकुल ठीक है, मुझको उसे समाप्त करने दो। मैं यह कहना चाहता हूँ कि कोई अनुचित बात बग़ीचे की घटना के अतिरिक्त नहीं हुई। मारफ़ा पेट्रोवना...।"

रोडियन ने बीच में टोककर कहा—"लोग कहते हैं, तुमने मारफ़ा को मार डाला। तो तुम यह सुन चुके हो। कोई आश्चर्य की बात नहीं। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर, मैं नहीं जानता, किस प्रकार दूँ।' परन्तु मेरी जीवात्मा शुद्ध है। यह मत समझो कि मैं इस घटना के परिणाम से डरता हूँ। हर तरह की जाँच हो चुकी। पंचनामे से यह प्रमाणित हो चुका है कि उसकी मृत्यु दिल के बैठने से हुई, इस कारण

क उसने खाना खाने के बाद एक बोतल शराब पीकर स्नान किया। ोई और बात नहीं पाई गई। मुझको इसकी कुछ चिन्ता नहीं। परन्तु ुझको सेंटपीटर्सबर्ग आते हुए यह अवश्य ख़याल आया कि क्या मैंने पनी स्त्री को चिढ़ाकर या और किसी कारण से उसकी मृत्यु होने में हायता की? किन्तु मैंने यही परिणाम निकाला कि ऐसी बात हीं है।"

रोडियन खाँसने लगा, और बोला—"अब क्या सोचते हो?"

"तुम हँसते क्यों हो? मैंने केवल दो चाबुक उसको धीरे से ारे थे, जिनके निशान तक नहीं बने। मैं समझता हूँ, मैंने ह भूल की। परन्तु मारफ़ा इससे अप्रसन्न न थी। जब तुम्हारी हन के संबन्ध की घटना हुई, मेरी स्त्री ने सारे नगर में जाकर सका पत्र सुनाया। तब मैंने क्रोधित होकर दो चाबुक मारे।"

रोडियन ने चाहा कि उठकर चला जाऊँ, और इस भेंट को समाप्त र दूँ। परन्तु उत्सुकता ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। उसने ूछा—"तो आपको चाबुक मारने का शौक़ है!"

स्विड्रीगेलफ़ ने उत्तर दिया—"नहीं, मारफ़ा से मेरा कभी झगड़ा हीं हुआ। हम लोग बड़े सुख से रहते थे, और वह भी मुझसे न्तुष्ट थी। सात वर्ष हम दोनों साथ रहे, और इस बीच में केवल ो बार मैंने उसे चाबुक मारे (तीसरी बार का मैंने नहीं कहा; योंकि उस समय उसने भी मुझे मारा था)। पहली बार विवाह े दो महीने बाद मैंने उसे मारा था, और फिर यह दूसरी बार, जिसका ैंने अभी वर्णन किया। तुम मुझको अहंकारी जीव समझते हो, ो दासता के पक्ष में है?"

रोडियन ने सोचा—यह मनुष्य बहुत ही चतुर है, और कसी विशेष काम से आया है। उसने कहा—"चाबुक मारने के अनन्तर तुम बहुत दिन तक किसी से बोले भी न होगे।"

"इसमें बहुत कुछ सचाई है। परन्तु तुम तो मुझे सज्जन ही नहीं समझते !"

"नहीं, मैं तो समझता हूँ।"

"इसीलिये न कि मैंने तुम्हारे प्रश्नों का बुरा नहीं माना। मैं बुरा क्यों मानूँ। जैसे तुमने प्रश्न किए, वैसे मैंने उत्तर दे दिए। सच तो यह है कि मुझको अब किसी बात में रुचि नहीं रही। इस समय कोई बात मेरा ध्यान नहीं आकर्षित करती। कदाचित् तुम समझते हो कि मैं भला बनकर तुमसे कुछ काम निकलवाना चाहता हूँ; क्योंकि मैंने अभी तुम्हारी बहन के विषय में कुछ कहा है। तीन दिन से मैं बहुत परेशान हूँ, इसलिये तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। रोडियन, बुरा न मानो, तुम भी एक अद्भुत मनुष्य मालूम होते हो। चाहे जो कुछ कहो, परन्तु तुममें कुछ विशेष बात अवश्य है। अच्छा, अब मैं कुछ न कहूँगा। नाराज़ मत हो। मैं ऐसा भालू नहीं हूँ, जैसा तुम समझते हो।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"तुम भालू नहीं हो? नहीं-नहीं, तुम बड़े शिष्ट हो, और विशेषकर उस समय शिष्ट हो जाते हो, जब तुम्हारा मतलब होता है।"

"मैं किसी की सलाह की रत्ती-भर भी चिन्ता नहीं करता, इसलिये मैं शिष्टाचार को बिलकुल व्यर्थ समझता हूँ।"

रोडियन ने उसकी ओर देखा, और कहा—"मैंने सुना है, तुम्हारे बहुत से मित्र यहाँ हैं। बताओ, तुम यहाँ किस प्रयोजन से आए हो?"

"यह बिलकुल सच है कि मेरे मित्र यहाँ हैं।" और, अगली प्रश्न का उत्तर न देते हुए उसने कहा—"इन मित्रों से इन्हीं तीन दिनों में मैं मिला हूँ। मैंने उनको पहचाना, और मैं समझता हूँ, उन्होंने भी मुझे पहचाना है। मैं अच्छे कपड़े पहनता हूँ, और अमीर समझा जाता हूँ। परन्तु मैं पुराने मित्रों से नहीं मिलना चाहता; क्योंकि वे मुझे

सह्य हो गए हैं। परसों से यहाँ आया हुआ हूँ, परन्तु अभी तक किसी से नहीं मिला। क्लब या डुसाट के होटल तक में नहीं गया! ताश में धोखा देने में अब मुझको रुचि नहीं रही।"

"क्या तुम पहले ऐसा करते थे?"

"हाँ, आठ वर्ष हुए, हम भलेमानस लोग, रुपएवाले, पढ़े-लिखे एक दूसरे को दिल-भर कर ताश में धोखा देते थे। इस नगर में बहुत-से शरीफ़ जेबकट हैं। निजोन से एक ताश खेलनेवाला आया था, जिसके ७० हजार रूबल मुझे देने थे। उसने मुझे जेल में बंद करा दिया। उस समय मारफ़ा ने अपना असली प्रेम दिखाया। तीस हज़ार रूबल देकर उसने मेरे महाजन से सुलह करके मुझे छुड़ाया। तब हमने विवाह किया, और उसने मुझे तब अपने गाँव के मकान में ख़ज़ाने की तरह गाड़कर रक्खा। वह मुझसे पाँच वर्ष बड़ी थी, और बड़ा प्रेम करती थी। सात वर्ष तक मैं गाँव से नहीं निकला। इस बीच में मुझे अपने वश में रखने के लिये वह तीस हज़ार का बिल, जिस पर मैंने हस्ताक्षर किए थे, अपने पास रक्खे रही। यदि मैं उसको छोड़ देता, तो वह मुझे जेल में बंद करा देती। मुझे पूर्ण विश्वास है, उस समय वह सब प्रेम भूल जाती। स्त्रियों का ऐसा ही चरित्र होता है।"

"मैं समझता हूँ, कि यदि उसके पास वह बिल न होता, तो तुम उसको छोड़कर भाग खड़े होते।"

"मैं नहीं जानता कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दूँ। उस बिल की मुझे कुछ चिन्ता न थी, और न कहीं बाहर जाने की मेरी इच्छा ही थी। मुझको दुखी देखकर मारफ़ा ने दो बार मुझे बाहर जाने को कहा। परन्तु मैं क्यों जाता। योरप-भर देख चुका था, और मुझको वह अच्छा नहीं लगा। यहाँ प्रकृति के दृश्य अवश्य प्रशंसनीय हैं, परन्तु मुझे सूर्योदय, समुद्र और नेपल्स की खाड़ी

को देखकर दुःख होता है। मैं नहीं कह सकता, क्यों ? मुझे घर ही पर अच्छा लगता है; क्योंकि घर पर तुम दूसरों को दोषी ठहरा सकते हो, और आप भले बने रह सकते हो। मैं सोचता हूँ, कि उत्तरीय ध्रुव चला जाऊँ; क्योंकि शराब, जो पहले कभी मुझे आनन्द देती थी, अब दुखदाई है। अब मैं शराब नहीं पी सकता। मैंने सुना है, रविवार को लुसूपाफ़ के बाग से एक गुब्बारा उड़ेगा, और उसमें बर्ग बैठेगा, तथा धन लेकर वह और यात्रियों को भी बिठावेगा। क्या यह ठीक है ?"

"क्या तुम गुब्बारे पर जाना चाहते हो ?"

"हाँ-हाँ...। नहीं।"

रोडियन ने सोचा, यह कैसा आदमी है !

स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"उस बिल की मुझे कुछ चिंता न थी। मैं अपनी खुशी से वहाँ रहा। एक साल हुए, मेरे जन्म-दिवस पर मारफ़ा ने वह बिल मुझे लौटा दिया, और बहुत-सा धन मेरी भेंट किया। उसके पास बहुत धन था। उसने कहा, देखो मैं तुम पर कितना विश्वास करती हूँ।—हाँ, यही उसके शब्द थे। मैं बड़ा अच्छा ज़मीदार समझा जाता था, और गाँव में सब लोग मुझे जानते हैं। दिल बहलाने के लिये पुस्तकें मँगवाईं। पहले तो मारफ़ा खुश हुई; परन्तु फिर उसको इस बात की चिन्ता हो गई थी कि अधिक पढ़ने से कहीं मेरा स्वास्थ्य न बिगड़ जाय।"

"तो मारफ़ा की मृत्यु से तुम बहुत दुखी हो ?"

"बहुत संभव है। क्या तुम भूतों में विश्वास करते हो ?"

"किस तरह के भूत ?"

"यही, जिनकी चर्चा संसार में होती है।"

"क्या तुम विश्वास करते हो ?"

"हाँ—नहीं, मैं नहीं करता, और फिर भी—।"

"क्या तुमने भी कोई भूत देखा है?"

स्विड्रिगेलफ़ ने प्रश्नकर्त्ता की ओर विचित्र दृष्टि से देखकर कहा— "मैं मारफ़ा पेट्रोवना को देखता हूँ।"

"क्या सचमुच वह तुमको देख पड़ती है?"

"हाँ, तीन बार तो दिखाई दे चुकी है। पहली बार गाड़ने के घण्टा-भर बाद, जब मैं गिरजे से वापस आया था; फिर परसों सूर्योदय के समय, यात्रा में, मलाएवेचेंरा स्टेशन पर; और अन्तिम वार, दो घण्टे हुए, जिस कमरे में मैं रहता हूँ, वहाँ। मैं अकेला था।"

"क्या तुम जाग रहे थे?"

"अच्छी तरह से। वह आती है, थोड़ी देर बात करती है, और फिर दरवाजे से चली जाती है। मुझे उसके पैर की चाप तक सुनाई देती है।"

रोडियन ने कहा—"मैंने भी बहुधा कहा है कि ऐसी बातें होती हैं।"

वह बहुत उत्तेजित हो गया था।

स्विड्रिगेलफ़ ने पूछा—"तुमने बहुधा ऐसा कहा है। क्या यह संभव है? तो हमारी और तुम्हारी बहुत-सी बातें मिलती-जुलती हैं। बोलो, ठीक है कि नहीं?"

रोडियन ने चिढ़कर उत्तर दिया—"तुमने तो ऐसा कभी नहीं कहा।"

"नहीं।"

"कभी नहीं?"

"मुझे ख़याल आता है, कहा है। अभी-अभी दरवाजे से घुसकर, तुमको सोने का बहाना करते हुए देखकर, मैंने मन में सोचा था कि यही वह मनुष्य है।"

रोडियन ने कहा—"यही वह मनुष्य है, इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

स्विड्रोगेलफ़ ने हकलाते हुए कहा—"मेरा क्या अभिप्राय है, यह कहने के लिये मैं तैयार नहीं हूँ।"

थोड़ी देर तक दोनों एक दूसरे को घूरते रहे।

रोडियन ने कहा—"ख़ैर, इन बातों को जाने दो। यह बताओ कि वह तुमसे क्या कहती है?"

"क्या कहती है? बेहूदा बकती है, छोटी-छोटी बातों के विषय में बकती है। पहली बार मैं थका हुआ था, और सिगार पी रहा था, जब वह दरवाजे से घुसी, और उसने कहा—आरकेडियस, आज तुमने थके होने के कारण खाना खाने के कमरे की घड़ी में चाबी नहीं दी। मैं सप्ताह में एक बार इस घड़ी को कूकता था। यदि मैं भूल जाता था, तो वह याद दिलाती थी। दूसरे दिन मैं सेंटपीटर्सबर्ग के लिये रवाना हुआ। सूर्योदय के समय एक स्टेशन पर रेल रुकी, और मैं खाने के कमरे में गया। रात को अच्छी तरह नींद नहीं आई थी, आँखें भारी थीं। मैंने एक क़हवे का प्याला माँगा। देखता क्या हूँ कि मारफा पेट्रोवना हाथ में ताश लिए मेरे पास बैठी है, और पूछती है, क्यों आरकेडियस, तुमको बताऊँ कि यात्रा में क्या होगा? वह भविष्य की बातें बताने में बड़ी दक्ष थी। मैंने उससे कुछ न पूछा, और डरकर भाग खड़ा हुआ। आज खाना खाकर मैं अपने कमरे में बैठा सिगार जला ही रहा था कि मैंने मारफ़ा को देखा। वह बहुत अच्छा, नया, हरे रेशम का गाउन पहने थी। मुझसे बोली— यह कैसी अच्छी सिली हुई है। अनिस्का ऐसा नहीं सी सकती। अनिस्का हमारे गाँव में एक दर्ज़िन है।"

मैंने पहले उसका गाउन देखा, फिर उसे। और उससे बोला—"मारफ़ा तुम क्यों व्यर्थ छोटी-छोटी बातें आकर मुझसे कहती हो?"

उसने उत्तर दिया—"क्या? तुम डरोगे नहीं।"

मैंने उसे छेड़ने के लिये कहा—"मारफ़ा, मैं शीघ्र ही विवाह करनेवाला हूँ।" उसने उत्तर दिया—"विवाह करो, परन्तु अपनी पहली

स्त्री के मरने के अनन्तर इतने शीघ्र विवाह करने से भलेमानस तुमको घृणा की दृष्टि से देखेंगे।' यह कहकर वह चली गई। मैंने भी उसके कपड़ों की खड़खड़ाहट सुनी। क्या यह विचित्र बात नहीं है?"

रोडियन ने कहा—"परन्तु, तुम बिलकुल झूठ बोल रहे हो।"

स्विड्रीगेलफ़ ने उत्तर दिया—"मैं बहुत कम झूठ बोलता हूँ।"

"क्या तुमने इसके पहले कभी भूत नहीं देखा?"

"हाँ, छः महीने की बात है, हमारे यहाँ एक नौकर फ़िल्का नाम का था। वह मर गया था। परन्तु भूल से मैंने पुकारा, फ़िल्का, मेरा चुरट लाओ। वह आया, सीधे मेज़ के पास गया, जहाँ मेरा सब सामान था। मैंने सोचा, यह मुझसे बदला लेगा; क्योंकि मृत्यु के कुछ दिन पहले मुझसे उससे झगड़ा हुआ था। मैंने कहा, तुम्हारा कपड़ा कोहनियों पर फटा है, तुम मेरे सामने कैसे आए? भाग जाओ। वह चला गया, और फिर न देख पड़ा। मैंने यह बात अपनी स्त्री से नहीं कही थी। मैंने सोचा था कि मैं उसका फ़ातिहा पढ़वा दूँगा। परन्तु फिर मैंने सोचा कि यह तो बिलकुल लड़कपन है।"

"जाओ, अपने को डाक्टर को दिखाओ।"

"तुम्हारी शिक्षा व्यर्थ है। मैं जानता हूँ कि मैं बीमार हूँ, यद्यपि यह नहीं जानता कि रोग क्या है। मेरी सम्मति में मैं तुमसे अच्छा हूँ। मैं तुमसे यह नहीं पूछता कि लोग भूत देखते हैं या नहीं; परन्तु यह पूछता हूँ कि तुम्हारी सम्मति में भूत होते हैं या नहीं।"

रोडियन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"नहीं।"

स्विड्रीगेलफ़ ने सिर नीचा करके कहा—"लोग इस विषय में क्या कहते हैं? यही कहते हैं कि तुम बीमार हो, इसलिये तुम्हारे मन में सरसाम के कारण ऐसे विचार उठते हैं। यह कहना तर्क के अनुसार नहीं है। मैं मानता हूँ कि भूत बीमारों को ही देख पड़ते हैं। परन्तु उससे यह

प्रमाणित होता है कि भूत देखने के लिये बीमार होना चाहिए। यह नहीं प्रमाणित होता कि भूत होते ही नहीं।"

रोडियन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"मुझको पूर्ण विश्वास है कि भूत नहीं होते।"

स्विड्रीगेलफ़ उसकी ओर देखकर बोला—"भूत दूसरे संसार से आते हैं, इसलिये स्वस्थ मनुष्य को, जो इस संसार में रहता है, वे नहीं दिखाई देते। परन्तु जब वह बीमार होता है, और उसकी शारीरिक दशा अच्छी नहीं होती, तब उसको दूसरे संसार की बातें सूझती हैं। और, ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती है, दूसरा संसार उसको स्पष्ट देख पड़ने लगता है। फिर मरने पर वह उस संसार में फेंक दिया जाता है। मैं इस पर बहुत दिन से विश्वास करता हूँ। और, यदि तुम पुनर्जन्म में विश्वास करते हो, तो तुमको भी यही मानना पड़ेगा।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता।"

स्विड्रीगेलफ़ चुप हो गया। फिर एकबार ही पूछने लगा—"यदि वहाँ मक्खियों और मकड़ियों के अतिरिक्त कुछ न मिले...?"

रोडियन ने समझा, यह पागल है।

"लोग प्रलय को बहुत बड़ी चीज़ समझते हैं; परन्तु ऐसा क्यों है? यदि वहाँ एक छोटा-सा कमरा धुएँ से भरा हुआ हो, जिसके प्रत्येक कोने में मकड़ियाँ हों...। मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।"

रोडियन ने बिगड़कर कहा—"प्रलय के बारे में तुम्हारा यही विचार है?"

"हाँ, कदाचित् मैं ठीक ही कह रहा हूँ।" स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर कहा।

"रोडियन काँपने लगा। स्विड्रीगेलफ़ ने घूरकर रोडियन को देखा, और कहने लगा—"क्या यह अचम्भे की बात नहीं कि आध घण्टा हुआ, हम लोग मिले थे, और एक दूसरे को शत्रु समझते थे? मैं कुछ

बातों को साफ़ करना चाहता था, और उनको बिना साफ़ किए हुए ही हम दार्शनिकों की-सी बातें करने लगे। तभी तो मैं कहता हूँ कि हम-तुम, दोनों एक ही से हैं।"

रोडियन ने बिगड़कर कहा—"कृपया इधर-उधर की बातों को छोड़कर यह बताइए कि आप कैसे आए हैं। मुझको जल्दी जाना है।"

"अच्छा, क्या यह सच है कि तुम्हारी बहन डोनिया का विवाह लूशिन से हो रहा है?"

"मैं तुमसे कहना चाहता हूँ कि मेरी बहन का नाम मत लो। यदि तुम वास्तव में स्विड्रीगेलफ़ हो, तो मेरी समझ में नहीं आता कि उसका नाम मेरे सामने लेने का साहस तुम्हें कैसे हुआ।"

"परन्तु मैं उसी के विषय में बातचीत करने आया हूँ, इसीलिये उसका नाम लिया।"

"अच्छा, जल्दी करो, बोलो।"

"मि० लूशिन मेरी सुसराल की तरफ़ से मेरा नातेदार है। मुझको पूर्ण विश्वास है कि तुम उसको समझ गए हो, यदि तुमने उसको आध घण्टे के लिये भी देखा हो, या किसी विश्वसनीय पुरुष ने तुमसे उसके विषय में कुछ कहा हो। वह डोनिया के योग्य नहीं। मेरी सम्मति में तुम्हारी बहन मूर्खता से, अपने कुटुम्ब की भलाई के लिये निष्काम भाव से, उससे विवाह कर रही है। जो कुछ मैंने तुम्हारे विषय में सुना है, और जो अनुभव तुमसे मिलकर मुझे हुआ है, उससे मैं समझता हूँ कि तुम यह विवाह न होने दोगे, यदि तुमको यह विश्वास हो जाय कि उसमें डोनिया की भलाई है।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"तुम बड़े मुँहफट और बेहया हो।"

"तो क्या तुम समझते हो कि मैं स्वार्थ से ऐसा कहता हूँ? यदि मुझे अपना ही ख़याल होता, तो मैं स्वयं कुछ न कहकर दूसरे से न कहलाता?

मैं मूर्ख नहीं हूँ । अभी मैंने तुमसे कहा कि मैं तुम्हारी बहन से प्रेम करता था, और उसकी आँखों का शिकार हो गया था । परन्तु अब तुमसे कहता हूँ कि अब मैं प्रेम नहीं करता । मुझको स्वयं अचम्भा है कि वह प्रेम कहाँ गया।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"वह प्रेम नहीं था, एक बदमाश आदमी की बदमाशी थी।"

"मैं मानता हूँ कि मैं बदमाश हूँ । परन्तु तुम्हारी बहन में ऐसे गुण हैं कि बदमाश को भी वश में कर सकती है । मेरी चाह थोड़े ही दिन की थी, इसका अब मुझे विश्वास हो गया है।"

"कब से ?"

"कुछ दिनों से ऐसा ख़याल था, और कल सेंटपीटर्सबर्ग पहुँचने पर पूर्ण विश्वास हो गया । मास्को में मेरा विचार हुआ कि मैं युग-ओड़िया का प्रेमी बनकर मि० लूशिन का प्रतिद्वन्द्वी बनूँ ।"

"क्षमा करें, ज़रा संक्षेप में कहें कि आप क्यों आए हैं । मुझको जाना है ।"

"बहुत प्रसन्नता से । मैं यात्रा को जानेवाला हूँ, इसलिये जाने के पहले सब बातों का निर्णय करना चाहता हूँ । मेरे बच्चे अपनी मौसी के संग रहेंगे । वे अमीर हैं, और मेरी अपेक्षा स्वाधीन हैं । मैं केवल वही रक़म लेकर आया हूँ, जो मारफ़ा ने, एक साल हुआ, मुझे दिया था । मेरे लिये वह बहुत है । परन्तु यात्रा में जाने के पहले मैं मि० लूशिन की बात का भी निर्णय करना चाहता था । मैं उससे घृणा तो नहीं करता, यद्यपि उसी ने मेरी स्त्री से मेरा झगड़ा कराया । मैं इसलिये नाराज़ हूँ कि मेरी स्त्री ही ने यह विवाह ठीक किया । अब मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपनी बहन से मिला दो । यदि उचित समझो, तो तुम भी उस समय उपस्थित रहो । मि० लूशिन से विवाह करके जो दुःख उसको होंगे, उनकी सूचना मैं उसे देना चाहता हूँ । फिर, मैंने जो उसका निरा-

पर किया है, उसके लिये क्षमा माँगूँगा। मैं यह चाहता हूँ कि उसको दस हज़ार रूबल भेंट करूँ, जिससे लूशिन से विवाह तोड़ने से जो हानि होगी, वह पूरी हो जाय।"

रोडियन ने आश्चर्य-भरी वाणी में कहा—"तुम पागल हो। ऐसा कहने का साहस कैसे करते हो?"

"मैं समझता था, तुम क्रोधित होगे। परन्तु पहले मैं यह बताना चाहता हूँ कि यद्यपि मैं धनवान नहीं हूँ, तो भी दस हज़ार रूबल के विना मेरा काम चल सकता है। यदि डोनिया न लेगी, तो ईश्वर जाने, मैं किस प्रकार उसे व्यय करूँगा। फिर मेरा हृदय शुद्ध है, और मेरा प्रस्ताव निःस्वार्थ है। एक दिन तुमको और डोनिया को यह मालूम हो जायगा। मैं मानता हूँ कि मैंने तुम्हारी आदरणीया बहन के साथ अनुचित व्यवहार किया। मुझको उसका दुःख है, और मैं चिंतित हूँ कि उस व्यवहार का बदला कुछ धन देकर या कुछ सेवा करके चुका दूँ, ताकि संसार यह न कहे कि मैंने केवल उसको हानि पहुँचाई है। यदि मेरा प्रस्ताव निःस्वार्थ न होता, तो मैं इस प्रकार तुमसे साफ़-साफ़ न कहता। इसके अतिरिक्त मैं शीघ्र ही एक कन्या से विवाह करनेवाला हूँ। इसलिये तुम यह संदेह नहीं कर सकते कि मैं डोनिया को फसाना चाहता हूँ। यदि वह लूशिन की स्त्री हुई, तो उसको यह धन मिलेगा; परन्तु दूसरे के द्वारा। रोडियन, क्रोधित मत हो, शान्ति से काम लो।"

रोडियन ने कहा—"बस, तुम चुप रहो। तुम्हारा प्रस्ताव अत्यन्त अनुचित है।"

"नहीं। क्या तुम्हारा यह अभिप्राय है कि इस संसार में यदि कोई मनुष्य किसी को हानि पहुँचावे, तो उसको फिर लाभ पहुँचाने का उसे अधिकार नहीं है? कदाचित् तुम कहोगे कि आमतौर पर ऐसा नहीं होता, और ऐसा होना लोकाचार के विरुद्ध है। तब मैं पूछता हूँ कि

यदि मैं मर जाऊँ, और तुम्हारी बहन के नाम इसे वसीयत कर जाऊँ, तो क्या वह यह धन न लेगी ?"

"संभव है, ले ले।"

"बस, अब कुछ न कहो। मेरी प्रार्थना को सोनिया तक पहुँचा देना।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"तब, रोडियन, मैं स्वयं उससे मिलूँगा, यद्यपि उसको मुझसे मिलने में दुःख होगा।"

"और, यदि मैं तुम्हारी प्रार्थना कह दूँ, तब तो तुम मिलने का प्रयत्न न करोगे ?"

"मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। मैं उससे एक बार मिलना चाहता हूँ।"

"यह आशा व्यर्थ है।"

"ख़ैर, तुम मुझको नहीं जानते। कदाचित् हम-तुम मित्र हो जायँ।"

"क्या तुम ऐसा समझते हो ?"

स्वड्रीगेलफ़ ने हँसकर, टोपी उठाकर कहा—"मैं तुम्हारे पास ज़बर-दस्ती नहीं आना चाहता। आज ही आते हुए प्रातःकाल मुझे आश्चर्य हुआ कि...।"

रोडियन ने बेचैन होकर कहा—"प्रातःकाल तुमने मुझे कहाँ देखा ?"

"अचानक देखा। मैं समझता हूँ, हम और तुम दोनों एक ही रंग से रँगे गए हैं।"

"इन बातों को समाप्त करो, यह बताओ कि तुम अपनी यात्रा पर कब जाओगे ?"

"कैसी यात्रा ?"

"वही, जिसका अभो तुमने ज़िक्र किया था।"

"क्या मैंने तुमसे यात्रा के विषय में कहा था? हाँ, अवश्य कहा था; परन्तु यात्रा में जाने के बजाय, संभव है, मेरा विवाह हो जाय। मेरे मित्र मेरा विवाह ठीक कर रहे हैं।"

"यहाँ?"

"हाँ।"

"तो सेंटपीटर्सबर्ग में आकर तुमने अपना समय नष्ट नहीं किया है।"

"खैर, मैं चलता हूँ। अपनी बहन से कह देना कि मारफ़ा उसके नाम ३,००० रूबल लिख गई है। मारफ़ा ने मेरे सामने मरने के एक सप्ताह पहले वसीयत लिखी थी। दो या तीन सप्ताह में डोनिया को रूबल मिल जायँगे।"

"क्या यह सच है?"

"हाँ-हाँ, उससे तुम कह देना, भूलना नहीं। मैं तुम्हारे समीप ही रहता हूँ।"

बाहर जाते हुए स्विड्रिगेलफ़ को दरवाज़े पर राजू मिला।

दूसरा परिच्छेद

आठ बजे के लगभग दोनों युवा चले। दोनों यह चाहते थे कि लूशिन से पहले पहुँचें। राजू ने सड़क पर पहुँचकर पूछा—"तुम्हारे घर से अभी-अभी कौन निकला था?"

"स्विड्रीगेलफ़ ज़मीदार, जिसके यहाँ मेरी बहन नौकर थी। वह नौकरी उसको छोड़नी पड़ी; क्योंकि यह उससे प्रेम करने लगा। इसकी स्त्री मारफ़ा ने डोनिया को निकाल दिया, और फिर इसी मारफ़ा ने डोनिया से क्षमा माँगी। वह मर गई है। इसी के विषय में मेरी माता अभी बातचीत कर रही थी। मैं नहीं जानता, क्यों? परन्तु मैं इस मनुष्य से बहुत डरता हूँ। यह बड़ा विचित्र आदमी है, और कुछ मेरे विषय में जानता भी है। और, किसी निश्चित उद्देश्य से, अपनी स्त्री को गाड़कर, यहाँ आया है। डोनिया की इससे रक्षा करनी चाहिए। यही मैं तुमसे कहना चाहता था।"

"रक्षा—डोनिया की रक्षा? यह डोनिया का क्या कर सकता है? अच्छा किया, रोडियन, तुमने जो मुझे यह बता दिया। डरो नहीं, हम डोनिया की रक्षा करेंगे। यह रहता कहाँ है?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम।"

"तुमने उससे पूछा क्यों नहीं? ख़ैर, मैं उसको याद रक्खूँगा।"

रोडियन ने कुछ देर चुप रहकर कहा—"तुमने उसको देखा?"

"हाँ, अच्छी तरह देख लिया।"

"क्या तुम उसे पहचान लोगे?"

"हजारों में पहचान लूँगा।"

दोनों चुप हो गए। फिर रोडियन ने कहा—"मुझे ऐसा विदित

होता है कि मेरे पीछे जैसे कोई भूत लगा हुआ है।"

"तुम ऐसा क्यों कहते हो, यह मेरी समझ में नहीं आता।"

"तुम सब लोग कहते हो कि मैं पागल हूँ, और अभी-अभी मुझे यह मालूम हुआ कि कदाचित तुम सब कहते हो कि मैंने अभी-अभी एक भूत देखा।"

"यह कैसा ख़याल है?"

"कदाचित मैं पागल ही हूँ, और पिछले कुछ दिनों की बातें केवल मेरे दिमाग़ ही की हों, असल में न हों।"

"रोडियन, कोई आदमी तुमको सता रहा है। मुझको बतलाओ कि यह तुमसे क्या कहता था, और तुम्हारे यहाँ क्यों आया था?"

रोडियन कुछ न बोला। राजू सोचने लगा।

"रोडियन, सुनो। मैं तुम्हारे यहाँ आया। तुम सो रहे थे। फिर खाना खाकर मैं पारफ़ीरियस के यहाँ गया। जेमटाफ़ भी वहाँ था। मैंने बात करनी चाही; परन्तु ऐसा विदित होता था कि वे कुछ समझते ही नहीं। बिना कुछ परेशानी ज़ाहिर किए मैं पारफ़ीरियस को खिड़की के पास ले गया, और वहाँ बातचीत करनी चाही। परन्तु कुछ सफलता न हुई। वह एक ओर देखता रहा, और मैं दूसरी ओर। फिर मैंने घूँसा तानकर उससे कहा कि मैं तुमको मारूँगा। वह चुपचाप मेरी ओर देखता रहा। फिर मैंने सब कुछ कह दिया। तुम कहोगे, मैं बड़ा मूर्ख हूँ। जेमटाफ़ से मैंने एक बात भी नहीं की। मैं अपनी मूर्खता पर स्वयं ही लज्जित था। परन्तु ज़ीने से उतरते हुए मुझे यह ख़याल न आया कि हम इन बातों से अपने-आपको क्यों दुःखी करें? यदि तुम्हारी जान जोखिम में हो, तो दूसरी बात है। परन्तु अब तुमको डरने का कोई काम नहीं। तुम निर्दोष हो। इसलिये कुछ चिन्ता न करो। बाद को हम उनकी भूल पर उनको बनावेंगे। यदि कहीं मैं तुम्हारे स्थान में होता, तो मैं उनको अभी मूर्ख बनाता। कैसी लज्जा की बात है कि ऐसी भूल उन्होंने की। बाद को हम उन्हें

सुझावेंगे। परन्तु अभी तो ऐसी मूर्खता पर हमें हँसना चाहिए।"

रोडियन ने कहा—"ठीक है।" फिर अपने मन में सोचा कि कल तुम क्या कहोगे । राजू, तुम क्या कहोगे, जब तुम जानोगे कि मैं दोषी हूँ । यह विचार आते ही उसने अपने मित्र की ओर देखा। पारफ़ीरियस का हाल उसको बहुत रुचिकर न हुआ; क्योंकि इस समय वह और ही धुन में था ।

लूशिन उनको द्वार पर मिला । वह ठीक आठ बजे आ गया था। परन्तु नंबर देखने में उसे देर लगी। इसलिये तीनों मनुष्य साथ-ही-साथ बिना एक दूसरे की ओर देखे और प्रणाम किए अन्दर घुसे । पहले राजू और रोडियन घुसे; क्योंकि लूशिन एक क्षण सभ्यता का ख़याल करके, ओवरकोट उतारने के लिये ठहर गया । मा आगे बढ़ी, डोनिया और रोडियन ने एक दूसरे का अभिवादन किया। लूशिन ने घुसकर स्त्रियों की ओर बड़े शिष्टाचार से सिर झुकाया, और कुछ दुखित-सा होकर खड़ा हो गया। मा भी कुछ बेचैन थी । उसने अपने सब अतिथियों को बैठने के लिये कहा । डोनिया और लूशिन एक दूसरे के सामने, मेज़ के कोने पर, बैठे। राजू और रोडियन मा के सामने थे । राजू लूशिन की तरफ़ और रोडियन अपनी बहन की तरफ बैठा था।

कुछ देर तक सब चुप रहे । लूशिन इत्र से सुगन्धित रूमाल जेब से निकालकर नाक बजाने लगा। उसकी अवस्था बहुत दयनीय उस मनुष्य की-सी थी, जिसकी प्रतिष्ठा में कुछ धक्का लगा हो, और जो उसका कारण जानना चाहता हो । हाल में ओवरकोट उतारते हुए उसने सोचा था कि इन स्त्रियों के लिये उचित दण्ड तो यह है कि मैं चला जाऊँ, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया; क्योंकि वह सब बातें साफ़ करना चाहता था । उन्होंने खुल्लमखुल्ला उसकी आज्ञा का विरोध किया, इसलिये वह इसका कारण जानना चाहता था । उसने यही सोचा कि बात साफ़ कर लेनी चाहिए, दण्ड देने के लिये बहुत समय पड़ा है।

उसने मा से पूछा—"मुझे आशा है, आपकी यात्रा सुखपूर्वक समाप्त हुई है।"

"हाँ, ईश्वर को धन्यवाद है।"

"मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई, और मैं यह विश्वास करता हूँ कि डोनिया भी न थकी होगी।"

डोनिया ने कहा—"मैं युवती और बलवती हूँ, थकती नहीं हूँ। मा को अवश्य बहुत कष्ट हुआ।"

"फिर तुम क्या आशा कर सकती हो? हमारे रास्ते इतने लंबे हैं, रूस इतना बड़ा देश है, और मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध कल तुमसे न मिल सका। आशा करता हूँ, कल तुम्हें विशेष कष्ट न हुआ होगा।"

मा ने कहा—"हमें कल बहुत कष्ट हुआ, और ईश्वर ने हमारे लिये एक सहायक राजू को भेज दिया। यदि यह न आता, तो न-जाने कितना कष्ट होता। मैं तुम्हारा परिचय कराना चाहती हूँ। यह हमारा उपकार-कर्ता डिमेट्री प्रोकोविश राजूमिखेन है।"

लूशिन ने ईर्षा-भरी दृष्टि से राजू को देखकर, और भौंहें सिकोड़-कर, कहा—"मैं कल इनसे मिल चुका हूँ।"

लूशिन उन मनुष्यों में था, जो समाज में लोगों को तो खुश रखना चाहते हैं, परन्तु खुद ज़रा-सी बात में बिगड़ जाते हैं। फिर शान्ति हो गई। रोडियन बिलकुल चुप था। डोनिया ने सोचा कि उसके लिये चुप रहना ही ठीक है। राजू को कुछ कहना न था, इसलिये माँ ही को बातचीत छेड़नी पड़ी। वह बोली—"क्या तुमको मालूम है कि मारफ़ा मर गई?"

"हाँ, मैंने तुरन्त ही सुना था, और उसको गाड़कर स्विड्रीगेलफ़ सेंटपीटर्सबर्ग आया है। यह मुझको बड़े विश्वसनीय मनुष्य से मालूम हुआ है।"

डोनिया ने घबराकर, अपनी मा की ओर देखकर, कहा—"हैं! वह सेंटपीटर्सबर्ग आया है।"

लूशिन ने कहा—"हाँ, यात्रा की शीघ्रता और पहले की बातों से यह मालूम होता है कि वह किसी प्रयोजन से यहाँ आया है।"

"हे ईश्वर, क्या वह डोनिया का पीछा कर रहा है।" मा ने कहा।

लूशिन ने कहा—"इसकी कुछ चिन्ता न करो। केवल उससे किसी प्रकार का व्यवहार मत रक्खो। मैं बहुत होशियार रहूँगा, और शीघ्र मालूम कर लूँगा कि वह कहाँ ठहरा है।"

मा ने फिर कहा—"लूशिन, तुम नहीं जानते कि तुमने मुझे कितना डरा दिया। मैंने केवल दो बार उसे देखा है, और वह मुझे बड़ा भयंकर देख पड़ता है। मुझे पूर्ण विश्वास है, उसी ने मारफ़ा को मार डाला है।"

"जो बातें मुझे मालूम हुई हैं, उनसे यह परिणाम नहीं निकलता। यह सम्भव है कि इसके बुरे व्यवहार से वही दुखित होकर मर गई हो। परन्तु उसके असली चरित्र के विषय में मैं आपसे सहमत हूँ। मुझे नहीं मालूम कि वह अब क्या करता है, और मारफ़ा ने उसके लिये क्या छोड़ा है। लेकिन यह मुझे शीघ्र मालूम हो जायगा। एक बात निश्चित है कि सेंटपीटर्सबर्ग में आकर वह अपने पुराने ढंग से चलने लगेगा, यदि उसके पास धन है। वह घोर पापी एवं दुरात्मा है। मैं समझता हूँ, मारफ़ा मूर्खता से ही उसके प्रेम में फस गई, आठ वर्ष हुए उसका ऋण चुकाया, और इसके अतिरिक्त बड़ी चतुरता से उसने एक फौजदारी के मामले को दबाया, जिसके कारण स्विड्रीगेलफ़ साइबेरिया को निर्वासित कर दिए जाते। उसने एक बहुत ही भयंकर ख़ून किया था। अब भी यदि तुम उससे मिलना चाहो, तो मिलो।"

मा ने घबराकर कहा—"हे ईश्वर!"

डोनिया ने रूखे भाव से कहा—"मैं समझती हूँ, आपको यह किसी विश्वसनीय व्यक्ति से मालूम हुआ है।"

"मैंने मारफ़ा ही से सुना है। मामला पुराना हो गया है। उन दिनों वहाँ एक रेशलिश-नामक स्त्री रहती थी, जो बहुत सूद पर रुपए उधार देती थी। मि० स्विड्रीगेलफ़ से और इस स्त्री से गुप्त संबन्ध हो गया। उस स्त्री के साथ उसकी एक भतीजी रहती थी, जो १४ या १५ वर्ष की थी, और गूँगी तथा बहरी थी। रेशलिश इस कन्या से घृणा करती थी, उसको खाना देना उसे खलता था, और वह बड़ी निर्दयता से उसको मारती थी। एक दिन वह अभागिनी कन्या लटकी हुई पाई गई। पंचायतनामे में यही प्रमाणित हुआ कि उसने आत्महत्या की है। परन्तु पुलीस ने फिर खोजकर निकाला कि मि० स्विड्रीगेलफ़ ने उस कन्या पर बलात्कार किया था। मैं मानता हूँ, इसका कुछ प्रमाण नहीं था। एक जर्मन चरित्र-हीना स्त्री की केवल साक्षी थी, जिसकी साक्षी का कुछ मूल्य न था। अस्तु, मुकदमा नहीं चला। मारफ़ा गाँव को चली गई, और रुपए लुटाकर उसने कार्यवाही रोक दी। उसके बाद भी जब डोनिया, तुम उसके साथ रहती थीं, मि० स्विड्रीगेलफ़ ने अपने नौकर फ़िलिप को, ६ वर्ष हुए, मार डाला था।"

"परन्तु, मैंने तो सुना है कि फ़िलिप ने आत्महत्या की थी।"

"ठीक है, परन्तु आत्महत्या का कारण इसका निर्दय और अमानुषिक व्यवहार ही था।"

डोनिया ने रूखेभाव से उत्तर दिया—"यह मुझे नहीं मालूम था। मैंने इस सम्बन्ध में एक विचित्र कहानी सुनी है। फिलिप कुछ सनकी था, दार्शनिक था, और उसके साथियों के कहने के अनुसार उसका दिमाग़ फिर गया था। वह अपने मालिक के घूँसों से नहीं, प्रत्युत चिढ़ाने से बचने के लिये मर गया। मैंने स्वयं देखा है कि वह अपने नौकरों से बड़ा अच्छा व्यवहार करता है, उसके नौकर उसके बड़े भक्त हैं, यद्यपि फ़िलिप की मृत्यु का कारण वह उसी को कहते हैं।"

लूशिन ने कटाक्ष-भरी मुसकिराहट से कहा—"मैं देखता हूँ, डोनिया, तुम उसकी ओर से वकालत करना चाहती हो। बात यह है कि स्त्रियों का मन आकर्षित करने की कला उसे आती है, और इसका प्रमाण मारफ़ा है, जो अभी मर गई। मैं तुम मा-बेटियों को सावधान करता हूँ कि वह तुम्हें मोहित करने की अब फिर चेष्टा करेगा। मुझे तो विश्वास है कि वह जेलखाने में मरेगा। मारफ़ा को अपने बच्चों का बहुत ख़याल था, इसलिये उसने पति को अधिक न दिया होगा। बस, उसके खाने-भर को उसके लिये छोड़ा होगा। परन्तु अपनी आदतों के अनुसार वह सब साल-ही भर में नाश कर देगा।"

डोनिया ने कहा—"मि० लूशिन, कृपा करके मि० स्विड्रीगेलफ़ की बातचीत न कीजिए, मुझे दुःख होता है।"

रोडियन, जो अब तक चुप बैठा था, बोला—"वह अभी-अभी मेरे यहाँ आया था।"

सब लोग चकित होकर रोडियन की ओर देखने लगे। लूशिन भी उत्सुक हो गया।

रोडियन ने कहा—"आध घण्टा हुआ, जब मैं सो रहा था, वह मेरे कमरे में आया, मुझे जगाकर अपना नाम बताया। बहुत प्रसन्न-चित्त था, और मुझसे मित्रता करना चाहता है। और, डोनिया, वह एकबार तुमसे भेंट भी करना चाहता है, तथा मुझको इसलिये अपना दूत बनाता है। वह तुमसे कुछ प्रस्ताव करना चाहता है, मुझको बता भी दिया है। उसने मुझे विश्वास दिलाया है कि मारफ़ा ने मरने के एक सप्ताह पहले तुम्हारे नाम ३,००० रूबल लिखे हैं, और वे तुमको शीघ्र ही मिल जायँगे।"

मा खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी, और डोनिया से कहा—"मारफ़ा की आत्मा के लिये प्रार्थना करो।"

लूशिन ने भी यह स्वीकार किया कि यह बात सच है।

डोनिया ने उत्सुकता से पूछा—"भाई, और क्या बात है ?"

"उसने मुझसे कहा कि मैं धनवान् नहीं हूँ, और सब धन मेरे बच्चों को मिलेगा, जो अपनी मौसी के संग हैं। उसने यह भी बतलाया कि मैं तुम्हारे समीप ही रहता हूँ। परन्तु कहाँ है, यह मैंने नहीं पूछा।"

मा ने पूछा—"डोनिया से वह क्या प्रस्ताव करना चाहता है ? क्या तुमको उसने बतलाया ?"

"हाँ।"

"क्या ?"

"यह फिर कहूँगा।" यह कहकर रोडियन चा पीने लगा।

लूशिन ने घड़ी निकालकर समय देखा, और बोला—"एक बड़े आवश्यक काम से मुझे जाना है, इसलिये मैं यहाँ नहीं ठहर सकता।" यह कहकर वह उठा।

डोनिया ने कहा—"लूशिन, ठहरो। तुम तो सारी सन्ध्या यहाँ ठहरने-वाले थे; तुमने लिखा भी था कि तुम्हें मा से कुछ पूछना है।"

"डोनिया, तुम ठीक कहती हो। मैं तुम्हारी प्रतिष्ठित माता से उसी गंभीर विषय पर कुछ बातें साफ़-साफ़ करना चाहता था। परन्तु मेरी उपस्थिति में तुम्हारा भाई मि० स्विड्रीगेलफ़ का प्रस्ताव नहीं बता सकता, इसलिये मैं भी एक तीसरे आदमी के सामने ऐसे गम्भीर विषय पर बात नहीं कर सकता। और, मैंने पत्र में एक विशेष प्रार्थना की थी, जिस पर सर्वथा ध्यान नहीं दिया गया।" लूशिन का मुख क्रोधसे लाल हो गया।

डोनिया ने उत्तर दिया—"मैं जानती हूँ, आपने लिखा था कि मेरा भाई इस भेंट में उपस्थित न हो। परन्तु, आपकी प्रार्थना के अनुसार, मेरे ही कारण, वैसा नहीं किया गया। आपने मुझे लिखा था कि मेरे भाई ने आपको अपमानित किया है। मेरी सम्मति में आप लोगों के बीच में कुछ द्वेष न रहना चाहिए, और मिलाप हो जाना चाहिए। यदि रोडियन ने

आपका निरादर किया है, तो उसको क्षमा माँगनी चाहिए, और वह माँगेगा।"

लूशिन ये शब्द सुनकर, अभिमान से फूलकर बोला—"डोनिया, संसार में बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं, जिनको आदमी कभी नहीं भूल सकता। सीमा से बाहर जाकर फिर लौटना असंभव है।"

डोनिया ने कहा—"इन बातों को रहने दीजिए, भले मानस और बुद्धिमान बनिए। मैंने आपको वचन दिया है, मुझ पर विश्वास करके यह समझिए कि मैं निष्पक्ष भाव से आपका निर्णय करूँगी। इस समय मैं जो निर्णय करने के लिये उद्यत हुई हूँ, वह मेरे भाई को भी नहीं मालूम था। पत्र मिलने पर मैंने अपने भाई से यहाँ आने की प्रार्थना की; परन्तु मैंने अपने विचार उसको नहीं बताए। विश्वास रक्खो, यदि तुम मेल करना नहीं चाहते, तो तुम दोनों में एक को मुझे छोड़ना पड़ेगा। बस, यही प्रश्न है। मैं समझ-बूझकर इस समय काम करना चाहती हूँ। यदि आपके पक्ष में रहूँगी, तो भाई को छोड़ दूँगी; और यदि उसके पक्ष में रहूँगी, तो आपको। मुझे अधिकार है कि मैं इस समय आपके भावों को जानूँ। मुझे इस समय निर्णय करना है कि रोडियन मेरा भाई है, या आप मेरे पति होने के योग्य हैं।"

लूशिन ने उत्तर दिया—"डोनिया, तुम्हारी भाषा से बहुत-से अर्थ निकलते हैं—नहीं-नहीं, तुम्हारी भाषा अपमान-जनक है। तुमने मुझको एक क्रोधी युवा के साथ मिला दिया। कहाँ मैं, कहाँ वह! तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम यह संभव समझती हो कि विवाह रुक जायगा। तुम कहती हो, भाई और मेरे बीच में तुमको चुनना है। इसका अर्थ यह कि तुम मुझको कुछ नहीं समझतीं। अपने रिश्ते और सगाई को देखकर मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता।"

डोनिया ने लाल होकर कहा—"क्या? मैंने तो तुम्हारी उस मनुष्य से बराबरी की, जो संसार में मुझे सबसे ज्यादा प्यारा है। और, तुम कहते हो कि मेरी दृष्टि में तुम कुछ भी नहीं?"

रोडियन मुसकिराया, राजू ने मुँह बनाया; परन्तु कन्या के उत्तर से लूशिन शान्त न हुआ। वह और अहंकार से बोला—"पति का प्रेम, अपने जीवन के साथी का प्रेम, भाई के प्रेम से अधिक होना चाहिए। मैं यह सहन नहीं कर सकता कि मैं रोडियन की बराबरी में रक्खा जाऊँ। यद्यपि मैं इस समय तुम्हारे भाई की उपस्थिति में कुछ कहना नहीं चाहता था, फिर भी अब तुम्हारी मा से कुछ आवश्यक बातें साफ़ करनी हैं।" और, मा की ओर मुड़कर वह बोला—"कल तुम्हारे पुत्र ने मि० राजूमिखेन के सामने मेरा अपमान किया, और एक बात ऐसी बिगाड़कर कही, जो मैंने तुम्हारे यहाँ चा पीते हुए कही थी। मैंने कहा था कि मेरी सम्मति में एक गरीब कन्या, जो दरिद्रता में रही है, अपने पति को उसकी अपेक्षा अधिक प्रसन्न रक्खेगी, जो अमीरी में पली है। तुम्हारे पुत्र ने इसके उलटे अर्थ लगाकर मुझे बुरा-भला कहा। मुझे विश्वास है कि आपही के पत्र से उसको यह मालूम हुआ होगा। मुझे शान्ति होगी, यदि आप मेरी भूल को प्रमाणित कर सकें, या आप वे शब्द मुझे बतावें, जो कि आपने अपने पुत्र को लिखे थे।"

मा ने कहा—"मुझे शब्द याद नहीं हैं, जो समझी थी, वह लिख दिया। मैं नहीं जानती कि रोडियन ने तुमसे क्या कहा। उसने शब्दों में कुछ उलट-फेर कर दी होगी।"

"उसने आपके लिखने के अनुसार कहा होगा।"

मा ने उत्तर दिया—"मि० लूशिन, हमारा यहाँ आना यह प्रमाणित करता है कि मैंने और डोनिया ने तुम्हारी बातों का बुरा नहीं माना।"

डोनिया ने कहा—"मा, खूब कहा।"

लूशिन ने क्रोधित होकर कहा—"तो मेरी ही भूल है?"

मा ने उत्तर दिया—"मि० लूशिन, तुम रोडियन को दोषी ठहराते हो। अभी तुमने अपने पत्र में उसके विरुद्ध झूठ बात लिखी।"

"मुझे याद नहीं, मैंने क्या झूठ लिखा।"

रोडियन ने विना लूशिन की ओर देखे कहा—"आपके पत्र के अनुसार मैंने एक कन्या को, जिसको मैंने केवल एक बार देखा था, धन दिया, यद्यपि सच तो यह है कि मैंने एक मनुष्य की विधवा को, जो गाड़ी से कुचल गया था, रुपए दिए थे। तुमने यह बात इसलिये लिखी कि मेरे कुटुम्बी मुझसे घृणा करें। और, सफलता प्राप्त करने के लिये तुमने उस कन्या को, जिसके विषय में तुम कुछ नहीं जानते, चरित्र-हीना लिखा है। यह झूठ और कमीनापन है।"

लूशिन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"महाशयजी, क्षमा करें। यदि आपके विषय में मैंने कुछ पत्र में लिखा था, तो वह आपकी मा और बहन की प्रार्थना पर, जिन्होंने आपके विषय में मुझे कुछ लिखने को कहा था। मैं आपको चैलेञ्ज करता हूँ कि आप उस पत्र में एक बात भी झूठ बता दीजिए। क्या आपने अपना रुपया बर्बाद नहीं किया? क्या आप उस अभागे कुटुम्ब के प्रत्येक सभासद को प्रतिष्ठित कह सकते हैं?"

"मेरे विचार में आप अपनी सब प्रतिष्ठा के साथ उस स्त्री की, जिसको आप चरित्रहीना कहते हैं, उँगली के बराबर भी नहीं।"

"तो क्या आपका यह अभिप्राय है कि वह कन्या इस योग्य है कि आपकी मा और बहन से उसका परिचय कराया जाय?"

"यदि आप जानना चाहते हैं, तो मैं परिचय करा चुका। मैंने कल उसको डोनिया और मा के पास बिठाया।"

मा ने कहा—"रोडियन!" डोनिया का मुख लाल हो गया, राजु ने भौं चढ़ाई। लूशिन के मुख पर घृणा-मिश्रित हँसी आई।

लूशिन बोला—"डोनिया, स्वयं निर्णय कर लो। क्या यह संभव है कि हममें मित्रता हो सके? अब फिर ऐसी बात न करना। मैं चला। तुम्हारे कुटुम्ब की गुप्त बातों में विघ्न नहीं डालना चाहता;

परन्तु यह कहना चाहता हूँ कि भविष्य में फिर ऐसी भेंट न हो। और, विशेषकर, मा, तुमसे मैं यह कहता हूँ; क्योंकि वह प्रार्थना-पत्र मैंने तुम्हीं को लिखा था।"

मा कुछ क्रोधित होकर बोली—"तो आप अपने को इस घर का मालिक समझते हैं? डोनिया ने आपको बता दिया कि आपकी इच्छा के अनुसार क्यों नहीं किया गया। और, मैं यह कहना चाहती हूँ कि आपके लिखने का ढंग बादशाहों का-सा है। क्या आपकी प्रत्येक इच्छा हमारे लिये आज्ञा है? आपको हमारी वर्तमान दशा में हमसे सहानुभूति होना चाहिए; क्योंकि आप पर विश्वास करके हम इतनी दूर से सब छोड़कर आए हैं, और अब आप ही का सहारा है।"

लूशिन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"आपका यह कहना ठीक नहीं। अब आपको यह मालूम हुआ है कि मारफ़ा ने आपकी लड़की को तीन हज़ार रूबल दिए हैं। यह धन ठीक समय पर मिलने से आपको घमण्ड हो गया है।"

डोनिया ने चिढ़कर कहा—"इसका अभिप्राय यह कि आप हमारी दरिद्रता का अनुचित लाभ उठाना चाहते थे।"

"इस समय मैं कुछ नहीं करना चाहता—विशेषकर आपको मि० स्विड्रीगेलफ़ के गुप्त प्रस्ताव सुनने की बड़ी इच्छा हो रही होगी। कदाचित् वह आपको बड़े सुखदायक होंगे, इसलिये मैं अब विघ्न नहीं डालना चाहता।"

मा ने कहा—"हे ईश्वर!" राजू कुरसी से अधीर होकर उछलने लगा।

रोडियन ने पूछा—"बहन, बताओ क्या तुम इस मनुष्य से प्रेम करके अब लज्जित नहीं हो?"

डोनिया ने उत्तर दिया—"रोडियन, मैं लज्जित हूँ। लूशिन, कमरे से निकल जाओ।"

लूशिन को ऐसी आशा न थी। उसको अपनी शक्ति पर और अपने शिकार की निःसहाय अवस्था पर बहुत विश्वास था। वह अब भी अपने

कानों का विश्वास नहीं करता था। वह पीला पड़ गया। काँपते हुए होठों से उसने कहा—"यदि अब मैं चला गया, तो फिर मैं कभी न आऊँगा। अच्छी तरह सोच लो। मैं धुन का बड़ा पक्का हूँ।"

डोनिया ने कुरसी से उठकर कहा—"असभ्य मनुष्य! मैं फिर तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहती।"

लूशिन ने इसका भी विश्वास न किया, और कहा—"क्या यह सच है? क्या अब ऐसी ही हवा चलेगी? डोनिया, मुझको भी कुछ अधिकार है?"

मा ने क्रोधित होकर कहा—"तुम्हें क्या अधिकार है? क्या तुम समझते हो कि मैं अपनी डोनिया का हाथ तुम्हारे-जैसे आदमी को पकड़ाऊँगी? निकल जाओ। हमसे बड़ी भूल हुई कि हमने तुम्हारा ऐसा प्रस्ताव स्वीकार किया।"

लूशिन ने निराश होकर कहा—"आपने वचन देकर फिर उसे लौटा लिया। इसमें मेरा कुछ धन व्यय हुआ है।"

यह बात लूशिन के चरित्र के अनुसार ही थी। रोडियन क्रोधित होने पर भी हँस पड़ा। परन्तु मा क्रोधित होकर बोली—"व्यय? क्या तुम जो हमारा असबाब लाए हो, उसके विषय में कहते हो? उसमें तो कुछ किराया नहीं लगा। हमने तो तुम्हारी कुछ हानि नहीं की। तुम्हीं ने यहाँ बुलाकर हमारी हानि की है।"

डोनिया ने कहा—"बस, मा, बस।" फिर लूशिन से बोली—"मि० लूशिन, कृपा करके चले जाइए।"

"लूशिन ने आपे से बाहर होकर कहा—"तुम्हारी मा यह बात भूल गई हैं कि मैंने उस समय तुमसे विवाह करने का प्रस्ताव किया था, जब तुम्हारे चरित्र पर धब्बा लग चुका था। लोकापवाद का भय न करके मैंने तुम्हारी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये ऐसा किया था। मुझे आशा थी कि तुम मेरे प्रति कृतज्ञता स्वीकार करोगी। और, यही मेरा अधिकार था।

किन्तु अब मेरी आँखें खुल गईं। मैं समझता हूँ कि मैंने लोकापवाद का ध्यान न करने में बड़ी भूल की थी।"

राजू ने खड़े होकर कहा—"क्या अब तुम अपना सिर तुड़वाना चाहते हो?"

डानिया ने कहा—"तुम बड़े ही नीच मनुष्य निकले।"

रोडियन ने राजू को पकड़कर बिठा दिया, और लूशिन के पास जाकर कहा—"बस, अब कुछ ज़बान से न निकालना। कृपा करके चले जाओ। नहीं तो......।"

लूशिन क्रोध से काँपता हुआ चल दिया। उसने मन में यह ठान लिया कि रोडियन से अवश्य बदला लूँगा; क्योंकि इसी के कारण मेरा अपमान हुआ है। नीचे पहुँचकर उसे यह ख़याल आया कि अभी कुछ नहीं गया है। स्त्रियों से मेरा फिर मेल होगा।

तीसरा परिच्छेद

थोड़ी देर तक सब लोग चुप रहे, और फिर हँसने लगे। केवल डोनिया कभी-कभी उदास हो जाती थी, और कभी उसकी भवें सिकुड़ जाती थीं। सबसे अधिक राजू प्रसन्न था। उसकी प्रसन्नता उसके चेहरे से मालूम होती थी। अब वह दोनों स्त्रियों की सेवा कर सकता था। बिना कुछ कहे उसके मन में नई आशा उत्पन्न हुई। रोडियन गभीर भाव से बैठा था। वह कुछ और ही सोच रहा था। लूशिन से झगड़ा कराके अब उसको कुछ चिन्ता इस विषय में नहीं था। डोनिया समझती थी कि रोडियन अब भी मुझसे क्रुद्ध है, और मा उसको चिन्ता की दृष्टि से देख रही है।

डोनिया ने भाई से कहा—"स्विड्रीगेलफ़ ने तुमसे क्या कहा?"

मा ने पूछा—"हाँ-हाँ, बतलाओ तो?"

रोडियन ने सिर उठाकर कहा—"वह तुमको दस हजार रूबल भेंट करना और मेरी उपस्थिति में एक बार तुमसे मिलना चाहता है।"

मा ने कहा—"ऐसा कभी नहीं हो सकता। उसको रुपए भेंट करने का साहस कैसे हुआ?"

रोडियन ने अपनी भेंट की कहानी सुनाई। डोनिया स्विड्रीगेलफ़ का प्रस्ताव सुनकर घबरा गई, और धीरे से, काँपते हुए, बोली—"उसने कुछ भयंकर बात सोची है।"

रोडियन उसके भय को समझकर बोला—"मैं समझता हूँ, वह अभी मुझसे फिर मिलेगा।"

राजू ने कहा—"हम उसके रहने के ठिकाने का पता लगा लेंगे। मुझ पर भरोसा करो। मैं अवश्य उसको खोज निकालूँगा। रोडियन

ने अभी मुझसे कहा था कि डोनिया की रक्षा करो। क्या, डोनिया, तुम इस बात पर राज़ी हो ?"

डोनिया ने मुसकिराकर अपना हाथ बढ़ा दिया। मा ने उसकी ओर कनखियों से देखा। तीन हज़ार रूबल ने उसको शान्त कर दिया था। पन्द्रह मिनट के बाद सब बातें होने लगीं। रोडियन सबकी बातें सुन रहा था। राज़ू किसी को बोलने ही न देता था। "मैं कहता हूँ, गाँव में जाकर तुम क्या करोगी ? खास बात ध्यान देने-योग्य यह है कि तुम सब यहाँ हो, और तुम्हें एक-दूसरे का सहारा है। तुम लोग अलग नहीं हो सकते। कुछ दिन और ठहरो। मुझे अपना मित्र समझो, साथी समझो। हम लोग शीघ्र ही एक व्यवसाय करेंगे। आज ही प्रातःकाल मुझे यह ख़याल आया कि निम्न-लिखित काम हम आरम्भ करें। मेरे एक चचा हैं, जो बड़े दयालु हैं, और जिनकी सफ़ेद दाढ़ी है। उनके पास एक हज़ार रूबल की पूँजी है, जिसकी उनको कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि उनको काफ़ी पेंशन मिलती है। दो वर्ष से वह मुझको छः रूबल प्रति सैकड़ा सूद पर देने को कह रहे हैं। मैं उनकी चाल समझता हूँ। वह केवल मेरी सहायता करना चाहते हैं। गत वर्ष मुझको धन की आवश्यकता न थी। उन हज़ार रूबल में अपने हज़ार रूबल जोड़ो, और साझे में काम आरम्भ हो। मेरा विचार यह है कि हमारे पुस्तक-प्रकाशक लाभ इसीलिये नहीं उठाते हैं कि वे अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन नहीं करते। दो वर्ष से मैं बहुत-से प्रकाशकों का काम करता रहा हूँ, इसलिये मुझे इसका अनुभव हो गया है। मैं तीन भाषाएँ अच्छी तरह जानता हूँ। फिर हम क्यों न यह काम आरम्भ करें, जब हमारे पास सबसे आवश्यक वस्तु धन है ? हमें काम करना पड़ेगा, और हम तीनों—मैं, तुम और रोडियन—काम करेंगे ; बहुत-सी पुस्तकों के प्रकाशन की आवश्यकता है, और हमको यह भली-भाँति मालूम है कि कौन पुस्तकें अधिक बिकेंगी। हम अनुवाद करेंगे।

पुस्तकें छापेंगे, और लड़कों को पढ़ावेंगे। दो वर्ष से प्रकाशकों के साथ रहकर मुझे इसका अच्छा अनुभव हो गया है। यह काम कुछ कठिन नहीं है। जब धन कमाने का अवसर मिले, तो उसे क्यों जाने दें? मैं दो या तीन पुस्तकें ऐसी जानता हूं, जिनके प्रकाशन से सोने की खान मिलेगी। केवल प्रकाशकों को उनका नाम बताने से मुझको पाँच सौ रूबल मिल सकते हैं। परन्तु यदि मैं ऐसा करूँ, तो मेरे कान पकड़ लेना। कागज़, छापाखाना, बेचना आदि मेरे ऊपर छोड़ देना। मैं इसका सब हाल जानता हूँ। शुरू में थोड़ा काम होगा, परन्तु शीघ्र ही बहुत होने लगेगा।"

डोनिया की आँखें चमकने लगी, और वह बोली—"आपका प्रस्ताव तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।"

मा ने कहा—"संभव है, विचार अच्छा हो; पर मैं कुछ नहीं समझती।" पुत्र की ओर देखकर वह बोली—"हमको यहाँ कुछ दिन तो ठहरना ही पड़ेगा।"

डोनिया ने पूछा—"भाई, तुम्हारा क्या विचार है?"

रोडियन ने कहा—"विचार बहुत अच्छा है। बड़ा छापाखाना एक दिन में नहीं बन सकता। मैं भी पाँच-छः किताबें जानता हूँ, जिनकी सफलता में कोई संदेह नहीं। राजू की योग्यता में विश्वास रक्खो। वह बड़ा चतुर है। और फिर, तुम इस विषय में बातचीत कर सकते हो।"

राजू बोला—"ठहरो, इसी घर में कुछ कमरे ऐसे हैं, जिनसे हमारा काम चल सकता है। तीन छोटे कमरे किराये पर ले लो। किराया अधिक नहीं है। तुम लोग सब वहीं रहना। रोडियन को भी रखना।" (रोडियन को चलते देखकर) "परन्तु रोडियन, तुम कहाँ चले?"

मा ने पूछा—"अभी से चल दिए।"

राजू ने कहा—"इस समय कहाँ जाते हो?"

डोनिया ने अपने भाई की ओर देखा। उसने टोपी उठाई, और जाने



वह बोला—"जैसे मैं सदा के लिये जा रहा हूँ। तुम लोग मुझे गाड़ क्यों नहीं देते? कदाचित हमारी यह अंतिम भेंट है।"

(पृष्ठ २८३)

N. K. Press, Lucknow

को तैयार हो गया। वह बोला—"जैसे मैं सदा के लिये जा रहा हूँ। तुम लोग मुझे गाड़ क्यों नहीं देते? कदाचित् हमारी यह अन्तिम भेंट है।"

मा ने पूछा—"तुमको क्या हो गया है?"

डोनिया ने पूछा—'भाई, जाते कहाँ हो?"

उसने उत्तर दिया—"मुझको जाना चाहिए।" उसकी ठोढ़ी काँप रही थी। परन्तु उसके पीले मुख से कोई दृढ़ संकल्प विदित होता था। "मा और डोनिया, मैं तुमसे कहना चाहता था कि कुछ दिन हम तुम अलग रहें। मेरी तबियत अच्छी नहीं है, मुझे आराम की आवश्यकता है। जब मेरा जी चाहेगा, आऊँगा। तुमको नहीं भूलूँगा, और तुमसे सदा प्रेम करूँगा। मुझको अकेले छोड़ दो। मेरा संकल्प दृढ़ है। मुझे कुछ भी हो, अकेला छोड़ दो। मुझे भूल जाओ। यह अच्छा है। मेरे विषय में किसी से कुछ न पूछो। जब आवश्यकता होगी, मैं आऊँगा या तुमको बुला लूँगा। संभव है, अभी सब ठीक हो जाय। परन्तु यदि तुम मुझसे प्रेम करती हो, तो मुझसे न मिलो। यदि मिलोगी, तो मैं तुमसे घृणा करूँगा। नमस्ते।"

मा ने कहा—"हे ईश्वर! क्या करूँ। प्यारे रोडियन, जैसे पहले थे, वैसे ही हमारे मित्र हो जाओ।" रोडियन धीरे-धीरे आगे बढ़ा, और डोनिया उसके पास जाकर बोली—"भाई, क्या मा से ऐसा ही व्यवहार करते हैं?"

रोडियन ने हकलाते हुए उत्तर दिया—"कुछ नहीं, मैं आऊँगा।" यह कहकर वह कमरे से बाहर चला गया।

डोनिया ने कहा—"स्वार्थी! दयाहीन! कुटिल!"

राजू ने कहा—"वह स्वार्थी नहीं है, वह पागल है। क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता? तुम्हीं उस पर निर्दयता कर रही हो।"

"मैं शीघ्र ही आ जाऊँगा।" यह कहकर राजू भी तेज़ी से बाहर चला गया।

रोडियन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने कहा—"मैं जानता था कि तुम आओगे। जाओ, उनके पास वापस जाओ। उनको अकेला मत छोड़ो, उनके साथ सदा रहो। यदि हो सका, तो आऊँगा। नमस्ते।" उसने राजू से हाथ तक नहीं मिलाया।

राजू ने कहा—"तुम कहाँ जा रहे हो? आखिर यह है क्या?"

रोडियन ने कहा—"बस, मुझसे कोई प्रश्न मत करो। मैं कुछ नहीं कहना चाहता। मेरे यहाँ मत आना। हो सका, तो फिर आऊँगा। मुझे छोड़ दो; परन्तु उनको न छोड़ना। समझे।"

मार्ग में अँधेरा था। दोनों लैम्प के पास खड़े एक-दूसरे को देख रहे थे। राजू को पिछली सारी बातें याद आईं। रोडियन की दृढ़ और भयंकर दृष्टि से उसको सब सच हाल मालूम हो गया। रोडियन ने फिर कहा—"समझ गए, उनके पास जाओ।" यह कहकर वह तेज़ी से चला गया।

राजू के वापस आने पर क्या दृश्य उपस्थित हुआ, यह लिखना अनावश्यक है। वह दोनों स्त्रियों को समझाता था। उसने उनको विश्वास दिलाया कि रोडियन बीमार है, और उसको आराम की आवश्यकता है। मैं उसकी देखभाल करूँगा, और चतुर डॉक्टर की ओषधि होगी।

इसी रात से राजू उनका कुटुम्बी हो गया।

चौथा परिच्छेद

रोडियन सीधा सुनिया के रहने के स्थान की ओर गया। तिमंज़िला हरे रंग का मकान था। रोडियन को कठिनाई से कैयर नैसूमाफ़ दर्ज़ी के रहने का स्थान मालूम हुआ। यह मालूम करके वह अँधेरे अहाते में जाकर, दूसरी मंजिल पर चढ़ गया। जब वह अँधेरे में भटक रहा था, उसने देखा कि एक दरवाज़ा खुला। उसने उसको पकड़ लिया।

एक स्त्री की काँपती हुई आवाज़ में किसी ने पूछा—"आप कौन हैं?"

रोडियन ने छोटे-से कमरे में घुसकर उत्तर दिया—"मैं तुमसे मिलने आया हूँ।" एक पुरानी मेज़ पर मोमबत्ती जल रही थी।

सुनिया ने विना अपने स्थान से हिले-डुले कहा—"हे ईश्वर, क्या आप हैं?"

रोडियन शीघ्रता से कमरे में विना सुनिया की ओर देखे घुस गया, और बोला—"क्या तुम यहीं रहती हो?"

थोड़ी देर के बाद सुनिया भी मोमबत्ती लिए हुए, उत्तेजित दशा में, आकर उसके सामने खड़ी हो गई। वह घबरा गई थी, और डर रही थी। उसके पीले मुख पर लालिमा आ गई थी, और आँखों में आँसू। करुणा-भरी दृष्टि से रोडियन की ओर वह देख रही थी। रोडियन मेज़ के पास कुरसी पर बैठ गया, और थोड़ी-सी देर में कमरे की चीज़ों की परीक्षा कर ली।

कमरा बड़ा था, छत नीची थी, और कैयर नेसूमाफ़ ने यही कमरा किराए पर उठाया था। बाईं ओर, दीवाल में, एक दरवाज़ा था,

जो कैयर नेसूमाफ़ के निवास-स्थान में खुलता था। दाहनी ओर एक और दरवाज़ा था, जिसमें ताला लगा था। वह दूसरे के रहने का स्थान था, और उसका दूसरा नंबर था। सुनिया का कमरा नौकरों का-सा कमरा था। उसमें टेढ़ापन था। दीवाल में नहर की ओर तीन खिड़कियाँ थीं। पीछे की ओर कुछ नहीं दिखाई देता था। इस बड़े कमरे में फ़र्नीचर कुछ भी न था। दाहनी ओर, कोने में, एक चारपाई थी। चारपाई और दरवाजे के बीच में एक कुरसी पड़ी थी। उसी ओर दरवाज़े से मिली हुई, नीले कपड़े से ढकी हुई, एक मेज़ भी पड़ी थी। मेज़ के पास दो सेंठे के मोढ़े पड़े थे। दूसरी ओर दीवाल के पास एक छोटी कपड़ों की आलमारी थी। बस, यही कुल फरनीचर था। बादामी कागज़, जो दीवालों में लगा था, वर्षों का होने से काला हो गया था। यहाँ की प्रत्येक वस्तु दरिद्रता प्रकट कर रही थी। सुनिया आगन्तुक की ओर देख रही थी कि वह किस प्रकार सब वस्तुओं को देख रहा है। अन्त में वह डर से काँपने लगी, जैसे कोई मनुष्य अपने भाग्य का निर्णय करनेवाले के सामने काँपता है।

रोडियन ने घबराई हुई दृष्टि से देखकर कहा—"कदाचित यह हमारी अन्तिम भेंट है।"

"क्या आप जा रहे हैं?"

"मैं नहीं जानता, बस, सब कल!'

सुनिया ने काँपती हुई आवाज़ में पूछा—"तो क्या कल आप कैथराइन के यहाँ न जायँगे?"

"नहीं कह सकता। कल, बस, सब कल! परन्तु इस समय तो कुछ कहना है। मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ?" उसने आश्चर्य-भरी दृष्टि से सुनिया की ओर देखा, वह अभी तक खड़ी हुई है। उसने प्यार की नम्रवाणी में कहा—"खड़ी क्यों हो? बैठ जाओ।" वह बैठ गई। एक मिनट तक वह उसकी ओर दया और करुणा की

दृष्टि से देखता रहा। "तुम कितनी दुबली हो! तुम्हारे हाथों की नसें झलकती हैं। तुम्हारी उंगलियाँ मृत मनुष्य की-सी हैं।" रोडियन ने उसका हाथ पकड़ लिया। सुनिया ने हँसकर उत्तर दिया—"मैं सदा से ऐसी ही हूँ।"

"जब तुम अपने माता-पिता के साथ रहती थीं, तब भी क्या ऐसी ही थीं?"

"जीहाँ।"

"अच्छा।" उसके मुख का रँग बदल गया, और उसने फिर एक बार उसकी ओर देखकर कहा—"तो तुम कैयर नैसूमाफ़ के संग रहती हो?"

"हाँ।"

"क्या वह इस दरवाजे के दूसरी ओर रहते हैं?"

"हाँ, उनका कमरा मिला हुआ है।"

"क्या एक ही कमरे में रहते हैं?"

"हाँ।"

"यदि मैं ऐसे कमरे में रहता, तो रात को मुझे डर लगता?"

"मेरे संग रहनेवाले बड़े भलेमानस हैं। फ़रनीचर सब उनका है, उनके बच्चे कभी-कभी यहाँ आते हैं।"

"वह हकलाते हैं कि नहीं?"

"हाँ, बाप हकलाता है, और लँगड़ा भी है। मा हकलाती तो नहीं है, परन्तु रुक-रुककर बोलती है। बड़ी अच्छी स्त्री है। कैयर नैसूमाफ़ पहले ज़मीदार था। उसके सात बच्चे हैं। सबसे बड़ा हकलाता है। बाकी रोगी हैं, परन्तु हकलाते नहीं। परन्तु यह तो बतलाइए कि आपको ये बातें कैसे मालूम हुईं?"

"तुम्हारे पिता ने सब मुझसे कहा था। उसने तुम्हारी सारी कहानी मुझे सुनाई थी। उसने मुझसे कहा था कि तुम छः बजे गईं, और ८ बजे

लौटकर आईं । और, कैथराइन ने तुम्हारे पास घुटनों के बल बैठकर ईश्वर से प्रार्थना की।"

सुनिया घबराकर बोली—"मैं समझती हूँ, आज मैंने उसको देखा था।"

"किसको?"

"अपने पिता को । मैं सड़क पर जा रही थी । ९ और १० के बीच में वह मुझसे कुछ आगे जा रहे थे। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि वही थे। मैं यह बात कैथराइन से भी कहना चाहती थी।"

"क्या तुम चल रही थीं?"

सुनिया ने आँखें नीची करके उत्तर दिया—"हाँ।"

"जब तुम अपने पिता के साथ रहा करती थीं, तो क्या कैथराइन तुमको मारती-पीटती थी?"

"कभी नहीं। यह आप क्यों पूछते हैं?"

"तो तुम उससे प्रेम करती हो?"

सुनिया ने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा—"अवश्य । यदि आप उसको जानें, तो आपको विदित होगा कि वह कैसे स्वभाव की है। दुर्भाग्य से उसका दिमाग़ बिगड़ गया है । परन्तु उसकी बुद्धि, उसकी भलमंसी और उसकी उदारता के विषय में आप कुछ नहीं जानते ।"

सुनिया ने ये शब्द बड़े ज़ोर से कहे । वह उदास होकर हाथ मलने लगी। उसके पीले गालों पर लालिमा आ गई । वह कैथराइन के पक्ष में कुछ कहना चाहती थी । और, उसके प्रत्येक अंग से दया के भाव प्रकट होने लगे।

"आप क्या कहते हैं कि उसने मुझे मारा? वह मुझे मारे! आप कुछ नहीं जानते। वह उदास है, और बीमार है। वह न्याय चाहती है। पवित्र होने के कारण उसको विश्वास है कि उसका एक-न-एक दिन न्याय होगा। आप चाहे उससे जैसा व्यवहार करें; परन्तु

क्योंकि वे उसको बहुत अच्छे लगे थे। मेरे हृदय में उनको देने की इच्छा न थी, इसलिये मैंने कहा कि कैथराइन, तुम इनका क्या करोगी ? मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। उसने मेरी ओर दुःख-भरी दृष्टि से देखा। उसको कालर न मिलने का शोक न था, परन्तु मेरे नाहीं कर देने से उसका दिल टूट गया था। क्या ही अच्छा होता, यदि मेरे मुँह से वे शब्द न निकले होते। अस्तु, तुमको इससे क्या ?"

"क्या तुम एलिज़बेथ को जानती थीं ?"

सुनिया ने आश्चर्ययुक्त वाणी में कहा—"हाँ, क्या आप भी उसको जानते थे ?"

"कैथराइन की मृत्यु समीप है" यह रोडियन ने कुछ देर रुककर कहा।

"नहीं-नहीं" यह कहकर सुनिया ने आगन्तुक के दोनों हाथ पकड़ लिए, जैसे कैथराइन का जीवन उसी पर निर्भर हो।"

"परन्तु उसका मर जाना ही अच्छा है।"

लड़की ने भयभीत होकर कहा—"नहीं, ऐसा न कहिए।"

"बच्चों का क्या होगा ? उनके विषय में क्या सोचा है ? वे तुम्हारे साथ नहीं रह सकते ?"

सुनिया ने सिर पकड़कर टूटे-फूटे शब्दों में कहा—"मुझको नहीं मालूम।"

"अच्छा, यदि कैथराइन कुछ दिन और जीती रही, और तुम बीमार हो गईं और अस्पताल में भेज दी गईं, तो क्या होगा ?"

"नहीं, ऐसा मत कहिए। ऐसा होना असंभव है।"

रोडियन ने हँसकर कहा—"क्यों, असंभव क्यों है ? तुम रोग से सुरक्षित नहीं हो। कुटुम्ब की फिर क्या दशा होगी ? सब गलियों में घूमेंगे, मा खाँस-खाँस कर भीख माँगेगी, अपना सिर दीवाल पर दे मारेगी। रोते हुए बच्चे पीछे होंगे। कैथराइन, संभव है, मर जाय, और मरते हुए अस्पताल में लाई जाय। फिर बच्चों का क्या होगा ?

सुनिया ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"ईश्वर, ऐसा न्याय न करे।" वह सब बात चुपचाप सुनती रही। अब उसने हाथ जोड़कर चुपचाप प्रार्थना आरम्भ की। उसके मुख पर उसके अन्दर के दुःख प्रतिबिंबित हो रहे थे। रोडियन खड़ा होकर इधर-उधर टहलने लगा। सुनिया हाथ लटकाए, सिर झुकाए, चिन्ता में डूबी हुई खड़ी थी।

रोडियन ने उसके पास आकर पूछा—"क्या बरसात के लिये कुछ धन संचित करना संभव है ?"

सुनिया ने उत्तर दिया—"नहीं।"

"क्या तुमने कभी रुपया बचाने का प्रयत्न किया है ?"

"कई बार।"

"और, तुम असफल हुईं, ऐसा ही विदित होता है। प्रश्न अनावश्यक था।" यह कहकर वह कमरे में फिर टहलने लगा। फिर कुछ देर चुप रहकर बोला—"क्या तुम रोज़ रुपया नहीं कमाती हो ?"

यह प्रश्न सुनकर सुनिया घबरा गई, उसके गालों का रंग बदल गया। उदास और अस्पष्ट भाव से उसने कहा—"नहीं।"

"पोलेचका क्या करेगी ? कदाचित वह भी तुम्हारी ही राह पकड़ेगी।"

"असंभव। ईश्वर ऐसा कभी न होने देगा।"

"ईश्वर बहुत कुछ होने देता है।"

सुनिया ने उत्तर दिया—"नहीं, मैं तुमसे कहती हूँ, ईश्वर उसकी रक्षा करेगा।"

रोडियन ने हँसकर उत्तर दिया—"क्या मालूम, ईश्वर कोई वस्तु है भी, या नहीं।"

कन्या के भाव में परिवर्तन हो गया। प्रश्नकर्ता को उसने घृणा की दृष्टि से देखकर कुछ कहना चाहा, परन्तु उसके मुँह से कोई शब्द न निकला। रोते हुए उसने अपना मुँह अपने हाथों से ढक लिया।

थोड़ी देर चुप रहकर रोडियन बोला—"तुम कहती हो कि कैथराइन का दिमाग़ ठीक नहीं है। मुझे तो तुम्हारा भी दिमाग़ ठीक नहीं मालूम देता।" कुछ देर तक फिर वह कमरे में टहलता रहा। एकबारगी वह उसके समीप आया। उसकी आँखें चमक रही थीं। उसके होठ काँप रहे थे। अपने दोनों हाथ सुनिया के कंधों पर रखकर उसने सुनिया के आँसुओं से भीगे हुए मुख को ओर क्रोध की दृष्टि से देखा। क्षण-भर के बाद वह झुककर सुनिया के चरण चूमने लगा। वह डर-कर पीछे हट गई, जैसे कोई पागल से डरकर पीछे हटता है। रोडियन का मुख इस समय पागलों का-सा हो रहा था।

सुनिया ने हकलाते हुए दुखित हृदय से कहा—"यह आप क्या करते हैं?"

रोडियन खड़ा हो गया, और खिड़की के पास जाकर, झुककर, बोला—"मैंने तुमको सिर नहीं झुकाया; परन्तुतुम्हारे शरीर में जो दुःख की मूर्ति प्रकट हुई है, उसको प्रणाम किया है। सुनो, अभी-अभी मैंने एक अभिमानो पुरुष से कहा कि वह तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकता। और, आज ही तुमको अपनी मा से मिलाने में मुझे प्रसन्नता हुई।"

सुनिया ने उत्तर दिया—"यह आपने कैसे कहा? मैं एक पापिनो हूँ, किस प्रकार से आपके मुख से ये शब्द निकले?"

"जब मैंने यह कहा, मैंने तुम्हारे अपराधों का, नहीं, तुम्हारे दुःखों का विचार करके ऐसा कहा था। निस्सन्देह तुमने भूल की। परन्तु तुमने ऐसी भूल त्याग के भाव से की है। मैं जानता हूँ, तुम अप्रसन्न हो। इस गंदगी में—जिसको तुम घृणित समझती हो—रहकर तुम प्रसन्न नहीं हो सकती। तुम यह भी समझती हो कि तुम्हारे त्याग से किसी का भला न होगा। कृपा करके मुझको बताओ कि किस प्रकार तुम्हारी पवित्र आत्मा ऐसी लज्जित अवस्था में रह सकती है।

हजार बार डूबकर ऐसे जीवन का एक क्षण में अन्त कर देना अच्छा है।"

सुनिया ने रोडियन की ओर त्याग-भरी दृष्टि से देखकर पूछा—"इनका क्या होगा ?" उसके मुख से कोई आश्चर्य नहीं जान पड़ता था। रोडियन बहुत उत्सुकता से उसके मुख की परीक्षा करने लगा।

उसके मुख से सब प्रकट हो गया। उसके मन में भी ऐसे विचार आ रहे थे। कई बार निराशा की दशा में उसने इन्हीं बातों को सोचा भी था, और इतना सोचा था कि अब उसको इन बातों को सुनकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। शब्दों की कठोरता का प्रभाव भी उस पर नहीं पड़ा, और युवा की डाँट का भी कोई प्रभाव उस पर दृष्टिगोचर न हुआ। वह अपने पाप को इस दृष्टि से देखती हो न थी। रोडियन समझ गया कि उसकी दशा ने उसकी आत्मा को कितना दुखित कर रक्खा है, और वह बार-बार यही सोचने लगा कि अब तक इसने आत्महत्या क्यों न कर ली। इस प्रश्न का उत्तर उसकी समझ में यही आया कि वह उन छोटे बच्चों और कैथराइन—जो बार-बार अपना सिर दीवाल पर पटकती है—के ही कारण अब तक जीवित रही। परन्तु वह यह भी समझता था कि सुनिया-जैसी पवित्रात्मा अधिक काल तक ऐसा जीवन नहीं व्यतीत कर सकती। अभी तक उसकी समझ में यह नहीं आया था कि आत्महत्या न करके, पागलपन के कारण, उसने ऐसा जीवन क्यों न छोड़ दिया। उसने समझा कि सुनिया की दशा एक बड़ा अद्भुत सामाजिक प्रश्न है; परन्तु फिर उसने सोचा कि ऐसा जीवन आरंभ करते हुए, जो उसकी आत्मा के बिलकुल विरुद्ध है, वह आरंभ ही में क्यों न पागल हो गई ? किस बात ने उसका दिमाग़ ठीक रक्खा ? कदाचित् उसको विषयभोग की इच्छा रहती हो। ऐसा नहीं हो सकता। विषयभोग ने उसकी आत्मा पर कोई बुरा प्रभाव नहीं डाला है, केवल उसके शरीर को नष्ट कर दिया है। रोडियन यह समझ गया; क्योंकि वह उस कन्या के हृदय को पुस्तक के समान पढ़ सकता था।

उसने सोचा, इसका भाग्य निश्चित है । या तो यह जल में डूब मरेगी, या पागलखाने में जीवन व्यतीत करेगी, या ऐसा ही घृणित जीवन व्यतीत करेगी । परन्तु यह अन्तिम दशा उसको बड़ी घृणित जान पड़ती थी । घृणित होने पर भी वह इसे संभावित समझता था । क्या यह संभव है कि यह कन्या, जिसका हृदय इतना शुद्ध है, सदा इस कीचड़ में फसी रहे? अब तक इसको इस दशा की घृणित अवस्था का भली भाँति परिचय हो गया है, और अब तक जो यह ऐसा जीवन सहन करती रही, तो कदाचित पाप की घृणा इसके नेत्रों से जाती रही है । नहीं-नहीं, ऐसा होना असंभव है। वह पाप और दण्ड के भय से अभी तक आत्महत्या करने से रुकी रही है । कदाचित् पागल हो गई हो । कौन कहता है, वह पागल नहीं हुई है? होश में ऐसी बातें कौन कर सकता है? क्या समझदार आदमी इस तरह की बातें करते हैं? क्या भावी नाश को इस उदासीनता से कोई देख सकता है? क्या यह किसी जादू पर भरोसा करती है ? ऐसी बातों से तो यही विदित होता है कि इसका दिमाग़ ठीक नहीं ।

ये विचार रोडियन को बुरे न मालूम हुए। सुनिया पागल है। उसने सुनिया की फिर परीक्षा की, और उससे फिर पूछा—"तुम ईश्वर से कभी प्रार्थना करती हो?" किंतु कुछ उत्तर न मिला। वह उसके पास खड़ा हुआ उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा।

सुनिया ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"मैं क्या करती हूँ? ईश्वर के बिना मैं क्या कर सकती हूँ?"

रोडियन ने अपने मन में कहा—"मैं ठीक समझा था।" फिर अपने संदेहों को दूर करने के लिये उसने सुनिया से पूछा—"ईश्वर तुम्हारे लिये क्या करता है ?"

बड़ी देर तक कन्या चुप रही। उसको बोलने की शक्ति नहीं थी। भावों से उसकी छाती भर आई। फिर क्रोधित होकर उसने कहा—"बस,

मुझसे प्रश्न न कीजिए। आपको ऐसे प्रश्न करने का कोई अधिकार नहीं है।"

रोडियन ने सोचा, मैं तो यह समझता ही था।

कन्या ने कहा—"ईश्वर मेरे लिये सब कुछ करता है।" और, यह कहकर आँखें नीची कर लीं।

रोडियन ने मन में सोचा, अब मैं समझ गया।

उसके पीले, पतले मुख पर एक विचित्र भाव उत्पन्न हुआ। ये नीले नेत्र, जिनसे ऐसा अच्छा प्रकाश निकलता है, जिनमें अच्छे भाव भरे हैं, पागल मनुष्य के हैं; यह निर्बल शरीर, जो क्रोध से काँप रहा है, पागल मनुष्य का है। एक पुस्तक मेज़ पर पड़ी थी, रोडियन ने कमरे में घूमते हुए उसको कई बार देखा था। उसने उसे उठा लिया, और देखने लगा। वह 'गास्पेल्स' का रूसी-अनुवाद था।

उसने सुनिया से पूछा—"यह तुम्हारे पास कहाँ से आई?" कन्या खड़ी रही। फिर बोली—"यह मुझको पढ़ने को दी थी।"

"किसने?"

"एलिज़बेथ ने। मैंने उससे माँगी थी।"

रोडियन ने सोचा, एलिज़बेथ? कैसी विचित्र बात है! सुनिया की प्रत्येक बात उसको असाधारण प्रतीत हुई। प्रकाश में जाकर उसने पुस्तक को उलटा, और फिर पूछा कि लेज़रस की कहानी कहाँ है? सुनिया ज़मीन की ओर दृष्टि किए धीरे-धीरे आगे बढ़ी। "लेज़रस के उद्धार की कहानी कहाँ है? सुनिया, मुझको वह कहानी निकाल दो।"

सुनिया प्रश्नकर्ता की ओर देखने लगी, और बोली—"यहाँ पर नहीं है, वह चौथे गास्पेल में है।"

रोडियन मेज़ पर कोहनी टेककर बैठ गया। फिर सुनने की तैयारी करके बोला—"लेज़रस के उद्धार की कहानी मुझे सुनाओ।"

सुनिया पहले मेज़ के पास आने से डरती थी; क्योंकि रोडियन की इस इच्छा को वह सच्ची इच्छा नहीं समझती थी। उसने किताब उठाई, और पूछा—"आपने कभी वह कहानी पढ़ी है?" उसकी आवाज़ भर्रा रही थी।

"बचपन में एक बार…। पढ़ो।"

"क्या आपने कभी गिरजे में यह कहानी नहीं सुनी?"

"मैं गिरजे कभी नहीं जाता। क्या तुम जाती हो?"

सुनिया ने हकलाकर उत्तर दिया—"नहीं।"

रोडियन हँसकर बोला—"तो कदाचित् तुम अपने पिता के अंतिम संस्कार में भी कल न जाओगी?"

"जाऊँगी। मैं गत सप्ताह एक प्रार्थना में सम्मिलित होने में लिये गिरजे गई थी।"

"किसके लिये प्रार्थना थी?"

"एलिज़बेथ के लिये, जो कुल्हाड़ी से मार डाली गई।"

रोडियन का शरीर काँप उठा। उसको चक्कर आ रहे थे। वह बोला—"क्या तुम्हारी वह सहेली थी?"

"हाँ, बहुत भली स्त्री थी, मेरे पास बहुधा आती थी। पर बहुत बुद्धिमान न थी। हम दोनों पढ़ती और बातें किया करती थीं। ईश्वर में भी उसकी भक्ति थी।"

रोडियन सोच में पड़ गया। उसने मन में सोचा, एलिज़बेथ और सुनिया, इन दो मूर्खा स्त्रियों में क्यों गुप्त भेंट हुआ करती थी? यहाँ ठहरकर तो मैं भी पागल हो जाऊँगा। यहाँ का वायुमंडल पागलपन से भरा हुआ है। वह बोला—"पढ़ो।"

सुनिया का दिल धड़कने लगा। वह पढ़ना नहीं चाहती थी। वह रोडियन की पतित आत्मा को करुणा की दृष्टि से देखती थी। वह रुककर बोली—"जब आप ईश्वर में विश्वास नहीं करते, तो आपका इस कहानी में क्या मन लगेगा?"

"पढ़ो, पढ़ो, मेरी इच्छा यही है। तुम एलिज़बेथ को सुनाया करती थी कि नहीं ?"

सुनिया ने पुस्तक खोली, कहानी निकाली। दो बार पढ़ने की चेष्टा की, परन्तु बोल न सकी। गले में शब्द रुक गए। उसके हाथ काँपने लगे।

बड़ी चेष्टा के अनन्तर उसने पढ़ा—'लेज़रस-नामक एक मनुष्य बेथनी का रहनेवाला बीमार था। तीसरे शब्द पर उसकी आवाज़ रुक गई, और उसके भावों ने उसको आगे बढ़ने से रोक दिया। उसकी साँस फूलने लगी। रोडियन समझ गया कि सुनिया क्यों नहीं पढ़ना चाहती। परन्तु जितना ही अधिक वह पढ़ना नहीं चाहती थी, उतना ही अधिक रोडियन उसे पढ़ने के लिये मजबूर करने लगा। वह समझता था कि कन्या अपने हृदय के भावों को मुझ अनजान आदमी के सामने प्रकट नहीं करना चाहती। उसने यह भी देखा कि यद्यपि वह अपने भावों को छिपाना चाहती है, फिर भी रोडियन को पढ़कर सुनाने के लिये बहुत उत्सुक है। कन्या की दृष्टि से यही विदित हो रहा था। और, अन्त में सुनिया ने अपने ऊपर जय प्राप्त करके पढ़ना आरम्भ किया।

"और बहुत से यहूदी मारथा और मेरी के पास उनको भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए। तब मारथा ने ईसामसीह को आते हुए सुनकर, उठकर, उसका स्वागत किया। मेरी घर में चुपचाप बैठी रही। मारथा ने ईसामसीह से कहा—यदि आप होते, तो मेरा भाई न मरता। परन्तु मैं जानती हूँ कि अब भी आप जो कुछ ईश्वर से माँगेंगे, ईश्वर आपको देगा।" सुनिया पढ़ते-पढ़ते रुक गई; क्योंकि उसका गला फिर भर आया, और उसकी आवाज़ काँपने लगी। ईसामसीह ने उत्तर दिया—तेरा भाई फिर जीवित होगा। मारथा ने कहा—मैं जानती हूँ कि प्रलय के अन्तिम दिन वह फिर जीवित होगा। ईसामसीह ने कहा—मैं ही प्रलय हूँ, मैं ही जीवन हूँ। जो मुझमें विश्वास करता है,

यद्यपि वह मर गया है, फिर भी वह जीवित रहेगा। और, जो जीवित है, पर मुझमें विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम मेरा विश्वास करती हो?" सुनिया की साँस रुकने लगी; परन्तु फिर उसने ज़ोर से पढ़ा, जैसे मारथा के शब्दों में वह अपना ही विश्वास प्रकट कर रही हो। "हाँ-हाँ, भगवन्, मैं विश्वास करती हूँ कि आप (ईसामसीह) ईश्वर के पुत्र हैं।"

सुनिया रुक गई। उसने आँखें उठाकर रोडियन की ओर देखा। फिर पुस्तक उठाकर पढ़ने लगी। रोडियन चुपचाप सुन रहा था।

"फिर मेरी वहाँ आई, जहाँ ईसामसीह था, और उसके पैरों पर गिरकर बोली—भगवन्, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई न मरता। जब ईसामसीह ने उसको रोते देखा, और सब यहूदियों को भी, तब वह दुखित होकर बोला—तुमने उसको कहाँ दबाया है? उन्होंने कहा—आइए भगवन्, देखिए। ईसामसीह रोने लगा। यहूदियों ने कहा—देखो, यह कैसा उससे प्रेम करता था। कुछ यहूदी बोले—यदि यह अंधों के नेत्र अच्छे कर सकता है, तो क्या उसको मरने से नहीं रोक सकता था?

रोडियन ने सुनिया की ओर देखा, उसका सन्देह ठीक था। वह काँप रही थी। यह वह पहले ही समझता था। चमत्कार की बात अब आ रही थी, और वह बहुत प्रसन्न हो रही थी। उसकी आँखों में आँसू आ गए। परन्तु यह भाग उसे कण्ठ था। "क्या यह मनुष्य, जिसने अंधों को अच्छा कर दिया...।" उसने अपनी आवाज़ धीमी की, और "संदेह, दोष तथा घृणा इन अंधे और अविश्वासी यहूदियों के हृदय में जो थी, और जो एक क्षण के बाद उसके चरणों पर गिरकर विश्वास करने लगे," को ज़ोर देकर पढ़ने लगी उसने सोचा, हाँ, जो अंधा है, और विश्वास नहीं करता, वह भी इसी क्षण विश्वास करने लगेगा।

"ईसामसीह क़ब्र के पास आया। एक गुफ़ा थी, जिस पर पत्थर ढका हुआ था। ईसासीह ने कहा—पत्थर को हटाओ। मारथा ने उत्तर

दिया—भगवन्, चार दिन हुए, वह मर गया। अब तो सड़ गया होगा। ईसा ने कहा—मैंने तुमसे पहले कहा कि यदि तुम विश्वास करती हो, तो तुम ईश्वर का चमत्कार देखोगी। तब उन्होंने पत्थर उठाया, और मसीह ने अपने नेत्र ऊपर उठाकर कहा—हे ईश्वर! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि तूने मेरी बात मान ली। मैं जानता हूँ, तू सदैव मेरी बात मान लेता है। परन्तु, इन लोगों को, जो मेरे पास खड़े हैं, दिखाने के लिये कि मैं तेरा भेजा हुआ हूँ, और ये तुझमें विश्वास करें, मेरी बात मान ले। यह कहकर उसने ज़ोर से कहा—लेज़रस, निकल आओ, और मुरदा निकल आया। (ये वाक्य पढ़ते हुए सुनिया काँपने लगी, जैसे उसने अपने नेत्रों से यह चमत्कार देखा था)। उसके हाथ और पैर कफ़न में बँधे हुए थे, और उसका मुख अँगोछे से। ईसामसीह ने कहा—इसको खोल दो, और जाने दो। बहुत-से यहूदी, जो मेरी के पास आए थे, और जिन्होंने यह चमत्कार देखा, ईसामसीह में विश्वास करने लगे।"

उसने पढ़ना बंद कर दिया, किताब बंद करके उठी, और बोली—"यही लेज़रस के उद्धार की कहानी है।" रोडियन की ओर आँख उठाकर वह नहीं देख सकती थी। वह काँप रही थी। धीमी-धीमी मोमबत्ती उस कमरे में जल रही थी, जिसमें एक खूनी और एक वेश्या ने इस पवित्र पुस्तक को पढ़ा तथा सुना। पाँच मिनट हो गए। रोडियन उठा, और ज़ोर से बोला—"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।" उसकी भौंओं में बल पड़ गए थे। लड़की ने उसकी ओर मुँह उठाकर देखा, और उसके मुख पर एक दृढ़ संकल्प पाया। "आज से मैंने अपनी मा और बहन से नाता तोड़ लिया, अब मैं उनके पास न जाऊँगा। मेरा और मेरे कुटुम्ब का आज से झगड़ा हो गया।"

सुनिया ने घबराकर पूछा—"क्यों ?"

मा और डोनिया की पिछली भेंट का सुनिया पर असाधारण

प्रभाव पड़ा था। रोडियन का कुटुम्ब से झगड़ा होना सुनकर वह भयभीत हो गई।

रोडियन ने उत्तर दिया—"अब तुम्हारे सिवा मेरा कोई नहीं। मैं तुमसे यह प्रस्ताव करने आया हूँ कि हम दोनों पापी हैं, दोनों संग भाग चलें।" उसकी आँखें चमकने लगीं।

सुनिया ने सोचा, यह तो पागलों की-सी बातें करता है। "कहाँ भाग चलें।"

"मैं क्या बताऊँ, मैं तो केवल यह जानता हूँ कि हमारा तुम्हारा रास्ता और हमारा तुम्हारा जाने का स्थान एक ही है।"

सुनिया बिना समझे उसकी ओर देखने लगी। रोडियन की बातों से वह यह समझ गई कि वह अत्यन्त दुखी है। रोडियन ने कहा—"यदि मैं उनसे कहूँ, तो तुम्हारी बातें वे न समझेंगी। परन्तु मैंने तुमको समझ लिया है। तुम मेरे लिये आवश्यक हो, इसीलिये मैं आया हूँ।"

सुनिया ने रुककर कहा—"मैं कुछ नहीं समझी।"

"धीरे-धीरे सब समझ जाओगी। क्या तुमने मेरी तरह काम नहीं किया है? तुमने भी अपने से बढ़कर...। तुमको ऐसा काम करने का साहस था—तुमने अपना सर्वनाश कर दिया। तुम अपना जीवन अपनी योग्यता से निर्वाह कर सकती थीं, परन्तु अब तुम किसी धर्मशाला या अस्पताल में मरोगी। तुम इस बात को सह नहीं सकती हो, और यदि तुम अकेली रहोगी, तो मेरी ही तरह सोचा करोगी। इस समय भी तुम थोड़ी-बहुत पागल हो। इसलिये हम दोनों को संग-संग एक ही मार्ग पर जाना चाहिए। चलो चलें।"

सुनिया ने उत्तर दिया—"आप ऐसी बातें क्यों करते हैं?"

"क्यों? तुम पूछती हो? क्योंकि तुम यहाँ नहीं रह सकतीं। ज़रा समझकर देखो, बच्चों की तरह रोने और ईश्वर पर भरोसा करने से कुछ न होगा। यदि कल तुम अस्पताल में भेजी गई, तो क्या होगा?

कैथराइन पागल होकर मर जायगी। बच्चों का क्या होगा ? पालेचका के नाश में कोई संदेह न रहेगा।"

सुनिया ने रोते-रोते हाथ मलकर कहा—"तो फिर क्या करना उचित है ?"

"क्या करना उचित है ? रस्सी को एक बार काट दो, आगे चलो, जो कुछ होगा देखा जायगा। समझीं ? स्वाधीनता और शक्ति प्राप्त करो। काँपते हुए कायर पुरुषों पर राज्य करो। यही रास्ता है, जो मैं तुमको बता सकता हूँ। कदाचित् मैं तुमसे अन्तिम बार बातचीत कर रहा हूँ। यदि मैं कल न आऊँ, तो तुमको सब भेद मालूम हो जायगा। और, तब याद करना कि मैं क्या कह रहा था। कुछ वर्ष बाद जब तुमको जीवन का अनुभव होगा, तब मेरी बातें समझ में आवेंगी। यदि कल मैं आया, तो तुमको मालूम होगा कि एलिज़बेथ को किसने मारा है। नमस्ते।"

सुनिया काँपने लगी, और उसकी ओर आश्चर्य से देखकर बोली—"क्या आप एलिज़बेथ के मारनेवाले को जानते हैं ?"

"हाँ, जानता हूँ, और भेद खोल दूँगा। परन्तु केवल तुम्हें बताऊँगा—तुम्हीं को मैंने चुना है। ईश्वर से प्रार्थना करने न आऊँगा, परन्तु केवल भेद को बताने। जिस समय से तुम्हारे पिता ने तुम्हारे विषय में मुझसे बातचीत की थी, और जब एलिज़बेथ जीवित था, तभी से मैंने तुम्हें चुना था। नमस्ते। हाथ मत मिलाओ।"

यह कहकर, सुनिया को अकेला छोड़कर, वह चला गया। सुनिया उसको पागल समझने लगी। वह स्वयं पागल हो रही थी। उसका सिर चकरा रहा था। हे ईश्वर ! एलिज़बेथ के मारनेवाले को वह कैसे जानता है ! उसके शब्दों का क्या अर्थ था ? परन्तु वह अपनी बात न समझी। अवश्य वह बड़ा दुखी है। मा और बहन को क्यों छोड़ दिया ? क्या बात हुई ? वह क्या चाहता है ? क्या कह रहा

था ? उसने मेरे पैरों पर सिर रक्खा, और कहा, तुम्हारे बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। हे ईश्वर ! क्या बात है ?"

बन्द कमरे के पीछे एक कमरा और था, जो बहुत दिन से ख़ाली था। यह किराए के लिये था। सुनिया समझती थी कि उसमें कोई नहीं रहता है। परन्तु इस सारी वार्तालाप को मिस्टर स्विड्रीगेलफ़ दरवाजे के पीछे छिपा हुआ ध्यानपूर्वक सुन रहा था। जब रोडियन चला गया, तो स्विड्रीगेलफ़ एक क्षण सोचता रहा, और फिर चुपके-से अपने कमरे में चला गया। वह दरवाजे के पीछे कुरसी रखकर बैठ गया। जो कुछ उसने सुना, उसमें उसका मन इतना लगा कि उसने कुरसी वहीं छोड़ दी कि दूसरी बार आराम से उस पर बैठकर सुनूँगा।

पाँचवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन ठीक ग्यारह बजे रोडियन मजिस्ट्रेट के घर पहुँच गया। उसको वहाँ बड़ी देरतक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसके ख़याल से उसको तुरन्त ही मजिस्ट्रेट से मिलना चाहिए था। दस मिनट के बाद वह पारफ़ीरियस से मिल सका। बाहर वाले कमरे में, जहाँ वह प्रतीक्षा कर रहा था, लोग आए और गए। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। दूसरे कमरे में, जो एक प्रकार का दफ्तर था, कुछ बाबू लोग काम कर रहे थे, और उनमें से एक रोडियन को जानता भी था। युवा घबराकर चारों ओर देखने लगा। उसने सोचा, कोई जासूस तो मेरे पीछे नहीं लगा हुआ है। मैं भाग क्यों न जाऊँ? परन्तु उसने कोई बात न पाई। बाबू अपने काम में लगे थे, कोई उसकी ओर ध्यान न देता था। आगन्तुक को इससे शान्ति हुई। उसने सोचा, यदि वह कल-वाला गुप्त आदमी, जो धरती के अन्दर से निकला था, सब जानता है, तो मुझे अभी तक ये लोग खड़े न रहने देते, अब तक मुझे गिरफ्तार कर लेते, और मेरे आने की प्रतीक्षा न करते। या तो इस मनुष्य ने अभी तक मेरे विषय में पुलीस में कोई सूचना नहीं दी है, या उसने कुछ देखा नहीं, और न वह कुछ जानता है (और, वह जान ही कैसे सकता है)। मेरी ही भूल है, कल की घटना केवल मेरे रोगी दिमाग़ की एक कल्पना है। इस बात से उसको कुछ चिन्ता मिटी।

यही बातें सोचते हुए रोडियन को यह प्रतीत हुआ कि वह काँप रहा है। उसको इस बात से बड़ा क्रोध हुआ कि घृणित पारफ़ीरियस से मिलने में मैं इतना डरता हूँ। इस मनुष्य का सामना करने से मैं बहुत

भयभीत हूँ । वह उससे घृणा करता और इस बात से डरता था कि कहीं मेरी घृणा प्रकट न हो जाय । उसका क्रोध इतना बढ़ गया था कि उसका काँपना बंद हो गया । वह शान्त भाव से मिलने के लिये तैयार होने लगा । उसने यह प्रण किया कि मैं बिलकुल न बोलूँगा, और अपने आपको रोके रहूँगा । इन्हीं विचारों में वह मग्न था कि वह पारफ़ीरियस के सामने पेश किया गया । पारफ़ीरियस दफ्तर में अकेला था । उसके सामने एक बड़ी मेज़ रक्खी हुई थी, एक पलंग था, कुछ कुरसियाँ थीं, और एक आलमारी । यह सब फरनीचर सरकारी था । दीवाल में एक और दरवाज़ा बंद था, जिससे यह प्रतीत होता था कि उसके पीछे भी कमरे हैं । ज्यों ही रोडियन दफ्तर में घुसा, पारफीरियस ने दरवाजे बंद कर दिए, और दोनों एक दूसरे के सामने खड़े हो गए । मजिस्ट्रेट ने आगन्तुक का स्वागत किया । थोड़ी देर के बाद रोडियन को यह प्रतीत हुआ कि मजिस्ट्रेट कुछ घबराया हुआ है । जैसे, वह किसी काम में लगा हुआ था, और उसके बीच ही में रोडियन आ पड़ा ।

"मेरे प्रतिष्ठित मित्र, तो तुम आ गए ! कृपा करके बैठ जाओ । हाँ, कदाचित् तुम प्रतिष्ठित नहीं कहलाना चाहते हो, इसलिये मुझे क्षमा करके पलंग पर बैठ जाओ ।"

रोडियन जज की ओर देखता रहा । उसकी बातचीत रोडियन की समझ में न आई । उसने हाथ मिलाने को अपना हाथ बढ़ाया, फिर बिना मिलाए वापिस लिया । रोडियन कुछ न समझा । दोनों एक दूसरे को देखते रहे । परन्तु ज्यों ही दोनों की आँखें मिलती थीं, दोनों अपना-अपना मुँह फेर लेते थे ।

"मैं यह कागज़ लेकर आया हूँ । देख लीजिए, यह ठीक है न ? या दूसरा लिखा जाय ?"

"कौन कागज ? हाँ-हाँ, ठीक है । इसके विषय में कुछ घबराओ नहीं ।" यह कहकर मजिस्ट्रेट ने कागज़ को देखकर मेज़ पर रख दिया, और एक क्षण के बाद उसको संदूक में बन्द कर दिया ।

"कल," रोडियन ने कहा—"आपने मुझसे कहा था कि आप मेरी जाँच करना चाहते हैं। कम-से-कम मैं यही समझा था।" युवा ने फिर सोचा, मैंने यह क्यों कहा कि मैंने ऐसा समझा था। खैर, इसमें कोई हानि नहीं। उसको यही प्रतीत हुआ कि मैं ही घबरा-सा रहा हूँ। और, घबराना बुरी बात है। कदाचित् घबराहट में मुँह से कोई अनुचित बात निकल जाय।

मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया—"घबराओ नहीं, समय बहुत है। जल्दी क्या है।" और, वह बराबर खिड़की और मेज़ के बीच में टहलता रहा। कभी तो वह रोडियन को संदिग्ध दृष्टि को बचाता और कभी उसे घूरकर देखता। इस छोटे और मोटे आदमी का इधर-उधर शीघ्रता से जाना ऐसा विदित होता था, जैसे गेंद एक दीवाल से टकराकर दूसरी दीवाल पर जाती है। "कोई शीघ्रता नहीं है। अच्छा, तुम तम्बाकू पीते हो, लो, यह सिगरेट लो। मैं तुमसे यहाँ मिल रहा हूँ। परन्तु मेरा मकान इस दीवाल के पीछे है। सरकारी मकान मुझे मिला है। मैं यहाँ इसलिये हूँ कि कुछ मरम्मत हो रही है। तुम समझते हो न, सरकारी मकानों को घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।"

रोडियन ने चिढ़कर उत्तर दिया—"मैं सब समझता हूँ।"

मजिस्ट्रेट ने ज़ोर से दुहराकर कहा—"सरकारी मकानों से घृणा नहीं करनी चाहिए।" और, यह कहकर, वह रोडियन के समीप आकर घूरने लगा। बार-बार इस साधारण बात को दुहराने और उस दृष्टि से एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न हो गया था।

रोडियन का क्रोध बढ़ गया। उसने घृणा की दृष्टि से मजिस्ट्रेट को देखकर कहा—"क्या यह आप लोगों का नियम है कि आप पहले छोटी-छोटी बातों की चर्चा चलाते हैं, और फिर कुछ गंभीर बातों पर बातचीत करते हैं, जिनसे असली बातों का कोई विशेष संबंध नहीं ताकि जिसकी आप जाँच कर रहे हैं, उसे कोई संदेह न रहे? और, फिर एकबारगी

असली बात को चर्चा चलाकर उसको आप दबाते हैं ? क्या इसको आप अपनी जाँच में एक आवश्यक नियम समझते हैं ?"

"तो क्या तुम समझते हो कि मैंने जो सरकारी मकान की बात कही, वह इसलिये कही कि—" यह कहकर मजिस्ट्रेट ने मुँह बनाया। उसकी भौंओं के बल दूर हो गए, और उसकी छोटी आँखें और छोटी हो गईं। वह रोडियन को घूरकर बड़े ज़ोर से हँसने लगा। रोडियन सिर से पैर तक काँप गया। रोडियन ने भी हँसने का प्रयत्न किया, जिसे देखकर मजिस्ट्रेट इतना हँसा कि उसका चेहरा लाल हो गया। यह देखकर रोडियन की घृणा की सीमा न रही। वह सब भूल गया, और हँसना बंद करके, भौंएँ चढ़ाकर, मजिस्ट्रेट को घृणा की दृष्टि से देखने लगा। पारफ़ीरियस रोडियन के क्रोध की कुछ चिन्ता न करके उस पर हँस रहा था। रोडियन ने सोचा, मेरे आने से मजिस्ट्रेट तो कुछ नहीं घबराया, परन्तु मैं ही जाल में फँस रहा हूँ। बारूद भर दी गई है, किसी समय फट पड़ेगी।

चिन्तित होकर रोडियन उठा, और दृढ़ भाव से बोला—"पारफ़ीरियस, कल तुमने मुझको जाँच करने के लिये बुलाया था। मैं तुम्हारे बुलाने पर आया हूँ। यदि तुमको कुछ प्रश्न करने हैं, तो पूछो; नहीं तो मैं जाता हूँ। मैं इस तरह अपना समय नष्ट नहीं कर सकता। मुझको और भी काम करने हैं। कल जो अफ़सर कुचल गया था, उसकी लाश के साथ जाना है। मुझको ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। मैं इसी कारण बीमार हूँ। यदि आपको कुछ पूछना है, तो मुझसे जिरह कीजिए, और मुझे जाने दीजिए। यदि प्रश्न करने हैं, तो नियमपूर्वक पूछिए; नहीं तो मैं उत्तर न दूँगा। बस, नमस्ते। अब हमारा आपका कोई संबंध नहीं।"

मजिस्ट्रेट ने हँसी रोककर कहा—"हे ईश्वर! तुम कैसी बातें करते हो? तुमसे किस विषय में प्रश्न करूँ। घबराओ नहीं; बैठ जाओ। बहुत समय पड़ा है, कोई इतनी जल्दी नहीं। तुम्हारे आने से मैं बहुत

प्रसन्न हूँ, और हँसी के लिये मैं तुमसे क्षमा माँगता हूँ। तुम्हारी बातों पर मुझे हँसी आ गई। जब मैं गेंद की तरह इधर-से-उधर जाता हूँ, तो मेरा हँसने को जो चाहता है। कृपा करके बैठ जाओ। यदि न बैठोगे, तो मैं समझूँगा कि तुम नाराज़ हो गए।"

रोडियन चुपचाप देखता रहा, और फिर बैठ गया।

"रोडियन, मैं अभी तुमसे कुछ कहूँगा, जिससे मेरा चरित्र तुम समझ जाओगे। मैं अकेला रहता हूँ, किसी से मिलता-जुलता नहीं। मेरी अवस्था चालीस से ऊपर है, और सब कर्म कर चुका हूँ। रोडियन, तुमने देखा होगा, सेंटपीटर्सबर्ग में जब दो बुद्धिमान मनुष्य मिलते हैं, जो एक दूसरे को आदर की दृष्टि से देखते हैं, और जिनमें परस्पर मित्रता नहीं होती—जैसे हम और तुम इस समय हैं—तो आध घण्टे तक उनको बात करने के लिये विषय ही नहीं मिलता। और लोगों को बात करने का विषय मिल जाता है। स्त्रियाँ और समाज के अन्य मनुष्य किसी-न-किसी विषय पर बात करते ही हैं। परन्तु हमारे और तुम्हारे-जैसे मनुष्यों को कोई विषय नहीं मिलता। क्या हमें सामाजिक विषयों पर बातें करनी नहीं आतीं, या हम दोनों आदमी ऐसे स्पष्टवक्ता हैं कि एक-दूसरे को धोखा नहीं दे सकते? तुम्हारी क्या सम्मति है? टोपी उतारो, तुम तो जैसे भागने को बैठे हो। इससे मुझे कष्ट होता है। मैं बड़ा सन्तोषी जीव हूँ।"

रोडियन ने टोपी उतारकर रख दी, परन्तु बातचीत नहीं की, और भौं सिकोड़कर मजिस्ट्रेट की व्यर्थ की बातें सुनता रहा। उसने सोचा, यह ऐसी बातें मुझे भुलावा देने के लिये करता है।

न थकनेवाला मजिस्ट्रेट फिर बोला—"मैं तुमको कहवा नहीं देता हूँ; क्योंकि यह कहवे का स्थान नहीं। परन्तु क्या तुम एक मित्र का दिल बहलाने के लिये थोड़ी देर न ठहरोगे? मुझको इधर-उधर फिरता हुआ देखकर घबराओ नहीं। मुझको विश्वास है, तुम मुझको

क्षमा करोगे; क्योंकि मैं जान-बूझकर नहीं फिरता हूँ। फिरना मेरे लिये आवश्यक है। मैं सदा बैठा रहता हूँ, इसलिये फिरना मुझे बहुत आवश्यक जान पड़ता है। आजकल जिमनास्टिक में बहुत उन्नति हो रही है। यह दफ्तर का काम जाँच और यह नियम मजिस्ट्रेट का चित्त अधिक—अभियुक्त से अधिक—खिन्न कर देते हैं। तुमने अभी बहुत बुद्धिमत्ता की बात कही (यद्यपि रोडियन ने कोई बात नहीं कही थी)। हमारे जाँच के नियम ऐसे हैं कि यदि कोई बात रह जाय, तो जाँच व्यर्थ हो जाती है। यदि किसी मनुष्य पर सन्देह है, तो मूर्ख-से-मूर्ख मजिस्ट्रेट इधर-उधर की बातें करके, एकदम से असली बात कहकर, उसे घबराहट में डाल देता है। जैसे, कोई कुल्हाड़ी मार देता है। हा-हा-हा ! जब मैंने तुमसे सरकारी मकान की बात की, तो क्या तुम यह समझे थे ? हा-हा-हा ! अब मैं वह बात न करूँगा। अच्छा, एक बात से दूसरी बात उत्पन्न होती है, एक विचार से दूसरा विचार आता है। अभी तुम मजिस्ट्रेट के जाँच करने के नियमों की बात कर रहे थे न ? वे नियम क्या हैं ? तुम समझते हो कि कोई विशेष नियम नहीं। कभी-कभी मित्रता से काम निकल जाता है। यह नियम सदा रहेगा। परन्तु तुम मजिस्ट्रेट को मजबूर नहीं कर सकते कि सदा इसी नियम को काम में लावे। उसके नियम प्रत्येक अभियुक्त के साथ भिन्न-भिन्न होते हैं।"

पारफ़ीरियस साँस लेने के लिये रुक गया, फिर बकने लगा। कभी तो व्यर्थ की बातें करता और कभी कोई विशेष वाक्य कहकर फिर व्यर्थ बकने लगता था।

वह कमरे-भर में दौड़ता रहा। उसका दाहिना हाथ कोट की जेब में था, और बायाँ वह हिलाता जाता था। रोडियन ने देखा, दो बार द्वार पर रुककर वह कुछ सुनता है। रोडियन ने सोचा, क्या यह किसी की प्रतीक्षा करता है ?

मजिस्ट्रेट ने फिर बोलना आरम्भ किया—"हमारे नियम निन्दनीय हैं। हमारे नियम—जो मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर बने हैं—हँसने के योग्य हैं, और कभी-कभी व्यर्थ प्रमाणित होते हैं। हमारे नियम ये हैं कि यदि हम किसी बात की जाँच कर रहे हों, और यह जानते हों कि इस मनुष्य ने यह अपराध किया है......हाँ, रोडियन, तुम शायद क़ानून पढ़ते हो ?"

"हाँ, पढ़ता था।"

"अच्छा, तो यह उदाहरण तुम्हारे लिये उपयोगी होगा। मैं तुमको कुछ पढ़ाना नहीं चाहता। ईश्वर न करे, मैं ऐसे योग्य पुरुष को, जो अख़बारों में फ़ौजदारी के मामलों पर लिखता है, कुछ सिखाने का साहस करूँ। मैं, उदाहरणार्थ, छोटी-सी बात तुमसे कहना चाहता हूँ। यदि मैं किसी मनुष्य को अपराधी समझता हूँ, और मेरे पास उसके विरुद्ध सब प्रमाण मौजूद हैं, तो मैं क्यों उसको पहले ही से डरा दूँ। दूसरे प्रकार के मनुष्य को तो मैं तुरन्त ही पकड़ लूँगा, परन्तु ऐसे मनुष्य को मैं कुछ दिन स्वाधीन रहने दूँगा। कदाचित् तुम मेरी बात नहीं समझे, इसलिये स्पष्ट रूप से कहता हूँ। यदि मैं ऐसे मनुष्य को तुरन्त ही पकड़ लूँ, तो मैं उसको एक प्रकार की सहायता देता हूँ। तुम हँस क्यों रहे हो (रोडियन बिल्कुल नहीं हँस रहा था उसके होठ जुड़े हुए थे, और मजिस्ट्रेट को घूर रहा था) ? मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि वास्तव में ऐसा ही होता है। मनुष्य कई प्रकार के होते हैं, परन्तु हमारे नियम सबके लिये एक-से हैं। तुम मुझसे पूछोगे, जब हमारे पास प्रमाण उपस्थित हैं, तो हम उसको क्यों न गिरफ्तार कर लें ? परन्तु प्रमाण क्या हैं, इसके दोनों अर्थ लग-सकते हैं। और, मनुष्य होने के कारण भूल भी कर सकता हूँ। मैं अपनी जाँच को गणित-विद्या के समान ठीक करना चाहता हूँ। मैं अपने प्रमाण ऐसे चाहता हूँ, जैसे दो और दो चार होते हैं।

यदि मैं उस मनुष्य को—यद्यपि मेरे पास प्रमाण उपस्थित हैं—पहले ही गिरफ्तार कर लूँ, तो मुझको फिर और प्रमाण न मिलेंगे। जेल-खाने में बन्द करके मैं उसको शान्ति दे दूँगा, पर मैं उसके दिमाग़ को हालत की जाँच न कर सकूँगा; क्योंकि वह समझ लेगा कि वह क़ैदी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। परन्तु यदि मैं उस मनुष्य को, जिसे मैं अपराधी समझता हूँ, स्वाधीन रहने दूँ, और वह मनुष्य यह समझता हो कि मैं सब जानता और रात-दिन उसकी देख-भाल करता हूँ, तो वह ऐसी दशा में क्या करेगा? वह अपने-आपको भूल जायगा, स्वयं मेरे पास आवेगा, अपने विपक्ष में प्रमाण देगा, और मुझको गणित-विद्या के अनुसार ठीक प्रमाण मिल जायँगे। यदि ये नियम अनपढ़ के साथ सफल होते हैं, तो पढ़े-लिखे मनुष्य के साथ ये व्यर्थ जा ही नहीं सकते। सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि उस मनुष्य में कितनी बुद्धि है; मनुष्य बुद्धिमान है, परन्तु घबराया हुआ है; उसका चित्त अपना काम कर रहा है। इससे हमको बहुत कुछ पता लगता है। मुझे कुछ चिन्ता नहीं, यदि वह मनुष्य स्वच्छंद फिरता है; क्योंकि मैं जानता हूँ वह मेरा ही शिकार है, भाग नहीं सकता। मैं तुमसे पूछता हूँ कि वह मनुष्य कहाँ जायगा? तुम कहोगे—रूस के बाहर। अनपढ़, संभव है, भाग जाय; परन्तु मेरा आदमी नहीं भागेगा, विशेषकर जब मैं उसकी देख-भाल करता हूँ, और उस पर आदमी नियत कर दिए हैं। क्या वह रूस के अन्दर, जंगलों में भाग जायगा? नहीं; क्योंकि वहाँ अनपढ़, असभ्य रूसी रहते हैं। मेरा पढ़ा-लिखा मित्र जेल जाना उन असभ्य पुरुषों के संग रहने से अधिक अच्छा समझेगा। इसके अतिरिक्त वह इसलिये भी नहीं भागेगा कि वह यह नहीं जानता कि कहाँ जाऊँ, और वह मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार मेरा है। प्राकृतिक नियमों के अनुसार वह नहीं भागेगा, यदि उसको भागने का समय भी हो। तुमने मोमबत्ती के पास पतिंगे देखे

होंगे। मेरा आदमी इन पतिंगों की तरह मुझको मोमबत्ती समझकर मेरे चारों ओर घूमेगा। स्वच्छन्दता उसे अच्छी न लगेगी, वह बेचैन होकर अपने-आपको इस प्रकार अपराधी प्रमाणित कर देगा, जैसे दो और दो चार होते हैं। वह मेरे चारों ओर चक्कर लगावेगा; और फिर, उसके चक्कर ऐसे छोटे हो जायँगे कि मेरे पंजों में फँस जायगा।"

रोडियन चुपचाप सब सुनता रहा। उसका रंग पीला पड़ गया था। उसने सोचा—यह शिक्षा अच्छी मिली। कल की तरह बिल्ली और चूहे की कहानी आज नहीं है। आज की बातें केवल दिल बहलाने के लिये नहीं हैं। इसके ध्यान में कुछ और है, यह मुझको डराता है, इसके पास कुछ प्रमाण नहीं। और, कल का आदमी इस संसार में नहीं है। यह मुझको क्रोधित करके फसाना चाहता है; परन्तु मैं ऐसा न होने दूँगा। इसका सब परिश्रम व्यर्थ जायगा। परन्तु यह मुझसे ऐसी बातें करता क्यों है? कदाचित् मुझे उत्तेजित करना चाहता हो। मेरे प्यारे मित्र मैं तुम्हारे जाल में न फसूँगा। अभी मैं मालूम करूंगा कि इन बातों से इसका प्रयोजन क्या है। वीरता से सब दुःख सहने के लिये वह तत्पर हो गया। कभी-कभी उसकी इच्छा होती थी कि झपटकर मजिस्ट्रेट का गला घोंट दूँ। मजिस्ट्रेट के दफ्तर में घुसते ही उसको यह भय था कि कहीं मुझको क्रोध न आ जाय। उसका दिल धड़क रहा था। उसके होठ सूख गए थे। परन्तु उसने निर्णय कर लिया कि वह, कुछ भी हो, चुप रहेगा। चुप रहने से न तो वह अपने फसाने की बात कह सकेगा, और मजिस्ट्रेट को भी थका देगा। रोडियन को यही आशा थी।

मजिस्ट्रेट ने हँसते-हँसते फिर बोलना आरंभ किया—"तुम समझते हो, मैं हँसी कर रहा हूँ। ठीक है। ईश्वर ने मुझे ऐसा ही मुँह दिया है कि लोग उसको देखकर हँसते हैं। बूढ़े आदमी की बातों का ख़याल न करो। रोडियन, तुम युवा हो, और मनुष्य की बुद्धिमानी को समझ सकते हो। हाँ, उस विशेष बात को फिर आरंभ करता हूँ। हम प्रकृति

के अनुसार काम करते हैं, और हमारे नियमों के आगे बड़े-बड़े बुद्धिमान अपनी बुद्धि को भूल जाते हैं। एक बूढ़े आदमी की बात सुनो। रोडियन, मैं गंभीर भाव से पूछता हूँ कि मैं स्पष्टवक्ता हूँ कि नहीं? मुझसे अधिक स्पष्टवक्ता तुम्हें न मिलेगा। बुद्धि बहुत अच्छी वस्तु है, और उससे एक बूढ़े मजिस्ट्रेट को धोखा दिया जा सकता है; क्योंकि मजिस्ट्रेट भी आदमी है, और भूल कर सकता है। परन्तु प्रकृति उस मनुष्य—मजिस्ट्रेट—की सहायता करती है, और युवावस्था अपनी ही बुद्धि से मतवाली होकर प्रकृति का यह नियम भूल जाती है।

"इस विशेष मुक़दमे में अपराधी जब यह समझ लेगा कि सोच-कर काम करना चाहिए, तो वह उसी स्थान में जायगा, जहाँ हत्या हुई है। संभव है, वहाँ जाने का कारण वह अपनी बीमारी बतावे। परन्तु सन्देह तो हो गया। वह मनुष्य मजिस्ट्रेट को घबराहट में डालने का प्रयत्न करेगा, और ऐसा प्रकट करेगा कि मैं ही अपराधी हूँ, अपराधी के समान काम करेगा। यह हमारा दूसरा प्रमाण है। और, मजिस्ट्रेट को थोड़ी देर के लिये धोखा हो जाय; परन्तु वह भी बुद्धिमान् है, सब समझ लेगा। तब हमारा मित्र अपने को और अधिक फसावेगा। वह बिना बुलाए मजिस्ट्रेट के पास आवेगा, असभ्यता की बातें करेगा, यहाँ तक कहेगा कि मुझको गिरफ्तार कर लो। यह आचरण बहुत बुद्धिमान मनुष्य का होगा। परन्तु मेरे मित्र, प्रकृति एक दर्पण है, जो सब हाल बता देती है। रोडियन, तुम पीले क्यों पड़ गए हो? क्या गरमी लगती है? खिड़की खोल दूँ?"

रोडियन हँस पड़ा, और बोला—"आप मेरी चिन्ता न करें।" मजिस्ट्रेट चुप हो गया, और फिर हँसा। रोडियन उठ खड़ा हुआ, और ज़ोर से चिल्लाकर बोला—"पारफ़ोरियस, मैं समझता हूँ कि तुम उस बुढ़िया और उसकी बहन एलिज़ेबेथ का मारनेवाला मुझे ही समझते हो। बस, बहुत हो चुका। यदि मुझे गिरफ्तार करने का आपको अधिकार

हो, तो मुझको गिरफ्तार कीजिए। परन्तु मुझसे खेल न कीजिए, मुझको दुखी न कीजिए।" उसके होठ काँपने लगे। उसकी आँखें चमकने लगीं, और उसने ज़ोर से मेज़ पर घूसा मारकर कहा—"पारफीरियस, मैं ऐसा न होने दूँगा।"

मजिस्ट्रेट ने घबराकर पूछा—"ईश्वर के लिये तुमको क्या होगया है? रोडियन, मेरे प्यारे मित्र, तुमको क्या हो गया है?"

रोडियन ने फिर ज़ोर से कहा—"मैं ऐसा न होने दूँगा।"

"इतने ज़ोर से मत बोलो; कोई सुन ले, आ जाय, तो हम क्या कहेंगे? कुछ देर सोच लो।"

रोडियन ने धीरे से फिर कहा—"मैं ऐसा न होने दूँगा।"

मजिस्ट्रेट खिड़की खोलने को बढ़ा, और बोला—"कमरे में हवा आने दो। प्यारे मित्र, थोड़ा-सा पानी पी लो, तुमको दौरा हो गया है।" वह कोने से एक पानी की बोतल उठा लाया, और युवा से बोला—"थोड़ा-सा पानी पी लो, इससे तुम्हें शान्ति मिलेगी।"

मजिस्ट्रेट का भय ऐसा प्राकृतिक था कि रोडियन सोच में पड़ गया। उसने पानी नहीं पिया।

"रोडियन, मेरे प्यारे मित्र, यदि तुम इस प्रकार से रहोगे, तो पागल हो जाओगे। कुछ थोड़ा-सा पानी पीलो।" यह कहकर उसने पानी का गिलास रोडियन के मुँह में लगा दिया। रोडियन ने कुछ सोचकर मेज़ पर गिलास को रख दिया। "तुमको कुछ दौरा हो गया था। एक या दो बार और ऐसा हुआ, तो तुमको रोग आ घेरेगा। कैसे शोक की बात है कि मनुष्य अपने रोग की कुछ चिन्ता नहीं करता। कल मिस्री की भी यही दशा हुई। मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरा व्यवहार बहुत ही बुरा है। परन्तु तुम इसके अर्थ क्यों लगाते हो? वह कल यहाँ आया था, और बड़ी देर तक बातें करता रहा। क्या तुमने उसको यहाँ भेजा था? बैठ जाओ, रोडियन। ईश्वर के लिये बैठ जाओ।"

रोडियन ने रूखे भाव से उत्तर दिया—"मैंने नहीं भेजा था। परन्तु मैं यह जानता हूँ कि वह यहाँ आया था, और क्यों आया था।"

"क्या तुम उसके आने का कारण जानते हो?"

"हाँ; आपको उससे कुछ सूचना मिली?"

"रोडियन, तुम्हारी सब करतूतों का मुझे पता लगा। मुझे मालूम हुआ कि रात को तुम मकान किराए पर लेने गए थे, तुमने घण्टी बजाई, और खून के धब्बे की बात वाले प्रश्न से और तुम्हारे आचरण से लोग भयभीत हो गए। मैं सब समझता हूँ। इस प्रकार की उत्तेजना से तुम पागल हो जाओगे। प्रशंसनीय क्रोध तुमको आ रहा है! कभी तुम अपने भाग्य को रोते हो, और कभी तुम पुलीसवालों पर क्रोधित होते हो। तुम वहाँ इसीलिये जाते हो कि लोग तुमको हत्या करनेवाला समझें। इधर-उधर की गपशप तुम्हें अच्छी नहीं लगती, और तुम इसे बंद करना चाहते हो। क्या मैं ठीक नहीं कह रहा हूँ? क्या मैंने तुम्हारे भावों को नहीं समझ लिया है? तुम अपने से सन्तुष्ट नहीं हो, और तुम राजू को भी घबराहट में डालते हो। दयालु होने के कारण उसको भी तुम्हारा रोग लग जाने का भय है। शान्त होने पर तुमको सब मालूम होगा। बैठ जाओ, अपने को सँभालो। होश में आओ।"

रोडियन बैठ गया। उसके सारे शरीर में कँपकँपी आ रही थी। वह पारफ़ीरियस की बातों से चकित हो गया था। परन्तु उसको उसकी बातों पर कुछ विश्वास न था। पारफ़ीरियस ने जो उसके मकान किराए पर लेने के विषय में कहा, उसका उस पर बहुत प्रभाव पड़ा था। उसने यह सोचा कि इसको ये सब बातें कैसे मालूम हुईं, और इसने स्वयं मुझसे ये बातें क्यों कहीं।

पारफ़ीरियस फिर बोला—"मेरे अनुभव में एक ऐसा ही मामला और हुआ था। एक मनुष्य अपने को ख़ून का अपराधी बताता था

जिसे उसने नहीं किया था। उसका बयान बिल्कुल सच मालूम होता था; क्योंकि घटनाओं से बिल्कुल मिलता था। हमारी समझ में उसकी बात नहीं आती थी। बिना किसी अपराध के उसी के कारण वह ख़ून हुआ था। यह सुनकर कि उसी के कारण वह ख़ून हुआ है, उसकी बुद्धि जाती रही, और वह अपने ही को ख़ूनी समझने लगा। संक्षेप में, अदालत ने उसकी जाँच की, और यह मालूम हुआ कि वह निर्दोष है। यदि अदालत उसकी जाँच न करती, तो उसका अन्त हो चुका था। तुम भी इसकी प्रतीक्षा करो। क्या मनुष्य कभी भूल से रात को भटकते हुए ख़ून और ख़ून के धब्बों के विषय में प्रश्न करते हैं ? मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि इस पेशे के कारण मैंने मनोविज्ञान का खूब अध्ययन किया है। इन्हीं भावों से आदमी खिड़की या छत से फाँदकर जान दे देता है। तुम, रोडियन, बीमार हो। तुमने अपनी बीमारी की कुछ चिंता नहीं की। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाना था। जेसोमाफ़ से काम न चलेगा। यह सब सरसाम का परिणाम है।"

रोडियन को सब स्पष्ट दिखाई देने लगा। उसने सोचा, क्या यह मनुष्य झूठ बोल रहा है ? इस भाव को उसने दूर करना चाहा; क्योंकि इससे पागल होकर वह न-मालूम क्या कह बैठता। उसने कहा—"मुझको सरसाम नहीं था, मैं होश में था। समझे ?"

"हाँ, समझा। कल भी तुम यही कहते थे। परन्तु, रोडियन, मुझको एक बात कहने की आज्ञा दो। यदि तुम अपराधी हो या इस काम में तुम्हारा कुछ भाग है, तो क्या तुम्हारे लिये यह अच्छा न होगा कि तुम यही कहो कि सरसाम की दशा में मैंने ऐसा किया। मेरी सम्मति में इससे तुम्हें लाभ होगा। यदि तुम अपने को दोषी समझते हो, तो तुमको यही कहना चाहिए कि सरसाम में मैंने ऐसा किया। क्या मैं ठीक नहीं कह रहा हूँ ?"

प्रश्न के ढंग से यह विदित होता था कि जाल फैलाया जा रहा है। प्रश्न करते हुए पारफ़ीरयस रोडियन के ऊपर झुक गया। रोडियन पलँग पर लेट गया। "यदि तुम अपराधी होते, तो तुम यह कहते कि राजू स्वयं यहाँ आया था, तुमने उसको यहाँ नहीं भेजा था। यह न कहकर तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने स्वयं उसको यहाँ भेजा था।"

रोडियन ने यह बात कभी स्वीकार न की थी। उसको कँपकँपी आ-गई। उसने धीरे से हँसते हुए कहा—"तुम झूठ बोल रहे हो। तुम मुझे यह बतलाना चाहते हो कि तुम मेरे विचार जानते हो। या तो तुम मुझे डराते हो, या मुझसे हँसी करते हो।" यह कहकर रोडियन ने मजिस्ट्रेट को घूरकर देखा, और फिर क्रोधित होकर ज़ोर से बोला—'तुम झूठ बोलते हो। तुम यह समझते हो कि अपराधी के लिये यह अच्छा है कि जिन बातों को वह नहीं छिपा सकता, उनको मान ले। मैं तुम्हारे एक शब्द में भी विश्वास नहीं करता।"

मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया—"तुम क्यों घबराते हो ? तुम बड़े हठी हो। यह विक्षिप्त होने का परिणाम है। मैं सब सुनता हूँ, जो तुम यह कह रहे हो कि तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। परन्तु मैं समझता हूँ कि तुम मुझ पर कुछ-कुछ अवश्य विश्वास करते हो। और, मैं इस बात का प्रयत्न करता हूँ कि तुम मुझ पर पूर्ण विश्वास करो; क्योंकि मैं तुमको सद्भाव से चाहता हूँ।" रोडियन के होंठ हिलने लगे। पारफ़ीरियस ने उसके हाथ पकड़कर कहा—"मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। अपने रोग की चिन्ता करो। तुम्हारा कुटुम्ब सेंटपीटर्सबर्ग में आ गया है, उसको प्रसन्न करने की चेष्टा करो, उसको चिन्तित मत करो।"

"तुमको इससे क्या प्रयोजन ? तुमको यह कैसे मालूम हुआ ? तुम मेरा भेद जानना चाहते हो। मेरी देखभाल करते हो, और मुझको बताना भी चाहते हो कि मेरी देखभाल नहीं करते हो।"

"तुम्हीं से तो सब बातें हमको मालूम होती हैं । तुम नहीं जानते कि उत्तेजित अवस्था में मुझसे और अन्य लोगों से तुम क्या-क्या कह डालते हो । मैं स्वीकार करता हूँ कि बहुत-सी बातें मुझको राजू से मालूम हुईं । अस्वस्थ होने के कारण तुम्हारा दिमाग़ ठीक काम नहीं करता । घण्टी बजाने की घटना मजिस्ट्रेट के लिये अमूल्य है, मैं तुमसे यह स्पष्ट कहना चाहता हूँ । तुम्हारी आँखें इससे खुलीं कि नहीं ? यदि मैं तुमको अपराधी समझता, तो इस तरह से काम न करता । मैं पहले तुमको विश्वास में लेता, इस घटना की बात न करता । इधर-उधर की बातें करके एकबारगी तुमसे यह पूछता कि कल दस बजे रात को तुम उस मृतक के स्थान में क्या कर रहे थे ? तुमने घण्टी क्यों बजाई ? खून के विषय में क्यों प्रश्न किए ? चौकीदारों को क्यों कहा कि पुलीस के दफ्तर में मुझे ले चलो ? इस प्रकार के मैं प्रश्न करता, यदि मुझे संदेह होता । मैं तुमसे जिरह करता, जाँच की आज्ञा देता, और तुमको गिरफ्तार कर लेता । पर मैं तुम पर सन्देह नहीं करता हूँ, इसलिये मैंने यह कुछ नहीं किया । परन्तु मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है, और तुम कुछ नहीं समझ सकते हो ।"

रोडियन सिर से पैर तक काँप गया । मजिस्ट्रेट ने भी यह बात देख ली । रोडियन ने चिल्लाकर कहा—'तुम बिलकुल झूठ बोलते हो । मैं तुम्हारा प्रयोजन नहीं समझ सका; परन्तु तुम अवश्य झूठ बोलते हो । तुम मुझसे ऐसी बातचीत करते हो, जैसे मैं अपराधी हूँ । मैं फिर कहता हूँ कि तुम झूठ बोलते हो ।"

पारफोरियस ने उत्तर दिया—"मैं झूठ बोलता हूँ ? मैंने अभी तुमसे कैसा व्यवहार किया ? मैंने तुम्हें अभी बताया कि तुम्हारी बीमारी, तुम्हारा सरसाम, तुम्हारी विक्षिप्तता, तुम्हारा पुलीस से लड़ना—ये सब बातें तुमको सहायता करेंगी । यह सच है कि ये बहुत अच्छे उत्तर नहीं हैं, और तुम्हारे विपक्ष में भी ये काम कर सकते हैं ।

यदि तुम ऐसा कहो कि मैं बीमार था, मैं कुछ नहीं जानता, मैंने क्या किया, मुझको कुछ याद नहीं, तो इसका उत्तर यह हो सकता है कि यह क्या बात है कि तुम्हारा सरसाम सर्वदा एक ही प्रकार का होता है ? कोई दूसरी बात तुम नहीं करते, इसी की बात किया करते हो। बोलो, मैं ठीक कहता हूँ कि नहीं ?"

रोडियन उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देखते हुए उठा, और बोला—"मुझसे एक बार कह दो कि तुम मुझ पर सन्देह करते हो कि नहीं। इधर-उधर की बातें न करो, साफ-साफ बोलो।"

पारफीरियस ने उत्तर दिया—"प्यारे, तुम बच्चों की तरह चन्द्रमा के लिये क्यों चिल्लाते हो ? तुमको इसकी क्या चिंता है ? अभी तक तुम सुख से हो। अच्छा, मैं तुमसे एक प्रश्न करता हूँ। क्या कारण है कि तुम यहाँ बारबार बिना बुलाए आते हो ?"

रोडियन ने क्रोध से उत्तर दिया—"मैं फिर कहता हूँ कि मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

मजिस्ट्रेट ने कहा—"क्या दुविधा नहीं सहन कर सकते ?"

रोडियन ने गर्जकर उत्तर दिया—"मुझको पागल न बनाओ। सुन लो कि मैं इन बातों को सहन नहीं कर सकता।"

पारफीरियस ने धीरे से कहा—"इतने जोर से मत बोलो। कोई सुन लेगा, तो क्या होगा। मेरी बात मानो। अपनी चिंता करो।"

मजिस्ट्रेट की अब मर्खों-जैसी दृष्टि न थी। उसके मुख से भोलापन चला गया था। उसकी भौंओं पर बल पड़ गए थे, और वह हाकिम समान बोल रहा था। अब ऐसा विदित होता था कि वह बनावटी बात छोड़कर स्पष्ट बातें करेगा। पहले तो रोडियन क्रोध से चिल्ला रहा था; परन्तु आश्चर्य की बात है कि क्रोध में होते हुए भी उसने मजिस्ट्रेट की एक बात मान ली, और वह धीरे से बोलने लगा। उसको

ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं और कुछ कर भी नहीं सकता। और, इस विचार से वह और चिढ़ गया।

रोडियन बोला—'मुझको इस तरह तंग मत करो, मुझको गिरफ्तार कर लो। मेरी तलाशी ले लो, अपनी जाँच करो। नियम के अनुसार काम करो। मुझसे खेल मत करो, ऐसा साहस मत करो...।"

पारफ़ीरियस ने कपट की वाणी में कहा—"नियम के विषय में तुम अपने-आपको मत तंग करो। मैंने तो मित्र-भाव से तुम्हें बुलाया था।"

"मैं तुम्हारी घृणित मित्रता नहीं चाहता। लो, मैं चला। गिरफ्तार करना हो, तो कर लो।"

जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा, पारफ़ीरियस ने उसका हाथ पकड़ा, और बोला—"एक अचम्भा तो देखते जाओ।"

"क्या?" रोडियन रुक गया, और चिंतित होकर पारफ़ीरियस को देखने लगा। मजिस्ट्रेट ने बंद दरवाज़े की ओर दिखाकर कहा—"इसके पीछे तुम्हारे लिये एक अचम्भा है। मैंने उसको ताले में बंद कर रक्खा है कि वह कहीं भाग न जाय।"

रोडियन दरवाजे की ओर जाकर उसको खोलने की चेष्टा करने लगा; परन्तु वह नहीं खुला। उसने कहा—"किस प्रकार का अचम्भा है?"

मजिस्ट्रेट ने जेब से कुंजी निकालकर आगन्तुक को दिखलाई, और कहा—"देखो, यह कुंजी है।"

रोडियन क्रोधित होकर बोला—"तुम झूठ बोलते हो।" यह कहकर उसका दिल चाहा कि पारफ़ीरियस को पटक दे। पारफ़ीरियस बिना अपने मन का कुछ भयभीत प्रकट किए दरवाजे की ओर पीठ करके, खड़ा हो गया। रोडियन ने चिल्लाकर कहा—"मैं सब समझता हूँ, तुम झूठ बोलते हो। मुझको क्रोधित करते हो कि मैं आपे से बाहर होकर कुछ अपने फँसाने की बात कह दूँ।"

"किस विषय में अपने-आपको फसाओगे ? इतना न चिल्लाओ; नहीं तो मैं सहायता मँगवाऊँगा। अपनी हालत देखो।"

"झूठे ! तुम कुछ नहीं करोगे। तुम जानते हो कि मैं बीमार था; तुम मुझको खड़ा करके मुझसे अपराध स्वीकार करवाना चाहते थे। यही तुम्हारा प्रयोजन था। अपने प्रमाण पेश करो। तुम्हारे पास कुछ प्रमाण नहीं है, केवल संदेह है या जेमटाफ़ की सम्मति है। तुम मेरा चरित्र जानते हो। तुम मुझको क्रोधित करके पादरी और पुलीस को बुलाना चाहते हो। तुम उनकी प्रतीक्षा कर रहे हो। वह कहाँ हैं ? उनको निकालो।"

"रोडियन, तुम कैसी बातें करते हो ? कानून पादरियों की आज्ञा नहीं देता। मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारी कार्यवाही नहीं समझते। तुम देखते जाओ, सब काम नियम-पूर्वक होगा।" यह कहकर पारफ़ीरियस दरवाजे के पास जाकर कुछ सुनने लगा। सचमुच दूसरे कमरे में कुछ कोलाहल हो रहा था।

रोडियन ने चिल्लाकर कहा—"क्या वे आ गए ? तो तुमने उनको बुलाया था, तुम उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। तुम समझते थे कि···। खैर, बुलाओ, अफ़सरों को, गवाहों को—या जिसको जी चाहे—बुलाओ। मैं तैयार हूँ।"

अब एक ऐसी आश्चर्ययुक्त घटना हुई, जिसके लिये रोडियन और पारफ़ीरियस, दोनों तैयार न थे।

छठा परिच्छेद

रोडियन के हृदय पर इस दृश्य का यही चित्र अंकित हुआ था। दूसरे कमरे का कोलाहल बढ़ता गया, और एकबारगी दरवाजा खुला। पारफ़ीरियस ने क्रोधित होकर पूछा—"क्या बात है? मैंने तो आज्ञा दी थी...।"

कोई उत्तर न मिला। कोलाहल का कारण समझ में आगया। कोई मनुष्य मजिस्ट्रेट के कमरे में घुसना चाहता था, और वह रोका जा रहा था।

पारफ़ीरियस ने चिन्तित होकर कहा—"क्या मामला है?"

उत्तर मिला—"कैदी मिकोलका लाया जा रहा है।"

"मैंने उसको नहीं बुलाया, मैं उससे नहीं मिलना चाहता, उसको ले जाओ। परन्तु एक क्षण ठहरो। उसको यहाँ क्यों लाए? कैसी नियम-विरुद्ध कार्यवाही करते हो!"

उत्तर मिला—"वह स्वयं ही...।"

दो-एक क्षण तक दो आदमियों की हाथापाई की आवाज़ सुनाई दी। एक ने दूसरे को हरा दिया, और कमरे में घुस आया। आगन्तुक की अजीब आकृति थी। वह देख रहा था, परन्तु उसे कुछ देख न पड़ता था। उसकी आँखों से दृढ़ता टपकती थी। उसका मुख सफ़ेद पड़ गया था। उसकी दशा ऐसी थी, जैसे उस मनुष्य की होती है, जिसे फाँसी पर लटकाने को ले जाते हैं। उसके होंठ काँप रहे थे। वह युवा था, पर दुबला था; बाल कटे हुए थे; नक़्शा बिगड़ा हुआ था। जिस मनुष्य को ढकेल कर वह अन्दर घुसा था, वह उसके पीछे आया, और उसके कंधों को पकड़ लिया। वह पुलीस का अफ़सर था। मिकोलका ने उसको

फिर ढकेल दिया। बहुत-से लोग दरवाजे पर इकट्ठे हो गए थे; कुछ अन्दर भी आना चाहते थे।

पारफ़ीरियस ने चिढ़कर, आश्चर्य से कहा—"निकल जाओ। जब बुलाए जाओ, तब आना। इस मनुष्य को यहाँ क्यों ले आए हो?"

मिकोलका घुटनों के बल बैठ गया।

मजिस्ट्रेट ने आश्चर्य से कहा—"तुम क्या करते हो?"

मिकोलका ने ज़ोर से कहा—"क्षमा! मैं अपराधी हूँ, मैंने ख़ून किया है।"

कुछ देर के लिये कमरे में सन्नाटा हो गया। जैसे, सबको पक्षाघात हो गया। पुलीस के अफ़सर ने क़ैदी को पकड़ने की चेष्टा न की, और दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हो गया।

पारफ़ीरियस ने, जब उसकी घबराहट दूर हुई, कहा—"तुम क्या कहते हो?"

मिकोलका ने रुककर उत्तर दिया—"मैं ख़ूनी हूँ।"

मजिस्ट्रेट घबरा गया था। वह बोला—"क्या··तुम क्या? तुमने किसका ख़ून किया है?"

मिकोलका ने एक क्षण रुककर उत्तर दिया—"मैंने एलेन एवानोवना को कुल्हाड़ी से मारा, और उसकी बहन एलिज़बेथ को। मैं पागल था।"

यह उत्तर सुनकर पारफ़ीरियस सोचने लगा। गवाहों को पारफ़ीरियस ने बाहर जाने को कहा। वे बाहर चले गए। दरवाज़ा बन्द हो गया। रोडियन कोने में खड़ा मिकोलका की ओर देख रहा था। मजिस्ट्रेट कभी मिकोलका को और कभी रोडियन को देखता था। क्रोध-भरी आवाज़ में मजिस्ट्रेट ने मिकोलका से कहा—"जो बात पूछी जाय, उसका उत्तर दो। पागलपन की बात न कहो। यह प्रश्न तुमसे नहीं पूछा गया। अच्छा बोलो, तुम ख़ून के अपराधी हो?"

मिकोलका ने उत्तर दिया—"मैं स्वीकार करता हूँ, मैं खूनी हूँ।"

"अच्छा, तुमने ख़ून किस शस्त्र से किया ?"

"कुल्हाड़ी से, जिसे मैंने इसी काम के लिये मोल ली थी।"

"जल्दी न करो। तुमने यह काम अकेले किया है ?"

मिकोलका प्रश्न को नहीं समझ सका।

"इस काम में तुम्हारा कोई और भी साथी था ?"

"नहीं, मिस्त्री निर्दोष है, उसने हत्या में कोई भाग नहीं लिया।"

"मिस्त्री को बचाने की इतनी जल्दी न करो। मैंने ऐसा कोई प्रश्न नहीं पूछा। परन्तु यह बात कैसी है कि चौकीदारों ने तुम दोनों को ज़ीने के नीचे भागते देखा था ?"

"मैं जानकर मिस्त्री के पीछे दौड़ा था। संदेह को दूर करने के लिये ऐसा मैंने किया था।"

पारफ़ीरियस ने क्रोध से कहा—"बस, रहने दो।" फिर मन में कहा, यह मनुष्य सच नहीं बोल रहा है। मजिस्ट्रेट की आँखें रोडियन की आँखों से मिलीं। मिकोलका की जाँच करते हुए वह रोडियन की उपस्थिति को भूल गया था। रोडियन को वहाँ देखकर वह ज़रा बेचैन-सा हो गया। उसके पास जाकर बोला—"रोडियन, क्षमा करो, अब तुम्हारा कोई काम यहाँ नहीं है। मैं स्वयं...तुमने यह आश्चर्ययुक्त घटना देखी, इसलिये कृपा करके...।" रोडियन का उसने हाथ पकड़ा, और दरवाजे की ओर ले गया।

"तुम इसकी आशा नहीं करते थे।" सचमुच मजिस्ट्रेट घबरा गया था; परन्तु अब उसने अपने को सँभाल लिया था।

"तुमको भी तो ऐसी आशा न थी, तुम्हारा हाथ कैसा काँप रहा है।"

"पारफ़ीरियस, तुम भी तो काँप रहे हो।"

"ठीक है, मैं इसकी आशा नहीं करता था।" दोनों दरवाजे पर पहुँच गए थे, और मजिस्ट्रेट रोडियन से अपना पीछा छुड़ाना चाहता था।

रोडियन ने चिढ़ाकर कहा—"क्या अब तुम अपना अचम्भा मुझको न दिखाओगे ?"

"आवाज़ नहीं निकलती है, तुम हँसी करते हो। अच्छा, फिर मिलेंगे।"

"नहीं-नहीं, अब न मिलेंगे।"

पारफ़ोरियस ने हकलाते हुए कहा—"जैसी ईश्वर की इच्छा।"

बाहर जाते हुए रोडियन ने देखा कि बाबू लोग उसको घूर रहे हैं। कमरे में उसने उन दो चौकीदारों को देखा, जिनसे उसने पुलीस के दफ्तर में चलने को कहा था। वे कुछ प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही वह बाहर पहुँचा, उसने पारफ़ोरियस को पीछे से चिल्लाते हुए सुना। मजिस्ट्रेट उसके पीछे दौड़ा आ रहा था। वह मुड़ा।

"रोडियन, एक बात सुनते जाओ। ईश्वर जाने, यह मामला कैसे समाप्त होगा। परन्तु, फिर भी, नियम के अनुसार मुझे तुमसे कुछ प्रश्न करने हैं। इसलिये मुझे विश्वास है कि हम फिर मिलेंगे।" वह कुछ और भी कहना चाहता था, परन्तु कुछ कहा नहीं।

रोडियन अब आपे में था, और मजिस्ट्रेट को चिढ़ाना चाहता था। वह बोला—"पारफ़ीरियस, मेरी कठोर बातों को क्षमा करो।"

"ऐसा मत कहो, मैं स्वयं भी कठोर हो जाता हूँ। परन्तु, हम फिर मिलेंगे। ईश्वर ने चाहा, तो बहुधा मिला करेंगे।"

"क्या हममें परस्पर मित्रता हो जायगी ?" रोडियन ने पूछा।

"संभव है, हो जाय।" और, आँख मारकर पारफ़ीरियस ने कहा—"तुम निमंत्रण में जा रहे हो ?"

"मैं तो ज़नाज़े में जा रहा हूँ।"

"हाँ-हाँ, परन्तु अपने स्वास्थ्य की चिन्ता रक्खो।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूँ। परन्तु मेरी यही प्रार्थना है कि आज से अधिक आपको इस काम में सफलता प्राप्त हो। आपके काम करने के ढंग बड़े अनोखे हैं।"

मजिस्ट्रेट जाते-जाते रुक गया, और बोला—"इनमें क्या अनोखा-पन है ?"

"देखिए, इस बेचारे मिकोलका को अपराध स्वीकार कराने के लिये आपने कितना तंग किया होगा। निस्सन्देह रात-दिन आप इससे कहते रहे होंगे कि तुम ख़ूनी हो, तुम ख़ूनी हो! अपने मनोविज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार आपने उसे बहुत ही तंग किया होगा। अब जब वह अपना दोष स्वीकार करता है, तो आप एक नया राग अलापते हैं कि तुम झूठे हो, तुम ख़ूनी नहीं हो, तुम सच नहीं बोलते हो। क्या इन सब बातों को देखकर मैं ऐसा परिणाम निकालने के लिये बाध्य नहीं हूँ कि आपके ढंग अनोखे हैं ?"

"हाँ-हाँ, तो तुमने इतने ही से इस बात को समझ लिया कि मैं यह समझता हूँ कि मिकोलका सच नहीं बोल रहा है ?"

"मैं ऐसा क्यों न समझता ?"

"तुम्हारा दिमाग़ बहुत अच्छा है, कोई बात तुमसे नहीं छिपती। तुमको हँसी अच्छी लगती है, और तुम हँसी करना जानते हो। 'गोगोल'-लेखक में भी यही गुण पाए जाते थे।"

"हाँ।"

"हाँ, फिर मिलेंगे।"

"अच्छा, फिर मिलेंगे।"

युवा अपने घर पहुँचा। वहाँ पहुँचकर पलँग पर लेट गया, और पन्द्रह मिनट तक अपने विचारों को ठीक करता रहा; क्योंकि वह बहुत घबराया हुआ था। मिकोलका के आचरण के विषय में उसकी कुछ समझ में न आया। इस भेद की कुंजी वह न पा सका। इस घटना से होनेवाले परिणाम को वह अच्छी तरह समझ गया। मिको-लका का बयान झूठा पाया जायगा, और फिर मुझ पर संदेह होगा। परन्तु इस समय मैं स्वाधीन हूँ, और मुझको भावी भय के लिये

सन्नद्ध हो जाना चाहिए। बात साफ़ हो रही है। रोडियन अपनी भेंट का हाल याद करके काँप गया। पारफ़ोरियस की सब बातों का समझना उसके लिये कठिन हो गया। परन्तु, फिर भी, वह इतना समझ गया कि मैं अभी बड़े भयंकर संकट से बचकर आया हूँ। थोड़ी देर और बातचीत होती, तो मेरा अन्त था। मेरे चरित्र को जानकर मजिस्ट्रेट ने मुझको फसाना चाहा था; परन्तु उसका खेल मेरी समझ में आ गया। मैंने बहुत-सी बातें अनुचित कह डालीं। ऐसा विदित होता है कि उसके पास अभी तक कोई प्रमाण मेरे विरुद्ध नहीं है। परन्तु पारफ़ोरियस क्या करना चाहता था? अवश्य वह कोई नई चाल खेलना चाहता था। यदि कोई बनावटी बात थी, तो थी क्या? मिकोलका न आता, तो न-मालूम यह भेंट कैसे समाप्त होती?"

रोडियन कोच पर बैठा हुआ हाथ पर सिर रक्खे सोच रहा था। उसका सारा शरीर काँप रहा था। वह उठा, टोपी उठाई, और एक क्षण सोचकर दरवाजे की ओर बढ़ा। कम-से-कम आज कोई भय की बात नहीं। एकबारगी उसको कुछ खयाल आया, और उसने सोचा कि कैथराइन के यहाँ चलूँ। जनाजे में तो देर हो गई थी; परन्तु खाने में पहुँच सकता हूँ। वहाँ सुनिया मिलेगी। उसको हँसी आ गई, और उसने कहा—"आज ही, आज ही, हाँ इसी दिन होना चाहिए।" दरवाज़ा खोलते ही वह आप ही आप खुल गया। वह भयभीत होकर अन्दर की ओर हटा। उसके सामने वही मनुष्य खड़ा था, जो कल पाताल-लोक से निकला था। आगन्तुक चौखट पर खड़ा हो गया, और रोडियन को देखकर आगे बढ़ा। वह कल ही के-से कपड़े पहने था, परन्तु उसका मुख कल का-सा न था। वह दुःखी था, और ठण्डी साँसें भर रहा था।

रोडियन मृतक के समान पीला पड़ गया। बोला—"तुम क्या चाहते हो?"

उस मनुष्य ने कुछ उत्तर न दिया, और बड़ी नम्रता से सिर झुका लिया। उसका सिर दरी से छू गया। रोडियन ने पूछा—"तुम कौन हो?"

उसने ने धीरे से कहा—"मैं क्षमा चाहता हूँ।"

"किस बात की?"

"अपने बुरे विचारों की।"

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। "जब कल आप आए थे, और शराब के नशे में आपका दिमाग़ काम नहीं करता था, तब मैं आपसे नाराज़ हुआ था। आपने खून के धब्बों के विषय में प्रश्न किए थे, और चौकीदारों से कहा था कि पुलीस के दफ्तर ले चलो। मुझको यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि उन लोगों ने शराबी समझकर आपको छोड़ दिया। इस कारण मुझे रात-भर नींद नहीं आई। मुझे आपका पता याद था। मैं कल यहाँ आया भी था।"

रोडियन ने बीच में टोककर कहा—"तो कल तुम्हीं यहाँ आए थे?"

"हाँ, मैंने ही आपका अपमान किया था।"

"तो तुम्हीं उस घर में थे।"

"हाँ, मैं ही मुख्य द्वार पर खड़ा था, जब आप वहाँ गए थे। क्या आप मुझको भूल गए हैं? मैं वहाँ बहुत दिन से रहता हूँ। मैं फ़र बनाने का काम करता हूँ।"

रोडियन की आँखों के सामने सारा दृश्य आ गया। फाटक के नीचे बहुत-से मनुष्य और स्त्रियाँ थीं। किसी ने कहा था कि पुलीस के सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास ले चलो। जिस मनुष्य ने ऐसा कहा था, उसका नाम रोडियन को याद न था, और अब भी उसे उसने न पहचाना। परन्तु यह उसे स्मरण था कि मैं उसके संग पुलीस के दफ्तर जाने को तैयार हो गया था। कल का भयंकर भेद आज साफ़

हो गया। घबराकर न-मालूम मैं क्या कर डालता। यह मनुष्य केवल यही कह सकता था कि मैं बुढ़िया के कमरे में गया, और खून के धब्बों के विषय में प्रश्न किए। इसके अतिरिक्त पारफ़ीरियस कुछ नहीं जानता। यह तो कोई प्रमाण नहीं। यदि कोई नई बात न निकले (और, मुझे विश्वास है कि अब कोई नई बात न निकलेगी), तो कुछ हानि नहीं हो सकती। यदि मुझे पकड़ भी लें, तो मुझको दोषी नहीं प्रमाणित कर सकते। रोडियन के मन में एक और विचार आया कि पारफ़ीरियस को अभी-अभी मेरे वहाँ जाने का हाल मालूम हुआ है।

उसने पूछा—"तुम क्या आज पारफीरियस से यह बातकहने गए थे?"

"कौन पारफीरियस?"

"मजिस्ट्रेट।"

"हाँ, मैंने उससे कहा। चौकीदार नहीं जाते थे, मैं स्वयं गया।"

"आज?"

"हाँ, तुम्हारे पहुँचने के एक क्षण पहले मैं वहाँ पहुँचा था। मजिस्ट्रेट की और तुम्हारी सब बातें मैंने सुनीं। तुम बड़ी बेचैनी में होगे।"

"कहाँ? कैसे? कब?"

"मजिस्ट्रेट के यहाँ, मैं दूसरे कमरे में बंद था। वहाँ से सब सुन रहा था।"

"क्या तुम्हीं वह 'अचम्भा' थे? परन्तु यह कैसे हुआ? बताओ तो।"

उस मनुष्य ने कहा—"मैंने देखा कि चौकीदार पुलीस में नहीं गए; क्योंकि वे कहते थे कि रात बहुत हो गई है, दफ्तर बन्द हो गया होगा। तब मुझको बहुत असन्तोष हुआ, और मैंने यह इरादा कर लिया कि दूसरे दिन अर्थात् कल जाकर सब कहूँगा। मैंने जाँच की, और आज मजिस्ट्रेट के पास गया। पहली बार वह नहीं मिला। दूसरी बार घण्टे-भर बाद मैं फिर गया। फिर भी वह नहीं मिला। तीसरी बार मैं उसके

सामने पेश किया गया । मैंने सारी कहानी, जैसी हुई थी, कह सुनाई । मेरी कहानी सुनकर वह कमरे में कूदने लगा, और छाती पीटकर कहने लगा कि ऐ बदमाशो, इस तरह तुम अपना धर्म करते हो। यदि यह बात मुझे पहले से मालूम होती, तो मैं उसको पुलीस से पकड़वा मँगवाता। यह कहकर वह बाहर की ओर झपटा, किसी को पुकारा, और उससे कुछ कहा। और, फिर आकर गालियाँ देते हुए मुझसे प्रश्न करने लगा । मैंने उससे कुछ नहीं छिपाया । मैंने उससे यह भी कहा कि कल मुझको उत्तर देने में तुम भयभीत हुए, और तुमने मुझको पहचाना भी नहीं । वह अपनी छाती पीटता रहा, चिल्लाता रहा, और कमरे में नाचता रहा। इसी बीच में तुम्हारे आने की सूचना दी गई। उसने एक कुरसी लाकर मुझको दी, और मुझसे कहा कि इस दरवाजे के पीछे चले जाओ, और जो कुछ भी सुनो, ज़रा भी न हिलना । मुझे अभी तुमसे कुछ और बातें पूछनी हैं । यह कहकर उसने मुझे कमरे में बंद कर दिया । ज्यों ही मिकोल्का लाया गया, उसने तुमको बाहर निकाल दिया। और, फिर मुझे खोलकर कहा कि जाओ, अभी मैं तुमसे कुछ और पूछूँगा।"

"तुम्हारी उपस्थिति में उसने मिकोल्का से कुछ पूछा ?"

"मैं आपके आने के अनन्तर शीघ्र ही वहाँ से चला आया; मेरे आने के बाद उसने मिकोल्का की जाँच की।" अपनी कहानी कहकर उस मनुष्य ने ज़मीन पर सिर रक्खा, और कहा—"मेरे अपराधों को क्षमा करो, और उसको भूल जाओ ।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"ईश्वर तुमको क्षमा करेगा।" यह सुनकर उस मनुष्य ने फिर सिर झुकाया, और धीरे-धीरे चला गया ।

रोडियन को नई आशा उत्पन्न हुई, और उसने निश्चय समझ लिया कि कोई प्रमाण नहीं है, सब बातों का उत्तर दिया जा सकता है । वह कमरे के बाहर चला, और हँसते-हँसते पछताने लगा कि मैं क्यों इतना घबरा गया था ।

पवित्र पापी

पाँचवाँ भाग

न्याय की खोज

—❀—

पहला परिच्छेद

उस भयंकर अवसर के बाद दूसरे ही दिन प्रातःकाल जब लूशिन का रैस्कालनिकाफ़ के कुटुम्ब की स्त्रियों से झगड़ा हुआ, लूशिन को यह स्पष्ट विदित हो गया कि वह सचमुच झगड़ा ही था। रात-भर उसके अभिमान को जो ठोकर लगती रही, उससे वह बेचैन रहा। प्रातःकाल उठते ही लूशिन को यह ख़याल हुआ कि अपना मुँह शीशे में देखूँ कि कहीं रात-भर की बेचैनी से पित्त तो नहीं बढ़ गया। सौभाग्य से यह भय अकारण था। अपना पीला, परन्तु प्रतिष्ठित मुँह दर्पण में देखते हुए उसको यह ख़याल आया कि डोनिया के स्थान को पूरा करने के लिये कठिनाई न होगी। कदाचित् उससे अच्छी ही कन्या मिल जाय। तुरन्त ही उसने इस आशा को दूर किया, और गले को साफ़ करते हुए उसने देखा कि सेमेनोविश लेबेजेडनिकाफ़—जो उसके साथ कमरे में रहता था—उसको देखकर हँस रहा है। उसका क्रोध यह सोचकर और बढ़ गया कि मैंने अपनी बातें इसको क्यों बताईं। यह दूसरी मूर्खता मैंने की कि मैंने अपना हाल इसको बता दिया।

लूशिन का दुर्भाग्य दिन-भर उसके साथ रहा। कचहरी में मुकदमे में निराशा हुई। सबसे अधिक दुःख की बात यह थी कि वह मकान के मालिक से, जिसको उसने विवाह के विचार से लिया था, कुछ फैसला न कर सका। यह व्यक्ति एक जर्मन था, जो बहुत धनवान हो गया था। उसने सुलह की बातचीत नहीं सुनी; और यद्यपि लूशिन ने मकान छोड़ दिया, फिर भी वह पूरा किराया माँगता रहा। फ़रनीचर-वाले ने भी उसकी बात न मानी, और जो बयाना उसने पाया था, उसको देने से इनकार कर दिया। लूशिन ने दाँत किटकिटाते हुए कहा—क्या फ़रनीचर के लिये मुझे विवाह करना ही पड़ेगा? इस विचार के आते ही उसको नई आशा उत्पन्न हुई। उसने सोचा, क्या यह संभव है? क्या कोई आशा नहीं? क्या अब कोई ढंग नहीं निकल सकता कि जिससे फिर वह मेरे वश में आवे? डोनिया की सुन्दरता ने काँटों के समान उसके हृदय को बेध दिया था। इस समय उसको बड़ी कठिन वेदना हो रही थी, और यदि इच्छा-मात्र से ही सब कुछ हो जाता, तो वह रोडियन को अब तक मार चुका होता।

दूसरी मूर्खता, जो मैंने की, यह थी कि मैंने उनको कुछ धन नहीं दिया। यहूदी के समान मैं कंजूस क्यों हो गया? मैंने सोचा था कि इस समय कठिनाइयों में होने के कारण बाद को वह मुझको ईश्वर का अवतार समझेगी; परन्तु अब तो वह मेरे हाथ से निकल गई। यदि मैंने उसको १५ सौ रूबल दिए होते, या अँगरेज़ी वस्तु-भाण्डार से कोई वस्तु उनके लिये मोल ला दी होती, तो वह मुझको उदार-हृदय का मनुष्य समझती, और ऐसे सहज में न छोड़ देती। उस दशा में वह मेरे एहसान से दबी हुई होती, और झगड़ा होने पर धन और वस्तु वापस देना अपना धर्म समझती, जो कठिन और असम्भव होता। इसके अतिरिक्त वह ऐसे उदार-हृदय मनुष्य को निकाल न देती। मैंने बड़ी भूल की।

लूशिन ने दाँत किटकिटाए। वह अपने को दिल में मूर्ख समझने लगा। इस परिणाम पर पहुँचकर वह अपने रहने के स्थान में बहुत ही निराश और चिड़चिड़ा होकर घुसा। कैथराइन के निमंत्रण के कारण जो हुल्लड़ वहाँ हो रहा था, उससे वह कुछ उत्सुक हुआ। इस निमंत्रण का हाल उसने कल सुना था। उसको भी निमंत्रण दिया गया था। परन्तु इस ध्यान में मग्न होने के कारण उसने उस ओर कुछ ध्यान न दिया था। कैथराइन की अनुपस्थिति में (वह स्मशान गई हुई थी) मैडम लेपेवेशल मेज़ के पास, जिस पर सब चीजें रक्खी हुईं थीं, इधर-उधर टहल रही थी। मकान की मालकिन से पूछने पर लूशिन को मालूम हुआ कि एक अच्छा निमंत्रण है, घर के सब रहनेवालों को निमंत्रित किया गया है। उनमें बहुत-से मृतक को जानते भी न थे, यहाँ तक कि सेमेनोविश लेपेजेर्डानिकाफ़ को—जिसका कैथराइन से झगड़ा हो चुका था—भी निमंत्रण दिया गया था। लूशिन के आने से वह अपने को कृतकृत्य समझेगी; क्योंकि मकान के रहनेवालों में लूशिन सबसे प्रतिष्ठित था।

कैथराइन अपने मकान की मालकिन के झगड़े को भूल गई थी, और उसको भी निमंत्रित किया था। इसीलिये इस समय मैडम बहुत प्रसन्नता से इधर-उधर घूम रही थी। मैडम शोक के वस्त्र होने पर भी अपना नया रेशमी गाउन फड़फड़ा रही थी। सब बातें मालूम होने पर लूशिन के हृदय में एक विचार आया, और वह अपने कमरे या यों कहिए कि लेपेजेर्डानिकाफ़ के कमरे में गया। उसने यह सुना कि अतिथियों में रोडियन भी होगा। उस दिन लेपेजेडनिकाफ़ घर ही पर था। लूशिन और लेपेजेर्डानिकाफ में एक विचित्र संबंध था। लूशिन उसके घर में आते ही उससे अत्यंत घृणा करता था, और कुछ डरता भी था।

सेंटपीटर्सबर्ग आने पर लूशिन पहले लेपेजेर्डानिकाफ़ के यहाँ केवल अपने धन की रक्षा के विचार ही से नहीं ठहरा। परन्तु उसने

यह भी सुना था कि उसका पहला विद्यार्थी लेपेजेडनिकाफ़ राजधानी के उदार-दल में है, और कुछ समाज में उसका आदर भी होता है। बहुत दिनों से लूशिन इन उदारदलवालों से डरता था; क्योंकि वे सब कुछ जानते थे, किसी का सम्मान नहीं करते थे, और प्रत्येक मनुष्य से लड़ने को उद्यत रहते थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि राजधानी से बाहर होने के कारण उसको इस विषय पर कुछ अच्छी तरह मालूम न था। औरों के समान उसने भी यह सुना था कि सेंटपीटर्सबर्ग में उदार दलवाले निहिलिस्ट और-और बहुत-से दल हैं। और-और लोगों के सदृश उसने भी इन दलों के विषय में विचित्र विचार स्थिर कर लिए थे। वह इस बात से बहुत डरता था कि युगान्तर-दलवाले लोगों के विषय में पूछताछ किया करते हैं। सेंटपीटर्सबर्ग में आते ही उसका यह भय बहुत बढ़ गया था। जो दो मनुष्य अच्छे पदों पर थे, और जिन्होंने लूशिन की सहायता भी की थी, उनसे इस दलवाले नाराज़ हो गए थे, और उसका परिणाम भी बुरा हुआ था। इस कारण राजधानी में आते ही लूशिन ने इस बात का निर्णय किया कि वह इन युवकों से मित्रता का भाव प्रकट करेगा। लेपेजेडनिकाफ़ से उसको आशा थी कि वह उसकी सहायता इस बात में करेगा। रोडियन के यहाँ जो लूशिन ने बातचीत की थी, उससे यह प्रकट होता था कि उसने इस दलवालों की बहुत-सी बातें जान ली हैं।

सेमेनोविश एक सरकारी दफ्तर में नौकर था। उसका कद छोटा था, बाल सफ़ेद, और गलमूछें थीं। नेत्र-प्रदाह सर्वदा रहता था; दिल का साफ़ परन्तु बातचीत से अहंकारी विदित होता था। उस स्थान के रहनेवालों में वह प्रतिष्ठित समझा जाता था; क्योंकि वह शराब नहीं पीता था, और अपना किराया बराबर दे देता था। इन अच्छाइयों के अतिरिक्त वह कुछ थोड़ा-सा मूर्ख भी था। उसको नए उदार-दल से प्रेम हो गया था। वह उन अगणित मूर्खों में था, जो सदा

नए विचारों के पीछे दौड़ते हैं, और अपनी मूर्खता के कारण अपने ही दिल का अपमान करते हैं। दयालु होने पर भी लेपेजेडनिकाफ़ को अपना पुराना गुरु लूशिन असहनीय होने लगा था। घृणा पारस्परिक थी। मूर्ख होते हुए भी लेपेजेडनिकाफ़ यह समझ गया था कि लूशिन हृदय से उससे घृणा करता है और ऐसे मनुष्य के साथ रहना असंभव है। उसने फ़ोरियर के नियम और डारविन के सिद्धान्त लूशिन को समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु लूशिन पहले तो उसको घृणा की दृष्टि से सुनता रहा; परन्तु अब अपने युवा गुरु पर वाक्यबाण छोड़ने लगा था। लूशिन यह समझ गया था कि लेपेजेडनिकाफ़ केवल मूर्ख ही नहीं है, झक्की भी है, और अपने दल में उसका कोई आदर नहीं है। वह सदा हलचल की बातचीत करता था; परन्तु किस प्रकार से हलचल होगी, यह नहीं समझा सकता था। ऐसे आदमी से डरना व्यर्थ था।

यह कहना आवश्यक होगा कि लूशिन ने आने पर आरंभ में सेवेनोविश की बहुत-सी बातें सही थीं। लूशिन बहुधा लेपेजेडनिकाफ़ से यह सुना करता था कि आपने बहुत अच्छा किया कि मेशेशांकिया-स्ट्रीट में नया दल स्थापित किया। आप बहुत बुद्धिमान हैं, और यदि आपके विवाह के एक महीने बाद आपकी स्त्री किसी प्रेमी से संबंध कर ले, तो आप नाराज़ न होंगे; क्योंकि यदि वह ऐसा न करे, तो आपके कभी बच्चे होने का सौभाग्य प्राप्त न होगा। लूशिन इन बातों को सुनता रहा था। प्रातःकाल उसने कुछ हिस्से मोल लिए थे, और अब मेज़ पर बैठा रुपए गिन रहा था। लेपेजेडनिकाफ़ निर्धन था, वह बैंक के इन नोटों को घृणित उदासीनता के साथ देख रहा था। लूशिन यह विश्वास न करता था कि यह घृणा हार्दिक है। लेपेजेडनिकाफ़ यह समझता था कि लूशिन मेरे सामने रुपए इसलिये गिनता है कि मैं समझूं कि मैं उसके सामने कुछ नहीं, और मुझमें और उसमें बहुत अन्तर है। इस समय लूशिन लेपेजेडनिकाफ़ के वार्तालाप को

बिल्कुल नहीं सुन रहा था, केवल कभी-कभी बीच-बीच में कोई असभ्य बात कह देता था। सेमेनोविश उसकी बातों पर कुछ ध्यान न देता था; क्योंकि वह यह समझता था कि उसका मन निकाले हुए प्रेमी का-सा हो रहा है, और इसलिये उसने इस विषय पर बात-चीत आरंभ की कि जिससे उसके योग्य मित्र को शान्ति मिले।

लूशिन ने बात काटकर पूछा—"क्या उस विधवा के यहाँ आज निमंत्रण है?"

"क्या आप नहीं जानते? मैंने तो कल ही इसके विषय में कहा था। मैंने सुना है, आप भी निमंत्रित हैं, और कल ही तो आप उससे बातचीत कर रहे थे।"

"मैं कभी भी विश्वास नहीं कर सकता था कि इस दरिद्रता की दशा में यह मूर्खा स्त्री सभी धन, जो उस दूसरे गधे रोडियन ने इसको दिया है, निमंत्रण में व्यय कर देगी। अभी घर आते हुए मैंने शराब और तैयारियाँ देखीं हैं। अगणित आदमियों को उसने निमंत्रित किया है। क्या मुझको भी बुलाया है? मुझको तो याद नहीं। मैं नहीं जाऊँगा। मैं वहाँ जाकर क्या करूँगा? मैंने कल उससे केवल एक-आध मिनट बातचीत की था, और यह कहा था कि सरकारी अफ़सर की विधवा होने के कारण कदाचित् उसे सरकार से कुछ सहायता मिले। क्या इसी कारण उसने मुझे बुलाया है?"

लेपेजेडनिकाफ़ ने उत्तर दिया—"मेरी भी जाने की इच्छा नहीं है।"

"मैं समझता हूँ, तुमने एकबार उसको मारा था, इसलिये उसके साथ खाना अच्छा न लगेगा।"

"किसको मारा था? क्या बातें करते हो?"

"मैं कैथराइन के विषय में कह रहा हूँ। एक महीना हुआ, तुमने उसको मारा था। मुझको यह कल मालूम हुआ था। तुम्हारे सिद्धान्त उस समय कहाँ गए थे? स्त्रियों को वोट देने के अधिकार का

विचार उस समय क्या हुआ था? हा-हा-हा।" यह कहकर लूशिन शान्त होकर फिर रुपए गिनने लगा।

लेपेजेर्डानिकाफ़ ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया—"क्या बेहूदा बकते हो? बात ऐसी नहीं हुई थी, तुमको झूठी सूचना दी गई है। इस घटना के विषय में मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने केवल अपनी रक्षा की थी। कैथराइन मेरा मुँह नोचने के लिये झपटी थी, मेरी मूँछ उसने पकड़ ली थी। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य को आत्मरक्षा करने का अधिकार है। फिर, मैं मारपीट के विरुद्ध हूँ; क्योंकि यह एक प्रकार की स्वेच्छाचारिता है। मैं क्या करता? क्या मैं उसको उसकी इच्छानुसार काम करने देता? मैंने केवल उसको धक्का दे दिया।"

"हा-हा-हा।" लूशिन हँसने लगा।

"तुम उससे झगड़ा करना चाहते हो; क्योंकि तुम्हारा मिजाज़ बिगड़ा हुआ है। स्त्रियों के वोट के प्रश्न से इसका कोई संबंध नहीं। मेरा विवाद इस विषय में है कि यदि स्त्री सब प्रकार पुरुष के समान है—शारीरिक शक्ति में भी—तो यहाँ भी समानता होनी चाहिए। निस्सन्देह मैंने इस बात पर विचार किया है कि इस प्रश्न का उठाना ही व्यर्थ है; क्योंकि भावी समाज में झगड़े असम्भव होंगे, और खुल्लमखुल्ला मारपीट न होगी। इसलिये इस पर विचार करना व्यर्थ है। मैं इतना मूर्ख नहीं कि यह समझूँ कि झगड़े बिलकुल न होंगे। सम्भव है, अभी झगड़े हों, परन्तु फिर न रहेंगे। मुझसे और किसी से झगड़ा हो; परन्तु इस कारण मैं किसी का निमंत्रण अस्वीकार न करूँगा। यदि मैं आज निमन्त्रण में नहीं जाऊँगा, तो केवल एक सिद्धान्त के कारण। मैं इस मूर्खता की रीति को अर्थात जनाजे के निमंत्रणों को बंद करना चाहता हूँ। सम्भव है, उनकी हँसी उड़ाने में वहाँ जाऊँ। परन्तु दुर्भाग्य से वहाँ कोई पादरी न होगा, नहीं तो वहाँ मैं अवश्य जाता।"

"तो तुम्हारे यह कहने का यह प्रयोजन है कि उसके निमंत्रण

में जाकर तुम उसका और उसके निमंत्रण का अपमान करते।"

"अपमान नहीं, परन्तु विरोध प्रकट करता। इसी को सभ्यता का आन्दोलन कहते हैं, और प्रत्येक पुरुष का इसमें सहायता करना धर्म है। मैं एक नया विचार आरंभ कर देता, बीज बो देता, और वह बीज कभी-न-कभी फल लाता। क्या यह अपमान करना है? लोग आरंभ में बुरा मानेंगे; परन्तु शीघ्र ही वे समझने लगेंगे कि समाज की कुछ सेवा हुई है।"

लूशिन ने बात काटकर कहा—"तुम तो अपनी ही अलापते हो। परन्तु क्या तुम उस मृतक की पुत्री को जानते हो—वह जो दुबली-पतली कन्या है?—उसके विषय में जो कहा जाता है, वह सच है या झूठ?"

"इससे क्या? मेरे विचार में उसकी दशा साधारण स्त्रियों की-सी है। तनिक विचार करो, इस समय के समाज में चाहे वह साधारण न हो; क्योंकि वह अप्राकृतिक है। परन्तु भावी समाज में वह साधारण होगी, क्योंकि तब स्वाधीनता होगी। इस समय भी अपने ऊपर उसे पूर्ण अधिकार है। वह दरिद्र थी, और अपनी दरिद्रता के दूर करने के लिये वह अपनी पूँजी को क्यों न काम में लाती? भावी समाज में पूँजी का कुछ लाभ न होगा। परन्तु हँसमुख स्त्रियों की दूसरी दशा होगी, और नियमानुसार वे काम करेंगी। जहाँ तक दुनिया का संबंध है, मैं यह कहना चाहता हूँ कि उसका जीवन समाज के वर्तमान संगठन का खासा विरोध है। इस कारण मैं उसको बहुत अच्छा समझता हूँ, और उसकी प्रशंसा करता हूँ।"

"और, फिर भी मैंने सुना है कि तुमने उसको इस घर से निकलवा दिया!"

लेबेजेडनिकाफ़ क्रोधित होकर बोला—"दूसरा झूठ। बात ऐसी नहीं हुई। कैथराइन ने भूल की है; क्योंकि वह बात को नहीं समझी।

मैं विना किसी इच्छा के उसमें (सुनिया में) विरोध का भाव जागृत करना चाहता था। मैं और कुछ नहीं चाहता था । वह स्वयं यहाँ से चली गई।"

"क्या तुमने अपने दल का सभासद होने के लिये उसको निमंत्रण नहीं दिया ?"

"मैं इस समय भी इसका प्रयत्न कर रहा हूँ। (हँसते देखकर) हँसते क्यों हो ? हमारा दल पुराने दलों की तरह का न होगा । हम अपने पुरखों से बहुत आगे बढ़ गए हैं। यदि डो ब्रूलू बाफ़ और बेलेस्की भी क़ब्र से निकल आवें, तो मैं उनका विरोध करूँगा। इस समय तो मैं सुनिया के चरित्र को उन्नत कर रहा हूँ। उसका चरित्र बहुत अच्छा है ।"

"तो तुम अच्छे चरित्र का लाभ उठाते हो !"

"बिलकुल नहीं।"

"बिल्कुल नहीं,—हा-हा-हा- ! तुम मेरा विश्वास करो या न करो, मैं तुमसे कोई भेद नहीं रखना चाहता। मुझको बड़ा आश्चर्य है कि मेरे सामने वह कुछ घबरा जाती है, और चुप रहती है ।"

"अच्छा, यदि तुम उसके चरित्र का संगठन करना चाहते हो, तो तुमने उसको समझाया होगा कि चुप रहना मूर्खता है ।"

"नहीं, कैसे बेहूदा, मूर्ख तुम हो । तुम समय के कितने पीछे हो ! तुम कुछ नहीं समझते । हम स्त्रियों की स्वतंत्रता चाहते हैं, और तुम समझते हो कि स्त्रियों की स्वाभाविक लज्जा के प्रश्न को छोड़कर; क्योंकि मैं उसको एक बेहूदा और व्यर्थ बात समझता हूँ। परन्तु, फिर भी, मैं उसका चुप रहना समझ सकता हूँ। वह अपनी स्वाधीनता दिखाकर अपने अधिकार के अनुसार काम करती है । यदि वह खुशी से मुझसे कहे कि मेरे हो जाओ, तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा; क्योंकि वह लड़की मुझे अच्छी लगती है। परन्तु वर्तमान दशा में मुझसे अधिक कोई उससे नम्र व्यवहार नहीं करता। किसी ने उससे न्याय का व्यवहार नहीं किया।"

"मैं तुमसे कहूँगा कि कुछ उसको भेंट दो, तो तुम्हारा काम निकल जायगा।"

"तुम कुछ नहीं समझते हो। निस्सन्देह उसकी दशा को देखकर तुम उसकी हँसी उड़ा सकते हो। परन्तु प्रश्न दूसरा है। तुम उससे घृणा करते हो। एक बात को लेकर, जिसको तुम निंदित समझते हो, तुम उस व्यक्ति के साथ मनुष्यता का व्यवहार नहीं करते। तुम उसके स्वभाव को नहीं समझते।

लूशिन ने कहा—"क्या तुमसे उस लड़की से इतनी मित्रता है कि एक क्षण के लिये तुम उसको यहाँ बुला सकते हो। ? वे लोग कब्रस्तान से वापस आ गए होंगे। मेरा ख़याल है, मैंने उनके ज़ीने पर चढ़ने की आवाज़ सुनी है। मैं उससे कुछ कहना चाहता हूँ।"

लेपेजेडनिकाफ़ ने चकित होकर कहा—"क्यों ?"

"मैं उससे कुछ कहना चाहता हूँ। कल या परसों मैं यहाँ से चला जाऊँगा, और उसके पहले मैं उससे कुछ कहना चाहता हूँ। तुम हमारी भेट के समय यहाँ उपस्थित रहना; नहीं तो ईश्वर जाने, तुम क्या सोचोगे।"

"मैं कुछ विचार न करूँगा। मैंने तो यों ही तुमसे एक प्रश्न कर दिया। यदि तुमको उससे कुछ काम है, तो मैं उसको बुला लाऊँगा। मैं अभी बुलाए लाता हूँ, और मैं यहाँ ठहरूँगा भी नहीं।"

पाँच मिनट के बाद लेपेज़ेडनिकाफ़ सुनिया को बुला ले आया। वह चकित और चिन्तित थी। ऐसी दशा में वह सदा भयभीत हो जाती थी; नए मनुष्यों से वह घबराती थी। बचपन ही से उसका यह स्वभाव था, और अवस्था के साथ-साथ लज्जा भी बढ़ गई थी। लूशिन ने नम्रता और दया का व्यवहार करना उचित समझा। गंभीर और प्रतिष्ठित आदमी जब ऐसी युवा स्त्री से मिले, तो उसको उससे मित्रता के भाव से मिलना चाहिए। ऐसा विचार करके उसने सुनिया

को कुरसी पर बैठने को कहा। सुनिया कभी लेपेजेडनिकाफ़ को और कभी मेज़ पर रक्खे हुए रुपयों को देखने लगी। तुरन्त ही उसकी आँखें लूशिन पर पड़ीं, और वह उनको हटा न सकी। लूशिन उठा, और लेपेजेडनिकाफ़ को, जो बाहर जा रहा था, रोका। फिर धीरे से कान में पूछा कि क्या रोडियन आ गया है।

लेपेजेडनिकाफ़ ने उत्तर दिया—"हाँ, रोडियन आ गया है। तुम्हें उससे क्या काम है?"

"इस दशा में कृपया तुम यहाँ ठहरो; क्योंकि मैं इस स्त्री के संग अकेला नहीं रहना चाहता। बात तो कुछ नहीं है, परन्तु इसके फिर कुछ अर्थ न लगाए जायँ। मैं नहीं चाहता कि रोडियन वहाँ जाकर फिर कुछ कहे। मेरी बात समझ गए न?"

लेपेजेडनिकाफ़ ने उत्तर दिया—"समझ गया। तुम बिलकुल ठीक कहते हो। मेरी सम्मति में तो तुमको इतना नहीं डरना चाहिए; परन्तु तुम्हारी इच्छा के अनुसार मैं ठहरा जाता हूँ। मैं खिड़की के पास खड़ा हूँ, और तुम्हारी बातचीत में विघ्न न डालूँगा।"

लूशिन सुनिया के सामने आकर बैठ गया, और उसे ध्यान-पूर्वक देखने लगा। उसके मुख पर गंभीरता और कठोरता के भाव आ गए, मानों वह कह रहा है कि देवी, तुम्हारे विचार ठीक नहीं हैं। सुनिया का रंग फीका पड़ गया।

"सुनिया, कृपा करके अपनी प्रतिष्ठित माता से मेरी ओर से क्षमा माँगना। कैथराइन तुम्हारी माता है न?"

सुनिया ने उत्तर दिया—"हाँ, आप ठीक कहते हैं, वह मेरी माता है।"

तो कृपा करके उससे कह देना कि मुझको शोक है कि कई कारणों से मैं उसका निमंत्रण नहीं स्वीकार कर सकता।

सुनिया ने उठते हुए कहा—"मैं अभी कह दूँगी।"

लूशिन लड़की के भोलेपन पर और सांसारिक बातों के न समझने पर हँसा। फिर बोला—"अभी ठहरो, यदि इतना ही-सा काम होता, तो मैं तुमको यहाँ आने का कष्ट न देता। मुझको और भी कुछ काम है।"

प्रश्नकर्त्ता से संकेत पाकर सुनिया फिर बैठ गई। रंग-बिरंगे नोट, जो मेज़ पर पड़े थे, उसके नेत्रों को आकर्षित कर रहे थे। परन्तु शीघ्र ही उसने अपनी आँखें हटा लीं; क्योंकि दूसरे के धन की ओर देखना वह पाप समझती थी। कभी तो वह लूशिन की सोने की कमानी-वाली ऐनक, जिसे वह बाएँ हाथ में लिए था, देखती थी; और कभी उसकी दृष्टि उसकी सोने की अँगूठी पर, जिसमें पीला नग जड़ा था और जो बीच की उँगली पर चमक रही थी, पड़ती थी। अन्त में वह लूशिन को देखने लगी। कुछ देर चुप रहकर लूशिन बोला—"कल मैंने तुम्हारी माता से कुछ बातचीत की थी, जिससे मैं समझ गया कि उसकी दशा उसकी प्रकृति के विरुद्ध है।"

सुनिया ने उत्तर दिया—"हाँ, प्रकृति के विरुद्ध है।"

"या साफ़-साफ़ यों कहूँ कि वह किसी रोग से पीड़ित है।"

"हाँ, साफ़ तो यही है कि वह रुग्ण है।"

"ठीक है। मनुष्यता के भाव और दया से मैं चाहता हूँ कि मैं उसके कुछ काम आऊँ; क्योंकि वह बहुत दुखित अवस्था में है। मुझको विदित होता है कि इस समय इस अभागे कुटुम्ब को तुम्हारा ही आश्रय है।"

सुनिया उठी, और बोली—"महाशयजी, कल आपने ही उससे कहा था कि मैं इस बात का प्रयत्न करूँगा कि उसको सरकार से पेंशन मिले।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं है। मैंने केवल यह कहा था कि यदि वह एक ऐसे अफ़सर की विधवा होती, जो अपने कार्य में लगा हुआ मरता, तो संभव था कि उसको किसी प्रकार की सरकारी सहायता मिल जाती। परन्तु तुम्हारा पिता तो मरते समय नौकर भी न था। इसलिये ऐसी

आशा व्यर्थ है; क्योंकि तुम्हारा कोई अधिकार पेंशन पाने का नहीं है। क्या वह पेंशन के स्वप्न देख रही है? हा-हा-।"

सुनिया जाने के लिये फिर खड़ी हुई, और बोली—"हाँ, वह पेंशन का स्वप्न ज़रूर देखती है। अपने सीधे स्वभाव के कारण वह प्रत्येक बात का विश्वास कर लेती है।"

"एक बात और है। अभी तुमने सब नहीं सुना।"

"न, अभी सब नहीं सुना?" सुनिया ने हकलाकर कहा।

"अच्छा, कृपया बैठ जाओ।" सुनिया घबराकर तीसरी बार बैठ गई।

"उसको दुखित अवस्था में जानकर मैं यह सोच रहा हूँ कि अपनी शक्ति के अनुसार मैं उसकी कुछ सहायता करूँ। उसके लिये चन्दा इकट्ठा करूँ या चिट्ठी डालूँ, जैसा साधारण प्रकार से ऐसी दशा में किया जाता है। ऐसा हो सकता है कि नहीं?"

सुनिया ने हकलाते हुए कहा—"यह आपकी कृपा है। ईश्वर...।"

"ऐसा हो सकता है। ख़ैर, इसकी बातचीत हम शाम को करेंगे, और इसकी नींव रक्खेंगे। सात बजे शाम को मुझसे मिलना। उस समय लेबजेढनिकाफ़ भी उपस्थित होगा। परन्तु एक बात का ध्यान रखना। आवश्यक बात है, और इसीलिये मैंने तुम्हें बुलाया है। मेरी सम्मति में कैथराइन के हाथ में रुपए देना उचित नहीं, मूर्खता है। आज के निमंत्रण ही को देखो, उसके पास जूते और मोजे तक नहीं हैं; परन्तु निमंत्रण में धन व्यय कर रही है। कल से फिर तुमको सारे कुटुम्ब के लिये रोटी का प्रबंध करना होगा। इसलिये मेरी सम्मति में उस विधवा को बिना बताए हुए चंदा इकट्ठा किया जाय, और उसका प्रबंध तुम्हारे द्वारा हो। क्यों, मेरा विचार कैसा है?"

"मैं नहीं समझती कि मैं आपको क्या उत्तर दूँ। ऐसा अवसर जीवन में केवल एक बार आता है, और अपने मृतक पति की स्मृति का आदर

करने के लिये वह बहुत चिन्तित थी। परन्तु जैसी आपकी इच्छा हो...। ईश्वर...। बेचारे अनाथ..." सुनिया कुछ कह न सकी। उसकी आँखों से आँसू बह चले।

"तो यह बात तय हो गई। अपने नातेदार के लिये मेरा चन्दा ग्रहण करो। मेरी यह इच्छा है कि मेरा नाम किसी को मालूम न हो। मुझे शोक है कि इस समय मैं और अधिक सहायता नहीं कर सकता।" यह कहकर लूशिन ने दस रूबल का नोट उसके हाथ में दे दिया। लड़की ने लज्जित होकर कुछ अस्पष्ट शब्द कहे, और वहाँ से चल दी। लूशिन दरवाजे तक उसको पहुँचा आया। वह कैथराइन के पास पहुँच गई। लेपेजेडनिकाफ़ इस दृश्य के समय खिड़की के पास खड़ा रहा या कमरे में टहलता रहा। सुनिया के जाने पर वह लूशिन के पास आया, और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर बोला—"मैंने सब सुना, और देखा। तुम्हारा आचरण बहुत ही अच्छा था। मैंने यह भी देखा कि तुम धन्यवाद नहीं चाहते थे। और, यद्यपि मैं गुप्तदान का विरोधी हूँ, क्योंकि वह दुःख को दूर नहीं करता, परन्तु बढ़ाता है; फिर भी मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे आचरण से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।"

लूशिन ने लेपेजेडनिकाफ़ की ओर ध्यान-पूर्वक देखकर कहा—"यह कोई बड़ी बात नहीं है।"

"नहीं, नहीं, जो मनुष्य तुम्हारे समान दुखी हो, वह दूसरों के फटे में पैर डालता है, और सामाजिक अर्थशास्त्र के नियमों के विरुद्ध भी काम करता है। परन्तु, फिर भी, उसका आचरण सराहनीय है; तुमसे मुझको ऐसी आशा न थी। तुमको कल की बात से क्यों ऐसा दुःख हुआ? तुमको नियमानुसार विवाह करने की क्या आवश्यकता है? मेरे प्यारे और उदार लूशिन, तुम क्यों विवाह की चिन्ता करते हो? तुम्हारी निराशा से मुझे प्रसन्नता होती है, और मैं खुश हूँ कि तुम स्वतंत्र हो, तथा मनुष्यमात्र को लाभ पहुँचा सकते हो।"

लूशिन ने उत्तर दिया—"मैं नियमानुसार शादियों के पक्ष में इसलिये हूँ कि मुझे दूसरों के बच्चों का पालन-पोषण न करना पड़े, जैसा स्वतंत्र विवाह में करना पड़ता है। और दूसरे, मैं यह नहीं चाहता कि मेरी स्त्री दूसरों के साथ संबंध रक्खे "

"बच्चों का प्रश्न तो ठीक हो जायगा। वह तो फिर बाद को होगा। परन्तु यह दूसरे मनुष्य के संबंध के विषय में आपने क्या कहा? ये बेहूदा विचार यूपांकेन का फैलाया हुआ है, भावी समाज में इसकी कोई चर्चा न होगी। प्यारे मित्र, स्वतंत्र विवाहों में ऐसी दशा न उत्पन्न होगी। यह तो जो नियमानुसार विवाह कभी टूट नहीं सकते, उनके विरोध में ऐसा होता है। मैं तो इससे बिलकुल नहीं घबराता। मैं तो अपनी स्त्री से—यदि वह ऐसा करे—यहाँ तक कहने को तैयार हूँ कि पहले तो मैं तुमसे प्रेम करता था, अब आदर भी करता हूँ; क्योंकि तुम समाज का विरोध करना जानती हो। तुम हँसते क्या हो? मैं समझ सकता हूँ कि यह बुरी बात है। परन्तु स्वतंत्रता के विवाहों में ऐसी बात न होगी। तुम्हारी स्त्री यह प्रमाणित कर देगी कि वह तुम्हारा आदर करती है; क्योंकि तुम उसकी स्वतंत्रता और प्रसन्नता में विघ्न नहीं डालते हो, और इतने सभ्य हो कि अपने प्रतिद्वन्द्वी से बदला तक लेने का विचार नहीं करते हो। सच तो यह है कि यदि मैं विवाह करूँ, और मेरी स्त्री लज्जा के कारण कोई मित्र न प्राप्त कर सके, तो मैं उसके लिये एक मित्र ला दूँगा, और उससे कहूँगा कि प्रिये, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरा आदर करो।"

इन बातों को सुनकर लूशिन को हँसी न आई। वह दूसरे विचारों में मग्न था। वह चिंता के कारण अपने हाथ मल रहा था। लेपेजेडनिकाफ़ को अपने मित्र की उदासीनता बाद को याद आई।

दूसरा परिच्छेद

यह समझाना कठिन होगा कि कैथराइन के दिमाग़ में इस निमंत्रण का विचार कैसे आया। रोडियन से पाए हुए धन का आधे से अधिक इस निमंत्रण में व्यय हो गया। कदाचित् कैथराइन को यह निश्वास था कि फफा कुटनीको को प्रसन्न करने के लिये यह निमंत्रण आवश्यक है। वह यह भी चाहती थी कि और रहनेवालों को यह भी विदित हो कि मृतक उन्हीं का-सा था; अथवा कदाचित् वह दरिद्रता के अहंकार की दासी थी। वे दरिद्रता की दशा में, प्रसन्नता या दुःख के अवसर पर, पैसा-पैसा ख़र्च कर डालते हैं कि जिससे लोग यह समझें कि वे भी हमारे सरीखे हैं। इस समय यद्यपि वह बहुत दरिद्र थी; परन्तु, फिर भी, वह इन सब दरिद्रों को यह दिखाना चाहती थी कि वह एक कर्नल की पुत्री है, इसका पालन-पोषण भले आदमियों की तरह ही नहीं, प्रत्युत धनाढ्यों का-सा हुआ है। वह यह भी दिखाना चाहती थी कि मैं सदा अपने ही हाथ से झाड़ू नहीं देती रही, और न बच्चों के कपड़े धोती रही हूँ।

शराब की बोतलें न तो बहुत थीं, और न अच्छे मेल की। मेडीरा (शराब) नहीं थी। लूशिन ने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें की थीं। ब्राण्डी, रम और लिकर बहुत घटिया मेल के थे। खाना एमेलिया के यहाँ बना था, और तीन-चार तरह का था। दो सामेवार उन अतिथियों के लिये रक्खी थीं, जो खाना खाने के बाद चा पीते हैं। कैथराइन ने ये सब चीजें मैडम के यहाँ एक किराएदार की सहायता से ली थीं, जिसके खाने का कोई ठिकाना न था। इस दरिद्र मनुष्य ने आरंभ ही से कैथराइन को सहायता की प्रतिज्ञा

की थी, और ३६ घंटे से इधर-उधर दौड़कर अपना उत्साह प्रकट कर रहा था। इस समय भी वह थोड़ी-सी बात के लिये इधर-उधर दौड़ता और कैथराइन के लिये सम्मति एकत्र करता था। सब से पहले कैथराइन ने इस उदार-हृदयवाले मनुष्य का धन्यवाद किया, और कहा कि इसकी सहायता के विना मैं कुछ नहीं कर सकती थी। कैथराइन का यह स्वभाव था कि प्रथम वह आनेवाले की प्रशंसा बहुत करती थी, उसके सहस्रों गुणों का वर्णन करती थी। फिर एकदम उसको भूल जाती थी, और फिर दूसरे से बातें करने लगती थी। उसके अनन्तर मैडम की बारी आई, और कैथराइन ने उसकी प्रशंसा करनी आरंभ की कि उसने खाना बहुत अच्छा बनवाया, और मेज़-तश्तरी आदि का प्रबंध स्वयं किया। श्मशान जाते हुए वह सब अधिकार मैडम को दे गई थी, और मैडम ने बड़ा अच्छा प्रबंध किया। तश्तरियाँ, शीशी के गिलास, छुरी और फोर्क, जो भिन्न-भिन्न किरायेदारों से उधार लिए गए थे, यद्यपि भाँति-भाँति के थे, तथापि सब अपनी-अपनी जगह पर सुशोभित थे। जब लोग मृतक का संस्कार करके लौटे, तो मैडम के मुख पर प्रसन्नता की रेखा थी। उसको इस बात का अभिमान था कि मैंने अपना काम बहुत अच्छी तरह कर लिया। वह शोक-प्रकाशक वस्त्र पहने हुए इधर से उधर टहल रही थी। टोपी में उसकी नई गोट लगी थी। अहंकार यद्यपि उचित था, फिर भी कैथराइन को अच्छा न लगा। टोपी की नई गोट से भी वह अप्रसन्न हुई। उसने सोचा कि यह मूर्ख जर्मन स्त्री अहंकारवाली है। तनिक विचार करने की बात है कि मेरे यहाँ आकर अपनी आज्ञा चलाती है। "मैं एक कर्नल की पुत्री हूँ, जिसके पिता के यहाँ चालीस-चालीस आदमी खाना खाया करते थे, और मैडम के समान व्यक्ति नौकरों के कमरे में भी नहीं आने पाते थे।" कैथराइन उस समय कुछ नहीं बोली कि अहंकार का दंड आज ही देना होगा या फिर कभी।

एक और बात से विधवा चिढ़ी हुई थी। पोल के अतिरिक्त और कोई मनुष्य भी, जो निमंत्रित थे, जनाजे के साथ नहीं गए थे। पर खाने के समय फटे कपड़े पहननेवाले भी आ डटे थे। अच्छे लोग नहीं आए थे। लूशिन, जो सबसे प्रतिष्ठित था, वहाँ नहीं था। कैथराइन ने एक दिन पहले सबसे उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। उसने लोगों को यह विश्वास दिलाया था कि लूशिन बहुत ही उदार-हृदय का आदमी, प्रतिष्ठित और धनवान है। उसके नातेदार बहुत बड़े-बड़े पदों पर हैं। वह उसके प्रथम पति का एक खास मित्र है। लूशिन उसके पिता के यहाँ आता था, और उसने वचन दिया है कि सरकार से वह उसे एक अच्छी पेंशन दिलवाएगा। यह कहना यहाँ पर अनुचित न होगा कि कैथराइन जब किसी के धन या नातेदारों की प्रशंसा करती थी, तो उसमें कोई उसका प्रयोजन न होता था; परन्तु केवल उसका आदर बढ़ाने के लिये ऐसा करती थी।

लूशिन की नक़ल करनेवाला लेपेजेड्निकाफ़ भी नहीं आया। वह अपने को समझता क्या है? कैथराइन ने दया करके उसको निमंत्रण दिया, और वह भी केवल इसलिये कि वह लूशिन के साथ रहता है। यदि एक को निमंत्रण दिया जाय, तो सदाचार के सिद्धान्तों के अनुसार दूसरे को भी निमंत्रित करना आवश्यक है। एक और फैशनेबल स्त्री और उसकी पुत्री भी नहीं आई थी। ये मैडम के यहाँ पन्द्रह दिन से रहती थीं, और इन्होंने कई बार मारमैलेडाफ़ के यहाँ शराब पीकर कोलाहल होने की शिकायत की थी। मैडम ने इस पर कैथराइन को डराया भी था कि मैं सबको निकाल बाहर करूँगी; क्योंकि उसके कुटुम्ब के कारण प्रतिष्ठित किराएदारों को कष्ट होता है। कैथराइन ने इस समय इन दोनों को भी निमंत्रित किया था, विशेषकर इस कारण कि यह प्रतिष्ठित स्त्री जब सीढ़ी में इसको मिलती थी, तो इसकी ओर से पीठ फेर लेती थी। उनको बुलाकर कैथराइन यह दिखाना

चाहती थी कि वह बड़े उच्च विचारों की स्त्री है, और खाते हुए उसको यह बताना चाहती थी कि मैं सदा से इस दरिद्रता की दशा में नहीं रही हूँ, और मेरा पिता गवर्नरी कर चुका है। इसलिये उसकी ओर से पीठ फेरना उचित नहीं है। एक मोटा लेफ्टिनेंट कर्नल (वास्तव में वह स्टाफ़-कैपटेन था) भी नहीं आया था। परन्तु उसके न आने का बहाना था। एक दिन पहले से उसे गठिया का कष्ट हो रहा था।

पोल के अतिरिक्त एक बहुत ही भद्दा सरकारी बाबू गंदे कपड़े पहने, मछली के समान शान्त बैठा था। फिर एक डाकखाने का पेंशनयाफ्ता बाबू, जो कुछ बहरा और अंधा था और जिसका किराया कोई और मनुष्य दिया करता था, बैठा था। इसके बाद एक पेंशनयाफ्ता सिपाही बैठा था, जो शराब में मस्त होकर क़हक़हा मारकर हँस रहा था। एक अतिथि कैथराइन को विना प्रणाम किए ही बैठ गया। दूसरे के पास उचित कपड़े न थे, वह ड्रेसिंग गाउन पहनकर ही आ गया। पोल की सहायता से मेडम ने इसको निकाल बाहर किया। पोल अपने दो ग्राम-निवासियों को भी बुला लाया था, जिनको कोई नहीं जानता था। क्या इस समुदाय के लिये इतनी तैयारी करना ठीक था? मेज़ छोटी न पड़े, इस भय से बच्चों के लिये कोने में ट्रंक पर खाने का प्रबंध किया गया था। पोलेचका इसलिये नियत की गई थी कि वह देखती रहे कि दोनों छोटे बच्चे अच्छी तरह से खा लें, और रूमाल न ख़राब करें। कैथराइन अपने मेहमानों से अच्छी तरह नहीं मिल रही थी। वह यह समझने लगी कि मेडम के कारण ही मेरे मुख्य मेहमान नहीं आए। इसलिये वह मैडम से असभ्यता का व्यवहार करने लगी, और मैडम भी बिगड़ गई। खाना भद्दों में आरम्भ हुआ। सब लोग बैठ गए। रोडियन स्मशान से लौटकर सीधा यहाँ आया। कैथराइन उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुई; क्योंकि उस मण्डली में वही पढ़ा-लिखा मनुष्य था।

उसने लोगों से इसका परिचय कराया, और कहा कि साल-दो-साल में सेंटपीटर्सबर्ग की युनिवर्सिटी का प्रोफ़ेसर होकर यह गौरव प्रदान करेगा। वह इसलिये भी उससे प्रसन्न थी कि इसने आते-ही-आते जनाजे के साथ न जा सकने की क्षमा माँगी। उसने उसको अपनी बाईं ओर बिठाया। दाहनी ओर मैडम बैठी थी। धीरे-धीरे वह रोडियन से बातें करने लगी। कुछ दिनों से कैथराइन के रोग ने भयंकर रूप धारण किया था। खाँसी के कारण वह वाक्य तक समाप्त नहीं कर सकती थी। फिर भी उसको इस बात की प्रसन्नता थी कि रोडियन से वह इस मंडली के विषय में खुलकर बातचीत कर सकती थी। मेहमानों पर, और विशेषकर मैडम पर, उसने वाक्यवाण छोड़ने शुरू किए।

"यह सब इस मूर्खा स्त्री का अपराध है। तुम समझते हो कि मैं किसके विषय में कह रही हूँ?" और, कैथराइन ने मैडम की ओर सिर से संकेत किया, उसकी ओर देखा। "समझती है कि हम इसके विषय में बातें कर रहे हैं। परन्तु बातें नहीं सुन सकती, इसलिये आँख फाड़-फाड़ कर देखती है। हा-हा-ही-हो...! वह यह प्रकट करना चाहती है कि मैंने आकर इस मण्डली की शोभा बढ़ाई है। मैंने उससे प्रार्थना की थी कि कुछ भले आदमियों को बुलाना, और मेरे पति के मित्रों को निमंत्रण देना। परन्तु उसने इन जानवरों और कमीने आदमियों को एकत्रित कर दिया है। देखो, उस जानवर की ओर देखो। मुँह तक धोकर नहीं आया है। अभागे पोल से कोई बात करना नहीं चाहता। इनको मैंने पहली ही बार देखा है। एक दूसरे से गर्दन मिलाकर बैठे हैं।" एक से पुकारकर कैथराइन ने कहा—"अच्छी तरह से खाओ, शराब भी लो।" उसने उठकर कैथराइन को सिर झुकाया। "मैं समझती हूँ, यह कोई बड़े दरिद्र हैं। उनके रक्त में एक बात अवश्य है कि चुपचाप बैठकर खाते हैं। परन्तु मुझे मैडम की तश्तरियों का भय है। उसने ज़ोर से कहा—"
"मैडम, यदि तुम्हारे चमचे खो जाँय, तो मैं नहीं जानती।"

अपने क्रोध को इस प्रकार से शान्त करके वह फिर रोडियन से इस प्रकार बातें करने लगी,—"हा-हा-हा...समझी तक नहीं, उल्लू की तरह मुँह खोले बैठी है। इस हँसी के अनन्तर पाँच मिनट तक खाँसी आई। होठों पर उसने रूमाल लगा लिया, और फिर रोडियन को रूमाल दिखाया। खून से रूमाल भर गया था। माथे पर पसीना आ गया, गाल लाल हो गए। साँस लेना कठिन हो गया। फिर भी असाधारण प्रकार से बातचीत करती रही। "मैंने इस खो से कहा था कि उस स्त्री और उसकी पुत्री को अवश्य बुलाना। उनको बुलाने में योग्यता से काम लेना था। परन्तु इसने न मालूम किस तरह कहा कि वह मूर्खा स्त्री—वह देहाती मुर्गी, जो यहाँ पेंशन पाने के लिये प्रयत्न करने आई है; क्योंकि वह एक मेजर की विधवा है, और जो प्रातःकाल से संध्या तक सरकारी दफ्तरों में खाक छानती है, और जिसकी अवस्था ५५ से अधिक हो गई है, फिर भी, एक इंच मोटा रोग़न मुँह पर लगाती है—नहीं आई। आना तो दूर रहा, साधारण सभ्यता भी छोड़कर न आने की क्षमा तक नहीं माँगी। परन्तु लूशिन अभी तक नहीं आया। सुनिया कहाँ है? उसको क्या हो गया है? आहा! वह आ रही है। मेरी प्यारी, तुम कहाँ थीं? बड़े आश्चर्य की बात है कि आज भी तुमने देर कर दी। रोडियन, इसको अपने पास बैठने दो। सुनिया बैठकर खाना खाओ। खाना अच्छा बना है। बच्चों ने खा लिया कि नहीं? पोलेंचका, बच्चे ठीक तरह से तुम्हारी आज्ञा मानते हैं या नहीं? लीना, ठीक से बैठो; कोलिया, टाँगें न फैलाओ; भले घर के बच्चों के समान व्यवहार करो। सुनिया, तुम क्या कह रही हो?"

सुनिया ने लूशिन के न आने की क्षमा-प्रार्थना अपनी विमाता से इस प्रकार की कि सब कोई सुन ले। उसने कहा कि लूशिन ने यह प्रार्थना की है कि वह कैथराइन से शीघ्र ही मिलेगा, और काम की बातचीत करेगा। और आगे क्या करना चाहिए, इस पर विचार करेगा। सुनिया

समझती थी कि कैथराइन को इस बात से प्रसन्नता होगी, और वह शान्त हो जायगी। सुनिया रोडियन को प्रणाम करके उसके पास बैठ गई, और एकबार बड़ी ही विचित्र दृष्टि से उसकी ओर देखा। परन्तु, फिर भोजन के अन्त होने तक न उसने उसकी ओर देखा, न उससे कोई बातचीत की। कभी-कभी ऐसा विदित होता था कि वह विचार-शून्य-सी हो गई है। परन्तु उसकी आँखें निरन्तर कैथराइन के मुख को देखती रहीं। जैसे, वह उसके हृदय की इच्छा जानना चाहती है।

वस्त्रों के अभाव से दोनों स्त्रियाँ शोक-प्रकाशक वस्त्र नहीं पहने हुए थीं। लूशिन के न आने की बात सबने सुनी। कैथराइन ने सुनिया से लूशिन के स्वास्थ्य के विषय में पूछा। फिर दूसरे अतिथियों का कुछ विचार न करके उसने रोडियन से कहा—"लूशिन जैसा प्रतिष्ठित और प्रशंसनीय पुरुष इस मंडली में किस प्रकार आता। मैं उसके आने का कारण समझ गई। यद्यपि हमारे कुटुम्ब से उसका बड़ा गहरा नाता है। फिर भी वह कैसे आता।" इस विशेष कारण से मैं तुम्हारी बहुत अनुग्रहीत हूँ कि तुमने इस मंडली में भी आने की कृपा की। मुझको विश्वास है कि मेरे पति की मित्रता के कारण तुम रुके रहे।" कैथराइन ने यह कहकर अपने मेहमानों की हँसी उड़ानी शुरू की। एकदम एक बहरे, बुड्ढे आदमी से बड़े ज़ोर से बोली—"कुछ भुना हुआ माँस और लोगे? थोड़ी शराब ही पी लो।" मेहमान ने कुछ उत्तर न दिया, और बहुत देर के बाद जब सबने चिल्लाकर कुछ समझाया, तब वह कुछ समझा। मुँह फैलाकर चारों ओर देखने लगा। सब हँसने लगे। कैथराइन ने रोडियन से पूछा कि इस वज्र बहरे को क्यों निमंत्रित किया गया है। लूशिन अवश्य आता; परन्तु वह इस मण्डली के कारण नहीं आया। मेरा पिता तो ऐसे मनुष्यों को नौकर तक न रखता। और, यदि मेरा पति इनको निमंत्रित करता, तो केवल दया-भाव से।"

पेंशनयाफ्ता सटलर शराब का बारहवाँ ग्लास पीते हुए बोला—"तुम्हारा पति बड़ा शराबी था। बोतल से उसे बड़ी मुहब्बत थी।"

कैथराइन को यह बात बुरी लगी। वह बोली—"मैं मानती हूँ कि उसमें यह दोष था, प्रत्येक पुरुष यह जानता है। परन्तु वह भला-मानस था; क्योंकि वह अपने कुटुम्ब से प्रेम रखता था। बड़ा दयालु था, बदमाशों तक से मित्र-भाव रखता था। ईश्वर जाने, किन-किनके साथ बैठकर उसने शराब पी। जिन पुरुषों से वह मित्रता रखता था, वे उसके पैर के तलवों के बराबर भी न थे। रोडियन, विचार करने की बात है कि उसकी जेब में कुछ मिठाई निकली। शराब पीने पर भी उसे बच्चों का हरवक्त ध्यान रहता था।"

"मिठाई?" सटलर ने पूछा।

कैथराइन ने इसका कुछ उत्तर न दिया, विचार में मग्न होकर केवल एक ठण्डी साँस ली, और रोडियन से बोली—"कदाचित तुम समझते हो कि मैं उसके साथ निर्दयता का व्यवहार करती थी। यह तुम्हारी भूल है। वह मेरा बड़ा आदर करता था। उसका दिल बहुत अच्छा था, और कभी-कभी मुझे उस पर बहुत दया आती थी। दूर बैठकर जब वह मेरी ओर ताकता था, तो मुझको अपने भावों को दबाना कठिन हो जाता था। परन्तु उससे शराब न छूटती थी, और शराब पीना रोकने के लिये उसके साथ निर्दयता का व्यवहार करना आवश्यक था।"

"हुँ, कभी-कभी उसके बाल नोचे जाते थे। कई बार ऐसा हुआ।" सटलर ने एक ग्लास और ब्राण्डी का पीते हुए कहा।

कैथराइन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"इस संसार में बहुत-से मूर्ख ऐसे हैं, जिनको बाल खींचकर तो क्या, झाड़ू मारकर रोक करना चाहिए। मैं मृतक के विषय में ऐसा नहीं कहती।" उसके कपोल लाल हो गए, छाती ज़ोर-ज़ोर से चलने लगी। झगड़ा होने में कोई कसर न थी।

बहुत-से लोग हँस पड़े। कुछ ने सटलर को भड़काया। सब भुस में आग लगाने को तत्पर हो गए।

सटलर ने ज़ोर से पूछा—"किसके विषय में कह रही हो? व्यर्थ है, व्यर्थ है, गरीब विधवा की बात पर ध्यान न देना चाहिए। मैं इसे क्षमा करता हूँ।" यह कहकर उसने एक ग्लास ब्राण्डी और पी ली।

रोडियन चुपचाप सब सुनता रहा। उसे इन लोगों पर घृणा हो रही थी। केवल कैथराइन के विचार से वह खा रहा था। सुनिया की ओर निरंतर देखता जाता था, और सुनिया अपनी माता की ओर चिन्तित भाव से देख रही थी। वह समझती थी कि इस भोज का अन्त अच्छा न होगा। वह यह भी समझती थी कि दोनों देहाती स्त्रियाँ उसी के कारण इस समय उपस्थित नहीं हुई हैं। उसने मैडम के मुँह से सुना था कि निमंत्रण देने पर उस स्त्री ने कहा कि मेरी लड़की किस प्रकार उस कन्या के पास बैठ सकती है! सुनिया का ख़याल था कि उसकी विमाता को इस अपमान की सूचना हो गई होगी। कैथराइन अपना, अपने बच्चों और पति का अपमान तो सहन कर सकती थी; परन्तु सुनिया का अपमान उसे असहनीय था। वह उन दोनों स्त्रियों को यह बतलाना चाहती थी कि वे...इत्यादि-इत्यादि। इसी समय एक मेहमान ने सुनिया के सामने एक तश्तरी रक्खी, जिसमें रोटी के टुकड़ों से दो हृदय बनाए रक्खे थे, जो एक तीर से बिंधे हुए थे। कैथराइन क्रोधित होकर बोली—इस हँसी का करनेवाला कोई मूर्ख शराबी है।

इसके अनन्तर उसने यह प्रकट किया कि पेंशन पाकर मैं अपने नगर को चली जाऊँगी, और वहाँ प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिये एक शिक्षणालय खोलूँगी। उसने अपना सर्टीफ़िकेट भी निकालकर दिखाया। इस समय उसको बड़ा शोक था कि वे दोनों स्त्रियाँ नहीं आई हैं; नहीं तो वह उन्हें दिखा देती कि मैं एक कर्नल की लड़की, प्रतिष्ठित कुटुम्ब की कन्या, इधर उधर भटकनेवाली स्त्रियों से, जो आजकल बहुत बढ़ गई हैं, कहीं अच्छी हूँ।

शराबी मेहमान, सब उसका सर्टीफ़िकेट देखने लगे, जिसमें उसको यह अधिकार दिया गया था कि वह अपने को कर्नल की लड़की कह सके।

फिर विधवा अपने शान्त जीवन का, जो उसको नगर में प्राप्त होगा, वर्णन करने लगी। उसने कहा—मैं नगर के कॉलेज के प्राफ़ेसरों से प्रार्थना करूँगी। उनमें एक प्रतिष्ठित बूढ़ा आदमी मिस्टर मैनगोट है, जिसने मुझे फ्रेंच पढ़ाई थी। वह आकर मेरे शिक्षालय में कम वेतन पर भी शिक्षा दिया करेगा। सुनिया को भी मैं ले जाऊँगी और इसको शिक्षालय का प्रबंधक नियुक्त करूँगी।

इस बात पर मेज़ की दूसरी तरफ़ कोई हँसने लगा। कैथराइन ने उस ओर ध्यान न देकर कहा—सुनिया में प्रत्येक गुण, जो मेरे सहायक में होना चाहिए, मौजूद हैं। उसने उसके धैर्य, त्याग, योग्यता और उत्तम चरित्र की प्रशंसा की, और दो बार उसका मुँह चूमा। सुनिया का मुख लाल हो गया। कैथराइन रोने लगी

कैथराइन बोली—"मैं बहुत थकी हुई हूँ। अब मैं कुछ नहीं कर सकती। आप लोग सब खा चुके हों, तो चा पीजिए।"

मैडम बहुत दुखी थी; क्योंकि उसको अभी तक बोलने का अवसर नहीं मिला था। अब अवसर पाकर वह बड़ी योग्यता से बोली कि अपने शिक्षालय में तुम अपने विद्यार्थियों के वस्त्रों का ध्यान रखना, और उनको उपन्यास न पढ़ने देना।

थकावट के कारण कैथराइन बिलकुल अधीर हो रही थी। उसे यह शिक्षा अच्छी न लगी। वह बोली—"तुम इन बातों को क्या समझो? प्रतिष्ठित कन्याओं के शिक्षालय में कपड़ों की देखभाल करना प्रबंधकर्ता का काम नहीं। और, उपन्यास के विषय में जो तुमने कहा, तो तुम्हारी राय किसी ने नहीं पूछी थी। बस, अब तुम कुछ मत बोलो।" मैडम ने इस प्रार्थना की ओर ध्यान न देकर कहा—"मैंने समझ की बात कही थी। मेरे विचार उत्तम हैं। फिर वह बोली—कैथराइन ने एक पैसा भी किराए का

अभी तक नहीं दिया है।" कैथराइन ने उत्तर दिया—"अपने उत्तम विचारों की बात तो रहने दो। कल ही, जब मेरा पति मृत्यु-शय्या पर पड़ा था, तुमने आकर किराए के विषय में मुझे गालियाँ दी थीं।" इस पर मैडम बोली—"मैंने उन दोनों स्त्रियों को निमंत्रित किया था। वे प्रतिष्ठित कुटुम्ब की स्त्रियाँ हैं, तुम्हारे यहाँ कैसे आ सकती थीं।" इस पर कैथराइन ने उत्तर दिया—"तुम्हारी-जैसी लौंडी का मेरे सदृश प्रतिष्ठित कुटुम्बवाली को कोई बात कहने का अधिकार नहीं।"

मैडम बिगड़कर बोली—"तुम्हारा पिता बर्लिन में बहुत बड़ा आदमी था, और अपनी जेब में हाथ डालकर 'यफ़-यफ़' कहता हुआ सड़कों पर घूमता था।" फिर, इसी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिये मैडम उठी, और जेब में हाथ डालकर, मुँह फुलाकर सुनार की तरह फूँकें मारने लगी। इस पर सब बहुत हँसे; क्योंकि सभी इन दोनों स्त्रियों की लड़ाई का तमाशा देखना चाहते थे। कैथराइन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"मैडम का कोई पिता ही न था, वह सेंटपीटर्सबर्ग की गलियों में मारी-मारी फिरती थी, रोटी पकाने की नौकरी करती थी।" इस पर मैडम बिगड़कर बोली—"कैथराइन का स्वयं कोई पिता न होगा।" उसने उत्तर दिया—"मेरी पैदाइश की बात तो सब कोई जानते हैं, और वह सर्टीफ़िकेट में छपी हुई है कि मैं एक कर्नल की पुत्री हूँ। लेकिन जहाँ तक मैडम की उत्पत्ति का संबंध है—और यदि इसका कोई पिता था तो—हमें ढूँढ़ने से विदित होगा कि वह एक दूध बेचनेवाला था। परन्तु सच तो यह है कि इसका कोई पिता था ही नहीं, और इसीलिये इसके नाम को कोई ठीक नहीं जानता कि वह एमेलिया एवानोवना है, या एमेलिया लुडविगोवना।" मैडम अब आपे से बाहर हो गई, और मेज़ पर हाथ पटककर बोली—"मैं एवानोवना हूँ, लुडविगोवना नहीं। मेरे पिता का नाम जॉन था, और वह कुर्क-अमीन था। यह पदवी कैथराइन के पिता को कभी नहीं मिली।" इस पर विधवा खड़ी हो गई, और

शान्त भाव से सिर्फ इतना ही बोली—"यदि तुम अपने दरिद्र-पिता की बराबरी मेरे पूज्य पिता से करोगो, तो मैं तुम्हारी टोपो उतारकर पैरों के नीचे कुचल दूँगी।"

मैडम कमरे में टहलने लगी, और चिल्लाकर बोली—"मैं इस मकान को मालिक हूँ; कैथराइन, तुम इस मकान को अभी खाली करो।" यह कहकर उसने मेज़ पर से तश्तरियाँ उठाना आरम्भ किया। अनिर्वचनीय कोलाहल आरम्भ हो गया। बच्चे रोने लगे। सुनिया ने दौड़कर अपनी विमाता को पकड़ा कि कहीं वह सचमुच उसकी टोपी उतार-कर पैरों तले कुचल न दे। परन्तु मैडम ने इसी समय सुनिया को वेश्या कहा। कैथराइन सुनिया को धक्का देकर मैडम के पास पहुँच गई। इसी क्षण दरवाज़ा खुला, और लूशिन दिखाई दिया। क्रोध-भरी दृष्टि से उसने सबको देखा। कैथराइन उसकी ओर दौड़ी।

तीसरा परिच्छेद

कैथराइन बोली—"लूशिन, आओ, मेरी रक्षा करो। इस मूर्खा स्त्री को समझा दो कि मेरी जैसी प्रतिष्ठित और अभागिनी स्त्री से इस प्रकार से बोलने का इसे कोई अधिकार नहीं है। यह बड़ी लज्जा की बात है। मैं गवर्नर-जनरल से इसकी शिकायत करूँगी। इसको दण्ड दिया जायगा। मेरे पिता के यहाँ जो तुमने बहुत बार भोजन किया है, उसका ध्यान करके इन अनाथों की सहायता करो?"

लूशिन ने कैथराइन को हटाकर उत्तर दिया—"देवी, क्षमा करो। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं तुम्हारे पिता को नहीं जानता। (इस पर कोई ज़ोर से हँसने लगा।) क्षमा करो, मैं तुम्हारे और मैडम के नित्य के झगड़ों में कोई भाग नहीं लेना चाहता। मैं यहाँ एक निजी काम से आया हूँ; तुम्हारी सौतेली पुत्री सोफ़िया इवानोवना से कुछ पूछना चाहता हूँ। मुझको अन्दर आने दो।" कैथराइन को हटाकर वह सुनिया की ओर बढ़ा।

कैथराइन के पैरों में जैसे किसी ने सरेस लगा दी। वह वहीं पर खड़ी रह गई। उसकी समझ में न आया कि लूशिन ने उसके पिता का मेहमान होने से क्यों इनकार कर दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ कि लूशिन बड़ा अहंकारी है। कमरे में शान्ति हो गई। लूशिन का अच्छी पोशाक पहनकर इस मण्डली में आना प्रकट करता था कि कोई बड़ा भारी काम है। सब लोग प्रतीक्षा करने लगे। रोडियन, जो सुनिया के पास बैठा था, लूशिन को रास्ता देकर हट गया। लूशिन ने जैसे रोडियन को देखा ही नहीं। लेबेज़ेटनिकाफ़ भी एक क्षण के बाद वहाँ आया; परन्तु कमरे के भीतर न घुसकर, दरवाज़े पर खड़े होकर, सुनने लगा कि क्या मामला है।

लूशिन बोला—"इस मण्डली में आने के लिये आप मुझे क्षमा करें। मैं बड़े आवश्यक काम से आया हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि इस अवसर पर आप सब लोग एकत्रित हैं, आप सबके सामने यह बातचीत हो। मैडम, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मकान की मालकिन होने के कारण तुम भी हमारी सब बातें सुनो।" फिर चकित और भयभीत कन्या की ओर मुड़कर बोला—"सुनिया, तुम्हारे आने के बाद मुझे मालूम हुआ कि सौ रूबल का नोट, जो मेरे मित्र लेपेजेडनिकाफ़ की मेज़ पर रक्खा था, खो गया। यदि तुम इस नोट के विषय में कुछ जानती हो, तो बतला दो। और, मैं सबके सामने यह वचन देता हूँ कि मामला आगे न बढ़ाऊँगा; नहीं तो मुझे रिपोर्ट करनी पड़ेगी। फिर पीछे मुझको दोष न देना।"

कमरे में सन्नाटा छा गया। बच्चे तक चुप हो गए। सुनिया पीली पड़ गई, और कुछ न बोली। कुछ क्षण के बाद लूशिन कन्या की ओर ध्यान से देखता हुआ बोला—"तुम क्या कहती हो?"

सुनिया ने कहा—"मैं कुछ नहीं जानती।"

लूशिन कड़ककर बोला—"तुम कुछ नहीं जानतीं? सोच लो। यदि मुझको पूर्ण विश्वास न होता, तो मैं तुमको चोरी न लगाता; क्योंकि मैं समझता हूँ कि झूठा दोष लगाने पर मैं ही फस सकता हूँ। आज प्रातःकाल मैं तीन हज़ार रूबल लेकर गया था। घर आकर मैंने उनको फिर गिना। लेपेजेडनिकाफ़ इस बात का गवाह है। दो हज़ार तीन सौ रूबल गिनकर, मैंने एक किताब में रखकर, अपने कोट की जेब में रक्खे। मेज़ पर पाँच सौ रूबल के नोट रक्खे थे। उनमें तीन नोट सौ-सौ के थे। उस समय तुम मेरे बुलाने पर कमरे में आईं, और जितनी देर तुम वहाँ बैठीं, तुम घबराई हुई थीं। तीन बार तुम वहाँ से जाने को उठीं, यद्यपि हमारी भेंट समाप्त नहीं हुई थी। लेपेजेडनिकाफ़ इस बात का गवाह है।

"तुम यह स्वीकार करोगी कि मैंने लेपेजेडनिकाफ़ से तुमको इसलिये बुलवाया था कि मैं तुम्हारी माता कैथराइन की दशा के विषय में कुछ बातचीत करूँ। कोई उपाय सोचूँ; चन्दा, चिट्ठियों या और किसी प्रकार से उसकी सहायता करूँ। तुमने आँसू-भरे नेत्रों से मेरा अभिवादन किया। मैं ये सब बातें इसलिये कहता हूँ कि जिसमें यह मालूम हो कि मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी है। मैंने तब एक दस रूबल का नोट तुम्हारी सहायता के लिये तुमको दिया। लेपेज़ेडनिकाफ़ इस बात का भी गवाह है। दरवाजे तक तुमको पहुँचाने आया, और तुम घबराई हुई चली आईं। तुम्हारे आने के बाद मैंने लेपेजेडनिकाफ़ से दस मिनट तक बातचीत की। फिर वह चला गया। मेज़ पर जाकर मैं फिर रुपए गिनने लगा, तो मुझे मालूम हुआ कि सौ रूबल का नोट गुम है। लेपेजेडनिकाफ़ पर मैं सन्देह नहीं कर सकता। उसे चोर समझना नामुमकिन है। मैंने गिनने में भी कोई भूल नहीं की; क्योंकि तुम्हारे आने के एक क्षण पहले ही मैंने अच्छी तरह उन्हें गिन लिए थे। तुमको यह मानना पड़ेगा कि तुम्हारी घबराहट, आने की जल्दी और मेज़ पर तुम्हारा कुछ देर तक हाथ रखना तथा तुम्हारी वर्त्तमान सामाजिक स्थिति, इन सब बातों ने मुझे मजबूर किया कि मैं तुम पर संदेह करूँ। तुम पर दोष लगाकर मैं यह भी समझता हूँ कि यदि यह झूठ है, तो मैं इसका उत्तरदायी हूँ। मैं इसका तुमको दोषी निश्चित करता हूँ। तुम बड़ी कृतघ्न हो। मैंने तो तुम्हें इसलिये बुलाया कि तुम्हारी सहायता करूँ, दस रूबल का नोट तुमको भेंट दिया। और, उसका यह परिणाम है! सोचो। मैं तुमको यही सम्मति दूँगा कि तुम इस समय अपराध को स्वीकार कर लो; नहीं तो मैं मामले को बढ़ाऊँगा।"

भयभीत सुनिया ने उत्तर दिया—"मैंने कुछ नहीं किया है। आपने दस रूबल दिए थे, लीजिए, ले जाइए।" और, लड़की ने झट जेब से रूमाल निकालकर दस रूबल का नोट लूशिन की ओर फेंक दिया।



लूशिन क्रोधित होकर बोला— 'इस पागल स्त्री को पकड़ लो।'

(पृष्ठ [illegible])

N.K. Press, Lucknow

लूशिन ने नोट न लेकर कहा—"तो तुम सौ रूबल का चुराना स्वीकार नहीं करतीं ?"

सुनिया ने कमरे में चारों ओर देखा। कोई गंभीर था, कोई क्रोध में था, कोई मुँह चिढ़ा रहा था। उसने रोडियन की ओर देखा। वह दीवाल के सहारे खड़ा हुआ ध्यान-पूर्वक सुनिया को देख रहा था। सुनिया के मुँह से निकला—"हे ईश्वर !"

लूशिन ने नम्रता से मैडम से कहा—"पुलीस बुलानी पड़ेगी; चौकीदार को ऊपर भेज दो।"

मैडम बोली—"मैं तो इसको पहले ही से जानती हूँ, यह चोर है।"

लूशिन ने कहा—"तुम जानती थीं ? इस बात को याद रखना, इस बात की गवाही तुमको देनी होगी। और भी गवाह हैं।"

कमरे में सब मेहमान उत्तेजित हो रहे थे।

कैथराइन जैसे नींद से चौंककर, लूशिन की ओर देखकर, बोली—"सुनिया को चोरी लगाते हो ? तुम कायर हो।" फिर, सुनिया को प्यार करके बोली—"बेटी, तुमने इससे दस रूबल का नोट क्यों लिया ? दे दो, वापस दे दो।" नोट को सुनिया के हाथ से लेकर, लपेटकर कैथराइन ने लूशिन के मुँह पर खींचकर मारा। लूशिन को लगकर वह ज़मीन पर गिर पड़ा। मैडम ने उसे उठा लिया। लूशिन क्रोधित होकर बोला—"इस पागल स्त्री को पकड़ लो।"

" इस समय दरवाजे पर लेपेजेडनिकाफ़ के अलावा और बहुत-से आदमी भी आ गए थे। गाँव की दोनों स्त्रियाँ भी थीं।

-"पागल—मैं पागल हूँ ! तुम स्वयं उल्लू हो, कमीने हो। सुनिया तुम्हारे रुपए चुरावेगी, उल्लू कहीं के ? वह तो तुम्हें रुपए देगी।" कैथराइन यह कहकर हँसने लगा। फिर वह सब मेहमानों की ओर देखकर बोली—"इस उल्लू को तो देखो।" मैडम को देखकर उसके क्रोध की सीमा न रही। वह बोली—"बिल्ली कहीं की ! तू भी कहती है कि सुनिया चोर है !

इस कमरे से वह कहीं गई नहीं, और तुम्हारे यहाँ से सीधे आकर रोडियन के पास बैठ गई। उसकी जेब देख लो। अगर उसने चुराया है, तो रुपया उसके पास निकलेगा। तलाशी ले लो। अगर कुछ न निकला, तो तुम जिम्मेदार होगे। मैं सम्राट् से, दयालु ज़ार से, इसकी शिकायत करूँगी—उसके पैरों पड़ूँगी। मैं अनाथ हूँ, वह मुझसे मिलेगा। तुम समझते हो, मैं वहाँ घुसने न पाऊँगी? यह तुम्हारी भूल है। सुनिया विनीत है, इसलिये तुमने उस पर यह अपराध लगाया। परन्तु मैं डरनेवाली नहीं। लो तुम्हारा सारा खेल बिगड़ जायगा। तलाशी लो, शीघ्र तलाशी लो।" यह कहकर कैथराइन ने लूशिन का हाथ पकड़ा, और सुनिया की ओर घसीटा।

लूशिन ने कहा—"मैं भी यही चाहता हूँ। देवी, शांत हो। मैं जानता हूँ कि तुम डरनेवाली नहीं हो; परन्तु तलाशी पुलीस के दफ्तर में होनी चाहिए। खैर, यहाँ भी गवाह हैं। मैं तैयार हूँ। परन्तु पुरुष होने के कारण मैं तलाशी नहीं ले सकता। मैडम, मेरी सहायता करो। ऐसे मामले यों तय नहीं होते।"

कैथराइन ने कहा—"जिससे जो चाहे, तलाशी कराओ। सुनिया, अपनी जेब दिखा दे। लो, खल्, देखो, यह ख़ाली है। इसमें एक रूमाल था, जिसे तुम्हारे सामने इसने निकाला। लो, दूसरी जेब देखो।"

सुनिया के जेब खाली करने से संतुष्ट न होकर कैथराइन ने जेबों को उलटा दिया। उसी समय दाहने जेब के अस्तर से एक छोटा-सा कागज़ टपककर लूशिन के पैर के पास आ गिरा। हरएक ने यह देखा। कुछ चिल्ला उठे। लूशिन ने झुककर, कागज़ उठाकर, सबके सामने खोलकर दिखाया कि यह सौ रूबल का नोट है। सुनिया के अपराधी होने में अब किसी को संदेह न रह गया।

मैडम चिल्लाई—"चोर। पुलीस को बुलाओ। साइबेरिया में देश-निकाला करो।"

चारों ओर कोलाहल मच गया। रोडियन चुपचाप सुनिया को देख रहा था, और कभी-कभी लूशिन की ओर भी देख लेता था। सुनिया ऐसी भयभीत बैठी थी, जैसे किसी ने जकड़ दिया हो। उसने अपने हाथों से अपना मुँह ढककर कहा—"मैंने कुछ नहीं चुराया, मैं कुछ नहीं जानती।" यह कहकर वह कैथराइन की ओर झपटी। कैथराइन ने हाथ फैलाकर उसको अपनी छाती से लगा लिया।

"सुनिया! सुनिया! मैं विश्वास नहीं करती।" यह कहकर कैथराइन ने उसे प्यार किया, और उसका मुँह चूमा फिर बच्चों की तरह उसे चिपटा लिया। वह बोली—"तू चोरी नहीं कर सकती। ये लोग कैसे मूर्ख हैं! हे ईश्वर, ये कैसे मूर्ख हैं कि इस लड़की के उदार हृदय को नहीं जानते। सुनिया चोरी करे! असंभव! मैं कहती हूँ, यह अपना गहना बेच-कर नंगे पैर सड़कों पर घूमेगी; परन्तु यदि तुमको आवश्यकता होगी, तो तुम्हारी धन से सहायता करेगी। मेरे बच्चों के लिये इसने वेश्यावृत्ति स्वीकार की। ईश्वर! हमारे लिये इसने अपने को बेच डाला। मेरे प्यारे पति, तुम कहाँ हो? रोडियन, तुम खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? तुम भी उसकी ओर से नहीं बोलते? क्या तुम भी उसको अपराधी समझते हो? तुममें कोई भी सुनिया के समान नहीं। ईश्वर, सुनिया की सहायता कर।"

कैथराइन के आँसुओं और प्रार्थना ने लोगों पर प्रभाव डाला। उसका पीला मुख, सूखे होंठ और हृदय-विदारक वाणी से यह विदित होता था कि वह बहुत दुखी है। सब पर उसका प्रभाव पड़ा। लूशिन नम्रता से बोला—"इस मामले से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। तुमको कोई अपराधी नहीं कहता। तुम्हीं ने तो कन्या की जेब से चुराया हुआ नोट निकाला है, और इससे तुम्हारी निर्दोषता प्रमाणित है। मैं समझता हूँ, दरिद्रता के कारण सुनिया ने ऐसा किया, और मैं दया करने को प्रस्तुत हूँ। परन्तु वह स्वीकार क्यों नहीं करती? मैं समझता हूँ, वह अपमान से डरती है। मुझे विश्वास है कि यह उसका पहला अपराध है।

मुक़द्दमा बिलकुल साफ़ है। महाशयो, दया-भाव से इस समय भी—यद्यपि मैं अपमानित किया गया हूँ—क्षमा करने को प्रस्तुत हूँ।" फिर सुनिया की ओर मुड़कर बोला—"लड़की, आज की लांछना से शिक्षा ग्रहण करो। मैं आगे मामले को न बढ़ाऊँगा। जो हो गया, सो हो गया।" लूशिन ने अब रोडियन की ओर देखा। रोडियन के नेत्रों से आग बरस रही थी। कैथराइन ने जैसे कुछ नहीं सुना। वह सुनिया को प्यार करती रही। मा को देखकर बच्चे भी सुनिया से चिपट गए। पोलेचका विना कुछ समझे ही सिसकने लगी। उसका आँसुओं से भीगा हुआ सुन्दर मुख सुनिया के कंधे पर था।

एकबारगी दरवाजे से कोई चिल्लाया—"कैसी नीच बात है?" लूशिन ने मुड़कर देखा। लेपेज़ेडनिकाफ ने दोहराया—"कैसे नीच मनुष्य हो!" लूशिन काँप गया। लेपेज़ेडनिकाफ कमरे में घुसा, और वकील के पास जाकर बोला—"तुम मुझको गवाही में बुलाना चाहते हो?"

लूशिन ने हकलाते हुए कहा—"तुम क्या कह रहे हो? तुम्हारा क्या प्रयोजन है?"

लेपेजेडनिकाफ़ ने क्रोध से उत्तर दिया—"मेरा प्रयोजन है कि तुम झूठा दोष लगाते हो।" लेपेजेडनिकाफ़ क्रोध के मारे आपे से बाहर हो गया था। उसकी छोटी-छोटी आँखें लूशिन को घूर रही थीं। रोडियन चुपचाप लेपेजेडनिकाफ़ को देख रहा था। एक क्षण शान्ति रही। लूशिन घबरा गया था।

लूशिन ने पूछा—"क्या तुम मुझसे कुछ कहते हो? तुमको क्या हो गया है? होश की बातें करो।"

"मैं होश में हूँ। तुम बदमाश और नीच हो। मैं सब सुनता रहा, और अभी तक इसलिये नहीं बोला कि मैं सब समझना चाहता था। मैं स्वीकार करता हूँ कि कुछ बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। मैं यह नहीं समझता कि झूठा दोष लगाने का तुम्हारा क्या उद्देश्य है।"

"मैंने क्या किया ? पहेली न बुझाओ। मालूम होता है, शराब बहुत पी गए हो?"

"नीच! उल्लू! तुम शराब पिए हो। मैं शराब नहीं छूता; क्योंकि मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है। सोचने की बात है कि तुमने अपने हाथ से सौ रूबल का नोट सुनिया को दिया, और मैंने देखा। मैं इस बात का गवाह हूँ, और शपथ खाकर कह सकता हूँ कि तुम्हीं ने दिया था।"

लूशिन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"ऐ भोले भाले आदमी; तुम पागल हो कि नहीं? सुनिया ने स्वयं सबके सामने स्वीकार किया है कि मैंने उसको केवल दस रूबल का नोट दिया था। फिर यह कैसे संभव हो सकता है कि मैंने सौ रूबल का नोट उसको दिया?"

लेपेज़ेबनिकाफ ने ज़ोर से उत्तर दिया—"मैंने अपनी आँखों से देखा है; और यद्यपि यह मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है, फिर भी मैं कचहरी में शपथ लेने को तैयार हूँ। मैंने खुद देखा कि तुमने यह नोट चुपके-से उसकी जेब में डाल दिया। तुम्हारी मूर्खता के कारण मैंने तुमको बड़ा उदार आदमी समझा। जिस समय तुम दरवाजे पर उसको पहुँचाने गए, और दाहिना हाथ उससे मिलाने लगे, तब बाएँ हाथ से तुमने यह कागज़ उसकी जेब में डाल दिया। मैं कहता तो हूँ कि मैंने अपनी आँखों से यह सब देखा है।"

लूशिन पीला पड़ गया, और बोला—"क्या चरखा यहाँ कात रहे हो? तुम खिड़की के पास खड़े हुए कागज़ नहीं देख सकते थे? तुम्हारी आँखों ने तुमको धोखा दिया है; तुमने भूल की है।"

"नहीं, कुछ धोखा नहीं है। दूर होने पर भी मैंने सब साफ़-साफ़ देख लिया था। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं जिस स्थान पर था, वहाँ से कागज़ देखना कठिन था। परन्तु मुझको पूर्ण विश्वास है कि वह सौ रूबल का नोट था। सुनिया को दस रूबल का नोट जिस समय तुमने

दिया, उस समय मैं मेज़ के बिलकुल पास था। तुमने फिर सौ रूबल का नोट उठाया। मेरे मन में एक नया विचार उस समय आया। नोट को तह करके तुमने हथेली में दबा लिया। फिर उठते हुए तुमने दाएँ हाथ से बाँए हाथ में उसको लिया। मुझे खूब याद है। मुझे उस समय यह ख़याल आया कि तुम सुनिया को सहायता बिना मुझे बताए हुए करना चाहते हो। मैंने सब बातें ध्यान-पूर्वक देखीं। मैंने देखा कि तुमने वह नोट उसकी जेब में डाल दिया। मैं इस बात की शपथ खा सकता हूँ।"

लेपेजेडनिकाफ़ क्रोध से काँप रहा था। लोग चारों ओर चिल्ला रहे थे; कोई चकित थे। प्रत्येक पुरुष लेपेजेडनिकाफ़ के पास आ गया था। केथराइन भी लेपेजेडनिकाफ़ के पास दौड़ी, और बोली—"लेपेजेडनिकाफ़! मैं तुमको बुरा समझती थी। तुम सुनिया की ओर से बोल रहे हो। ईश्वर ने तुम्हें अनाथ को सहायता करने के लिये भेजा है।" यह कहकर कैथराइन उसके चरणों पर गिर पड़ी।

लूशिन ने आपे से बाहर होकर कहा—"बेहूदा बक रहे हो। मुझे याद है। मैं भूल गया, यह क्या बकते हो? तुम्हारा अभिप्राय यह है कि मैंने सौ रूबल का नोट उसकी जेब में स्वयं डाला। मैंने क्यों ऐसा किया? इससे मुझे क्या लाभ है? ज़रा यह भी तो बताइए।"

"यही तो मैं भी नहीं समझा हूँ। मैंने तो केवल जो बातें देखी हैं, वही बयान करता हूँ। अरे बदमाश! चोर! मेरा बयान बिलकुल सच्चा है, और तुमको याद होगा कि हाथ मिलाते हुए मैंने तुम्हारी प्रशंसा भी की थी। मेरी समझ में नहीं आया था कि तुम चोरी से क्यों सहायता कर रहे हो। मैंने उस समय नहीं समझा था कि मुझसे छिपाकर तुम यह भला काम क्यों कर रहे हो; क्योंकि तुम जानते हो कि मैं इस प्रकार के दान के विरुद्ध में हूँ। फिर मुझको यह भी ख़याल आया कि तुम सुनिया को चकित करना चाहते थे; क्योंकि बहुत-से मनुष्य अपनी प्रेम-पात्री के साथ ऐसा ही करते हैं। मुझको यह भी ख़याल आया कि तुम

इस कन्या की परीक्षा करना चाहते हो कि जेब में सौ रूबल का नोट पाकर तुम्हें धन्यवाद करने आती है, या नहीं। मैंने यह भी सोचा कि कदाचित् तुम उसकी कृतज्ञता नहीं चाहते; क्योंकि एक सिद्धान्त यह भी है कि दाहने हाथ को भी ही नहीं मालूम होना चाहिए कि बाएँ हाथ ने क्या दिया। ईश्वर जाने, क्या-क्या विचार मेरे मन में उठे थे। तुम्हारे चरित्र से मैं इतना चकित हो गया था कि मैंने निश्चय किया कि फिर एक बार इसी पर सोचूँगा। उस समय मैंने यह कहना उचित नहीं समझा कि मैंने तुम्हारा यह गुप्तदान देख लिया है। फिर मुझको यह भय हुआ कि लुनिया अनजान में नोट खो न दे। इसीलिये मैं यहाँ आया था कि अलग ले जाकर उसको बता दूँ। रास्ते में मैं किताबें दूसरी स्त्री को देने चला गया, और यहाँ आकर मैंने देखा कि एक नया गुल खिला है। क्या मेरे मन में ये सब विचार आ सकते थे, यदि मैंने तुम्हें नोट डालते न देखा होता?"

लेबेजेटनिकाफ़ यह कहते-कहते बिलकुल थक गया, और उसका मुख पसीने से तर हो गया। यद्यपि वह और कोई भाषा नहीं जानता था, फिर भी रूसी-भाषा में भी बोलने में उसको कष्ट होता था। उसकी वक्तृता ने अद्भुत प्रभाव डाला। श्रोता-गण को निश्चय हो गया कि वह सच कह रहा है। लूशिन को भी विदित हो गया कि हवा उसके विरोध में चलने लगी।

लूशिन बोला—'मुझको तुम्हारे पागलपन के विचारों से कोई प्रयोजन नहीं; तुम्हारे विचार कोई प्रमाण नहीं हैं। जान पड़ता है कि तुम स्वप्न देख रहे थे। तुम झूठे हो, और मेरा अपमान इसलिये करते हो कि तुम्हें मुझसे डाह है। सच बात तो यह है कि तुम मुझसे घृणा करते हो; क्योंकि मैं तुम्हारे सामाजिक सिद्धान्तों का विरोधी हूँ।"

इस बात से लूशिन की सहायता करने के बजाय लोग और उसके विरोध में बड़बड़ाने लगे।

लेपेजेडनिकाफ़ ने उत्तर दिया—"बस, यही तुम्हारा उत्तर है? यह तो कुछ नहीं। सुनिया को बुलाओ। मैं साक्षी दूँगा। परन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि ऐसा नीच काम तुमने क्यों किया? तुम्हारा उद्देश्य क्या था? बदमाश! कायर!"

रोडियन भीड़ से निकलकर आगे बढ़ा, और बोला—"मैं इसका अभिप्राय बता सकता हूँ, और शपथ लेने को भी प्रस्तुत हूँ।" यह बात उसने बड़ी गंभीरता से कही। रोडियन को देखकर लोग यह समझे कि यह सब भेद जानता है, और अब सब मामला साफ़ हो जायगा।

रोडियन लेपेजेडनिकाफ़ से बोला—"मैं अब सब समझ गया। इस घटना के आरंभ ही से मुझको सन्देह था कि इसमें कुछ जाल है। मेरे सन्देह का कारण कुछ ऐसी घटनाएँ हैं, जिनको मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। और, मैं उनको अब प्रकाशित करूँगा। कृपया ध्यानपूर्वक सुनिए—

"यह भला मनुष्य मेरी बहन से विवाह करना चाहता था। परसों यह मेरे पास आया। परन्तु पहली ही भेंट में झगड़ा हो गया। मैंने इसको निकाल बाहर किया। दो गवाह इस बात का प्रमाण दे सकते हैं। इसको बड़ी ईर्षा है। परसों मुझे यह नहीं मालूम था कि यह तुम्हारे साथ रहता है। इसी कारण यह उस समय उपस्थित था, जब मैंने म० मारमैलेडाफ़ के मित्र होने के कारण उनकी स्त्री कैथराइन को कुछ धन सहायतार्थ दिया था। तुरन्त ही इसने मेरी मा को पत्र लिखा कि मैंने वह धन सोफ़िया सेमानोवना को दिया है। और, इस कन्या के चरित्र पर दोषारोपण करते हुए इसने यह विदित किया कि मेरा इससे बहुत मित्रता है। इसका प्रयोजन यह सब लिखने से यह था कि मेरे सम्बन्धी मुझसे फिर जाय, और यह समझें कि जो धन उन्होंने कठिनाई से मेरी आवश्यकताओं के लिये भेजा, वह मैंने वेश्यागमन में व्यय कर दिया।"

"कल रात को, इसकी उपस्थिति में, मैंने अपनी मा और बहन के सम्मुख यह प्रमाणित कर दिया कि मैंने वह धन कैथराइन को सहायतार्थ दिया था, न कि सोफ़िया सेमेनोवना के, जिसके मैं उस दिन तक जानता भी न था। यह देखकर कि इसकी झूठी बातों का कुछ परिणाम न निकला, इसने मेरी मा और बहन का बड़ा अपमान किया, परिणाम यह हुआ कि झगड़ा हो गया, और यह निकाल बाहर किया गया। यह अभी कल रात की बात है। अब आप लोगों की समझ में आ गया होगा कि सोफ़िया सेमेनोवना को चोर प्रमाणित करने में इसका क्या उद्देश्य था ? यदि यह अपने कार्य में सफल होता, तो मेरी मा और बहन मुझको घृणा की दृष्टि से देखतीं; क्योंकि मैंने उनका परिचय एक चोर से कराया। इस प्रकार मुझको हानि पहुँचाकर यह यह प्रमाणित करता कि वह मेरी बहन का शुभचिन्तक है, एवं उसकी प्रतिष्ठा का संरक्षक। इसका अभिप्राय यह कि मेरे कुटुम्ब से मेरा झगड़ा हो जाय, और यह फिर उनका मित्र बन जाय। मुझसे बदला भी ले लेता; क्योंकि मैं सोफ़िया सेमेनोवना के आदर और आराम का सदा ध्यान रखता हूँ। यही उसकी चाल थी, मैं खूब समझता हूँ। इसके अतिरिक्त उसका कोई उद्देश्य न था।"

रोडियन की वक्तृता समाप्त हुई। बीच-बीच में लोग बोल उठते थे। परन्तु सबने ध्यानपूर्वक सुना। उसने शान्तिपूर्वक अपनी वक्तृता समाप्त की। उसकी वाणी और उसकी गंभीरता ने श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव डाला।

लेपेजेडनिकाफ़ जल्दी से बोल उठा—"ऐसा ही है, तुम ठीक कहते हो; क्योंकि जैसे ही सोफ़िया सेमेनोवना मेरे कमरे में घुसी, इसने मुझे खिड़की के पास अलग ले जाकर मुझसे पूछा था कि रोडियन वहाँ है कि नहीं? इसकी इच्छा थी कि तुम उपस्थित हो, तो अच्छा है। तुम ठीक कहते हो।"

लूशिन बिलकुल पीला पड़ गया था। वह थोड़ी देर शान्त रहा, और हँसने लगा। वह अब यहाँ से निकल भागना चाहता था, परन्तु इस

समय निकलना असंभव था; क्योंकि उस तरह सबको विश्वास हो जाता कि इसके विरुद्ध जो दोष लगाए गए हैं, वे बिलकुल सच हैं। मेहमानों के ढंग से यह विदित होता था कि कदाचित् वह उसे पीटें। सटलर बिना कुछ समझे ही सबसे अधिक चिल्ला रहा था, और कह रहा था कि लूशिन को पीटना चाहिए। सब लोग शराब में मस्त थे। इस दृश्य के समय बहुत-से मनुष्य उपस्थित हो गए थे। तीनों पोल उत्तेजित होकर लूशिन के विरोध में, अपनी भाषा में, बहुत बक-झक रहे थे।

सुनिया सब ध्यानपूर्वक सुन रही थी, परन्तु अभी तक होश में न थी। विदित होता था कि वह मूर्च्छा से जग रही है। रोडियन की ओर वह आँख लगाए, देख रही थी, और समझती थी कि इसी से कुछ आशा हो सकती है। कैथराइन को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। उसके फेफड़ों से 'हस्-हस्' की आवाज़ निकल रही थी। मैडम का मुख मूर्खों का-सा हो रहा था। विदित होता था कि वह कुछ नहीं समझी, केवल मुँह फैलाए देख रही थी वह यही समझी कि लूशिन से लोग बिगड़ गए हैं। रोडियन फिर कुछ बोलना चाहता था; परन्तु लोगों ने उसकी बात नहीं सुनी। चारों ओर से लूशिन को लोग धमकियाँ दे रहे थे, और उसका अपमान कर रहे थे। उसको एक विरोधी दल ने घेर लिया था। वकील बिलकुल नहीं घबराया। यह समझकर कि मेरी चाल नहीं चली, वह साहस करके बोला—

"महाशयो, मुझे घेरो नहीं, मुझे जाने का रास्ता दो। मैं तुम्हारी धमकियों से डर न जाऊँगा। छोटी-छोटी बातों से मैं डरनेवाला नहीं। महाशयो, तुमको कचहरी में इस बात का उत्तर देना होगा कि तुम एक चोर की सहायता कर रहे हो। चोरी का प्रमाण काफ़ी है, और मैं मुक़दमा चलाऊँगा। मजिस्ट्रेट समझदार हैं, वे इन दो मूर्खों की साक्षी पर ध्यान न देंगे; क्योंकि ये क्रांतिकारी लोग हैं, और मेरा विरोध इसलिये कर रहे हैं कि मैं इनके दल का नहीं हूँ। मुझसे ईर्ष्या रखना इन्होंने स्वयं ही स्वीकार किया है।"

"मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, मेरा कमरा ख़ाली कर दो। हमारी-तुम्हारा मित्रता की इतिश्री हो गई। जब मैं सोचता हूँ कि पिछले पन्द्रह दिन में मैंने तुम्हारे साथ... ।"

लेपेजेडनिकाफ़ पूरी बात भी न कह पाया कि लूशिन बीच में बोल उठा—

"लेपेजेडनिकाफ़, मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था कि मैं जानेवाला हूँ। तुम्हीं मुझसे रुकने की प्रार्थना कर रहे थे। अब मैं केवल तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि तुम मूर्ख हो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारी वक्तृता देने की शक्ति में और समझ में उन्नति हो। महाशयो, मुझे जाने के लिये मार्ग दीजिए।"

उसको मार्ग मिल गया। परन्तु सटलर ने यह समझकर कि अपमान कोई दण्ड नहीं है, एक ग्लास उठाकर, लूशिन को खींचकर मारा। दुर्भाग्य से वह मैडम को लगा, जो चिल्लाकर रोने लगी। ग्लास के मारने में सटलर भी लड़खड़ा गया, और मेज के नीचे लुढ़क गया। लूशिन लेपेजेडनिकाफ़ के कमरे में वापस गया, और घण्टे-भर बाद घर छोड़कर चला गया।

सुनिया यह पहले ही से जानती थी कि उसकी दशा ऐसी है कि कोई भी मनुष्य उस पर कोई दोष लगाकर उसे अपमानित कर सकता है। अभी तक उसको यह आशा थी कि नम्रता और विनय से मैं सबका विरोध टाल सकूँगी। किंतु आज यह आशा भी भंग हो गई। उसको दोष सहने की सामर्थ्य थी; परन्तु, फिर भी, उसके दिल को बहुत धक्का लगा। यद्यपि वह निर्दोष प्रमाणित हो गई थी, तथापि उसका दिल गिर रहा था। और, ज्यों ही वह इस योग्य हुई कि वह कुछ समझ सके, वह घबराकर कमरे से निकलकर अपने स्थान की ओर शीघ्रता से चली। लूशिन के थोड़ी ही देर बाद वह भी चली गई।

मैडम ग्लास की घटना से बहुत क्रोधित हो गई, और कैथराइन पर क्रोध करके बोली—"अभी निकल जाओ।" कष्ट और दुःख से कैथराइन

बिछौने में लेट गई थी। मैडम चिल्लाती जाती थी, और कैथराइन की चीज़ें उठा-उठाकर, ज़मीन पर पटककर ढेर करती जाती थी। बेचारी कैथराइन बिछौने से कूदकर मैडम की ओर झपटी। परन्तु मुकाबला बराबर का न था। मैडम ने उसको धक्का दे दिया।

कैथराइन ने सिसकते हुए कहा—"सुनिया को अपमानित करके क्या शान्ति नहीं मिली? मुझको धक्का देना अभी बाकी था? क्या मैं इस प्रकार से उसी दिन निकाली जाऊँगी, जिस दिन मेरा पति क़ब्र में डाला गया? क्या मेरे भोज में निमंत्रण खाकर मुझी को बच्चों-समेत निकाला जायगा? मैं कहाँ जाऊँगी! हे ईश्वर, क्या यह संभव है कि कहीं न्याय नहीं होता? क्या तू पिताहीन बच्चों की रक्षा न करेगा? मजिस्ट्रेट हैं, और कचहरियाँ खुली हुई हैं। मैं उनसे प्रार्थना करूँगी। ऐ बदमाश स्त्री! ज़रा ठहर। पोलेचका, तू बच्चों के पास ठहर; मैं अभी आती हूँ। यदि ये तुझे निकाल दें, तो सड़क पर मेरी प्रतीक्षा करना। देखती हूँ, संसार में न्याय होता है कि नहीं।"

कैथराइन सिर में हरा रूमाल बाँधकर, शराबियों को धक्का देते हुए, सड़क पर यह ढूँढने निकल पड़ी कि न्याय कहाँ मिलता है। डरकर पोलेचका अपने भाई और बहन से चिमटकर, सन्दूक पर कोने में लेटकर, अपनी मा के आने की प्रतीक्षा करने लगी। मैडम क्रोधित होकर सब चीज़ें इधर-उधर फेंकने लगी। मेहमान कुछ तो इस दृश्य की बातचीत करने लगे, कुछ परस्पर झगड़ने, और कुछ गाने लगे।

रोडियन ने सोचा, अब चलना चाहिए। अब देखना है, इसके बाद सुनिया क्या कहती है।

वह सुनिया के घर की ओर चल पड़ा।

———

चौथा परिच्छेद

रोडियन ने सुनिया की ओर से वकालत की थी, यद्यपि वह स्वयं बहुत दुःखी और चिंतित था। कन्या से अनुराग होने के अतिरिक्त वह सुनिया के यहाँ इसलिये भी आया था कि प्रातःकाल की मजिस्ट्रेट की भेंट को भूल जाय। सुनिया के यहाँ आने से उसको डर भी लगता था; क्योंकि आज अपने वचन के अनुसार सुनिया को बताना था कि एलिज़बेथ का मारनेवाला कौन है।

कैथराइन के घर से चलते हुए जो उसने मन में यह कहा था कि सुनिया, इसके बाद अब तुम क्या कहोगी, वह इस प्रकार कहा था, जैसे सच्चे वीर उत्तेजित दशा में कहते हैं। परन्तु आश्चर्य की बात है कि जब वह सुनिया के मकान पर पहुँचा, तो डर के मारे उसकी दृढ़ता नष्ट हो चुकी थी। वह दरवाजे पर खड़ा होकर सोचने लगा, क्या मैं स्वीकार कर लूँ कि एलिज़बेथ का मारनेवाला कौन है। सवाल बड़ा टेढ़ा था, और उसको उस समय यह विदित हुआ कि मुझमें स्वीकार करने की सामर्थ्य नहीं है। उसकी समझ में यह न आया कि स्वीकार करना क्यों असंभव प्रतीत होता है? वह अपनी निर्बलता को जानकर अत्यन्त दुखित हो गया। वह फिर दरवाजे की ओर झपटा, और घुसने के पहले सुनिया को देखने लगा। वह छोटी मेज पर कोहनी रक्खे, हाथों से अपना मुँह छिपाए बैठी थी। रोडियन को देखकर वह उसका स्वागत करने को उठी। ऐसा विदित होता था, जैसे वह उसकी प्रतीक्षा ही कर रही थी।

वह उसके साथ-साथ कमरे के बीच में जाकर बड़ी करुणा से बोली—"तुम्हारे बिना आज मुझको न-जाने क्या होता!" विदित होता था

कि आज के काम के लिये वह रोडियन को धन्यवाद देना चाहती है। वह चुपचाप खड़ी हो गई। रोडियन मेज़ के पास जाकर उसी कुरसी पर बैठ गया, जिसे सुनिया ने अभी ख़ाली की थी। गत रात की तरह सुनिया उसके पास खड़ी रही।

काँपती हुई वाणी में वह बोला—"सुनिया, समाज में तुम्हारा जो ऐसा स्थान है, इसी कारण यह दोष तुम्हारे ऊपर लगाया गया। तुम्हारी वृत्तिवाली स्त्रियाँ ऐसे कर्म करती हैं। तुम्हारी कुछ समझ में आया?"

सुनिया के मुख पर उदासी छा गई। वह बोली—"कल की तरह आज बातचीत मत करो। ईश्वर के लिये ऐसी बातें न करो। मैं काफ़ी से ज़्यादा मानसिक वेदना उठा चुकी हूँ।" फिर यह सोचकर कि कहीं आगन्तुक को ऐसी बात से दुःख न हो, वह हँसकर बोली—"मैं अभी वहाँ से पागल की तरह चली आई। वहाँ अब क्या हो रहा है? मैं जाना चाहती थी; परन्तु मुझे यह ख़याल आया कि तुम यहाँ आओगे।"

रोडियन ने उसको बताया कि मैडम ने कैथराइन को बाहर निकाल दिया है, और कैथराइन न्याय की खोज में कहीं गई है।

सुनिया ने चिल्लाकर कहा—"हे ईश्वर! चलो, वहीं चलें।" यह कहकर उसने लबादा उठाया।

रोडियन ने खिन्न होकर कहा—"हर समय वही बातचीत! उन्हीं का ध्यान है। मेरे पास भी तो थोड़ी देर बैठो।"

"परन्तु, कैथराइन…"

"उह, कैथराइन स्वयं यहाँ आवेगी। इस बात का विश्वास रक्खो। और, यदि तुम उसको यहाँ न मिलीं, तो दोष तुम्हारा ही होगा।"

सुनिया बैठ गई। रोडियन आँखें नीची करके बोला—"लूशिन, आज तुम्हारा अपमान करना चाहता था। और, यदि उसको कुछ लाभ होता, तथा मैं और लेपेजेडनिकाफ़ वहाँ न होते, तो इस समय तुम कारागार में होतीं!"

लड़की ने धीरे से सिर झुकाकर कहा—"हाँ।"

"मैं तो वहाँ यों ही आ गया था, और लेपेजेडनिकाफ़ भी अकस्मात ही आ पड़ा।" सुनिया चुपचाप सुनती रही।

"यदि तुम इस समय जेलखाने में होतीं, तो क्या होता? मेरी कल की बात याद करो?" सुनिया चुपचाप बैठी रही।

रोडियन ने उत्तर की प्रतीक्षा न करके फिर कहा—"मैं समझता था कि तुम कहोगी ही कि ऐसी बातें न करो। परन्तु तुम्हारे चुप रहने से मैं समझता हूँ कि मैं बोलता रहूँ। मैं तुमसे स्पष्ट पूछना चाहता हूँ कि यदि तुमको लूशिन के भाव पहले से मालूम होते, उसकी चाल—जो कैथराइन और उसके बच्चों के विनाश के लिये वह चलना चाहता था—तुम जानती होतीं, और इसका परिणाम यह होता कि पोलेचका को भी तुम्हारी ही वृत्ति की शरण लेनी पड़ती, तथा उस समय तुम्हारे सामने यह प्रश्न होता कि कैथराइन और उसके कुटुम्ब को बचाने के लिये लूशिन को या तो मार डालो या अपना सर्वनाश होने दो, तो मैं जानना चाहता हूँ कि तुम क्या करतीं?"

सुनिया उसकी ओर चिन्तित भाव से देखने लगी, और काँपती हुई वाणी में बोली—"मैं इस प्रश्न की प्रतीक्षा ही कर रही थी"।

"संभव है; परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम ऐसी दशा में क्या करतीं?"

सुनिया ने उत्तर दिया—"जो दशा संभवतः कभी उत्पन्न होने को न हो, उसके विषय में तुम कुछ जानकर क्या करोगे?"

"तो तुम लूशिन को बदमाशी करने के लिये जीवित रहने दोगी? परन्तु ऐसा कहने का तुमको साहस नहीं है।"

"मैं तुमसे कहना चाहती हूँ कि मैं ईश्वरीय मामलों में कुछ नहीं जानती। असंभव दशा में मैं क्या करती, मैं नहीं बता सकती। और, उसके पूछने से क्या लाभ है? दूसरे का जीवन या मरण

मेरे ऊपर निर्भर नहीं है। मुझे ईश्वर ने किसी को दण्ड देने का अधिकार नहीं दिया है।

रोडियन ने चिढ़कर कहा—"बस, ईश्वर का नाम ले दो, फिर आगे कुछ प्रश्न नहीं हो सकता।"

सुनिया ने कहा—"साफ़-साफ़ कहो, तुमको क्या कहना है? क्या तुम मुझको केवल दुःखी करने आए हो?" उसकी आँखों में आँसू भर आए, और वह फूट-फूटकर रोने लगी। रोडियन चुपचाप देखता रहा, और फिर धीरे से बोला—"सुनिया, तुम ठीक कहती हो।" रोडियन का भाव बदल गया। वह बोला—"मैंने कल तुमसे कहा था कि मैं तुमसे क्षमा माँगने न आऊँगा। परन्तु आज मैंने लूज़ान की बातचीत चलाकर तुम्हारे चित्त को दुःखी कर दिया।"

रोडियन हँसना चाहता था, परन्तु उसके मुख पर उदासी ही छाई रही। उसने सिर नीचा करके अपना मुख हाथों से ढक लिया। उसको विदित हुआ, जैसे वह सुनिया से घृणा करता है। चकित एवं भय-भीत होकर, सिर उठाकर, वह सुनिया की ओर देखने लगा, जो प्रेम-भरी चितवन से उसकी ओर देख रही थी। घृणा दूर हो गई, और उसने यह समझा कि अब समय आ गया है। एक बार फिर उसने सिर झुका लिया। वह पीला पड़ गया। कुरसी से उठकर, सुनिया की ओर देखकर, बिना कुछ बोले-चाले वह सुनिया के बिछौने पर बैठ गया। रोडियन का भाव इस समय वही था, जैसा उस समय, जब वह बुढ़िया के पीछे खड़ा हुआ कोट के नीचे से कुल्हाड़ी निकाल रहा था, और अपने मन में कह रहा था कि अब समय आ गया है।

सुनिया ने घबराकर पूछा—"क्या बात है?"

किंतु कुछ उत्तर न मिला। रोडियन इस समय न मालूम किस चिन्ता में मग्न था। सुनिया धीरे से उठी, उसके पास बिछौने पर बैठ गई, और उसकी ओर देखने लगी। रोडियन का दिल ज़ोर से धड़क रहा था;

दशा असहनीय हो रही थी । उसने अपना पीला मुख सुनिया की ओर फेर दिया । ओठ कुछ कहने के लिये हिले । सुनिया डर गई ।

उससे ज़रा दूर हटकर सुनिया ने पूछा—"तुम्हें क्या हो गया है ?"

"कुछ नहीं, सुनिया, डरो नहीं । बेहूदा बात है । मैं अपने मन में इस समय यही सोच रहा हूँ कि तुमको दुःखी करने के लिये इस समय क्यों आया ।"

पाव घण्टे से वह यही सोच रहा था । इस समय उसके होश-हवाश जाते रहे थे । शरीर काँप रहा था ।

सुनिया ने करुणा-भरी वाणी में कहा—"तुम बड़े दुःखी हो !"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं ।" रोडियन के पीले मुख पर कुछ हँसी आ गई । "तुमको याद होगा कि कल मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुमको आज कुछ बताऊँगा । चलते हुए मैंने कहा था कि सदा के लिये बिदा होता हूँ । और, यदि आ सका, तो बताऊँगा कि एलिज़बेथ का मारनेवाला कौन है, और इसीलिये मैं आज आया हूँ ।"

सुनिया का अंग-अंग काँपने लगा । वह बोली—"हाँ, तुमने कल यह ज़रूर कहा था । परन्तु तुम उसको कैसे जानते हो ?" सुनिया को साँस लेने में कठिनाई होने लगी । उसका चेहरा पीला पड़ गया ।

"मैं जानता हूँ ।"

सुनिया ने धीरे से पूछा—"क्या वह पकड़ा गया ?"

"नहीं, वह अभी नहीं पकड़ा गया ।"

सुनिया थोड़ी देर चुप रहकर फिर बोली—"तो तुम कैसे जानते हो ?"

वह कन्या की ओर मुड़ा, और विचित्र भाव से उसकी ओर देखते हुए, हँसते हुए बोला—"अपनी बुद्धि से बताओ ।"

सुनिया घबरा गई । फिर बच्चों की तरह हँसती हुई बोली—"तुम मुझको डराते क्यों हो ?"

"मैं उसको जानता हूँ, वह मेरा बड़ा मित्र है । एलिज़बेथ के मारने की उसकी इच्छा न थी । वह तो केवल अकेले बुढ़िया

गया था। परन्तु उसी समय एलिज़बेथ आ पड़ी। और, इसने बिना सोचे-समझे उसको भी मार डाला।"

कुछ देर दोनों चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते रहे। रोडियन ने अन्त में उससे पूछा—"तो तुम नहीं बता सकतीं?" रोडियन के मुख का भाव बड़ा विचित्र था।

सुनिया ने धीरे से कहा—"नहीं।"

"प्रयत्न करो।"

ये शब्द जिस समय रोडियन के मुँह से निकले, उसके मन की दशा बड़ी विचित्र हो रही थी, और मुँह भयानक हो रहा था। सुनिया की ओर उसने देखा। सुनिया के मुख का भाव वही था, जो एलिज़बेथ का, जब वह हाथ में कुल्हाड़ी लिए हुए हत्यारे से बचने के लिये पीछे हटी थी। उस समय एलिज़बेथ ने बच्चों की तरह अपने हाथ उठा लिए थे, लेकिन डरकर हत्यारे की ओर से आँख न हटा सकती थी। बिलकुल वही दशा सुनिया की थी। सुनिया ने भी अपने हाथ उठाए, और धीरे से रोडियन को धक्का दिया, तथा उसकी ओर घूरते हुए पीछे को हट गई। रोडियन भी घबराकर उसको घूरता रहा। अन्त में बोला—"क्या तुमने हत्यारे का पता लगा लिया?"

सुनिया ने कहा—"हे ईश्वर"

वह बिछौने पर लेट गई, और तकिए से अपना मुख छिपा लिया। एक क्षण के अनन्तर वह उठी, और दोनों हाथों से रोडियन को पकड़कर, घूरकर देखने लगी कि कदाचित उसकी भूल हो। परन्तु रोडियन की ओर देखते ही उसका संदेह विश्वास में परिणत हो गया।

रोडियन ने विनीत भाव से कहा—"सुनिया, बस, बस, मुझ पर दया करो।" रोडियन इस समय के लिये तैयार नहीं था।

सुनिया आपे से बाहर होकर, बिछौने से कूदकर, हाथ मलती हुई बीच कमरे में चली गई। फिर लौटकर रोडियन के पास बैठ गई। वह

काँपने लगी, चिल्लाकर उठी, और रोडियन के सामने घुटने टेककर बैठ गई। निराशा के भाव में उसने कहा—"तुम्हारा सर्वनाश हो गया!" और, फिर उठकर, उसकी गर्दन में हाथ डालकर, सुनिया ने रोडियन का मुँह चूमा, और प्रेम-भाव से उसकी ओर देखने लगी।

रोडियन हँसकर बोला—"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। तुम मेरे बताने के बाद भी मेरा मुँह चूमती हो। तुम नहीं समझतीं कि तुम क्या कर रही हो।"

सुनिया ने जैसे कुछ नहीं सुना। वह बोली—"इस समय संसार में तुमसे अधिक दुःखी कोई नहीं हो सकता।" वह फूट-फूटकर रोने लगी।

रोडियन के मन में ऐसे-ऐसे नए भाव उठे, जैसे आज तक नहीं उठे थे। दो आँसू निकलकर उसकी पलकों पर ढलक पड़े, और उसने विनीत भाव से पूछा—"तो सुनिया, तुम मुझको न छोड़ोगी?"

सुनिया ने कहा—"नहीं, नहीं, कदापि नहीं। मैं तुम्हारा स्वर्ग में अनुसरण करूँगी। मैं बड़ी पापिनी हूँ। मेरा तुम्हारा पहले क्यों न परिचय हुआ! तुम पहले क्यों नहीं आए? स्वर्ग में...!"

"अब तो आ गया हूँ।"

"अब क्या किया जाय।" यह कहकर फिर उसने प्रेम से रोडियन का मुख-चुम्बन किया, और बोली—"साथ-ही-साथ—हाँ, मैं तुम्हारे साथ ही फाँसी पर चढ़ूँगी।"

रोडियन को इन बातों से कुछ कष्ट हुआ। उसके होठों पर हँसी आ गई, और वह बोला—"सुनिया, अभी मुझे फाँसी पर चढ़ने की इच्छा नहीं है।"

लड़की ने रोडियन की ओर देखा। अभी तक उसके हृदय में इस अभागे के लिये बड़ी दया थी। इस वाक्य ने और उसकी वाणी ने सुनिया को यह याद दिलाई कि यही अभागा मनुष्य खूनी है। चकित होकर उसने रोडियन की ओर देखा। उसकी समझ में न आया कि यह हत्यारा

क्यों हो गया ? उसके मन में प्रश्न उठे कि क्या संभव है कि यह ख़ूनी हो ? यह सच नहीं हो सकता । मैं कहाँ हूँ ? क्या स्वप्न देख रही हूँ ? फिर वह बोली—"यह कैसे संभव हो सकता है कि तुम्हारे-जैसा उदार-हृदय मनुष्य हत्या करने का विचार करे ?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"चोरी करने के लिये।"

सुनिया घबराकर बोली—"क्या तुम भूखे थे ? क्या तुमने मा की सहायता करने के लिये चोरी की ?"

रोडियन ने सिर झुकाकर कहा—"नहीं सुनिया, नहीं। मैं इतना दरिद्र न था। मा की सहायता अवश्य करना चाहता था; परंतु हत्या का असली कारण यह न था। सुनिया, मुझको दुःखी न करो।"

लड़की अपने हाथ मलने लगी। बोली—"क्या यह संभव हो सकता है ? मैं इस बात का कैसे विश्वास करूँ ? तुम कहते हो, तुमने चोरी करने के लिये ख़ून किया। किन्तु तुम तो अपना सारा धन दूसरों की सहायता में दे देते हो; ऐसा नहीं कर सकते। क्या जो रुपया तुमने कैथराइन को दिया था, वह चोरी का था ?"

"नहीं सुनिया, वह रुपया मेरी मा ने एक सौदागर से लेकर मेरी बीमारी में भेजा था, और मुझे उसी समय मिला था, जब मैंने दिया। लाया तो राजू था, पर रुपया मेरा था।" सुनिया कुछ न समझी। "बुढ़िया का धन मुझे नहीं मालूम। उसमें कुछ रुपया था भी कि नहीं। मैंने उसकी गर्दन से एक चमड़े का बटुआ लिया था; परन्तु मैंने नहीं देखा कि उसमें क्या है। हाथों के बटन और घड़ी की चेनें भी ली थीं। ये सब चीज़ें मैंने एक पत्थर के नीचे दूसरे दिन छिपा दीं। अब भी वे वहीं हैं।"

सुनिया को अब भी कुछ आशा थी। उसने पूछा—"फिर तुमने वह धन क्यों नहीं लिया, जब चोरी करने के लिये तुमने वह ख़ून किया ?"

"इसका उत्तर मैं नहीं दे सकता। अभी तक मैंने यह निर्णय नहीं किया है कि मैं उसे लूँगा या नहीं।" फिर हँसकर बोला—"क्या मूर्खता की कहानी मैंने तुमसे कही!"

सुनिया ने फिर सोचा, यह पागल तो नहीं हो गया है। परन्तु यह विचार अधिक देर तक न रहा, और वह समझ न सकी कि रोडियन का क्या भाव है।

रोडियन शान्त भाव से बोला—"सुनिया, मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि मैंने आवश्यकता के लिये खून किया होता, तो मैं इस समय सुखी होता। परन्तु तुमको इससे क्या? तुम तो मुझे एक दुष्ट समझो। हाँ सुनिया, मैं किसी और अभिप्राय से तुम्हारे पास आया हूँ। कल मैंने तुमसे प्रस्ताव किया था कि हम दोनों कहीं भाग चलें; क्योंकि अब तुम्हारे सिवा मेरा इस संसार में और कोई नहीं।"

कन्या ने पूछा—"तुम मुझे संग क्यों ले जाना चाहते हो?"

रोडियन ने हँसकर उत्तर दिया—"मारने या चोरी करने के लिये नहीं। हम दोनों के विचार एक-से नहीं हैं। मैं नहीं जानता कि कल मैंने क्यों तुमसे साथ चलने को कहा था। अब मेरी केवल एक इच्छा है कि तुम मुझे न छोड़ो। सुनिया, कहो कि तुम मुझे नहीं छोड़ोगी।"

सुनिया ने उसका हाथ दबाया।

मैंने क्यों इससे अपना अपराध स्वीकार कर लिया। निराश होकर वह फिर बोला—"सुनिया, तुम सुनना चाहती हो कि मैंने यह खून क्यों किया? मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। तुम बात नहीं समझती, और तुमको सुनकर दुःख होगा। (देखकर) एँ! तुम फिर रोने लगीं, और मुझसे चिमटने। यह क्या करती हो? अपने दुःख के भार सहने का साहस अपने में न पाकर मैंने तुमको भी दुःखी कर दिया कि कदाचित् उससे मेरा दुःख कम हो। और, तुम मुझ-जैसे कायर से प्रेम करती हो!"

सुनिया ने कहा—"तुम भी तो दुःखी हो!"

रोडियन प्रेम-भाव से बोला—"सुनिया, मैं दुष्ट हूँ, तुम्हारे पास आया हूँ; क्योंकि मैं दुष्ट हूँ। बहुत-से लोग ऐसा न करते; परन्तु मैं दुष्ट और कायर हूँ। मैं तुम्हारे पास क्यों आया?"

सुनिया ने कहा—"नहीं, आकर तुमने अच्छा ही किया। कृपया मुझको सब बता दो।" रोडियन ने उसकी ओर देखकर कहा—"मैं दूसरा नेपोलियन होना चाहता था, इसीलिये मैंने हत्या की। कुछ समझीं?"

सुनिया ने उत्तर दिया—"नहीं; परन्तु बोलो, तो सब समझ जाऊँगी।"

"अच्छा, बात यह है कि एक दिन मैंने अपने मन में यह प्रश्न किया कि यदि नेपोलियन मेरे स्थान में होता, और उसको अपना जीवन आरंभ करने के लिये न तो टूलिन, न मिसर और न ब्लैक-पर्वत की चढ़ाई सामने होती, परन्तु इनके स्थान में, अपना जीवन आरंभ करने के लिये, एक हत्या करनी होती, तो क्या वह बुढ़िया को मारकर तीन हज़ार रूबल लेने के लिये हत्या के विचार से हट जाता? क्या वह यह स्वीकार करता कि यह निन्दनीय कार्य एक पाप है? बहुत दिनों तक मैं यह बात सोचता रहा, और अन्त में मुझे लज्जा आई, तथा मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि नेपोलियन एक क्षण भी इस बात को न सोचता, और अवश्य ही इस काम को कर गुज़रता। इसलिये नेपोलियन का प्रमाण पाकर मैंने सोचा कि मुझे भी न रुकना चाहिए। तुम इसको हँसी की बात समझती हो? तुम्हारा समझना ठीक है।"

कन्या को हँसी नहीं आ रही थी, वह बहुत धीरे से बोली—"सब हाल मुझसे साफ़-साफ़ कहो।"

वह उसकी ओर मुड़ा, और उसके हाथ पकड़कर बोला—"सुनिया, तुम ठीक कहती हो। मैं बेहूदा बातें करता रहा। तुम जानती हो, मेरी मा के पास कानी कौड़ी भी नहीं है। ईश्वर की कृपा से मेरी बहन कुछ लिख-पढ़ गई है, और इसलिये वह पढ़ाया करती है। मेरा ही

उनको भरोसा था। युनिवर्सिटी में मैंने पढ़ना आरंभ किया; परन्तु धनाभाव के कारण अध्ययन छोड़ना पड़ा। यदि मैं पढ़ता भी रहता, तो दस-पंद्रह वर्ष के बाद मुझको कहीं स्कूल की मास्टरी या किसी सरकारी दफ्तर की नौकरी, वार्षिक हज़ार रूबल की, मिल जाती। परन्तु इसी समय में चिन्ता और शोक से मेरी माता का स्वास्थ्य बिगड़ जाता, और मेरी बहन की न-जाने क्या दुर्दशा होती। प्रत्येक वस्तु के लिये दूसरे का मुँह ताकना, अपनी मा को कष्ट पहुँचाना, बहन को दुर्दशा करना—यह सब क्या है? क्या यह जोवन है? और, इन सब कष्टों को सहने के बाद क्या मिलता? अपने नातेदारों को गाड़कर एक नया कुटुम्ब उत्पन्न करता, जिनको, मरने के बाद, संसार में निराधार छोड़ जाता। मैंने सोचा कि इस बुढ़िया के रुपए मिलने से मैं अपनी मा पर भार-स्वरूप न रहूँगा, और फिर युनिवर्सिटी में जाकर नया जीवन आरंभ करूँगा। बुढ़िया को मार डालना अपराध था, लेकिन...ख़ैर...।" यह कहकर रोडियन थककर, सिर पकड़कर, बैठ गया।

सुनिया ने कहा—"यह बात सच नहीं है, कुछ और बात है।"

"तो तुम्हारी सम्मति है कि कुछ और बात है? मैंने तो सब सच-सच बता दिया।"

"सब सच?"

"सुनिया, मैंने केवल एक कीड़े के प्राण लिए हैं।"

"परन्तु वह कीड़ा एक स्त्री थी।"

"मैं जानता हूँ, वह सचमुच कीड़ा नहीं थी। सुनिया, तुम ठीक कहती हो। मैंने किसी और कारण से उसको मार डाला। सुनिया, बहुत दिनों से मैं मनुष्यों से मिलता नहीं हूँ, इसलिये बहुत बातचीत करने से मेरे सिर में दर्द होने लगा है।"

रोडियन के नेत्र चमक रहे थे, उसके होठों पर हँसी थी, और सरसाम ने उसे आ जकड़ा था। हँसी ऊपरी मालूम होती थी; हृदय में अत्यन्त

वेदना थी । सुनिया का भी अपने ऊपर काबू न रहा, और वह निराश होकर अपने हाथ मलने लगी ।

रोडियन ने अपना सिर उठाया । उसके मन में नए विचार आए । वह बोला—"सुनिया, मैंने तुमसे सच नहीं कहा । यह समझ लो कि मैं बहुत ही घमण्डी, ईर्ष्या, बुरे विचारोंवाला, दुराचारी एवं मूर्ख हूँ । मैंने अभी तुमसे कहा कि मुझे युनिवर्सिटी छोड़नी पड़ी । मैं चाहता तो वहाँ ठहर सकता था । मेरी मा फ़ीस दे देती, और कुछ काम करके मैं अपने खाने-पहनने के लिये काफ़ी पैदा कर लेता । लड़के पढ़ाने से ५० रूपक मुझे मिलते थे । राजू तो परिश्रम करता है । परन्तु निराश होकर मुझसे परिश्रम न हो सका । मैं कमरे में रहने लगा जैसे मकड़ी अपने कोने में रहती है । तुमने मेरा कमरा देखा है । ऐसे छोटे धुएँवाले कमरे में रहकर मनुष्य का दिमाग़ खराब हो जाता है । मैं उस स्थान से घृणा करने लगा । परन्तु, फिर भी, छोड़ नहीं सकता था । तीन दिन बिछौने में पड़ा रहा । पढ़ने को चित्त न चाहता था । खाने तक की चिंता न थी । मैं यही सोचता था कि यदि नेस्टेसिया खाने को ले आवेगी, तो खा लूँगा; नहीं तो भूखा रह जाऊँगा । पढ़ना छोड़ दिया था, किताबें बेच डाली थीं । नोटबुक पर एक-एक इंच धूल जम गई थी । रात को बिना प्रकाश के रहता था; क्योंकि मोमबत्ती मोल लेने के लिये पैसे न थे । मुझे पढ़ना चाहिए था, परन्तु मैं कोच पर पड़े-पड़े सोचा करता था । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरे विचार क्या थे । मैं अपने दिल में प्रश्न किया करता था कि जब तुम जानते हो कि सब मनुष्य मूर्ख हैं, तो प्रयत्न करके तुम तो बुद्धिमान बनो । मैंने यह भी स्वीकार किया कि यदि मनुष्य इस बात की प्रतीक्षा करे कि मैं उस समय बुद्धिमान बनूँगा, जब सब बुद्धिमान हो जायँ, तो बड़े धैर्य की आवश्यकता है । फिर मेरे मन में यह विचार आया कि वह समय कभी न आवेगा ।

मनुष्यों में परिवर्तन न होगा, उन्हें बुद्धिमान बनाने की चेष्टा करना व्यर्थ समय नष्ट करना है। संसार का यही नियम है। वही मनुष्य सबसे आगे रहता है, जो विशेष बुद्धिमान् है। और, संसार की दृष्टि में वही मनुष्य विशेष बुद्धिमान् है, जो साहस करना जानता है। जो दूसरों का तिरस्कार और अपमान करता है, वही संसार में आदर प्राप्त करता है। यह नियम सदा से चला आया है, और सदा रहेगा। इस नियम का न समझना अंधेपन का लक्षण है।"

रोडियन ने सुनिया की ओर सिर उठाकर देखा कि वह चुपचाप बैठी सुन रहा है। फिर उत्तेजित होकर वह बोला—"सुनिया, मुझे विश्वास हो गया कि वही मनुष्य संसार में शक्तिमान् है, जो शक्ति से काम लेता है। साहस के अतिरिक्त संसार में और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं। जिस समय यह नियम मेरी समझ में आ गया, और इसकी सचाई में मुझे संदेह न रहा, तथा यह ऐसा स्पष्ट हो गया, जैसे सूर्य का प्रकाश, उस समय मुझे साहस करने की इच्छा हुई; और मैंने खून कर डाला। मैं साहस की आज़माइश करना चाहता था, और यही मेरा अभिप्राय था।"

सुनिया ने कहा—"ठहरो-ठहरो, तुम ईश्वर से विमुख हुए थे, इसलिये ईश्वर ने दण्ड देकर तुम्हें शैतान के हाथ में दे दिया।"

"तो सुनिया, क्या तुम यह कहना चाहती हो कि ये विचार शैतान के प्रभाव से आए?"

"ठहरो, ठहरो, हँसी न करो। अविश्वासी मनुष्य, तुम कुछ नहीं समझते। हे ईश्वर, क्या कभी इसको समझने की शक्ति आवेगी?"

"सुनिया, मैं हँसी नहीं कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि शैतान ही ने मुझमें ऐसे विचार उत्पन्न किए; परन्तु, सुनिया, तुम कुछ न कहो। मैं सब समझता हूँ। तुम जो कुछ कहोगी, उसे मैं कई बार सोच चुका हूँ। हृदय में मेरे बड़ी कठोर लड़ाई हो चुकी है। मेरे विचार असहनीय हो गए थे, और मैं उन विचारों से छुटकारा चाहता था। मैं वहाँ पागलों

की तरह नहीं गया था, परन्तु खूब सोच-विचार कर। मैं यह सोचता था कि मुझे इस कार्य के करने का क्या अधिकार है। और, मैं समझता था कि कोई अधिकार नहीं है; क्योंकि अपने में संदेह करना ही यह प्रमाणित करता है कि मुझे अधिकार नहीं है। जब मैं सोचता था कि मनुष्य भी कीड़े की तरह हो सकते हैं, तब मुझे विचार आता था कि मेरे लिये नहीं, परन्तु उन साहसी पुरुषों के लिये मनुष्य कीड़ा है, जो इस बात का विचार ही नहीं करते। नेपोलियन इसकी हत्या करता या न करता, यह प्रश्न प्रमाणित करता था कि मैं नेपोलियन नहीं हूँ। फिर मैंने सोचना छोड़ दिया। खून करने की मेरी इच्छा हुई। फिर मैंने अपने अन्तःकरण को तर्क करके धोखा नहीं देना चाहा। जब मैंने खून किया, तब मेरे विचार ये न थे कि अपनी माता के दुःखों को कम करूँगा, या जो धन या शक्ति मुझे मिलेगी, वह मनुष्य-मात्र की सेवा में लगा दूँगा। उस समय मेरे विचार ऐसे न थे। मुझे भावी-जीवन की कुछ चिंता न थी। धन के लोभ से मैंने ऐसा नहीं किया था। उस समय मैं केवल यह जानना चाहता था कि और लोगों के समान मैं भी एक कीड़ा ही हूँ, या मनुष्य। मुझको यह जानने की इच्छा थी कि मैं बाधाओं और आपत्तियों के हटाने की शक्ति रखता हूँ या एक साधारण कीड़ा हूँ। मुझको इस बात का अधिकार है…।"

सुनिया ने पूछा—"किस बात का,—खून करने का अधिकार?"

"हाँ, सुनिया! बीच में मुझे न टोको। मैं केवल एक बात कहना चाहता हूँ। शैतान मुझको बुढ़िया के घर ले गया। वह मुझको चिढ़ाता था कि मैं भी औरों के समान कीड़ा हूँ। उस शैतान के चिढ़ाने से मैं आज यहाँ आया हूँ। उस बुढ़िया के घर जाकर मैं केवल एक अनुभव करना चाहता था। यही मेरा उद्देश्य था।"

"और, तुमने खून कर डाला!"

"सुनो तो, मैंने और मनुष्यों की तरह नहीं मारा। जिस तरह मैंने यह काम किया, उस तरह और मनुष्य नहीं करते। किसी दिन तुमको सब हाल मालूम होगा। क्या मैंने बुढ़िया को मारा है? नहीं-नहीं, मैंने अपने को मारा है, मैंने अपना नाश किया है। बुढ़िया को मैंने नहीं, शैतान ने मारा है।" फिर हृदय-विदारक वाणी में बोला—"सुनिया, मुझको छोड़ दो। बस, कुछ न कहो।" यह कहकर, हाथों पर सिर रखकर वह बैठ गया।

सुनिया ने कहा—"यह कितना दुःखी जीव है!"

रोडियन ने सिर उठाकर पूछा—"अब क्या करना चाहिए?"

लड़की ने कहा—"क्या करना चाहिए" और, यह कहकर वह रोडियन के पास झपटकर गई। उसके नेत्र जो अब तक जल से पूर्ण थे, चमकने लगे, और वह बोली—"उठो।" यह कहकर उसने रोडियन के कंधे पकड़े। रोडियन सुनिया की ओर आश्चर्य से देखता हुआ उठ खड़ा हुआ। सुनिया कांपती हुई वाणी में उसके हाथ पकड़कर बोली—"जाओ-जाओ, इसी क्षण किसी सड़क पर जाओ। धरती पर लेटकर जिस धरती माता को तुमने खून से रँगा है, उसका चुंबन करो, और चिल्लाकर प्रत्येक राहगीर से कहो कि मैं खूनी हूँ, ईश्वर तुमको शान्ति देगा। जाओगे कि नहीं?" सुनिया के नेत्रों से जैसे आग निकल रही थी।

रोडियन सहम गया, और बोला—"तुम्हारी इच्छा है कि मैं फाँसी पर लटक जाऊँ? तुम चाहती हो कि मैं अपना अपराध स्वीकार कर लूँ?"

"तुमको प्रायश्चित्त करना होगा; नहीं तो तुम्हारा उद्धार न होगा।"

"सुनिया, मैं अपना अपराध नहीं स्वीकार करूँगा।"

"फिर ज़िन्दा कैसे रहोगे? ऐसी दशा में माता के सामने सिर उठाकर कैसे जाओगे? (हे ईश्वर! वे क्या करेंगी?) परन्तु मैं क्या कह रही हूँ। तुमने मा और बहन को तो छोड़ दिया। मैं अब समझी कि तुमने अपने मित्रों और कुटुम्ब को क्यों छोड़ दिया। मनुष्यों की संगति छोड़कर तुम कैसे जीवित रहोगे?"

रोडियन ने कहा—"बुद्धि से काम लो। मैं क्यों अपना जीवन अधिकारियों को अर्पण कर दूँ ? उनसे जाकर क्या कहूँ ? जो बात मैंने की है, वैसी ही ये अधिकारी रोज़ करते हैं। वे हजारों मनुष्यों का खून करते हैं, और फिर भी उसका अभिमान करते हैं। वे स्वयं कायर हैं। मैं, सुनिया, ऐसा नहीं करूँगा। मैंने खून किया है, परन्तु चोरी के माल को काम में लाने का साहस नहीं है। उसको मैंने पत्थर के नोचे छिपा दिया है। अधिकारी मुझे मूर्ख समझेंगे, और मेरे ऊपर हँसेंगे। वे इन बातों को नहीं समझ सकते। अपनो आहुति मैं न दूँगा। सुनिया, तनिक बुद्धि से काम लो।"

"और, जोवन-भर इस दुःख का भार उठाओगे ?"

"इसका अभ्यास हो जायगा। इस समय मैं यह कहने आया हूँ कि पुलीस मेरे पोछे है, और मैं पकड़ा जानेवाला हूँ।"

"सुनिया ने सहम कर कहा—"आँ !"

"तुम क्यों इसकी चिंता करती हो, जब स्वयं मुझे फाँसी पर चढ़ने को भेजती हो ? अभी तक मुझे पकड़ने के लिये उनके पास पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। उनको कुछ कष्ट दूँगा, और फिर उनकी सब कार्यवाही धुआँ बनकर उड़ जायगी। कल मेरे पकड़े जाने का भय था, और मैं विश्वास करता था कि मेरा अन्त हो गया। आज वह भय जाता रहा। उनके पास जो प्रमाण हैं, उनको मैं काट सकता हूँ। इसमें कुछ कठिनाई न होगी। परन्तु मैं समझता हूँ कि मुझे हवालात में तो अवश्य जाना पड़ेगा। आज ही चला गया होता, परन्तु सौभाग्य से बच गया। अभी किसी भी समय पकड़े जाने का भय है; परन्तु उसकी कोई चिंता नहीं। वे मुझे पकड़ेंगे, और फिर छोड़ देंगे; क्योंकि उनके पास प्रमाण नहीं, और मैं कुछ स्वोकार न करूँगा। केवल संदेह पर आदमी को फाँसी नहीं होती। मैं तुमको पहले से सूचित कर रखता हूँ कि मा और बहन को अधिक दुःख न होगा। बहन को तो अब काफ़ी रुपए मिल गए हैं। मा का प्रबंध करना है। जो कुछ तुम करना, बुद्धि से करना; और जब मैं

पकड़ा जाऊँ, तब हवालात में मुझसे मिलने आना।"

"आऊँगी।"

दोनों पास-पास उदास बैठे थे, जैसे वे लोग, जिनका जहाज़ आँधी से तबाह हो गया हो, और उनको आँधी ने किसी जंगल में फेंक दिया हो। रोडियन को सुनिया के प्रेम का विश्वास हो गया, और इस विश्वास से उसे कुछ दुःख भी हुआ। वह सुनिया के यहाँ आया था, और उसने कहा था कि तुम्हीं मेरे सहारा हो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो। उसने अपने दुःख की कहानी सुनिया को सुनाई। और, अब जब सुनिया को अपना हृदय दे दिया, तो रोडियन को मालूम हुआ कि मैं पहले से भी अधिक दुखी हो गया।

"सुनिया, मुझसे हवालात में मिलने न आना।"

कन्या ने कुछ उत्तर न दिया, और रोने लगी। कुछ क्षण बीत गए। फिर सुनिया ने पूछा—"तुम्हारे पास क्रॉस है, या नहीं?" रोडियन इस प्रश्न को न समझा। "तुम्हारे पास नहीं है, तो यह लो। यह लकड़ी का बना हुआ है। मेरे पास दूसरा पीतल का है, जो मुझे एलिज़बेथ ने दिया था, और इसके बदले मैंने उसे एक चित्र दिया था। मैं उसे पहनूँगी, और तुम यह पहनो। यह मेरा है। हम दोनों साथ ही प्रायश्चित करेंगे, इसलिये हम दोनों को क्रॉस पहनना चाहिए।" रोडियन ने हाथ बढ़ाकर कहा—"लाओ।" फिर हाथ घसीटकर कहा—"नहीं, नहीं, फिर देखा जायगा।" सुनिया ने उत्तर दिया—"अच्छा, फिर सही। तुम इसको जीवन-यात्रा समाप्त करते समय पहनना। उस समय मेरे पास आना, मैं तुम्हारे गले में इसे पहनाऊँगी। ईश्वर से प्रार्थना करके हम दोनों साथ ही जीवन-यात्रा समाप्त करेंगे।"

इसी समय किसी ने दरवाज़े खटखटाए—"सोफ़ाया सेमानोवना! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?"

सुनिया बेचैन होकर दरवाज़े की तरफ़ दौड़ी। आगन्तुक मिस्टर लेपेजेडनिकाफ़ था।

पाँचवाँ परिच्छेद

लेपेजेडनिकाफ़ कुछ घबराया हुआ था। वह बोला—"सुनिया, मैं तुझे ढूँढ रहा हूँ।" फिर रोडियन से बोला—"मैं समझा था कि तुम यहाँ मिलोगे। मेरा प्रयोजन यह नहीं कि तुम यहाँ किसी पाप के लिये आए हो। ख़ैर। कैथराइन पागल हो गई है।" यह सुनकर सुनिया चीख़ पड़ी।

"कम-से-कम ऐसा विदित होता है। समझ में नहीं आता, क्या किया जाय। जिस स्थान में वह गई थी, वहाँ से भगा दी गई है। संभव है, घूँसे मारकर भगा दी गई हो। वह साइमन के मुखिया के पास गई थी, जो अपने साथी के साथ भोजन कर रहा था। कैथराइन तुरन्त ही उस दूसरे जनरल के घर गई, और साइमन के मुखिया से मिलने का हठ करने लगी। वहाँ से वह निकाली गई। वह कहती है कि मैंने भी जरनल का खूब अपमान किया, और कोई चीज़ खींचकर मारी। मुझको आश्चर्य है कि वह हवालात में क्यों नहीं बन्द कर दी गई। वह अब अपनी ज़िन्दगी किस प्रकार गुज़ारेगी, यह सबको बताती है। उसकी उत्तेजित अवस्था के कारण उसकी बातें समझ में नहीं आतीं। वह कहती है कि अब मुझको कोई सहारा नहीं रहा। अब मैं नटनी हो जाऊँगी। मेरे बच्चे नाचेंगे, और गावेंगे। रोज़ बाहर मैं जनरल के घर पर जाऊँगी। जनता देखेगी कि जनरल की निर्दयता से एक प्रतिष्ठित कुटुम्ब के बच्चे सड़कों पर भीख माँग रहे हैं। वह बच्चों को मार रही है, और वे रो रहे हैं। लेना को कृषक का गाना सिखाया जा रहा है, और छोटे बच्चे और पोलिया को नाचने की शिक्षा दी जा रही है। घर के कपड़ों को काटकर नटों के बच्चों के-से कपड़े बना दिए हैं, और कोई

बाजा पास न होने के कारण वह कहती है कि तसले से ढोल का काम लूँगी। किसी की बात नहीं सुनती ..."

लेपेजेडनिकाफ़ बोलता जाता था। सुनिया, जो अब तक उसे सुनती जा रही थी, उठी, और टोपी उठाकर कमरे से बाहर निकल गई। रास्ते में बाल सँवारे दोनों युवक उसके पीछे चले।

लेपेजेडनिकाफ ने रोडियन से कहा—"वह बिलकुल पागल हो गई है। सुनिया से तो मैंने केवल इतना ही कहा कि पागल मालूम होती है। सच तो यह है कि उसके पागल होने में कोई संदेह नहीं। राज-यक्ष्मा के रोगियों का दिमाग़ भी ख़राब हो जाता है। अच्छा होता, यदि मुझे कुछ डॉक्टरी आती होती। मैंने उसको बहुत समझाया; परन्तु वह कुछ सुनती ही नहीं।"

"तो क्या तुमने उससे राजयक्ष्मा के विषय में कुछ बातचीत की?"

"नहीं, वह कुछ समझ भी नहीं सकती। मैं यह कहना चाहता हूँ कि यदि तुम रोते हुए मनुष्य को यह समझाओ कि उसका रोना अकारण है, तो वह अवश्य चुप हो जायगा। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि समझाने पर भी वह चुप नहीं होती।"

रोडियन ने उत्तर दिया—"अगर संसार में ऐसे साधारण प्रकार से काम होता, तो जीवन बड़ा सुखमय होता।"

अपने दरवाजे पर पहुँचकर लेपेजेडनिकाफ़ को प्रणाम करके वह अन्दर घुस गया। कमरे में पहुँचकर उसने सोचा कि मैं क्यों वापस आ गया। फिर वही फटी दरी, धूल और पलंग उसे सताने लगे। हाते से कील ठोकने की आवाज़ आ रही थी। उसने खिड़की के पास जाकर देखा, परन्तु कोई नहीं दिखाई दिया। बाईं ओर कुछ खिड़कियाँ खुली थीं, जिनमें कुछ गमले लटक रहे थे, और कपड़े सूखने को फैले हुए थे। यह दृश्य वह कई बार देख चुका था। वह फिर आकर कोच पर बैठ गया। आज तक उसको ऐसा अनुभव नहीं हुआ था कि जैसे वह सब

संसार से पृथक् हो गया। फिर उसको यह ख़याल आया कि मैं सुनिया से घृणा करता हूँ। मैंने उसको और दुःखी क्यों कर दिया? उसको क्यों रुलाया? उसके जीवन को कष्टमय क्यों कर दिया? मैं बड़ा कायर हूँ। वह मुझसे जेल में मिलने न आवेगी। मैं अकेला रहूँगा। पाँच मिनट के बाद उसको कुछ हँसी आई, और उसने सोचा कि चलो, घूम आवें। तुरन्त ही दरवाज़ा खुला, और डोनिया घुसी। द्वार पर खड़े-खड़े उसने रोडियन को उसी चितवन से देखा, जैसे अभी वह सुनिया को देख रहा था। फिर वह पास आकर कुरसी पर बैठ गई। दोनों एक दूसरे को देखते रहे।

डोनिया बोली—"प्यारे भाई, दुखी मत हो। मैं एक क्षण के लिये आई हूँ। मेरे प्यारे भाई, मुझको सब मालूम हो गया है। पुलीस तुमको परेशान कर रही है; तुम पर घृणित और झूठे दोष लगाए जा रहे हैं। राजू ने मुझे विश्वास दिलाया है कि कोई भय की बात नहीं। तुम व्यर्थ ही सोच-सोचकर अपने चित को व्याकुल करते हो। मैं समझती हूँ, तुमको कितना क्रोध आता होगा। और, कोई आश्चर्य नहीं कि इससे तुम्हारे जीवन पर बुरा प्रभाव पड़े। मुझे इस बात का भय है। तुमने हम लोगों को छोड़ दिया। मैं इस विषय में कुछ नहीं कहना चाहती। परन्तु प्रार्थना करती हूँ कि जो कुछ अपराध मुझसे हुआ हो, उसे क्षमा करना। यदि मैं तुम्हारे स्थान में होती, तो मैं भी संसार को त्याग देती। मा को यह सब हाल मैं न बताऊँगी, और उसको धीरज देती रहूँगी कि तुम शीघ्र ही हम लोगों से मिलने आओगे। मैं इस समय केवल तुमसे यह प्रार्थना करने आई हूँ कि उससे आकर एक बार मिल जाओ। वह तुम्हारी मा है। मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि यदि तुम्हें मेरी आवश्यकता हो—चाहे जिस काम के लिये हो—जीवन और मरण में मैं तुम्हारा साथ दूँगी। जब मुझे बुलाओगे, मैं आऊँगी। नमस्ते।" यह कहकर डोनिया दरवाज़े की ओर चली।

रोडियन ने उठकर कहा—"डोनिया, राज़ू बहुत अच्छा आदमी है।"

डोनिया के मुख पर लालिमा आ गई। उसने कहा—"इसका क्या अर्थ है?"

"वह परिश्रमी, धार्मिक और उद्योगी मनुष्य है। सच्चा प्रेम कर सकता है। डोनिया, नमस्ते।"

डोनिया बिलकुल लाल हो गई, और बोली—"प्यारे भाई, क्या यह अन्तिम भेंट है? क्या तुम मुझे अपनी अन्तिम इच्छा बता रहे हो?"

"इसकी चिंता न करो। नमस्ते।" वह खिड़की की ओर चला गया। डोनिया कुछ देर खड़ी रहकर, दुखित होकर, चली गई।

डोनिया की ओर से उसकी उदासीनता न थी। अभी उसकी बड़ी प्रबल इच्छा हुई थी कि डोनिया को प्यार कर ले, और उससे सब हाल बता दे। परन्तु उसने उससे हाथ तक न मिलाया। उसे ख़याल हुआ कि कदाचित् पीछे मेरा हाल जानकर वह मुझसे घृणा न करने लगे। फिर उसने सोचा कि ऐसी स्त्रियाँ ऐसी बातें नहीं करतीं। उसके विचार सुनिया की ओर चले गए।

ठण्ढी हवा चल रही थी; अँधेरा हो रहा था। रोडियन ने टोपी उठाई, और बाहर निकल गया। स्वास्थ्य की उसे अब कोई चिंता न थी। भय और दुःख अपना प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर डाल चुके थे। ज्वर ने अभी तक इसलिये उसे नहीं आ दबाया था कि उत्तेजना के कारण उसमें एक अद्भुत शक्ति आ गई थी। वह इधर-उधर घूमता रहा। सूर्यास्त हो गया। कुछ दिनों से रोडियन को हरवक्त यही चिंता रहती थी कि भावी जीवन एकान्त में बिताना होगा। रात को यह विचार बहुत दुःख देता था। उसने सोचा, चलो, सुनिया के पास चलें, और फिर डोनिया से भी मिल लेंगे। किंतु किसी ने उसको पुकारा। उसने मुड़कर देखा, लेपेजेडनिकाफ़ उसके पीछे दौड़ा आ रहा था।

"मैं अभी तुम्हारे स्थान पर गया था। कैथराइन जो करती थी, व
कर गुज़री, और बच्चों को लेकर बाहर निकल गई। बड़ी कठिनाई
मैंने और सुनिया ने उसे ढूँढ़ा। वह तसला बजा रही है, बच्चे ना
रहे हैं, और रो रहे हैं। दूकानों पर जाकर वह यह करती है। बहुत-
लड़के इनके पीछे लगे हैं। जल्दी चलो।"

रोडियन लेपेजेडनिकाफ़ के साथ तेज़ी से चलने लगा। उस
पूछा—"सुनिया का क्या हाल है?"

"वह बिलकुल पागल हो गई है। यों तो कैथराइन भी पागल
है; परन्तु सुनिया की दशा इससे अच्छी नहीं है। शीघ्र ही उसे पकड़क
पुलीस ले जायगी। अब वह पानी के पास, पुल के समीप, सुनिया के मका
के पास है। हम भी वहीं पहुँच गए हैं।"

नहर के किनारे पुलीस के समीप बहुत-से लड़के और लड़कियाँ एक
त्रित थीं। कैथराइन की आवाज़ पुल पर से सुनाई देती थी। सचमु
दृश्य ऐसा विचित्र था कि पथिक ठहर जाते थे। पुरानी चटाई की टोप
लगाए, पुराना गाउन पहने—जिस पर पुराना शाल पड़ा था,—कैथराइ
लेपेजेडनिकाफ़ के कथन का समर्थन कर रही थी। वह हाँफ रही थी, उसक
मुख से उसके दुःखों की कहानी प्रकट हो रही थी। निर्बल होने पर भी
उत्तेजना के कारण उसमें शक्ति आ गई थी। अपने बच्चों को वह डाँट रह
थी, और लोगों की उपस्थिति ही में उनको गाने की शिक्षा दे रही थी
लोगों को बताती जाती थी कि उनको नाचना और गाना क्यों सीखन
पड़ा। जब वे कुछ नहीं समझते थे, तो उनको पीटती भी थी। बीच-बीच
में जनता को उपदेश भी देती थी। यदि भीड़ में कोई अच्छे कपड़े पहन
हुए देख पड़ता था, तो उनकी ओर इशारा करके वह बताती थी कि
प्रतिष्ठित और राजकीय कुटुम्ब के बच्चों की क्या दशा हो गई है। यदि
कोई उसकी बातों पर हँसता था, तो उनसे गाली-गलौज भी
करती थी।

बहुत-से लोग हँस रहे थे, कुछ सिर हिलाते थे। सब इस पागल औरत को घेरे हुए थे। तसला तो रोडियन ने कोई देखा नहीं; परन्तु कैथराइन ताली बजाती जाती थी। पोलेचका गाती थी, लेना और कोलिया नाचती थी। कभी-कभी वह गाती भी थी; परन्तु फिर खाँसी के कारण, निराश होकर, अपने रोग को बुरा-भला कहकर रोने लगती थी। कोलिया और लेना के आँसू उसका दिल और तोड़े देते थे। उनके कपड़े सड़कों पर गानेवालों के-जैसे थे। छोटा लड़का तुर्कों की तरह लाल और सफ़ेद पगड़ी बाँधे था। लेना को पहनने के कपड़े न होने के कारण एक लाल टोपी दे दी थी, जिसमें शुतुरमुर्ग का पर लगा हुआ था, जो कैथराइन की दादी का था। पोलेचका साधारण कपड़े पहने थी। वह मा को पागल समझकर उसी के साथ-साथ थी। सड़कों पर भीड़ के बीच में अपने को ख़याल करके वह बहुत लज्जित थी। सुनिया कैथराइन से बार-बार अपने घर चलने को कहती थी; परन्तु कैथराइन का संकल्प दृढ़ था।

उसने खाँसते हुए कहा—"सुनिया, मुझसे कुछ न कहो; बच्चों की-सी बातें न करो। मैं तुमसे कह चुकी कि मैं उस शराबी जर्मन स्त्री के घर कदापि न जाऊँगी। सारे नगर-निवासी देखेंगे कि एक प्रतिष्ठित पिता के बच्चों की क्या दशा है—उसके बच्चों की, जिसने जीवन-भर देश की सेवा की, और देश की सेवा ही में प्राण त्याग दिए। उस शैतान जनरल को हमारे दुःख का हाल मालूम होगा। सुनिया, तुम मूर्ख हो। तुम्हारी इच्छा है कि हम तुम्हारे आश्रय रहें। हमने तुम्हारा बहुत खाया।" फिर रोडियन को देखकर, उसकी ओर लपककर, बोली—"सुनिया को समझा दो कि हमारे लिये यही सबसे उत्तम व्यवसाय है। मनुष्य नटों को भीख देते हैं। हमको वे नट न समझेंगे, और यह समझेंगे कि कोई प्रतिष्ठित आदमी मुसीबत में है। मेरे शब्दों को याद रक्खो कि उस शैतान जनरल को इस बात का उत्तर देना होगा। हम यहाँ नित्य

आवेंगे, और जब सम्राट् इधर से गुज़रेंगे, तब उनके पैरों पर गिरकर, अपने बच्चों की कथा सुनाकर, उससे रक्षा की प्रार्थना करेंगे। वह अनाथों का पिता है, और दयालु है। वह हमारी रक्षा करेगा। वह निर्दय जनरल··· लेना, सीधी खड़ी हो। कोलिया, एक पग आगे बढ़ो। डरती क्यों हो? मूर्ख लड़कियो! रोडियन, मैं इन लड़कियों को क्या करूँ। ये बड़ी मूर्ख हैं, किसी प्रकार सीखती ही नहीं। भगवन्, ये कभी कुछ सीखेंगी!"

कैथराइन रो रही थी। रोडियन ने उससे घर वापस चलने को कहा। उसने यह भी कहा कि एक ऐसी स्त्री का, जो कन्याओं के लिये छात्रालय खोलना चाहती है, सड़कों पर नटनियों की तरह घूमना अनुचित है।

कैथराइन ने हँसकर खाँसते-खाँसते उत्तर दिया—"छात्रालय? मेरी हँसी उड़ाते हो! राडियन, वह स्वप्न मिट्टी में मिल गया। प्रत्येक मनुष्य ने हमें त्याग दिया। उस जनरल के सिर पर मैंने दावात खींच-कर मारी, जो बाहर इसलिये रक्खी थी कि आगन्तुक अपना नाम रजि-स्टर पर लिख सकें। अपना नाम लिखकर, दावात मारकर, मैं चली आई। वह बड़े कायर हैं। मैं उनकी क्या परवा करती हूँ। मैं अपने बच्चों का पालन-पोषण करूँगी, और किसी के आगे सिर न झुकाऊँगी। सुनिया ने हमारे लिये बहुत दुःख सहे। पोलेचका, अभी तक कितनी आय हुई है? केवल दो कूपक! लोग कुछ देते नहीं हैं। परन्तु हमारे पीछे-पीछे हँसी उड़ाते हुए चल रहे हैं। (भाड़ में एक मनुष्य की ओर दिखाकर) वह मूर्ख क्यों हँस रहा है? कोलिया की मूर्खता पर सब हँसते हैं। पोलेचका, फ्रांसीसी-भाषा बोलो, जिससे लोगों को मालूम हो कि तुम अच्छे कुटुम्ब की हो, साधारण नटिनी नहीं हो। हम साधारण गीत न गायेंगी, परन्तु अच्छे राग गावेंगी,। अब क्या गाना चाहिए? रो हम यहाँ इसलिये ठहरे हैं कि आगे का प्रोग्राम नियत कर लें। बिना

तैयारी के हमको बाहर आना पड़ा। तैयारी करके हम न्यूविस्की में गावेंगी, जहाँ प्रतिष्ठित लोग रहते हैं। वे हम लोगों को पहचान ले'गे। लेना को कृषक का गाना आता है; परन्तु वह पुराना हो गया है। इसलिये कोई नया गाना सीखना चाहिए। पोलिया, कोई नया गाना बताओ! मेरी स्मरण-शक्ति ठीक नहीं। हाँ, यह गीत क्यों न गावें—"खड्ग पर अपनो हसर लेता है सहारा।" नहीं-नहीं, इससे अच्छा पाँच पैसेवाला गाना है। मैंने तुम्हें सिखाया था, तुम्हें याद होगा। वह फ्रेंच-भाषा में है। इसलिये लोग हमको अच्छे कुटुम्ब का समझेंगे, और दया करेंगे। उसी के साथ यह गीत भी गावेंगे—"मार्लबरा हमारा चला आज है रण में।" यह बहुत अच्छा रहेगा; क्योंकि यह बच्चों का राग है। वह गाने लगी—

"मार्लबरा हमारा चढ़ा आज है रण में;
ईश्वर जाने, कब आवे वापस घर में।"

नहीं-नहीं, पाँच पैसेवाला गाना अच्छा है। कोलिया, ठीक खड़ो हो। लेना, मेरी ओर देखो। पोलेचका और मैं गाती हूँ। पाँच पैसे में घर चलाना है।

"हा-हा...पोलेचका, अपने कपड़े सँभालो, कंधे से खिसक रहे हैं। इस समय बहुत परदे का ध्यान न करो। अगर मैं तुम्हारे स्थान में होती, तो मैं अपना पैर लोगों को दिखाती कि जिससे वे समझें कि हम अच्छे कुटुम्ब के हैं। यह सिपाही इधर क्यों आ रहा है?"

एक सिपाही भीड़ को हटाकर आगे बढ़ रहा था। उसी समय एक भला आदमी, जिसकी अवस्था ५० वर्ष की होगी, लबादा ओढ़े आगे आया। नया आगन्तुक बड़ा दयालु प्रतीत होता था। उसको देखकर कांस्टेबिल ठिठक गया। उसने कैथराइन को चुपके-से एक तीन रूबल का नोट दिया। नोट पाकर कैथराइन ने बड़ी नम्रता से उसको प्रणाम किया।

"धन्यवाद महाशय ! पोलेचका, रुपए सँभालो। संसार में अभी उच्च-हृदयवाले दानी हैं, जो भले कुटुम्ब की स्त्री को, दरिद्रता की दशा में देखकर, सहायता करते हैं। महाशयजी, ये अनाथ बहुत ही प्रतिष्ठित कुटुम्ब के हैं, और वह बदमाश जनरल, जो मुर्ग़ी के बच्चे खा रहा था, मुझको डाँटता था। मैंने उससे कहा कि ये साइमन जेकेरिच के अनाथ हैं, इनकी सहायता करो। यह सिपाही फिर क्यों आ रहा है ? महाशयजी, मेरी रक्षा कीजिए। यह सिपाही मेरे पीछे क्यों लगा हुआ है ? एक सड़क से तो मुझे भगा दिया। ऐ मूर्ख, तू क्या चाहता है ?"

"सड़कों पर बेहूदा न बको, ठीक-ठीक व्यवहार करो।"

"तुम स्वयं ठीक-ठीक व्यवहार करो। मैं नटिनी हूँ, मेरा पीछा न करो।"

"नटनियों को आज्ञापत्र लेना चाहिए। तुम्हारे पास कोई आज्ञापत्र नहीं है, और तुम सड़क पर भीड़ जमा करती हो। अपना पता बतलाओ ?"

"कैसा आज्ञापत्र ! मैंने अपने पति को आज गाड़ा है, क्या यह आज्ञापत्र नहीं है ?"

"देवी, शान्त हो। तुम बीमार हो; चलो, मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँ।" रुपया देनेवाले आदमी ने कहा।

"महाशयजी, आप कुछ नहीं जानते। हम न्यूविस्की जायँगे। सुनिया, तू क्यों रोती है ? कोलिया, लेना, तुम कहाँ भागी जाती हो ? मूर्ख बच्चियो, तुमको क्या हो गया है ?"

सिपाही को आता देखकर कोलिया और लेना डर गई थीं। भीड़ को देखकर और माता का विचित्र व्यवहार देखकर वे भाग चली थीं। कैथराइन रोती हुई उनके पीछे दौड़ी। और सुनिया और, पोलेचका उसके पीछे।

"सुनिया, उनको बुला लो। कृतघ्न बच्चियो, कहाँ भागे जाते हो ?

लिया, उसको पकड़ लो।" दौड़ते हुए कैथराइन का पैर फिसला, और ह गिर पड़ी।

सुनिया ने झुककर कहा—"चोट लग गई है! खून से भर गई है!"

दोनों स्त्रियों के चारों ओर भीड़ जमा हो गई। रोडियन और पेजेडनिकाफ़ भी दौड़े। लबादेवाला आदमी और सिपाही भी आ गया। सिपाही ने लोगों को हटाया। देखने से मालूम हुआ कि कैथराइन को चोट हीं लगी, परन्तु उसके फेफड़ों से खून आया था। लबादेवाले आदमी ने डियन के कान में कहा—"यह राजयक्ष्मा है, इसमें खून इसी तरह ाता है। अभी मेरे एक संबंधी को ऐसा ही हुआ था। उसका तोला-भर ून निकल गया। इसके लिये कुछ नहीं हो सकता। यह मर जायगी।"

सुनिया ने कहा—"इधर ले चलो, इधर मेरा घर है। बस, यही मेरा कान है। डॉक्टर को बुलाओ।"

लबादेवाले अफ़सर के प्रयत्न से शीघ्र ही सब प्रबंध हो गया। सपाही ने भी कैथराइन की सहायता की। जब सुनिया के बिछौने पर उसे लिटाया, उस समय उसकी दशा अच्छी न थी। खून थोड़ी देर तक आता हा। फिर रुक गया। सुनिया, रोडियन, लेपेजेडनिकाफ़ और अफ़सर कमरे में घुसे। कांस्टेबिल भी आ गया, और उसने दरवाजे पर जो भीड़ लग ई थी, उसे हटाया। पोलेचका दोनों काँपते और रोते हुए बच्चों को ाथ लेकर आई। कैथरनैसूमाफ़ का कुटुम्ब भी आ गया। लँगड़ा और काना दर्जी विचित्र ही शक्ल का था। उसके बाल सुअर के बालों की तरह थे। उसकी स्त्री घबराई हुई थी। बच्चों के मुख का भाव शोक कट करता था। स्विड्रीगेलफ़ भी आ गया। रोडियन यह भूल गया ा कि स्विड्रीगेलफ़ वहीं रहता है। इसलिये स्विड्रीगेलफ़ को देखकर वह ड़े अचम्भे में आ गया। डॉक्टर और पादरी को बुलाने की बातचीत होने ली। लबादेवाले आदमी ने कहा, अब डॉक्टर कुछ नहीं कर सकता। रन्तु, फिर भी, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक सहायता के लिये दोनों

को बुलवाया। कैथर ने सूमाफ़ डॉक्टर को बुलाने गया। कैथराइन अब शान्त हो गई थी, और खून भी बन्द हो गया था। कैथराइन ने चारों ओर नज़र डाली। देखा, सुनिया काँप रही है, और रूमाल से अपनी भौं पोछ रही है। कैथराइन ने कहा—"मुझको उठाकर बिठाओ।" दोनों ओर से पकड़कर उन्होंने उसको बिछौने पर बिठा दिया।

उसने धीरे से पूछा—"बच्चे कहाँ हैं? पोलिया उनको घर पर ले आई। मूर्ख बच्चो, तुम क्यों भाग गए थे? उसके होठ फिर खून से भर गए। कमरे में चारों ओर देखकर उसने कहा—"सुनिया, तुम इसी तरह रहती हो? मैं आज तक तुम्हारे यहाँ नहीं आई थी, और आज इस दशा में आना पड़ा।" उसने करुणा की दृष्टि से सुनिया को देखा। "सुनिया, आज तक हम तुम्हारे सहारे रहे। पोलिया, लेना, कोलिया, इधर आओ। सुनिया, इनको सँभालो, इनका हाथ पकड़ो। मैं इन्हें तुम्हें सौंपती हूँ। मैं थक गई हूँ, खेल समाप्त हो गया। मुझे शान्ति से मरने दो।" ऐसा कहकर वह तकिए पर सिर रखकर लेट गई।

"तुमने क्या कहा—पादरी? मुझे पादरी की आवश्यकता नहीं। किसी के पास एक रूबल तक नहीं है। मैंने कोई पाप नहीं किया है। और, यदि किया भी होता, तो मैंने इतने दुःख उठाए हैं कि ईश्वर अवश्य मुझे क्षमा कर देगा। यदि नहीं करेगा, तो मेरा भाग्य।" उसके विचार अस्त-व्यस्त हो रहे थे। कभी तो वह चौंक उठती थी, कभी किसी को पहचानना चाहती थी। फिर सरसाम हो गया। साँस कठिनाई से आती थी। गले में घरघराहट होने लगी। वह फिर बोली—"एमेलिया लुडविगोवना! लेना! कोलिया! हाथ ठीक रक्खो। पैरों से ताल दो, गीत गाओ—

"हीरे मोती पास तेरे हैं, आँखें उज्ज्वल तेरी हैं;
और तुझे क्या भला चाहिए, सारी वस्तुएँ तेरी हैं।

"हाँ, और क्या चाहिए? अच्छा, और गाना सुनो —
उस स्कैनियन की घाटी में चमकीले सूरज नीचे।"

"मुझको यह गीत कैसा अच्छा लगता था ! प्यारी पोलिया, तुम्हारी मा को यह राग बहुत अच्छा लगता था। तुम्हारा पिता विवाह के पहले इसे गाया करता था। कैसे अच्छे दिन थे ! अच्छा, यही गीत गाऊँगा। परन्तु इसके आगे तो याद नहीं आता।"

उत्तेजित होकर उसने फिर उठना चाहा, और बेसुरी वाणी में गाना आरंभ किया—

"डगेस्टनैनियन की घाटी में चमकीले नभ के नीचे;
कष्ट उसे छाती में था, वह सहती थी आँखें मीचे।"

तुरन्त ही कैथराइन रोने लगी, और बोली—"हे जनरल ! इन अनाथों की रक्षा करो। तुमने मेरे पति के यहाँ बहुत दावतें खाई हैं।" फिर उसने दुःख से चारों ओर देखा, और सुनिया को पहचानकर कहा—"सुनिया ! प्यारी सुनिया ! तुम यहाँ हो। खेल समाप्त हो गया, मेरी मृत्यु आ गई।" वह फिर कुछ गुनगुनाने लगी। परन्तु थोड़ी ही देर के बाद उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसने मुँह बा दिया। उसकी टाँगें हिलने लगीं। उसने गहरी साँस ली, और चल बसी।

सुनिया ने लाश को प्यार किया, और अपना सिर मृतक की छाती पर रख दिया। पोलेचका ने सिसकियाँ भरते हुए अपनी मा के पैरों का चुम्बन किया। कोलिया और लेना की समझ में न आया कि हुआ क्या। वे एक दूसरे से चिमट गईं, और एक दूसरे को देखकर रोने लगीं। वे नटों के ऐसे वस्त्र पहने हुए थीं। सर्टीफ़िकेट बिछौने पर न-मालूम कहाँ से आ गया था। उसे तकिए के पास पड़ा रोडियन ने अपनी आँखों देखा। रोडियन खिड़की की ओर गया। लेपेजेडनिकाफ़ भी उधर ही चला गया, और बोला—"मर गई?"

स्विड्रीगेलफ़ भी उधर आ गया, और रोडियन से बोला—"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

लेपेजेडनिकाफ़ हट गया। स्विड्रीगेलफ़ रोडियन को अलग ले जा-

कर बोला—"अब इस सब काम का अर्थात् गाड़ने का तथा और सब भार मैं अपने ऊपर लेता हूँ। इसमें कुछ-न-कुछ अवश्य व्यय होगा, और मेरे पास मेरी आवश्यकताओं से अधिक धन है। पोलेचका और दोनों छोटे बच्चों को मैं अनाथालय में पहुँचा दूँगा। वहाँ उनकी अच्छी तरह देखभाल होगी। उनके नाम से मैं पंद्रह सौ रूबल जमा करा दूँगा, जो बालिग़ होने पर उनको मिल जायँगे। सुनिया को उनके पालन-पोषण की कोई चिन्ता नहीं करनी होगी। उसे मैं इस कीचड़ से निकालूँगा; क्योंकि वह एक उच्च जीवात्मा है। रोडियन, बोलो, मैंने अपने धन को अच्छे काम में लगाया कि नहीं?"

रोडियन ने पूछा—"इतनी उदारता का कारण?"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर उत्तर दिया—"तुम सदा मेरी बातों में संदेह करते हो। मैंने तुम्हें बता दिया कि धन की मुझे आवश्यकता नहीं। दया-भाव से मैं ऐसा करता हूँ। परन्तु कदाचित् तुम मुझे अच्छा नहीं समझते हो। अच्छा, उस शव को देखकर बताओ, यह उस साहूकारिन की तरह कीड़े के समान है, या नहीं? तुम यह स्वीकार करते हो या नहीं कि उसके लिये मरना अच्छा था? और, लूशिन जीवित रहकर बुरे काम करता रहे? मेरी सहायता के बिना पोलेचका को भी अपनी बहन की तरह वेश्यावृत्ति स्वीकार करनी होती।"

उसके कहने का ढंग विचित्र था, वह रोडियन को देखता जाता था। रोडियन पीला पड़ गया, और वह बातचीत में जो वाक्य उसने कहे थे, उन्हें स्विड्रीगेलफ़ के मुँह से सुनकर घबरा गया। चौंककर स्विड्रीगेलफ़ को वह देखने लगा। बोला—"तुमको यह कैसे मालूम हुआ?"

"मैं इस दीवाल के पीछेवाले कमरे में रहता हूँ। मैं सुनिया का पड़ोसी हूँ। मैंने तुम्हारी बातचीत सुनी थी।"

"हूँ!"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर कहा—"मेरे प्यारे रोडियन, मैं तुमसे शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। मैंने पहले ही कहा था कि हम फिर मिलेंगे, और आज फिर मिल गए। तुम देखोगे कि समाज में मेरा कितना आदर है, और लोग मुझे ऐसा बुरा नहीं समझते, जैसा तुम समझते हो।"

पवित्र पापी

छठा भाग

क़ैदी

पहला परिच्छेद

रोडियन की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। जब बहुत दिनों के बाद उसे इस समय की सुध आती थी, तो उसे मालूम होता था कि वह इसी समय से विचार-शून्य हो गया। उसको यह विश्वास हो गया कि मैंने बहुत भूलें की हैं। इस समय की बातें फिर उसको याद नहीं आती थीं। कभी-कभी तो वह बहुत भयभीत हो जाता था, और कभी मृत्यु तक से उदासीन। उसने अपनी दशा के विषय में सोचना ही छोड़ दिया। प्रतिदिन की बातों को छोड़कर उसने सब बातों को भुलाना चाहा। स्विड्रीगेलफ़ से वह पहले ही से बहुत घबराता था, पर कैथराइन की मृत्यु के दिन स्विड्रीगेलफ़ को बातचीत सुनकर उसने नया मार्ग अवलंबन करने का विचार किया। नई घटना से घबराकर उसने इस विषय पर सोचना छोड़ दिया। कभी-कभी वह बिना सोचे-विचारे नगर के सुनसान भाग में पहुँच जाता और कभी शराब की दूकान में देख पड़ता था। कभी उसको यह ख़याल आता था कि स्विड्रीगेलफ़ से मिलकर वह सब बातों की जाँच करे। सड़क पर चलते-चलते उसको सुध आती कि यहाँ एक दिन मैं स्विड्रीगेलफ़ से मिला था। एक दिन वह

सूर्योदय से पहले उठा। उसे मालूम हुआ कि मैं रात को ज़मीन पर ही, झाड़ी के नीचे, सो गया था। उसको समझ में न आया कि मैं यहाँ कैसे पहुँचा। कैथराइन के मरने के बाद स्विड्रीगेलफ़ उसे दो बार मिल चुका था, और दोनों ही बार सुनिया के मकान के समीप, जहाँ रोडियन चक्कर लगाया करता था। आपस में साधारण बातचीत हुई। मुख्य विषय पर किसी ने मुँह नहीं खोला। कैथराइन की लाश कमरे में पड़ी थी। स्विड्रीगेलफ़ ने रोडियन को सूचना दी कि मेरे प्रभा-वशाली मित्रों की सहायता से कैथराइन के बच्चों का प्रवन्ध हो गया है, और वे अच्छे स्थान में पहुँच गए हैं। उसने सुनिया के विषय में भी कुछ बातचीत की, और कहा कि एक दिन मैं तुमसे इस विषय में सलाह करूँगा। यह बातचीत ज़ीने पर हुई। रोडियन की ओर वह घूरकर देख रहा था। उसने धीरे से पूछा—"रोडियन, रोडियन, तुम्हें क्या हो गया है? अपने को सँभालो। मुझे तुमसे बहुत-सी बात-चीत करनी है। क्या करूँ, आजकल काम अधिक है। मनुष्य के लिये वायु की बड़ी आवश्यकता है।"

स्विड्रीगेलफ़ ने पादरी के जाने के लिये रास्ता दिया। उसने पादरी को दिन में दो बार आने को कहा था। रोडियन भी पादरी के पीछे-पीछे सुनिया के कमरे में घुसा, और चौखट पर खड़ा हो गया। संस्कार आरंभ हो गया। मृत्यु का विचार रोडियन के हृदय में बड़े विचित्र भाव उत्पन्न कर रहा था। उसने बच्चों को देखा कि वे घुटनों के बल मृतक के पास बैठे हैं। पोलेचका रो रही है, सुनिया रो-रोकर ईश्वर से प्रार्थना कर रही है। रोडियन को ख़याल आया कि इन दिनों सुनिया ने मुझसे एक बात भी नहीं की। कमरे में सूर्य का प्रकाश हो रहा था। सामग्री की सुगंध कमरे में फैल रही थी, और पादरी किताब में पढ़ रहा था—"हे ईश्वर, मृतक की आत्मा को शान्ति प्रदान कर।"

रोडियन खड़ा रहा, और कार्य समाप्त होजाने पर सुनिया के पास गया। सुनिया ने उसके दोनों हाथ पकड़े, और अपना सिर उसके कंधों पर रख दिया। रोडियन यह देखकर चकित हो गया कि सुनिया मुझसे घृणा नहीं करती। यह त्याग का एक उच्च आदर्श है। सुनिया कुछ न बोली, और रोडियन उसका हाथ दबाकर चला गया। वह बहुत दुःखी थी। यदि इस समय कहीं बिलकुल एकान्त में जाना संभव होता, तो वह प्रसन्नता से चला जाता। परन्तु यह असंभव था; क्योंकि यद्यपि वह अकेला था, फिर भी अपने को अकेला नहीं समझता था। जितना ही एकान्त में वह जाता था, कोई निराकार व्यक्ति उसको सताता था। उससे चिढ़कर वह फिर भीड़ में आने-जाने तथा शराब की दुकानों पर भी पहुँचने लगा।

एक दिन शाम को वह एक भोजनालय में घण्टे-भर तक गाना सुनता रहा। अन्त में वह बेचैन होकर उठा, और सोचने लगा कि क्या मुझे गाने के अतिरिक्त कुछ और काम नहीं करना है? इस झगड़े की समाप्ति करनी है। चलो, उठो, पारफ़ारियस और स्विड्रीगेलफ़ जिस प्रकार चाहें, आक्रमण करें। मैं अब न डरूँगा।

भोजनालय से वह चल पड़ा। मा और बहन के ख़याल ने उसे खिन्न कर दिया। सूर्योदय के पहले वह सोकर उठा, तो अपने को एक वृक्ष के नीचे पाया। ज्वर से वह काँप रहा था, पर किसी प्रकार घर पहुँचा। कुछ देर सोने से ज्वर जाता रहा; परन्तु दो बजे मध्याह्न तक वह सोता रहा। उसे ख़याल आया कि आज कैथराइन की लाश उठने का दिन था। उसे यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि मैं उसमें सम्मिलित न था। मेरटेसिया खाना लाई, और उसने खूब खाया। बहुत दिनों के बाद आज उसे मालूम हुआ कि मैं स्वस्थ हूँ। वह अपनी ताड़ना करने लगा कि मैं क्यों इतना घबरा जाता हूँ। इतने ही में दरवाज़ा खुला, और राजू ने प्रवेश किया। राजू ने कुरसी पर बैठकर कहा—"खाना खा रहा है, तो कोई

विशेष चिन्ता की बात नहीं।" राजू के चेहरे से विदित होता था कि वह किसी गंभीर विषय पर बातचीत करने आया है। उसने दृढ़ता से कहा—"रोडियन, तुम्हारी बातों का सिरपैर कुछ समझ में नहीं आता। मैं तुमसे जिरह करने नहीं आया हूँ, और यदि तुम अपनी गुप्त बातें मुझे बताओगे, तो उन्हें भी न सुनूँगा। मैं केवल एक बात का स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ। तुम पागल हो, या नहीं? लोग समझते हैं कि तुम पागलपन को राह पर जा रहे हो, और मेरा भी ऐसा ही विश्वास है। पहले तो तुम्हारा अविश्वसनीय आचार और दूसरे अपनी मा और बहन से लज्जायुक्त व्यवहार यह प्रकट करता है कि या तो तुम मूर्ख हो, या पागल।"

"क्या तुम उनसे मिले थे?"

"अभी वहीं से आ रहा हूँ। तुम उनसे क्यों नहीं मिलते? दिन-भर कहाँ छिपे रहते हो? मैं तीन बार आज यहाँ आ चुका हूँ। तुम्हारी मा कल शाम से बीमार है, और तुमसे मिलना चाहती है। डोनिया ने उसे बहुत समझाया; परन्तु वह नहीं मानती। वह कहती है कि यदि रोडियन बीमार या पागल है, तो मा के सिवा उसकी सेवा कौन करेगा? वह कल बहुत घबरा रही थी, और हम लोग उसको लेकर यहाँ आए थे। परन्तु तुम घर पर नहीं थे। दस मिनट चुपचाप तुम्हारी प्रतीक्षा करके वह बोली कि वह बीमार नहीं है। बीमार होता, तो घूमने कैसे जाता? मा को भूल गया है। मैं जबर्दस्ती उसका प्रेम नहीं चाहती। चलो, चलें। वह घर पर जाकर रोने लगी, और बोली कि हमारे लिये उसके पास समय नहीं। उसका ख़याल है कि सुनिया या तो तुम्हारी प्रेमपात्री है, या रखेल है। मैं सुनिया के यहाँ गया। वहाँ बच्चों को रोते हुए और कफ़न देखा। सुनिया रो रही थी, पर तुम वहाँ भी न थे। मैंने डोनिया को आकर इस बात की सूचना दी। प्रेम तुम्हारे इस व्यवहार का कारण नहीं है। अब मैं यहाँ आया, तो देखता

हूँ कि मज़े में बैठे खाना उड़ा रहे हो। तुम्हारे पागलपन ने तुम्हारी भूख तो नहीं बंद की। मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ कि तुम पागल नहीं हो। बस, अब हमारी तुम्हारी मित्रता की इतिश्री हो चुकी। अब मैं अपना सिर तुम्हारे लिये न खपाऊँगा। केवल तुमसे झगड़ने और अपने भाव प्रकट करने आया था। अब मैं यह समझता हूँ कि मेरा क्या कर्तव्य है।"

"तुम क्या करोगे?"

"तुमको इससे मतलब!"

"क्या मदिरा-सेवन करोगे?"

"तुमने कैसे जाना? तुम बहुत बुद्धिमान मनुष्य हो, पागल नहीं हो। हाँ, मैं शराब पीने जा रहा हूँ।" यह कहकर वह चलने को प्रस्तुत हो गया।

रोडियन ने कहा—"परसों अपनी बहन से मैंने तुम्हारे विषय में कुछ कहा है।"

राजू ठहर गया, और घबराकर बोला—"मेरे विषय में? तुमको वह कहाँ मिली?"

"वह यहाँ अकेली आई थी, और मुझसे बातें करती रही।"

"वह?"

"हाँ, वह।"

"फिर मेरे विषय में तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा कि तुम उच्च-हृदय के धार्मिक और परिश्रमी मनुष्य हो। मैंने उसे यह नहीं बतलाया कि तुम उसे चाहते हो; क्योंकि यह तो वह जानती ही है।"

"क्या वह जानती है?"

"ख़ैर, मुझको जो कुछ भी हो; तुम उनके सहायक रहो। राजू, उनको मैं तुम्हें सौंपता हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम उससे प्रेम

करते हो, और तुम्हारा हृदय पवित्र है। मैं कि जानता हूँ वह भी तुमको अच्छा समझती है, यद्यपि अभी प्रेम करना आरंभ नहीं किया है। अब निर्णय कर लो। शराब पीना तुम्हारे लिये उचित है, या नहीं।"

"रोडियन, मैं तुमसे तुम्हारी गुप्त बातें नहीं पूछता। परन्तु मेरा विश्वास है कि पागलपन के सिवा और कुछ नहीं है। तुम बड़े अच्छे आदमी हो! तुम बड़े अच्छे आदमी हो!"

"मैं कहना चाहता था कि तुम मेरी गुप्त बातों के जानने का प्रयत्न न करो। एक दिन सब मालूम हो जायगा। कल एक मनुष्य ने कहा कि मुझे हवा की आवश्यकता है। मैं उससे जाकर पूछूँगा कि उसका मतलब क्या है।"

राजू ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—"वह कोई युगान्तर-दल का आदमी होगा, और कोई भयंकर कार्य करनेवाला है। क्या डोनिया को यह सब हाल मालूम है? डोनिया तुम्हारे पास आती है। और, तुम ऐसे मनुष्य से मिलना चाहते हो, जो कहता है कि तुम्हें हवा की आवश्यकता है! शायद उस पत्र का भेजनेवाला वही है।"

"कौन पत्र?"

"एक पत्र डोनिया को कल मिला था, जिसको पाकर वह बहुत घबरा गई। उसके विषय में तुमसे कहने को उसने मुझे मना कर दिया था। फिर उसने मुझसे कहा कि शीघ्र ही हम पृथक् हो जायँगे, और उसने मुझे धन्यवाद दिया। फिर वह घबराकर हट गई।"

रोडियन ने पूछा—"उसको पत्र मिला था?"

"हाँ, एक पत्र मिला था। क्या तुमको यह हाल नहीं मालूम?"

"नहीं।"

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे।

"रोडियन, नमस्ते। एक समय था""परन्तु अब शराब पीने की कोई आवश्यकता नहीं।"

यह कहकर राजू बाहर गया, और फिर लौट आया। आकर बोला—"तुमको उस बुढ़िया के खून की बात तो याद होगी। खूनी पकड़ा गया है, और उसने सब स्वीकार कर लिया है। उन्हीं चित्रकारों में एक है, जिनको हम निर्दोषी समझते थे। वह लड़ाई और हँसने का दृश्य केवल संदेह को दूर करने के लिये था। ये लोग बड़े धूर्त हैं; परन्तु अब इन्होंने सब स्वीकार कर लिया है। मुझको कैसा धोखा हो गया था! ये चित्रकार तो धूर्तता का अवतार हैं।"

रोडियन ने कहा—"तुम्हें यह बात कहाँ से मालूम हुई, और तुमको इसमें क्यों इतना मज़ा आता है?"

"पारफ़ोरियस ने मुझसे सब हाल कहा है!"

"पारफ़ीरियस ने?"

"हाँ।"

"उसने क्या कहा है?"

"उसने मुझे अच्छी तरह सब समझाया है।"

"उसने समझाया—स्वयं उसने?"

"हाँ-हाँ, स्वयं उसने। अच्छा, अब जाता हूँ; फिर मिलेंगे। अब शराब पीने की आवश्यकता नहीं। बिना शराब के ही तुमने मुझे मस्त कर दिया है। नमस्ते। फिर आऊँगा।" यह कहकर वह चला गया।

ज़ीने से उतरते हुए राजू ने यह निर्णय कर लिया कि रोडियन अवश्य युगान्तर-दल का सदस्य है, और विदित होता है कि बहन को भी उसने अपनी ओर मिला लिया है। परस्पर दोनों मिलते हैं। अब मैं उसकी बात-चीत समझ सकता हूँ। अच्छा हुआ, मिकोल्का ने सब स्वीकार कर लिया। परन्तु यह पत्र किसका है? मुझे संदेह है··· पहले इसका पता लगा लूँ। तब कुछ करूँगा। राजू का दिल धड़कने लगा।

राजू के जाने के बाद रोडियन कमरे में घूमने लगा। फिर वह पलँग पर बैठ गया। उसको विदित हुआ, जैसे उसको फिर शक्ति आ गई।

किंतु पारफ़ीरियस और मिकोलका का ध्यान आते ही उसका दिल दहल गया। सुनिया की भेंट से उसको असन्तोष था । स्विड्रीगेलफ़ के विषय में वह कुछ निर्णय न कर सका। अवश्य वह घृणित मनुष्य है, परन्तु पारफ़ोरियस की तरह गूढ़ नहीं। पारफ़ोरियस तो और ही रंग में रँगा हुआ है।

पारफ़ीरियस राजू को सब हाल बताता है; परन्तु फिर वह किस प्रकार मिकोलका को अपराधी समझ सकता है । मिकोलका का स्वीकार करना मेरी भेंट के आगे कुछ नहीं है । परन्तु मिकोलका ने यह क्यों स्वीकार कर लिया? उसका इसमें कुछ उद्देश्य अवश्य है।

रोडियन ने टोपी उठाई, और विचार में मग्न दरवाजे की ओर बढ़ा। इस समय वह बहुत स्वस्थ जान पड़ता था। उसने सोचा, स्विड्रीगेलफ़ को या पारफ़ीरियस को मार डालना ही अच्छा है। लेकिन जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, पारफ़ीरियस का सामना हुआ। वह अन्दर घुसा। रोडियन लड़खड़ा गया । फिर अपने को सँभालकर सोचने लगा कि कदाचित् यह अन्तिम दृश्य है। परन्तु बिल्ली की तरह यह इतना चुपके से क्यों आया ? क्या यह मेरा बड़बड़ाना सुन रहा था?"

पारफ़ीरियस ने मुसकिराते हुए कहा—"रोडियन, बहुत दिन से मैं तुम्हारे यहाँ आने को सोच रहा था। आज इधर से जा रहा था कि विचार हुआ कि तुमसे मिल लूँ। तुम कहाँ जा रहे थे? मैं अधिक देर न ठहरूँगा। तुम्हारी आज्ञा से एक सिगरट पीकर चला जाऊँगा।"

रोडियन ने अभ्यागत से मित्र-भाव से कहा—"पारफ़ोरियस, बैठ जाओ।" इस समय रोडियन की ऐसी दशा हो रही थी, जैसे उस मनुष्य की, जो अपने जीवन के भय से गले पर छुरी का अनुभव नहीं करता। वह पारफ़ोरियस के सामने बैठ गया, और बिना आँख झपाए बैठा रहा। पारफ़ीरियस ने एक सिगरट निकाली।

रोडियन ने अपने मन में कहा—"बोलो, बोलो, क्या कहते हो?"

—

दूसरा परिच्छेद

पारफ़ीरियस ने बोलना आरंभ किया—"ये सिगरट तो मेरी जान ले लेंगे। फिर भी मैं इनको छोड़ नहीं सकता। मुझको सदा खाँसी आती रहती है। गले में सुरसुराहट होती है, दमा हो गया है। कुछ दिन हुए, मैंने डॉ० बौटकीन को दिखाया था। वह अपने रोगियों को कम-से-कम आधघण्टा देखता है। इधर-उधर 'टप-टप' और 'ठक-ठक' करके उसने मुझसे कहा कि तुम्हारे लिये तम्बाकू बहुत हानिकर है। तुम्हारे फेफड़े ठीक नहीं हैं। अस्तु, यह तो सब ठीक है; परन्तु मैं तम्बाकू के बिना कुछ कर नहीं सकता। इसकी जगह कौन-सी वस्तु काम में लाऊँ? दुर्भाग्य से मैं शराब भी नहीं पीता।"

रोडियन ने मन में सोचा कि फिर इसने अपनी शैतानी आरंभ की।

"रोडियन, परसों रात को मैं यहाँ आया था। इधर ही से जा रहा था। विचार हुआ कि होता चलूँ। तुम्हारा दरवाज़ा खुला था, परन्तु तुम घर में न थे। नौकर के पास बिना कार्ड छोड़े ही चला गया। क्या तुम अपना दरवाजा कभी बंद नहीं करते?"

रोडियन के मुख पर उदासी छा गई, और पारफ़ीरियस समझ गया कि रोडियन के हृदय में कैसे विचार आ रहे हैं। वह फिर बोला—"मेरे प्यारे रोडियन, मैं कुछ बातें स्पष्ट करने आया हूँ।" मजिस्ट्रेट का मुख गंभीर एवं उदास हो गया। "हमारी पिछली भेंट में अनायास एक घटना हो गई। मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। हम दोनों उत्तेजित थे। हम दोनों ने—यद्यपि हम भले आदमी हैं—एक दूसरे के प्रति सज्जनता का व्यवहार नहीं किया।"

रोडियन फिर उसके कहने का अभिप्राय सोचने लगा।

मजिस्ट्रेट ने सिर झुकाकर कहा—"हम दोनों को एक दूसरे से स्पष्ट रूप से बातें करना चाहिए। यदि उस समय मिकोलका न आता, तो उस भेंट का न-जाने क्या परिणाम होता। तुम्हारा स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा है, इसलिये मैंने सोचा था कि यदि तुमको परेशान किया जाय, तो कुछ तुम बकने लगोगे। मुझे यह आशा थी कि कुछ प्रमाण मिल जायगा। इस ढंग से कभी-कभी हमको सफलता प्राप्त होती है। परन्तु उस दिन नहीं हुई। तुम्हारे स्वभाव से मैं धोखा खा गया।"

रोडियन ने हकलाते हुए कहा—"अब इन सब बातों से क्या प्रयोजन ?" फिर अपने मन में सोचा, क्या यह मुझे निर्दोषी समझता है ?

"तुम यह जानना चाहते होगे कि मैं तुमसे ऐसा क्यों कहता हूँ। मैं अपने व्यवहार को समझा देना धर्म समझता हूँ। मैंने तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया है, इसलिये बताना चाहता हूँ कि ऐसा व्यवहार मैंने क्यों किया। मैं उन भाँति-भाँति की सूचनाओं के विषय में, जो मुझे समय-समय पर मिलती रहीं, कुछ कहना अनावश्यक समझता हूँ। परन्तु एक बात, जिससे मुझे सन्देह उत्पन्न हुआ, कहना चाहता हूँ। इन सूचनाओं से और तुम्हारे ढंग से मैंने एक ही परिणाम निकाला। मैं सच कहता हूँ कि मैंने ही पहलेपहल तुमको दोषी समझा। बुढ़िया के यहाँ जो वस्तुओं की सूची निकली, उस पर मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया; क्योंकि वह तो साधारण बात है। पुलीस के दफ्तर में जो घटना हुई, और जो मुझसे बहुत ही सचाई के साथ बयान की गई, उससे मुझे सन्देह उत्पन्न हुआ। उसी समय से मेरे मन में तुम्हारे विरुद्ध विचार उत्पन्न हुए। परन्तु सन्देह तो कोई प्रमाण नहीं, मैं यह जानता हूँ। फिर भी, मैं मनुष्य हूँ। इसलिये संदेह ही पर मेरा विश्वास होने लगा। उसी समय तुम्हारा लेख भी मुझे मिला, जिसको पढ़कर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसके प्रत्येक वाक्य से सचाई और जोश प्रकट होता था। विदित होता

था कि वह लेख किसी ऐसी रात को लिखा गया, जब तुम्हें निद्रा नहीं-आ रही थी। पढ़ते हुए मुझे ख़याल आया कि यह कुछ काम करनेवाला मनुष्य है। इस घटना के उपरान्त इस लेख ने मेरा संदेह और बढ़ा दिया। मैं इस समय तुमको अपने विचार, जैसे-जैसे वे आते गए, बता रहा हूँ। अब तो मुझे मिकोलका से व्यवहार करना है। कुछ बातें उसके विरुद्ध हैं, सही; परन्तु वे एक तरह से कुछ भी नहीं। इस समय मैं तुमसे सब इसलिये कह रहा हूँ कि तुम मेरे व्यवहार से नाराज़ न हो। तुम पूछोगे कि मैंने तुम्हारी तलाशी क्यों नहीं ली। हा-हा-हा! तुम्हारी बीमारी में एक-एक वस्तु की तुम्हारे कमरे में तलाशी ली गई। मजिस्ट्रेट की हैसियत से नहीं, परन्तु निजी ढंग से। फिर मैंने सोचा कि यदि यह मनुष्य अपराधी है, तो यह अवश्य मेरे पास आवेगा। दूसरे प्रकार के आदमी न आते; परन्तु यह आए बिना नहीं रुक सकता।

"राजू की बड़बड़ भी तुमको याद होगी। हमने अपना सन्देह कुछ-कुछ उस पर प्रकट कर दिया था, और हम समझते थे कि राजू की प्रकृति का आदमी अवश्य तुमसे उस विषय में बातचीत करके तुम्हें बेचैन कर देगा। जेमटाफ़ पर तुम्हारे साहस का बड़ा प्रभाव पड़ा था। मैं धैर्य-पूर्वक तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था, और ईश्वर ने तुम्हें मेरे पास भेज भी दिया। तुम हँसते हुए मेरे कमरे में घुसे थे। तुमको आते देखकर मेरा दिल धड़कने लगा था। भला उस समय तुम्हारे आने की क्या आवश्यकता थी? तुम्हारी हँसी ने मेरे सन्देह को और भी बढ़ा दिया। तुमको वह पत्थरवाली बात तो याद होगी, जिसके नीचे माल छिपा हुआ है। मैं उस पत्थर को यहाँ से देख सकता हूँ। जेमटाफ़ को तुमने बताया था कि किसी बगीचे में वह पत्थर है। हमने फिर तुम्हारा लेख पढ़ा, और उसके प्रत्येक अक्षर ने यह साक्षी दी कि तुम अपराधी हो। रोडियन, इस प्रकार धीरे-धीरे मुझको विश्वास होने लगा। फिर मैं सोचता था कि यह तो कोई प्रमाण नहीं। परन्तु जब मैंने घण्टी बजाने के विषय

में सुना, तो मेरा सन्देह जाता रहा, और मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हीं अपराधी हो। मेरी जाँच करने की चिंता जाती रही।

"उस समय मैं अपनी जेब से हज़ार रुपए देने के लिये इसलिये तैयार था कि मैं अपनी आँखों से वह दृश्य देख लेता, जब उस मनुष्य ने तुमको खूनी कहा, और तुमको उसे उत्तर देने का साहस न हुआ। मैं यह मानता हूँ कि सरसाम की दशा में जो तुमने बका-झका उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए। परन्तु रोडियन, इन सब बातों से मैं कैसे विश्वास न करता? किसी भूत ने तुमको मेरे पास भेजा था। और, सच तो यह है कि यदि मिकोलका हमको पृथक् न करता...तुमको उसका आना तो याद होगा। बिजली की तरह वह आया था। मैंने उसकी बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं किया। तुम्हारे जाने के बाद मैंने उससे जिरह की। उसके उत्तरों ने मुझे आश्चर्य में अवश्य डाल दिया। परन्तु अन्त तक मुझको यही विश्वास बना रहा कि तुम्हीं अपराधी हो।"

रोडियन ने कहा—"राजू अभी-अभी कहता था कि तुम मिकोलका को अपराधी समझते हो।"

पारफ़ीरियस ठट्ठा मारकर हँसा, और बोला—"राजू से मैं छुटकारा चाहता था, इसलिये मैंने उसे टाल दिया। मिकोलका के विषय में जो मेरी राय है, वह सुनो। वह बिलकुल एक छोटे बच्चे की तरह है, और चित्रकारों की तरह शीघ्र ही चिढ़नेवाला भी। वह सीधा-सादा, झक्की मनुष्य है; गाँव में गाता है, नाचता है, कहानियाँ कहता है। गाँव के बच्चे उसे घेरकर कहानी सुनते हैं। मदिरा इतनी पीता है कि सुधबुध नहीं रहती। शराबी नहीं है, परन्तु साथियों में बैठकर उससे शराब पिए बिना नहीं रहा जाता। वह किसी चीज़ को पड़ी पाकर उठा लेना चोरी नहीं समझता। वह यह समझता है कि मैंने पाई है, मेरा इस पर अधिकार है।

"यदि हम उसके मित्र जेरेस का विश्वास करें, तो हमको विदित होता है कि मिकोलका एक धार्मिक व्यक्ति है। रात-भर प्रार्थना में बिता देता है, और अच्छी पुस्तकें पढ़ता है। सेंटपीटर्सबर्ग ने उसका सर्वनाश कर दिया। यहाँ आकर, धर्म को छोड़कर उसने मदिरा और स्त्रियों से प्रेम किया। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि हमारे एक चित्रकार ने दया करके उसे अपने साथ काम सिखाना आरंभ किया, और तभी यह दुर्घटना हुई। भयभीत होकर वह कानून के पंजे में फस गया। क्या किया जाय। यहाँ तो लोग यही समझते हैं कि जिस मनुष्य को पुलीस बुलावे, उसका सर्वनाश हो गया। हवालात में मिकोलका को फिर धार्मिक विचारों ने आ घेरा, और अब वह प्रायश्चित करने की इच्छा से इस अपराध को स्वीकार करता है। मुझे ऐसी-ऐसी बातें उसके विषय में मालूम हैं, जिन्हें वह स्वयं नहीं जानता। कदाचित् तुम समझते हो कि अन्त तक वह अपराध स्वीकार करता रहेगा। ऐसा समझना तुम्हारी भूल है। वह सब बातों से निषेध करेगा। अभी उसने स्वीकार भले ही कर लिया है; परन्तु बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो उसके बयान को झूठा प्रमाणित करती हैं।

"रोडियन, मिकोलका अपराधी नहीं है। यह मामला बहुत ही टेढ़ा है, और इसका अपराधी मिकोलका की श्रेणी का नहीं, प्रत्युत सिद्धान्ती, पढ़ा-लिखा, उस ढंग का मनुष्य है, जो पहाड़ के ऊपर से फाँद पड़ते हैं। उस मनुष्य ने गवाहों के काटने के लिये दो व्यक्तियों का ख़ून किया। ख़ून करके चोरी का माल एक पत्थर के नीचे छिपा दिया। जो वेदना उसने दरवाज़ा खटखटाने और घण्टी बजाने में अनुभव की थी, उसी का फिर अनुभव करने के लिये वह उसी स्थान में पुनः जाकर घण्टी बजाने लगा। तुम कहोगे, ऐसा उसने सरसाम की दशा में किया। नहीं-नहीं; और भी बहुत-सी बातें हैं। ख़ून करके भी वह अपने को पुण्यात्मा समझता है। रोडियन, मिकोलका का कोई प्रश्न नहीं है, वह अपराधी नहीं है।"

रोडियन इन स्पष्ट बातों को सुनकर काँपने लगा, और फिर रुक-रुककर बोला—"तो फिर .खून करनेवाला कौन है ?"

मजिस्ट्रेट चकित होकर कुरसी पर लेट गया, और बोला—"खून करनेवाला कौन है ? रोडियन, तुम हो।"

रोडियन उठा; कुछ देर खड़े रहकर फिर बैठ गया। उसके चेहरे का भाव बदल गया।

मजिस्ट्रेट ने कहा—"तुम्हारे होठ फिर उस दिन के समान काँप रहे हैं। रोडियन, तुम नहीं समझते थे कि आज मैं क्या करने आया हूँ। इसीलिये तुम चकित हो। मैं आज साफ़-साफ़ बातें करने आया हूँ।"

रोडियन उस बच्चे की तरह, जो बुरा काम करते हुए पकड़ा जाय, बोला—"मैंने .खून नहीं किया है।"

मजिस्ट्रेट ने ज़ोर से उत्तर दिया—"रोडियन, .खूनी तुम्हीं हो! तुम्हीं ने .खून किया है!"

दोनों दस मिनट तक चुप रहे। मेज़ पर झुककर रोडियन अपनी उँगलियों से बालों को नोचने-सा लगा। मजिस्ट्रेट धीरता के साथ बैठा रहा। रोडियन ने घृणा के भाव से मजिस्ट्रेट को देखकर कहा—"तुम फिर अपनी पुरानी चालें चलने लगे ? इन चालों में तुम्हें सफलता न मिलेगी।"

"मेरी चालों की चिन्ता न करो। यदि इस समय गवाह होते, तो कुछ और ही परिणाम होता। मैं तो तुमसे ख़ानगी तौर से बातें करने आया हूँ, शिकार को पकड़ने नहीं। स्वीकार करना या न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। इस समय तो मैं कुछ नहीं कहता; परन्तु मेरा अटल विश्वास है कि तुम्हीं अपराधी हो।"

रोडियन ने क्रोधित होकर कहा—"फिर तुम यहाँ क्यों आए हो ? मैं तुमसे फिर पूछता हूँ कि यदि तुम मुझे अपराधी समझते हो, तो मेरे नाम वारंट क्यों नहीं निकालते ?"

"तुम्हारी गिरफ्तारी से मुझे कुछ लाभ न होगा।"

"लाभ न होगा! यह कैसे? जब तुम्हें विश्वास हो गया, तो—।"

"मेरे विश्वास से कुछ नहीं हो सकता, प्रमाण चाहिए। और, मैं तुम्हें चैन से क्यों बैठने दूँ? यदि मैं तुम्हारे सामने गवाह को लाऊँ, तो तुम उससे पूछोगे कि तुम शराब पी रहे थे कि नहीं। मैं तुमको शराबी समझा था। उस समय उसके बयान से अधिक तुम्हारे उत्तर पर विश्वास किया जायगा। तुम मुकदमा जीत जाओगे; क्योंकि वह शराबी है। मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक बात के दो पहलू होते हैं। इस समय मेरे पास तुम्हारे विरोध में कोई प्रमाण नहीं हैं। संभव है, मैं तुम्हें गिरफ्तार कर लूँ; और इसी बात की सूचना देने इस समय आया हूँ। परन्तु तुम्हारी गिरफ्तारी से मुझे कुछ लाभ न होगा। दूसरी बात, जिस लिये मैं आया हूँ...।"

रोडियन ने हाँफते हुए कहा—"उसे भी कह डालिए।"

"पहले ही कह चुका। मुझे इस बात की चिन्ता थी कि तुम्हारी दृष्टि में मैं बुरा न बनूँ। विश्वास करो या न करो, मैं तुम्हारे पक्ष में हूँ; और तुम्हारा पक्षपाती होने के कारण मैं तुम्हें यही परामर्श दूँगा कि जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लो। हम दोनों की इसी में भलाई है।"

रोडियन कुछ सोचकर बोला—"तुम्हारे कहने के अनुसार तुम्हारे पास सन्देह के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं। फिर तुम कैसे समझते हो कि तुम्हारा विश्वास ठीक ही है?"

"हाँ रोडियन, मेरा विश्वास बिलकुल ठीक है। ईश्वर ने मेरे पास एक प्रमाण भेज दिया है।"

"वह क्या है?"

"रोडियन, उसे न बताऊँगा। मैं अब तुम्हें गिरफ्तार करनेवाला

हूँ, इसलिये तुम चाहे जो कुछ करो, मुझे चिन्ता नहीं। तुम्हारे भले के लिये मैं यही परामर्श दूँगा कि अपराध स्वीकार कर लो।"

रोडियन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"तुम्हारी बातचीत असहनीय है। यदि मैं अपराधी भी हूँ—मैं इसको स्वीकार नहीं करता—तो मैं क्यों स्वयं अपने को फसाऊँ? क्या तुम्हारे कहने के अनुसार हवालात में पहुँचकर मैं चैन से रहूँगा?"

"रोडियन, संभव है, तुमको वहाँ चैन न मिले। मैं निस्सन्देह यह विश्वास करता हूँ कि अपराधी को हवालात में पहुँचकर शान्ति प्राप्त होती है। तुमको प्राप्त हो या न हो, यह मैं कैसे कह सकता हूँ। संभव है, इस समय भी मैं तुमसे कुछ बातें छिपा रहा होऊँ। किंतु मेरी राय पर चलो, तो तुम्हें लाभ होगा। तुम्हारा दण्ड कम हो जायगा। ऐसे समय अपराध स्वीकार करने से जब एक और आदमी ने अपराध स्वीकार करके अन्वेषण कार्य में हलचल डाल दी है, तुम्हारा कितना भला होगा। मैं ईश्वर को सर्वव्यापक समझकर तुमको वचन देता हूँ कि तुम्हारी सहायता करूँगा। जज भी तुम्हारे इस कार्य से यही समझेंगे कि तुमने यह खून पागलपन में किया, और तुम्हारा दण्ड कम हो जायगा। मैं सच्चा आदमी हूँ, और रोडियन, अपने वचन का पालन करूँगा।"

रोडियन सिर झुकाकर बहुत देर तक सोचता रहा, और फिर हँसकर बोला—"मुझे कम दण्ड नहीं चाहिए। मैं उसकी चिन्ता नहीं करता।"

मजिस्ट्रेट ने कहा—"मुझको यही भय था कि तुम मेरी दया का लाभ न उठाओगे।" रोडियन ने गंभीर एवं उदास दृष्टि से मजिस्ट्रेट की ओर देखा। मजिस्ट्रेट ने फिर कहा—"जीवन से घृणा न करो; अभी तुम्हें बहुत कुछ करना है। कम दण्ड की तुम उपेक्षा न करो।"

"मेरे लिये जीवन में क्या रक्खा है?"

"तुम ज्योतिषी नहीं हो कि आगे का हाल बता सको। कदाचित् ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। और, फिर तुमको मृत्यु-दण्ड तो न मिलेगा।"

रोडियन ने हँसकर कहा—"मुझको युवक होने के कारण भी तो लाभ पहुँचेगा।"

"तुम लज्जा के कारण स्वीकार करने से डरते हो। मैं तुम्हारे स्थान में होता, तो ऐसा न करता।"

रोडियन उठा, फिर बैठ गया, और बोला—"तुम्हारा विचार ठीक नहीं है।"

"तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। तुम समझते हो कि मैं तुम्हें फसाने का प्रयत्न कर रहा हूँ। तुमने अभी जीवन का सुख नहीं उठाया। अपने सिद्धान्त को अनुभव करने के लिये तुमने ख़ून कर डाला; परन्तु अब तुमको उससे लज्जा आती है। यह सच है कि तुमने अपराध किया है; परन्तु तुम वैसे अपराधी नहीं हो, जो कभी सुधर नहीं सकते। तुम उन लोगों में हो, जो अपने सिद्धान्त के लिये हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जायँगे। तुमको जलवायु के परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रायश्चित करना अच्छा ही होता है; कर डालो। साधारण मनुष्य के समान दण्ड को सह लो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा। मुझे विश्वास है कि तुम दीर्घायु होगे। कदाचित तुम समझते हो कि मैं मजिस्ट्रेट के रूप में ऐसी बातें कर रहा हूँ। मैं तुमसे इस समय ये सब बातें इसी-लिये कहता हूँ कि तुम इनसे कभी लाभ उठाओ। सौभाग्य की बात है कि तुमने एक बुढ़िया को ही मारा है। यदि तुम्हारा सिद्धान्त कुछ और होता, तो कदाचित् तुम इससे भी बुरा काम कर डालते। ईश्वर को धन्यवाद दो। इसमें भी उसकी कुछ कृपा समझो। साहस करके न्याय का आलिंगन करो। मैं समझता हूँ कि तुम मेरा विश्वास नहीं करते; परन्तु थोड़े ही दिन में तुमको जीवन से प्रेम हो जायगा। तुमको इस समय वायु के परिवर्तन की आवश्यकता है।"

रोडियन काँपने लगा। वह बोला—"परन्तु आप भी तो ज्योतिषी नहीं हैं। आप किस तरह मेरे भावी जीवन के विषय में कुछ कह सकते हैं?"

"मैं कौन हूँ? मैं वह मनुष्य हूँ, जो अपने जीवन का अच्छा भाग बिता चुका; समझदार और दयावान हूँ, अनुभव से बहुत कुछ सीख चुका हूँ। परन्तु अब मेरे दिन बीत गए। तुम अभी जीवन के चौखट पर हो। कौन कह सकता है कि इस दुर्घटना का कोई प्रभाव तुम्हारे जीवन पर न पड़े? दशा में परिवर्तन की चिन्ता न करो। क्या तुम बहुत देर तक जेल में पड़े रहने से डरते हो? वह भी तुम्हारे ऊपर निर्भर है। तुम कदाचित यह समझते हो कि यह मजिस्ट्रेट की बक-बक है। मैं अपना धर्म पूरा कर चुका। तुमको भी कभी मालूम हो जायगा कि मैं दुष्ट हूँ या अच्छा।"

"तुम मुझे गिरफ्तार कब करोगे?"

"मैं तुमको एक या दो दिन की स्वतन्त्रता दे सकता हूँ। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। मेरे परामर्श से तुम्हारा भला ही होगा।"

रोडियन ने हँसकर पूछा—"यदि मैं भाग जाऊँ?"

"तुम ऐसा न करोगे। गाँव का रहनेवाला ऐसा कर सकता है। तुम कभी भी न भागोगे। और, यदि भाग भी जाओगे, तो फिर शीघ्र ही हमारे पास लौट आओगे। मैं तुमको एक महीने, दो महीने या तीन महीने के बाद भी गिरफ्तार करूँ, तो भी मेरी बात को याद रखना कि तुम अन्त में स्वीकार करोगे। मेरा विश्वास है कि तुम अवश्य प्रायश्चित करोगे। इस समय मेरा विश्वास न करो; परन्तु देखना, मेरी ही बात सत्य होगी। रोडियन, प्रायश्चित करना अच्छी बात है। मिकालका प्रायश्चित कर रहा है। रोडियन, तुम भाग नहीं सकते।"

रोडियन ने टोपी उठाई। मजिस्ट्रेट भी उठ खड़ा हुआ, और बोला—"क्या तुम घूमने जा रहे हो? रात बड़ी सुहावनी है। आँधी न आवे, तो अच्छा है। और, यदि आँधी आ भी गई, तो हवा साफ़ हो जायगी।"

रोडियन ने कहा—"मजिस्ट्रेट साहब, इस विचार को अपने साथ लेकर न जाइए कि मैंने सब स्वीकार कर लिया है। तुम एक विचित्र आदमी हो, इसलिये मैं तुम्हारी बातें सुनता रहा। मैंने कुछ स्वीकार नहीं किया है, यह याद रखना।"

"याद रक्खूँगा। मुझ पर विश्वास रक्खो। घबराओ नहीं मेरे मित्र ! इतना काँपते क्यों हो ? थोड़ा घूम आओ। परन्तु सीमा के बाहर न जाना। मैं तुमसे केवल एक बात चाहता हूँ कि यदि मैं तुमको अड़ता-लीस घण्टे के अन्दर गिरफ्तार करूँ, और इस बीच में तुम आत्महत्या करने पर उद्यत हो जाओ, तो कृपा करके यह लिखकर छोड़ जाना कि माल किस पत्थर के नीचे छिपा है। इससे एक निर्दोषी की जान बचेगी। नमस्ते। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।"

मजिस्ट्रेट चला गया। रोडियन खिड़की से झाँककर देखता रहा, और जब मजिस्ट्रेट दूर निकल गया, तो वह भी घर से निकलकर चल पड़ा।

तीसरा परिच्छेद

उसको स्विड्रीगेलफ़ से मिलने की शीघ्रता थी। उससे मिलकर क्या लाभ होगा, यह रोडियन स्वयं नहीं जानता था। स्विड्रीगेलफ़ ने किसी गुप्त रूप से उस पर शक्ति प्राप्त कर ली थी। रोडियन को चिन्ता जला रही थी। वह यह सोचता था कि स्विड्रीगेलफ़ ने मजिस्ट्रेट से सब हाल कह दिया या नहीं। उसके हृदय ने उत्तर दिया—नहीं। फिर उसने सोचा, यदि अभी तक नहीं कहा है, तो कभी-न-कभी कह सकता है।

रोडियन को यही विश्वास हुआ कि वह नहीं कहेगा। परन्तु क्यों नहीं, इसका वह कुछ उत्तर नहीं दे सका। यही चिन्ता उसको सता रही थी। फिर भी वह उदासीन भाव से चला जा रहा था। आश्चर्य की बात यह थी कि इस चिन्ता-जनक दशा में भी उसको अपनी भावी विपत्ति का कुछ विचार न था। वह यह सोच रहा था कि क्या यह उचित होगा कि स्विड्रीगेलफ़ के यहाँ जाकर उससे बातचीत करूँ।

क्या उसको स्विड्रीगेलफ़ से परामर्श मिलने की कुछ आशा है? क्या स्विड्रीगेलफ़ उसकी विपत्ति में कुछ सहायता करेगा? डूबते हुए मनुष्य तिनके का सहारा ढूँढ़ते हैं। भाग्य ने इन दोनों मनुष्यों को मिला दिया। रोडियन स्विड्रीगेलफ़ के यहाँ इसलिये गया कि वह सुनिया के समीप रहता है। परन्तु सुनिया के यहाँ जाकर अब क्या होगा? उसकी अश्रु-धारा देखने के लिये? इस समय वह सुनिया का सामना करने के लिये समर्थ न था। स्विड्रीगेलफ़ से मिलना ही अच्छा होगा; क्योंकि उस पर उसका भाग्य निर्भर है। स्विड्रीगेलफ़ से वह घृणा करता था; क्योंकि वह पक्का दुष्ट, कमीना, चालबाज़ और पतित चरित्र का मनुष्य था। उसके

विषय में बहुत-सी खबरें प्रसिद्ध थीं। यह सच है कि कैथराइन के बच्चों पर उसने दया की। परन्तु लोग उसका सच्चा कारण नहीं जानते। स्विड्रीगेलफ़-जैसे मनुष्य प्रत्येक कार्य किसी-न-किसी गुप्त प्रयोजन से करते हैं।

एक विचार और उसे कुछ दिन से सता रहा था। वह यह कि स्विड्रीगेलफ़ मुझसे प्रेम प्रकट करता है। मेरा भेद उसको मालूम हो गया है। मेरी बहन के विषय में उसके विचार अच्छे नहीं थे। कदाचित् अब भी अच्छे न हों। वह दुष्ट है; कदाचित् मेरे भेद को जानकर, मेरी बहन को धमकाकर, कोई अनुचित लाभ न उठावे। इस विचार ने उसकी निद्रा भंग कर दी थी, और यही विचार इस समय भी उसको आ रहा था। पहले उसने यह सोचा कि सब बातें पहले ही से बहन को बता दूँ, तो वह अनुचित लाभ न उठा सकेगा। फिर सोचा कि मैं जाकर सब स्वीकार कर लूँ, तो डोनिया को कुछ हानि न होगी। परन्तु यह पत्र डोनिया को सेंटपीटर्सबर्ग में किसने लिखा? (कदाचित् लूशिन ने लिखा हो) राज़ू उसकी देखभाल करता है। परन्तु वह यह नहीं जान सका कि पत्र किसका है। अच्छा, स्विड्रीगेलफ़ से चलकर मिलूँ। यदि डोनिया के विषय में उसके विचार बुरे हैं, तो मैं उसको जीवित न छोड़ूँगा।

वह सड़क पर बीचों-बीच खड़ा होकर चारों ओर देखने लगा, मैं कहाँ हूँ? उस समय वह घास की मण्डी पार करके निकल आया था। बाईं ओर के मकान की दूसरे मंज़िल पर गाना हो रहा था। खिड़कियाँ खुली हुई थीं। बहुत-से लोग एकत्रित थे। कोई गा रहा था, कोई सितार बजा रहा था, और कोई ढोल पीट रहा था। स्त्रियों की आवाज़ भी सुनाई देती थी। इस स्थान में पहुँचकर रोडियन वापस जाने ही को था कि उसने देखा, एक खिड़की में स्विड्रीगेलफ़ मुँह में चुरुट दबाए चाय की मेज के पास बैठा है। रोडियन चकित एवं भयभीत हो गया। स्विड्रीगेलफ़ चुपचाप उसे देखता रहा। सबसे आश्चर्य की बात रोडियन ने यह देखी कि स्विड्रीगेलफ़ वहाँ से चुपके-से उठना चाहता है। रोडियन

उसकी ओर ध्यान रखकर इधर-उधर देखने लगा, मानों उसने उसे नहीं देखा। चिन्ता से उसका हृदय धड़कने लगा। स्विड्रीगेलफ़ चाहता था कि रोडियन उसे न देखे। परन्तु कुरसी से उठते ही उसे विदित हुआ कि रोडियन ने मुझे देख लिया। उसने हँसकर पुकारा—"चले आओ, मैं यहाँ हूँ।"

रोडियन ऊपर चढ़ गया। उसने स्विड्रीगेलफ़ को एक छोटे कमरे में बैठे हुए पाया। पास ही बड़े कमरे में व्यवसायी, सरकारी नौकर और और बहुत-से आदमी चा पी रहे तथा गाना सुन रहे थे। दूसरे कमरे में कुछ लोग बिलियर्ड खेल रहे थे। स्विड्रीगेलफ़ के सामने एक खुली हुई, शैम्पियन की बोतल और एक ग्लास रक्खा था। वह नटों का गाना सुन रहा था। एक १८ वर्ष की कन्या, जो देखने में सुन्दर थी, और धारीदार वस्त्र पहने थी, कुछ गा रही थी।

रोडियन को घुसते देखकर स्विड्रीगेलफ़ ने कन्या से कहा—"बस समाप्त करो।" कन्या रुक गई, और चुपचाप प्रतीक्षा करने लगी। स्विड्रीगेलफ़ ने रोडियन से कहा—"लो, शराब पिओ।" रोडियन ने उत्तर दिया—"मैं न पिऊँगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। केटिया, तुम पिओ; और पीकर तुम जा सकती हो।"

यह कहकर उसने एक ग्लास शराब और एक पीले रंग का नोट कन्या को दिया। केटिया शराब पीकर और नोट लेकर, स्विड्रीगेलफ़ का हाथ चूमकर चली गई। सेंटपीटर्सबर्ग में आए हुए स्विड्रीगेलफ़ को केवल एक सप्ताह हुआ था; परन्तु ऐसा विदित होता था, जैसे वह यहाँ का बड़ा पुराना रहनेवाला है। फिलिप नौकर उसे अच्छी तरह जानता था, और उसकी आवभगत भी करता था। स्विड्रीगेलफ़ अपने दिन यहीं बिताता था। यह होटल तीसरे दर्जे का एक गन्दा होटल था।

रोडियन बोला—"मैं तुमसे मिलना चाहता था। घास की मण्डी को पार करके मैं दाहनी ओर जाया करता हूँ, परन्तु आज न-मालूम क्यों इधर आ गया। लौटते हुए मैंने तुमको देखा। बड़े आश्चर्य की बात है!"

"यह क्यों नहीं कहते कि यह एक चमत्कार है। लोग चमत्कार कहते हुए डरते क्यों हैं? रोडियन, बहुत-से आदमियों को अपने दिल की बात प्रकट करने का साहस नहीं होता। तुम अपने दिल की बात नहीं छिपाते, इसी कारण मैं तुमको अच्छा समझता हूँ।"

"इसी कारण?"

"हाँ।"

स्विड्रीगेलफ़ की हालत अच्छी न थी, यद्यपि उसने आधा ही ग्लास शराब पी थी।

रोडियन ने उत्तर दिया—"परन्तु जब पहलेपहल तुम मेरे पास आए, तब तो तुमको यह नहीं मालूम था कि मेरे कैसे विचार हैं।"

"उस बात को जाने दो। प्रत्येक मनुष्य को कुछ अपना काम होता है। परन्तु चमत्कार के विषय में इतना कहना चाहता हूँ कि मैंने स्वयं तुम्हें इस स्थान का पता बताया था, और यह बताया था कि यहाँ आने का मार्ग कौन है, और मैं यहाँ किस समय मिलूँगा। क्या तुमको यह सब याद नहीं?"

रोडियन ने आश्चर्य से उत्तर दिया—"नहीं, मुझे याद नहीं।"

"मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ। मैंने तुम्हें दो बार पता बताया, और वह तुम्हारी स्मृति में था। इसी कारण तुम यहाँ आ गए। परन्तु तुम शून्य भाव से क्यों रहते हो? तुम अपनी कुछ देखभाल नहीं करते। सेंट-पीटर्सबर्ग में बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो आप-ही-आप बकते हुए सड़कों पर चले जाते हैं। इस नगर के आधे निवासी पागल हैं। यहाँ डॉक्टर, वकील और फिलॉसफ़र मनुष्यों के विषय में विशेष अध्ययन कर सकते हैं; क्योंकि यहाँ प्रत्येक प्रकार के पागल देख पड़ते हैं। जलवायु का प्रभाव भी अच्छा नहीं है। दुर्भाग्य से सेंटपीटर्सबर्ग रूस की राजधानी है।

इस कारण सारे रूस पर यहाँ के पागलपन का प्रभाव बुरा पड़ रहा है। मैंने तुमको सड़क पर चलते हुए कई बार देखा है। घर से निकलकर तो तुम सीधे चलते हो; लेकिन बीस कदम चलकर तुम्हारा सिर झुक जाता है। तुम इधर-उधर देखते हो, पर तुम्हें कुछ दिखाई नहीं देता। तुम्हारे होठ हिलने लगते हैं, आप-ही-आप बातें करते हो, तुम्हारी नसें फड़कती हैं, और तुम सड़क के बीच में खड़े हो जाते हो। इससे क्या लाभ है? और लोगों ने भी देखा होगा। और, इससे तुमको हानि पहुँचने की संभावना है। इन बातों से मेरा कोई विशेष संबंध नहीं; परन्तु मैं तुमको समझाना चाहता हूँ कि ऐसा न किया करो।"

रोडियन ने पूछा—"क्या कोई मेरे पीछे लगा रहता है?"

"मुझको नहीं मालूम।"

रोडियन ने कहा—"फिर मेरे विषय में बातचीत न किया करो।"

"अच्छा, ऐसा ही होगा।"

"मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। यदि तुमने मुझे यहाँ का पता बताया था, तो जब मैंने तुम्हें खिड़की में देखा, तब तुम छिपने क्यों लगे थे?"

"जब मैं तुम्हारे कमरे में गया था, तो तुमने क्यों सोने का बहाना किया था, यद्यपि तुम जाग रहे थे?"

रोडियन ने उत्तर दिया—"उसका भी कारण था, और तुम उसे जानते हो।"

"इसका भी कुछ कारण होगा, यद्यपि तुम उसे नहीं जानते।"

रोडियन ने स्विड्रीगेलफ़ की ओर देखा। स्विड्रीगेलफ़ सुन्दर था, परन्तु ऐसा विदित होता था, जैसे वह बनावटी चेहरा लगाए हुए हो। रंग बहुत चमक रहा था, होठ बहुत लाल थे, दाढ़ी बहुत साफ थी, बाल

बहुत मोटे थे, नेत्र बहुत नीले थे। स्विड्रीगेलफ़ ठण्डा सूट पहने था; हाथ में उसके एक बहुमूल्य नगदार अँगूठी थी।

रोडियन ने कहा—"हम लोगों को आपस में स्पष्ट बातें करनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुम मुझको बहुत हानि पहुँचा सकते हो। परन्तु मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ कि यदि मेरी बहन के विषय में तुम्हारे वही विचार हैं, और तुम मेरा भेद जानकर अनुचित लाभ उठाना चाहते हो, तो जेल जाने से पहले मैं तुम्हें मार डालूँगा, इस बात को याद रखना। तुम मुझसे कुछ बातें करना चाहते थे न; कर डालो। फिर देर न हो जाय।"

स्विड्रीगेलफ़ ने कहा —"इतनी जल्दी क्या है?"

"रोडियन ने उत्तर दिया—प्रत्येक मनुष्य को कुछ काम रहता है।"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर कहा—"अभी तुमने कहा कि हम लोग आपस में साफ़-साफ बातें करें। परन्तु मेरे पहले ही प्रश्न का उत्तर नहीं देते—मुझ पर भरोसा नहीं करते। मैं तुमसे मित्रता करना चाहता हूँ, परन्तु धोखा देना नहीं चाहता। मुझे तुमसे कोई विशेष बात नहीं कहनी।"

"तो फिर क्यों मुझको घेरते हो?"

"तुम एक विचित्र मनुष्य हो। तुम्हारी बातें मुझे अच्छी लगती हैं। तुम उस स्त्री के भाई हो, जिसने मेरे हृदय को वशीभूत किया है। तुम्हारे विषय में वह मुझसे बातें किया करती थी, जिससे विदित होता था कि तुम्हारा उस पर बड़ा प्रभाव है। क्या यह कारण पर्याप्त नहीं? मैं यह मानता हूँ कि तुम्हारा प्रश्न बहुत टेढ़ा है, और उसका ठीक-ठीक उत्तर मैं नहीं दे सकता। परन्तु तुम क्यों मेरे पास आते हो? इसीलिये न कि मैं कोई नई बात तुम्हें बताऊँ। फिर मैं भी इसी कारण सेंटपीटर्सबर्ग आने पर तुमसे मिला कि तुम भी कोई नई बात मुझे बताओ, और कोई चीज़ मुझको दो।"

"मैं क्या चीज़ तुमको दे सकता हूँ?"

"मैं क्या बताऊँ। देखो, इस बुरे स्थान में मैं अपने दिन बिताता हूँ। मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता। परन्तु कहीं-न-कहीं तो दिन बिताना ही है। केटिया मुझको बड़ी अच्छी लगती है। क्या तुम खाना खा चुके हो? मदिरा मैं नहीं पीता, केवल शैम्पियन पीता हूँ। और, वह भी एक ही ग्लास। यह बोतल आज इसलिये मँगाई थी कि आज मुझको विशेष काम से जाना है, इसलिये तैयारी करनी थी। अभी तुमको देखकर मैं भागना चाहता था, परन्तु तुम आ गए हो तो घंटे-भर बातचीत कर सकता हूँ। साढ़े चार बजे हैं। समय काटे नहीं कटता। मुझे कोई नई बात बताओ।"

"तुम कौन हो, और यहाँ क्यों आए हो?"

"मैं कौन हूँ? मैं एक ऐसा भला मनुष्य हूँ, जो फौज में नौकरी कर चुका। मैंने सेंटपीटर्सबर्ग में अपना समय नष्ट करके मारफ़ा से विवाह किया, और फिर गाँव में रहने लगा। यही मेरी जीवनी है।"

"मैं समझता हूँ, तुम जुआड़ी हो।"

"मैं जुआ खेलता हूँ, ताश खेलता हूँ।"

"ताश खेलकर तुम बेईमानी करके दूसरों को ठगते थे?"

"निस्सन्देह।"

"तुमको मार भी पड़ चुकी है।"

"हाँ, तुम यह क्यों जानना चाहते हो?"

"तुम दाव लगाकर लड़ना चाहते हो?"

"मुझे इसमें भी कोई आपत्ति नहीं। मैं यहाँ स्त्रियों के फेर में आया हूँ।"

"मारफ़ा को गाड़कर पहला काम तुमने यही किया?"

स्विड्रीगेलफ हँसा, और बोला—"हाँ, इससे तुम क्यों चकित होते हो?"

"वेश्यागमन पर चकित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं।"

"मैं क्यों डरूँ ? स्त्रियों से व्यवहार क्यों छोड़ूँ ? मुझे उनकी संगति अच्छी लगती है, और मेरा दिल लगा रहता है।"

रोडियन उठा। उसे विदित हुआ कि स्विड्रीगेलफ बड़ा दुष्ट है। स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"थोड़ी देर और ठहरो, चा पियो। मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। तुमको बताऊँगा कि किस प्रकार एक नीच स्त्री ने मुझमें परिवर्तन करने का प्रयत्न किया। तुम्हारी बहन से इस बात का सम्बन्ध है। फिर आरंभ करने की आज्ञा है ?"

"कहो, क्या कहते हो ?"

"घबराओ नहीं। मुझ-जैसे पापी भी तुम्हारी बहन को आदर की दृष्टि से देखते हैं। मैं उसके चरित्र को अच्छी तरह समझता हूँ। पहले नासमझी के कारण मुझसे भूल हुई। ईश्वर, तूने उसको इतना सुन्दर क्यों बनाया ? यह मेरा अपराध नहीं है। सारांश यह कि मैं उसके प्रेम में फँस गया। मेरी स्त्री मारफा गाँव की स्त्रियों की चिन्ता न करती थी। एक गाँव की लड़की 'पराचा' नाम की हमारे यहाँ नौकर थी। वह बड़ी सुन्दर, पर मूर्ख थी। एक दिन उसके चिल्लाने के कारण सब लोग एकत्रित हो गए। डोनिया मुझको अलग ले गई, और समझाया कि पराचा को न छेड़ो। यह मेरी उसकी पहली बातचीत थी। मैंने उसकी प्रार्थना स्वीकार की; और फिर वह मुझसे अलग मिला करती थी, और मुझको उपदेश भी देती थी कि मैं अपने जीवन का ढंग बदल दूँ। उपदेश देते-देते उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। डोनिया का दिल खींचने के लिये मैंने उसकी चाटुकारी आरंभ की। स्त्रियाँ चाटुकारी से बहुत प्रसन्न होती हैं। डोनिया भी उससे प्रसन्न होती थी। परन्तु मैंने अधीरता के कारण बना-बनाया खेल बिगाड़ दिया। मुझको चाहिए था कि तुम्हारी बहन से बातें करते हुए मैं अपनी आँखों पर परदा डाल लेता। मेरे घूरने से उसको क्षुब्ध

कर दिया, और हम दोनों में झगड़ा हो गया। उसके उपरान्त मैंने और भी भूलें कीं; पराचा से भी छेड़छाड़ की।

"मेरे प्यारे रोडियन, यदि उस समय तुम अपनी बहन के नेत्र देखते, तो तुम्हें विदित होता कि वे कैसे चमकते हैं। नींद में भी उसकी चितवन मुझे सताती थी। उसके कपड़ों की खड़खड़ाहट मेरे लिये असहनीय थी। मुझको उसके लिये इतनी लालसा हो गई थी कि उससे मैं संधि करना चाहता था। परन्तु संधि अब असंभव थी। फिर मैंने क्रोध में आकर एक और भूल की। मैं समझता था कि डोनिया एक दरिद्र कन्या है, और अपनी मा तथा भाई की सहायता करती है। इस-लिये मैंने उसे अपने धन का लोभ देकर प्रस्ताव किया कि सेंटपीटर्सबर्ग भाग चलें। वहाँ पहुँचकर मैं उसको सुखी कर देता। उस समय मैं उसके प्रेम में इतना पागल हो रहा था कि यदि वह कहती कि मारफ़ा को मारकर मुझसे विवाह कर लो, तो मैं वह भी कर बैठता। परन्तु फिर मुझसे क्रोधित होकर वह चली गई, और मेरी सब आशाएँ मिट्टी में मिल गईं। यह सुनकर कि मेरी स्त्री ने डोनिया का विवाह उस टकले लूशिन से ठहरा दिया, मुझको बड़ा शोक हुआ; क्योंकि मैं लूशिन से हज़ार दरजे अच्छा हूँ। मेरे प्यारे रोडियन, तुम बड़े ध्यान से सब सुन रहे हो न।" यह कहकर स्विड्रीगेलफ़ ने मेज़ पर एक घूसा मारा। वह बहुत लाल हो रहा था, और नशा ज़ोरों पर था। रोडियन ने इस अवसर को अच्छा समझकर, उसका भेद जानने का प्रयत्न करते हुए कहा—"तो तुम अवश्य मेरी बहन के पीछे यहाँ आए हो।"

स्विड्रीगेलफ़ ने उत्तर दिया—"बेहूदा! क्या तुमसे मैंने अभी नहीं कहा कि तुम्हारी बहन मुझसे घृणा करती है।"

"यह तो मुझे मालूम है। परन्तु इससे क्या?"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर कहा—"तुम्हें क्या मालूम है? यह सच है कि वह मुझसे प्रेम नहीं करती; परन्तु तुम नहीं जान सकते कि पति

और पत्नी तथा प्रेमी और प्रेमिका में परस्पर कैसा व्यवहार होता है, संसार से छिपकर वे कहीं-न-कहीं मिलते हैं। क्या तुम यह कह सकते हो कि डोनिया मुझसे घृणा करती है?"

"तुम्हारी बातचीत से यह विदित होता है कि डोनिया के विषय में तुम्हारे विचार अभी तक अच्छे नहीं हैं। और, तुम कुछ काररवाई करना चाहते हो।"

स्विड्रीगेलफ़ ने चिन्तित होकर कहा—"क्या मेरे मुँह से कुछ ऐसे वाक्य निकल गए?"

"तुम्हारी बातों से स्पष्ट है कि तुम्हारी नियत ख़राब है। तुम डरते क्यों हो?"

"मैं डरता हूँ? किससे? तुमसे? मेरे मित्र, तुम्हें मुझसे डरना चाहिए? मैं नशे में हूँ, इसलिये कुछ बक गया। शराब का ईश्वर बुरा करे। कुछ पानी दो।" यह कहकर उसने बोतल खिड़की से बाहर फेंक दी। फ़िलिप पानी ले आया। स्विड्रीगेलफ़ ने तौलिया भिगोकर मुँह पोछा, और फिर बोला—"मैं तुम्हारे सन्देह को दूर करने के लिये तुमसे कहना चाहता हूँ कि मेरा विवाह होनेवाला है।"

"यह तो तुम मुझे पहले ही बता चुके हो।"

"मैं भूल गया था। परन्तु जब मैंने बताया होगा, तब बिलकुल निश्चय नहीं हुआ था। अब निश्चय हो गया है, और यदि इस समय मुझे काम न होता, तो मैं तुमको अपनी भावी पत्नी के यहाँ ले चलता। फिर तुमसे पूछता कि मैंने कैसी स्त्री चुनी है। हैं! केवल दस मिनट रह गए। ख़ैर, मैं तुमसे अपने विवाह के सबंध में कहना चाहता हूँ। क्या तुम जाना चाहते हो?"

"नहीं, अब मैं तुम्हारे साथ-ही-साथ रहूँगा।"

"साथ ही रहोगे? मेरी भावी पत्नी को तुम देखोगे? परन्तु इस

समय नहीं, क्योंकि मुझे काम से जाना है। तुम दाहनी ओर जाओ; मैं बाईं ओर जाऊँगा। मैडम रेसलिश (जिसका मैं किराए-दार हूँ) ने यह विवाह ठहराया है। उसने मुझसे कहा कि तुम उदास रहते हो, विवाह कर लो। मेरा चित्त बहुत उदास रहता है, परन्तु मैं किसी को हानि नहीं पहुँचाता। तीन-तीन दिन विना किसी से बोले अकेला पड़ा रहता हूँ। रेसलिश समझती है कि थोड़े ही दिन में मैं अपनी स्त्री से ऊबकर उसी के पास छोड़ दूँगा। मेरी स्त्री का पिता पहले सरकारी नौकर था, परन्तु अब लँगड़ा हो जाने के कारण आराम-कुरसी पर पड़ा रहता है। मा बड़ी बुद्धिमती है; लड़का कहीं नौकर है, परन्तु माता-पिता की कुछ सहायता नहीं करता। सबसे बड़ी लड़की का विवाह हो गया है, परन्तु वह कभी पत्र नहीं भेजती। इन भले आदमियों के मत्थे दो भतीजे भी हैं, और सबसे छोटी लड़की, निर्धन होने के कारण, शिक्षा समाप्त करने से पहले ही स्कूल से उठा ली गई है। वह सोलह वर्ष की इस महीने में हो जायगी, और उसी से मेरा संबंध होगा। इस कुटुम्ब की ऐसी दशा होने के कारण ही मुझे धनवान समझकर, मेरी अवस्था पर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। मैं उसके मा-बाप से बातें कर रहा था कि वह कन्या लजाती हुई घुसी। मैं नहीं जानता कि स्त्रियों के विषय में तुम्हारी क्या सम्मति है। परन्तु मैं तो सोलह वर्ष की कन्या को बच्चे की तरह समझता हूँ। कन्या बड़ी सुन्दर है। उसके लाल होठ, घुँघराले बाल, छोटे-छोटे पैर ग़ज़ब ढाते हैं। कुटुम्ब की ऐसी दशा होने के कारण हमारा विवाह शीघ्र ही होगा। जब मैं वहाँ जाता हूँ, वह मेरे घुटनों पर आ बैठती है, और मैं उसका मुख-चुम्बन करता हूँ। वह शर्माती है, परन्तु मुझे रोकती नहीं; क्योंकि उसकी मा ने समझा दिया होगा कि भावी पति चुम्बन कर सकता है। मैंने उस कन्या से दो बार बातचीत की है, और मुझको वह बुद्धिमती जान पड़ती है। तिरछी चितवन से जब वह मेरी ओर देखती है, तो मैं

तो ख़ाक हो जाता हूँ। विवाह ठहरने के दूसरे दिन मैंने पन्द्रह सौ रूबल का हीरे, मोती, और चाँदी से मढ़ा हुआ सन्दूक उसको भेंट किया। कल भी मैंने उसको गोद में लिया, और उसकी आँखों से कुछ आँसू ढलक पड़े। हम दोनों अकेले थे। उसने मेरी गर्दन में हाथ डाल दिए, और आलिंगन करके बोली—मैं आज्ञाकारिणी और सच्ची स्त्री होऊँगी, और अपने जीवन का प्रत्येक क्षण तुमको प्रसन्न करने में बिताऊँगी। उसने कहा—मैं तुमसे और कुछ नहीं, केवल आदर चाहती हूँ। सोलह वर्ष की कन्या जब इस प्रकार की बातें, आँखों में आँसू भरे हुए, करे, तो किस आदमी को अच्छा न लगेगा! इस कन्या से मैं तुम्हारा परिचय कराऊँगा।"

रोडियन ने कहा—"तुम्हारी अवस्था उससे इतनी अधिक है; फिर भी क्या तुम उससे विवाह करोगे?"

स्विड्रीगेलफ़ ने हँसकर उत्तर दिया—"तुम बड़े धार्मिक हो, तुम्हारी बातों में मुझे बड़ा मज़ा आता है।" फ़िलिप को बुलाकर, दाम देकर, वह उठा, और रोडियन से बोला—"मुझे शोक है, मैं तुम्हारे साथ अधिक देर नहीं ठहर सकता। थोड़ी देर बाद फिर मिलेंगे।"

स्विड्रीगेलफ़ होटल से बाहर निकल आया। रोडियन भी उसके पीछे-पीछे चला। स्विड्रीगेलफ़ का नशा उतर गया था। उसकी भौंओं में बल पड़ गए थे, और उसके मुख के भाव से यही प्रतीत होता था कि वह कोई बड़ा आवश्यक काम करनेवाला है। रोडियन भी सब समझ गया था, इसीलिये वह उसके पीछे चल पड़ा था। सड़क पर दोनों साथ पहुँचे।

स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"बस, अब तुम दाहनी ओर जाओ, और मैं बाईं ओर जाऊँगा; या तुम बाईं ओर जाओ, और मैं दाहनी ओर। नमस्ते। फिर मिलेंगे।" यह कहकर वह घास की मण्डी की ओर चला गया।

———

चौथा परिच्छेद

रोडियन ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसने मुड़कर कहा—"क्या करते हो ? मैंने तुमसे कह दिया···।"

"मैंने भी तुम्हारा पीछा करने की ठान ली है।"

"क्या ?"

दोनों रुक गए, और ध्यान से एक दूसरे को देखने लगे।

रोडियन ने कहा—"तुमने नशे की हालत में ऐसी बातें कही हैं, जिनसे मुझे विश्वास हो गया है कि मेरी बहन के संबंध में अभी तक तुम्हारे विचार अच्छे नहीं हैं, और तुम्हें उससे मिलने की लालसा है। मैं जानता हूँ कि मेरी बहन को आज एक पत्र मिला है। सेंट-पीटर्सबर्ग में पहुँचकर तुम आलस्य में बैठे नहीं, परन्तु अपना काम करते रहे हो। मुझे मालूम है कि तुमने अपने लिये एक पत्नी ढूँढ ली है। परन्तु मैं अब भी बहुत चिन्तित हूँ, और यह जानना चाहता हूँ···?" रोडियन इसके आगे कुछ न कह सका।

"क्या तुम्हारी इच्छा है कि मैं पुलीस को बुलाऊँ ?"

"ज़रूर बुलाओ।"

दोनों ने फिर एक बार एक दूसरे को देखा। स्विड्रीगेलफ़ के भाव में परिवर्तन हो गया, यह देखकर कि रोडियन उसकी धमकी से नहीं डरा। स्विड्रीगेलफ़ ने मित्रता के भाव में कहा—"तुम बड़े विचित्र आदमी हो ! तुम्हारे मामलों के विषय में मैं बहुत उत्सुक हूँ। परन्तु फिर कभी बातचीत करूँगा। आओ, मेरे साथ आओ। मैं कमरे में केवल कुछ रुपए लेने जा रहा हूँ, और फिर गाड़ी पर घूमने जाऊँगा। मेरे पीछे आने से तुमको कोई लाभ नहीं।"

"मुझको भी तुम्हारे घर पर कुछ काम है। तुमसे नहीं, परन्तु सुनिया से। उसको विमाता के अन्तिम संस्कार में न पहुँचने के लिये क्षमा माँगनी है।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। परन्तु सुनिया घर पर नहीं है। वह तीनों बच्चों को लेकर एक बूढ़ी स्त्री के यहाँ, जो मेरी परिचित है, गई है। यह स्त्री कई अनाथालयों की अधिष्ठात्री है। मैंने उसके पास कैथराइन के बच्चों के लिये कुछ रुपए जमा कर दिए हैं, और कुछ अनाथालय की सहायता के लिये भी दिया है। सुनिया की सारी कहानी उसके सुना दी है, और यह सुनकर उस स्त्री को सुनिया पर बड़ी दया आ गई है। इसीलिये आज सुनिया उससे मिलने गई है।"

"कुछ चिन्ता नहीं, मैं उसके यहाँ जाऊँगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। मैं तुम्हारे साथ न जाऊँगा। तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते; क्योंकि मैंने तुमसे अभी तक उस विषय पर कोई वार्तालाप नहीं किया। मेरे चुप रहने को तुम विचित्र समझते हो। तुमको मेरा कृतज्ञ होना चाहिए।"

"दरवाज़ों की दराज़ों से दूसरा की बातचीत सुनने के लिये कृतज्ञ होऊँ?"

स्विड्रोगेलफ़ ने हँसकर उत्तर दिया—"मैं समझता था कि तुम यह कहोगे ही। यदि तुम समझते हो कि दराज़ से दूसरे की बात सुनना अपराध है, और एक बुढ़िया को मार डालना कोई पाप नहीं, तो मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मजिस्ट्रेट तुमसे सहमत न होंगे। अार, इसलिये तुरन्त ही अमेरिका भाग जाओ। अभी समय है। मैं सच्चे दिल से यह परामर्श तुम्हें देता हूँ। यदि धन की आवश्यकता हो, तो यात्रा का व्यय मैं तुमको दूँगा।"

रोडियन ने कहा—"मुझे उसकी कुछ चिन्ता नहीं।"

"मैं समझता हूँ, यदि धर्म की दृष्टि से अब तुम काम करना चाहते हो, और अपने को अपराधी समझते हो, तो तमञ्चा मारकर मर जाओ।"

"ऐसा विदित होता है कि मुझको चिढ़ाकर तुम यही चाहते हो कि मैं तुम्हें स्वतंत्र छोड़ दूँ ।"

"पागल आदमी ! आओ, देखो, सुनिया घर में नहीं है। मेरा विश्वास नहीं करते। कैयर नैसूमाफ़ से पूछो। क्या सुनिया बाहर गई है ?...कहाँ गई है ?...अब तुम्हें विश्वास हुआ ? वह घर पर नहीं है, और शाम तक न आवेगी। अब तुम्हें विश्वास हुआ ? आओ, मेरे कमरे में आओ। यह मेरा कमरा है। रेसलिश घर में नहीं है, उसे हज़ारों काम रहते हैं। लो, मैंने रुपए ले लिए।...मैंने मेज़ को बंद कर दिया।...कमरे को बंद करके फिर हम ज़ीने में पहुँच गए। मैं गाड़ी करके घूमने जाता हूँ। तुम्हारा जी चाहे, तुम भी चलो। अब क्यों इनकार करते हो ? वर्षा होनेवाली है, परन्तु टप चढ़ा देंगे।"

स्विड्रीगेलफ़ गाड़ी में बैठ चुका था। रोडियन ने समझा, अब देर करने में कोई भय नहीं। बिना कुछ कहे वह घास की मण्डी की ओर चल पड़ा। यदि वह घूमकर देखता, तो उसे मालूम होता कि थोड़ी दूर जाकर स्विड्रीगेलफ़ गाड़ी से उतर पड़ा है, और किराया देकर गाड़ीवान से बिदा हो चुका है। परन्तु रोडियन ने यह कुछ नहीं देखा। वह ध्यान में मग्न हो गया। वह पुल पर, कटघरे के पास खड़े होकर, नहर को देखने लगा। थोड़ी दूर पर डोनिया खड़ी थी। उसने डोनिया को नहीं देखा। डोनिया उससे बोलने ही को थी कि उसने देखा कि घास की मण्डी की ओर से स्विड्रीगेलफ़ उसको बुला रहा है, और रोडियन से बात करने को मना कर रहा है। डोनिया भाई को छोड़कर स्विड्रीगेलफ़ के पास आ गई।

स्विड्रीगेलफ़ ने धीरे से कहा—"ज़रा तेज़ चलो। मैं नहीं चाहता कि रोडियन को हमारी भेंट का हाल मालूम हो। अब भी कठिनाई से उससे

छुटकारा पाया है। उसको मालूम है कि मैंने तुम्हें पत्र लिखा था, और वह कुछ संदेह करता है। तुमने तो उससे न कहा होगा। परन्तु यदि तुमने नहीं कहा, तो फिर किसने कहा ?"

डोनिया ने कहा—"यहाँ से मेरा भाई हमको नहीं देख सकता। तुम्हारे साथ आगे न जाऊँगी। जो कुछ कहना हो, यहीं सड़क पर कहो।"

"सड़क पर ऐसी बातें नहीं हो सकतीं। तुम्हें सुनिया से भी मिलना है, और कुछ कागज़ात भी देखने हैं। यदि तुम मेरे कमरे में नहीं चलोगी, तो मैं भी तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। परन्तु याद रखना कि तुम्हारे प्यारे भाई के विषय में ऐसी गुप्त बात मुझको मालूम है कि मैं उसका प्रभाव नष्ट कर सकता हूँ।"

डोनिया स्विड्रीगेलफ़ की ओर देखने और सोचने लगी। स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"डरती क्यों हो ? यह गाँव नहीं है, और गाँव में भी तो तुम्हीं ने मुझको हानि पहुँचाई।"

"क्या सुनिया को मालूम है कि मैं आज आऊँगी ?"

"मैंने उससे यह कुछ नहीं कहा है। कदाचित् वह घर पर न होगी... हाँ, अवश्य होगी; क्योंकि आज उसने अपनी विमाता को दफ़नाया है, इसलिये आज कहीं न गई होगी। मैंने अभी तक इस विषय में किसी से कुछ नहीं कहा। मुझे कुछ शोक है कि तुमसे कहना पड़ रहा है। ऐसे मामलों में ज़रा-सी बात मुँह से निकल जाने पर बड़ी हानि होती है। देखो, यही मेरा मकान है। देखो, चौकीदार ने मुझको सलाम किया। उसने तुमको पहचान लिया है। अब चिन्ता किस बात की है। बहुत-से मनुष्य इस घर में रहते हैं। डरती क्यों हो ? क्या मैं बहुत भयानक हूँ ?"

यह कहकर स्विड्रीगेलफ़ हँसा। उसका दिल धड़क रहा था, और वह अपनी उत्तेजना को छिपाना चाहता था। डोनिया ने शान्त भाव से कहा—"यह मैं जानती हूँ कि तुम विश्वास करने-योग्य मनुष्य नहीं हो; परन्तु मैं तुमसे नहीं डरती। रास्ता दिखाओ।"

स्त्रिड्रोगेलफ़ सुनिया के दरवाजे पर रुका, और बोला—"वह घर में नहीं है, अभी आती होगी। यदि दस मिनट में न आई, और तुम उससे बातें करना चाहोगी, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। ये दोनों मेरे कमरे हैं। रेसलिश मिले हुए कमरे में रहती है। यह मेरा सोने का कमरा है। सब अच्छी तरह से देख रक्खो।" डोनिया बड़े ध्यान-पूर्वक सब कुछ देखती रही, परन्तु उसे कोई बात संदेह की न मिली।

अपने कमरे में जाने के लिये स्त्रिड्रोगेलफ़ को दो ख़ाली कमरों में होकर जाना पड़ता था। डोनिया को उसने वे ख़ाली कमरे दिखाए। उसे खाली कमरे में घुसते हुए भय लगा। परन्तु स्विड्रीगेलफ़ ने तुरन्त ही कहा—"मैं तुमको इसलिये यह दिखाता हूँ कि यहीं से मैंने उनकी बातचीत सुनी थी। सुनिया की मेज इस दरवाज़े के दूसरी ओर है। मैं इस दरवाजे के पास कुरसी पर बैठकर सब बातें सुनता रहा। दे। दिन तक दो-दो घंटे तक मैंने उनकी बातें सुनी हैं। चलो, मेरे कमरे में चलो। यहाँ तो बैठने का स्थान भी नहीं है।"

डोनिया को वह अपने कमरे में ले गया, और मेज के पास बिठाया। वह स्वयं दूर बैठा, परन्तु उसकी आँखों से डोनिया डर रही थी। कभी-कभी इधर-उधर वह देख लेती थी। उसको इस बात के जानने की चिन्ता थी कि मकान की मालकिन घर में है, या नहीं। परन्तु उसके अभिमान ने यह प्रश्न करने से उसको रोक दिया। इस समय उसे अपने विषय में कुछ चिंता न थी, रोडियन की ही चिन्ता उसके हृदय को भस्म कर रही थी।

डोनिया ने मेज़ पर पत्र रखकर कहा—"यह तुम्हारा पत्र है? क्या तुमने यह सच लिखा है कि मेरे भाई ने हत्या की है? मैं ऐसी बातें पहले भी सुन चुकी हूँ; परन्तु एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करती। यह सब झूठ बात है। मैं यह भी जानती हूँ कि उस

पर क्यों संदेह किया जा रहा है। तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है। बोलो, क्या कहना चाहते हो? जो कुछ भी कहो, मैं तुम्हारा विश्वास न करूँगी।" डोनिया के मुख पर कुछ लालिमा आ गई।

"यदि मेरा विश्वास नहीं है, तो यहाँ क्या करने आई हो?"

"मुझे दिक न करो। बोलो, बोलो, क्या कहना है?"

"मैं यह स्वीकार करता हूँ कि तुम साहसी कन्या हो। मैं समझता था, तुम यहाँ राजू को साथ लेकर आओगी। मुझे विश्वास है कि यदि वह तुम्हारे साथ नहीं आया है, तो तुम्हारे पीछे भी नहीं है। तुमने यह समझदारी की बात की है। तुम बिलकुल देवी हो। परन्तु तुम्हारा भाई? उसके विषय में मैं क्या कहूँ। तुमने अभी स्वयं उसको देखा है।"

"क्या उसके आजकल के भाव से ही तुम उसे हत्यारा ठहराते हो?"

"नहीं, मैंने उसी के मुँह से सुना है। सुनिया के पास वह दो दिन आया। उसने सारा भेद सुनिया को बताया। सारांश यह कि वह खूनी है, उसने एक बुढ़िया साहूकारिन को मारा है। खून करने के कुछ क्षण बाद उसकी बहन एलेज़बेथ आ पहुँची, और उसको भी उसने साफ़ किया। यह काम उसने एक कुल्हाड़ी से किया, जिसे वह अपने साथ ले आया था। चोरी की नियत से उसने ऐसा किया, और कुछ रुपए और चीज़ें चुराईं। यह सब हाल उसने सुनिया से कहा है। सुनिया का इसमें कोई भाग नहीं है। यह हाल सुनकर वह भी तुम्हारी ही तरह भयभीत हो गई थी। विश्वास रक्खो, वह यह भेद किसी को बतावेगी नहीं।"

डोनिया ने हाँफते हुए कहा—"असंभव! झूठ! ऐसा नहीं हो सकता।"

"चोरी के लिये उसने ऐसा किया। यह सच है कि वह चोरी के माल को अपने काम में नहीं लाया, पत्थर के नीचे छिपाकर रख दिया है। वह इसीलिये कि वह उसे काम में लाने से डरता है।"

डोनिया ने उठकर कहा—"क्या उसने चोरी की? असंभव! तुम उसको जानते हो? क्या वह चोर हो सकता है?"

"डोनिया, आदमी बहुत तरह के होते हैं। साधारण चोर अपने को अपराधी समझते हैं; परन्तु तुम्हारे भाई के सदृश मनुष्य इसे एक प्रशंसनीय कार्य समझते हैं। तुम्हारी तरह यदि मैं भी इस कहानी को किसी और से सुनता, तो विश्वास न करता। परन्तु अब तो अपने कानों सब सुना है। डोनिया, तुम चली कहाँ?"

डोनिया ने निर्बल वाणी में कहा—"मैं सुनिया से पूछूँगी। वह अवश्य आ गई होगी, मैं उससे मिलूँगी। उसका दरवाज़ा किधर है?" डोनिया आगे कुछ न कह सकी।

"सुनिया कदाचित रात तक न आवेगी। अभी तक तो नहीं आई। इसलिये शायद देर से आवेगी।"

"तुम बड़े झूठे हो, मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करती।" यह कहकर डोनिया कुरसी पर मुँह लटकाकर मूर्छित-सी हो गई।

"डोनिया, तुमको क्या हो गया है? साहस करो, लो एक घूँट पानी पिओ।" डोनिया के मुख पर उसने पानी छिड़का। डोनिया होश में आकर काँपने लगी। "डोनिया, धीरज धरो। रोडियन के बहुत-से मित्र हैं। हम उसकी रक्षा करेंगे, उसको बचावेंगे। यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो मैं उसके साथ इस देश से भाग जाऊँ। मेरे पास धन है, और मैं सब कुछ कर सकता हूँ। तुम्हारा भाई कदाचित् अपने अच्छे कामों से इस पाप को धो डाले। चिन्ता न करो। अब तुम्हारी तबियत कैसी है?"

"धूर्त्त! मुझे इस समय न छेड़ो, मुझे जाने दो।"

"तुम कहाँ जाओगी?"

"रोडियन के पास। वह कहाँ है? हैं! यह दरवाज़ा क्यों बन्द है? हम तो इधर ही से आए थे। इसमें तुमने ताला कब लगाया?"

"मैंने यह उचित नहीं समझा कि सब लोग हमारी बातचीत सुनें। अपने भाई की खोज में इस दशा में न जाओ। क्या उसका नाश करना चाहती हो ? तुमको इस दशा में देखकर, वह पागल होकर अपना अपराध स्वीकार कर लेगा। पुलीस उसकी ताक में है। तुम्हारी ज़रा-सी भूल से वह पकड़ जायगा। आओ, बैठकर सलाह करें कि उसकी रक्षा कैसे की जाय। इसीलिये मैंने तुम्हें बुलाया था।"

डोनिया बैठ गई, और बोली—"तुम उसको कैसे बचा सकते हो ?"

स्विड्रीगेलफ़ की आँखें चमकने लगीं। वह धीरे-धीरे बोला—"उसका बचाना तुम्हारे ऊपर निर्भर है। अपने मुख से एक शब्द कह दो, और वह बच जायगा। मेरे पास धन है, और मित्र भी। पासपोर्ट लेकर अभी उसे बाहर भिजवा दूँगा। मैं भी साथ जाऊँगा। तुम्हारा और तुम्हारी मा का पासपोर्ट भी प्राप्त कर सकता हूँ। राजू का ध्यान छोड़ दो। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। अपने कपड़े की गोट का मुझे चुम्बन करने दो। तुम्हारे कपड़ों की खड़खड़ाहट मुझको वशीभूत कर लेती है। बोलो। मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार काम करूँगा। मैं चमत्कार करके दिखा दूँगा। मेरी ओर इस तरह न देखो। तुम्हारी चितवन मुझे मारे डालती है।"

वह बकने लगा, और ऐसा विदित होता था कि वह पागल हो रहा है। डोनिया उचककर दरवाजे के पास पहुँच गई, और ज़ोर से धक्का देकर चिल्लाने लगी—"खोलो, खोलो, कोई बाहर है, खोलो।"

स्विड्रीगेलफ़ उठा। उसको होश आ गया था। उसके होठों पर कड़वी हँसी थी। वह धीरे से बोला—"मकान की मालकिन बाहर गई हुई है, तुम्हारा चिल्लाना बेकार है।"

"कुंजी कहाँ है ? शीघ्र दरवाज़ा खोलो। कमीने आदमी !"

"कुंजी खो गई है, इस समय नहीं मिल सकता।"

"तो मेरे लिये जाल फैलाया गया है।"

डोनिया पीली पड़ गई, और कमरे के एक कोने में जाकर मेज़ के पीछे खड़ी हो गई। वहीं से चुपचाप स्विड्रीगेलफ़ को देखती रही। स्विड्रीगेलफ़ कमरे के दूसरे कोने में सीधा खड़ा हो गया। वह होश में था, परन्तु उसका मुख पीला पड़ गया था, उसके होंठों पर अब भी कड़वी हँसी थी।

"डोनिया, अभी तुमने जाल का नाम लिया। तुम्हें मालूम होगा कि जब कोई जाल फैलाता है, तो सब तैयारी कर लेता है। सुनिया घर में नहीं है, कैयर नैसूमाफ़ पाँच कमरे छोड़कर रहता है। मैं तुमसे दुगना बलवान हूँ। यदि तुम मेरी शिकायत भी करोगी, तो तुम्हारा भाई कहीं का न रहेगा, और कोई तुम्हारा विश्वास नहीं करेगा; क्योंकि तुम मेरे मकान पर अकेली आई हो। यदि तुम भाई को भूल भी जाओ, तो तुम कुछ प्रमाण नहीं दे सकती। मेरे विरुद्ध प्रमाण पहुँचाना बड़ा कठिन है।"

डोनिया ने क्रोध-भरी आवाज़ में कहा—"नराधम!"

"जो चाहे, कहो। अभी तक मैं तुमको समझा रहा था कि तुम कुछ नहीं कर सकतीं। मैं स्वयं एक स्त्री के साथ बुरा व्यवहार करना घोर पाप समझता हूँ। मैं तुमको केवल यह उपाय बताना चाहता था कि तुम मेरे कहने के अनुसार चलकर अपने भाई को बचा सकती हो। याद रक्खो। तुम्हारे भाई और मा के भाग्य का फैसला तुम्हारे हाथ में है। जीवन-भर मैं तुम्हारा दास रहूँगा। बोलो, क्या कहती हो।"

डोनिया से आठ क़दम हटकर वह पलँग पर बैठ गया। डोनिया उसको अच्छी तरह जानती थी। वह समझ गई कि इस मनुष्य के इरादे में परिवर्तन नहीं हो सकता। उसने जेब से पिस्तौल निकाली, घोड़ा चढ़ाकर पास ही मेज़ पर रख लिया। यह देखकर स्विड्रीगेलफ़ चकित हो गया, और आगे बढ़कर बोला—"तो तुम्हारा यही उत्तर है?

डोनिया, यह पिस्तौल कहाँ से लाई ? क्या राजू से माँगकर लाई हो ? यह तो मेरी है। मैं इसको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक गया।"

"यह पिस्तौल तेरी नहीं है, मारफ़ा की है, जिसको तूने मार डाला है। नराधम ! उसके घर में तेरी कोई चीज़ न थी। मेरे पास यह उस समय से है, जब से मुझे तेरे ऊपर संदेह हुआ। एक पग भी आगे बढ़ा, तो शपथ खाकर कहती हूँ कि गोली चला दूँगी।" यह कहकर डोनिया उस वक्त के लिये तैयार हो गई।

स्विड्रीगेलफ़ ने वहीं खड़े-खड़े कहा—"उत्सुकता के कारण पूछता हूँ कि तुम्हें अपने भाई के बचाने का क्या कुछ ख़याल नहीं है ?"

"उसके विरुद्ध जो तुमसे हो सके, करो। परन्तु यदि ज़रा-भी अपने स्थान से हिले, तो याद रक्खो, मैं गोली मार दूँगी। तुमने अपनी स्त्री को विष देकर मार डाला, तुम स्वयं ख़ूनी हो।"

"क्या तुमको बिलकुल विश्वास है कि मैंने मारफ़ा को विष दिया ?"

"हाँ, तुम्हारी बातों से स्पष्ट है। मुझको मालूम है कि तुम्हारे पास विष था। चाण्डाल ! यह तेरा ही काम था।"

"यदि यह बात सच भी है, तो मैंने तुम्हारे ही लिये ऐसा किया। तुम्हीं इसका कारण हो।"

"झूठा कहीं का ! मैं तो सदा तुमसे घृणा करती रही हूँ।"

"डोनिया, तुम भूल गई हो कि मुझको सुधारने की चिन्ता में तुम कैसा प्रेम से मेरी ओर देखती थीं। तुमको याद होगा, एक दिन शाम को, जब चाँदनी फैली हुई थी, कोयल कूक रही थी, तुम्हारे नेत्र कह रहे थे कि मुझे मारफ़ा को विष देना चाहिए।"

"तुम झूठ बकते हो। झूठे कहीं के ! मेरा अपमान करते हो।"

"अच्छा, मैं झूठ बोलता हूँ। स्त्रियों को उनकी बातें याद दिलाने से क्रोध आ जाता है। मैं जानता हूँ कि तुम गोली चलाओगी। चलाओ, सुन्दरी, चलाओ।"

डोनिया ने निशाना ठीक किया, और उसके हिलने की प्रतीक्षा करने लगी। उसका मुख भयानक हो गया था। उसके नीचे का होठ क्रोध से काँप रहा था, और उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों से जैसे आग निकल रही थी। स्विड्रिगेलफ़ ने ऐसा सुन्दर रूप उसका पहले कभी न देखा था। वह एक पग आगे बढ़ा, और इधर दन से आवाज़ हुई। गोली उसके सिर को छूती हुई दीवाल में घुस गई। उसने हँसकर कहा—"केवल जैसे भिड़ ने डंक मारा। मेरे सिर पर निशाना लगाया था। यह क्या ख़ून है ?" उसने रूमाल निकालकर दाहनी कनपटी के ऊपर से ख़ून पोंछा। डोनिया ने पिस्तौल को नीचे किया, और फिर स्विड्रिगेलफ़ की ओर देखने लगी। उसकी समझ में न आता था कि उसने क्या किया। स्विड्रिगेलफ़ ने उदासीनता के भाव से कहा—"निशाना चूक गया। मैं खड़ा हूँ, फिर चलाओ। यदि तुमने देर की, तो मैं तुम्हें पकड़ लूँगा।"

काँपते हुए डोनिया ने पिस्तौल का घोड़ा फिर चढ़ाया, और बोली—"मुझको जाने दीजिए; नहीं तो मैं फिर गोली चलाऊँगी, और तुमको मार डालूँगी।"

स्विड्रिगेलफ़ ने उत्तर दिया—"अब तो मैं चार ही क़दम पर हूँ, अब चूकना असंभव है। परन्तु यदि मैं न मरा, तो फिर ?" वह दो पग और आगे बढ़ा। डोनिया ने गोली चला दी। निशाना फिर ख़ाली गया।

"तुम्हें निशाना लगाना नहीं आता। ख़ैर, फिर एक बार चलाकर देखो। मैं खड़ा हूँ।"

डोनिया के पास से दो क़दम पर खड़े होकर उसने प्रेम-भरी चितवन से उसको देखा। डोनिया समझ गई कि वह मरने को तैयार है; अपनी लालसा को नहीं छोड़ेगा। दो पग पर अवश्य मैं उसे मार डालूँगी। उसने पिस्तौल फेंक दी।

चकित होकर स्विड्रिगेलफ़ ने कहा—अब गोली न चलाओगी !" वह मृत्यु से नहीं डरता था। डोनिया के पास पहुँचकर उसने उसका

कमर में हाथ डाल दिया। डोनिया ने उसको नहीं रोका, परन्तु काँपते हुए उसकी ओर विनीत भाव से देखा। वह बोलना चाहता था, परन्तु उसके मुँह से आवाज़ न निकली।

डोनिया ने प्रार्थना की—"मुझको जाने दीजिए।"

भाव में परिवर्तन पाकर स्विड्रीगेलफ़ काँपने लगा। उसने कहा—"तुम मुझसे प्रेम नहीं करती हो?" डोनिया ने सिर हिलाया। निराश होकर उसने फिर कहा—"क्या कभी प्रेम न कर सकोगी?"

"कभी नहीं।"

एक क्षण तक स्विड्रीगेलफ़ के हृदय में घोर द्वन्द्व होता रहा। उसकी आँखें डोनिया की ओर थीं। तुरन्त ही उसने हाथ हटा लिया, और हटकर, खिड़की के पास खड़ा होकर, बाईं जेब से कुंजी निकाल-कर, मेज़ पर रखकर कहा—"लो यह कुंजी है, जाओ, चली जाओ।" और, स्वयं खिड़की के बाहर देखने लगा। "शीघ्र जाओ" स्विड्रीगेलफ़ ने फिर कहा, और बिना उसकी ओर देखे ही फिर चिल्लाया—"शीघ्र जाओ।"

डोनिया कुंजी उठाकर, दरवाज़ा खोलकर, झटपट निकल गई, और पुल की ओर चल पड़ी। स्विड्रीगेलफ़ तीन मिनट तक खिड़की के पास खड़ा रहा। फिर घूमकर, सिर पर हाथ रखकर, मुसकिराने लगा। हृदय-विदारक निराशा मानों चित्र बनकर खड़ी हो गई हो। हाथ में ख़ून लगा देखकर, कपड़ा भिगोकर, ज़ख़म को धोया। पिस्तौल, जिसे डोनिया ने फेंका था, पास पड़ा था। उसको वह उठाकर देखने लगा। पुराने ढंग की पिस्तौल थी, और उसमें दो गोलियाँ भरी हुई थीं। कुछ सोचकर उसने पिस्तौल जेब में रख ली, और टोपी उठाकर बाहर निकल पड़ा।

पाँचवाँ परिच्छेद

दस बजे रात तक स्विड्रीगेलफ़ न-मालूम किस-किस होटल और शराबख़ाने में गया। एक स्थान में केटिया से मिला, और उसे कुछ खिलाया-पिलाया। उसके साथ दो और बाबुओं को लेकर वह एक होटल में गया, और उन्हें चा पिलाई। दोनों बाबुओं के कुछ मित्र वहाँ मिल गए, जिनसे उनका वाग्युद्ध होने लगा। फिर मुष्टि-युद्ध भी हुआ। स्विड्रीगेलफ़ निर्णय करने के लिये पंच चुना गया। बात यह थी कि एक बाबू ने कोई वस्तु चुराकर बेची थी, जिसका हिस्सा दूसरों को नहीं दिया था। अन्त में पता लगा कि वह चोरी की वस्तु उसी चा वाले का एक चम्मच था। बात बढ़नेवाली थी, परन्तु स्विड्रीगेलफ़ ने दाम देकर मामला तय कर दिया, और वहाँ से उठकर चल दिया। दस बजने वाले थे।

उस दिन सन्ध्या को उसने तनिक-सी भी मदिरा नहीं पी, केवल चा पी ली। काले-काले बादल आकाश को घेर रहे थे। बड़े ज़ोर से आँधी और पानी आ गया। स्विड्रीगेलफ़ बिलकुल भीगा हुआ घर पर पहुँचा। कमरा बन्द करके अपनी मेज़ खोली, कुछ रुपए निकालकर दो या तीन कागज़ फाड़े। जेब में रुपए रखकर कपड़े बदलने चला। परन्तु वर्षा हो रही थी, इसलिये कपड़ा बदलना व्यर्थ समझकर बाहर निकल आया। कमरे का दरवाज़ा बन्द नहीं किया, और सीधा सुनिया के कमरे में आया। सुनिया अकेली न थी, कैयर नैसूमाफ़ के बच्चे उसे घेरे हुए थे। वह उनको चा पिला रही थी। सुनिया ने उसे आदर से बिठाया, और उसके भीगे हुए कपड़े देखकर चकित हो गई। अनजान आदमी को देखकर बच्चे डरकर भाग गए। स्विड्रीगेलफ़ मेज़ के पास बैठ गया,

और सुनिया को भी बैठने को कहा। सुनिया उसकी बातें सुनने के लिये उत्सुक हो गई।

"सुनिया, मैं अमेरिका जा रहा हूँ, और यह हमारी अन्तिम भेंट है। मैं कुछ बातें तय करने आया हूँ। तुम उस स्त्री के घर पर गई थीं? मुझको मालूम है कि उसने तुमसे क्या कहा। उसकी बातों को न दुहराओ। (सुनिया के मुख पर लालिमा आ गई।) तुम्हारी बहनों और भाई का प्रबंध मैंने कर दिया है; उनके लिये विश्वास-पात्र व्यक्ति के पास धन जमा कर दिया है। ये रसीदें हैं, इन्हें रख लो। ये तुम्हारे लिये तीन हज़ार रूबल के पाँच प्रति-सैकड़ा के बांड हैं। इसका हाल किसी से न कहना। तुमको धन की बड़ी आवश्यकता है। सुनिया, अब वेश्यावृत्ति छोड़ दो।"

सुनिया ने हकलाते हुए कहा—"आपने अनाथों पर दया की, मुझ पर और मेरी विमाता पर कृपा की; और यदि मैंने आपका धन्यवाद अभी तक नहीं किया, तो यह न समझिएगा कि⋯।"

"बस, रहने दो।"

"मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। परन्तु इस धन की मुझे आवश्यकता नहीं। मैं अकेली हूँ, अपना निर्वाह कर सकती हूँ। यदि मैं आपका धन नहीं लेती, तो मुझे कृतघ्न न समझिए। और, आप उदार-हृदय के आदमी हैं, तो इस धन को⋯।"

"सुनिया, इसे ले लो, कोई आपत्ति न करो। बातें करने का वक्त नहीं है। रोडियन को अब या तो आत्महत्या करनी होगी, या साइ-बेरिया में देश-निकाले का दण्ड भोगना होगा।" यह सुनकर सुनिया काँपने और चकित होकर प्रश्नकर्त्ता की ओर देखने लगी।

स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"घबराओ नहीं। मैंने सब कहानी सुन ली है। परन्तु मैं किसी से न कहूँगा। अपराध स्वीकार करने के विषय में तुम्हारा परामर्श ठीक है। यही उसके लिये अच्छा होगा। जब वह

साइबेरिया जायगा, तो तुम भी तो उसके संग वहाँ जाओगी। उस समय तुम्हें धन की आवश्यकता होगी। रोडियन के लिये यह धन तुमको देता हूँ। फिर तुमको एमेलिया का ऋण भी तो चुकाना है। तुमने दूसरे का भार अपने सिर पर क्यों लिया? केथराइन उसकी ऋणी थी, तुमसे उसका कुछ संबंध न था। अब यदि कल या परसों तुमसे कोई मेरे विषय में पूछे, तो मेरी भेंट का हाल न बताना, और न इस धन की ही बात किसी से कहना। बस, अब बिदा होता हूँ। रोडियन से नमस्ते कह देना, और ये रुपए राजू के पास जमा करा देना। वह भला आदमी है। जब छुट्टी हो, उसके पास रख देना। परन्तु उस समय तक ध्यान रखना कि चोरी न हो जाय।"

सुनिया उठी, और कुछ कहना चाहती थी, कुछ पूछना भी चाहती थी; परन्तु डरकर उसके मुँह से यही निकला—"तो क्या आप इस वर्षा में ही अमेरिका जायगे?"

"जब मनुष्य अमेरिका जाते हैं, तो वर्षा की चिन्ता नहीं करते। मेरी प्यारी सुनिया, नमस्ते। तुम चिरकाल सुखी रहो; क्योंकि तुम दूसरों का भला करती हो। राजू से नमस्ते कह देना—कह देना कि स्विड्रीगेलफ़ उसका एक शुभचिन्तक है। भूलना नहीं।"

स्विड्रीगेलफ़ चला गया। सुनिया भयभीत हो गई। वर्षा हो रही थी। साढ़े ग्यारह बजे रात को वह अपनी भावी पत्नी के मकान पर बिलकुल भीगा हुआ पहुँचा। बड़ी कठिनाई से दरवाज़ा खुला; क्योंकि यह कोई आने का समय न था। उन्होंने समझा कि शराब पिए होने के कारण आया है। मा ने आराम-कुरसी बैठने के लिये दी, और इधर-उधर की बात छेड़ दी। वह सीधी तरह उससे यह कभी न पूछती थी कि विवाह की सुविधा कब होगी। परन्तु इधर-उधर की बातें करके वह यह बात पूछा करती थी, और मौके पर चाल चल जाती थी। परन्तु आज स्विड्रीगेलफ़ बहुत अधीर था। उसने कहा—

"मैं शीघ्र अपनी भावी पत्नी से मिलना चाहता हूँ ।"

कन्या सो गई थी, परन्तु जगाई गई। स्विड्रीगेलफ ने कन्या से कहा—"बड़े आवश्यक कार्य से मैं सेंटपीटर्सबर्ग से जा रहा हूँ। पंद्रह हज़ार रूबल, जैसा मैंने विवाह के पहले भेंट करने के लिये सोचा था, लाया हूँ, और भेंट करता हूँ।" यद्यपि रात को पानी बरसते में आना आवश्यक नहीं समझा जा सकता था, फिर भी इन्होंने स्विड्रीगेलफ़ के व्यवहार पर कोई अचम्भा प्रकट नहीं किया, और सबने कृतज्ञता तथा धन्यवाद-प्रकाश किया। मा रोने लगी। स्विड्रीगेलफ़ ने भी भावी पत्नी के कपोल चूमे, और उससे कहा—"मैं शीघ्र आऊँगा।" बच्चों की तरह वह उसको देख रही थी। स्विड्रीगेलफ़ ने उसका फिर चुंबन किया, और यह सोचता हुआ कि मा यह धन अच्छी तरह से रक्खेगी, वह चला आया। बस्ती में वह आधी रात को फिर वापस आ गया। इस समय पानी रुक गया था, परन्तु हवा चल रही थी। आधा घण्टे तक वह सड़कों पर इधर-उधर घूमता रहा। उसको खयाल था कि दाहनी ओर एड्रियानोपुल-होटल है। वह उसी को ढूँढ़ रहा था। वह मिल गया। इतनी देर हो जाने पर भी वहाँ चिराग़ जल रहा था। वह भीतर घुसा, और एक गंदे-से नौकर से कहा कि मुझे एक कमरा चाहिए। स्विड्रीगेलफ़ को ध्यान-पूर्वक देखकर नौकर ने एक छोटा-सा कमरा दिखाया, और कहा—"यही एक कमरा यहाँ ख़ाली है।"

स्विड्रीगेलफ़ ने पूछा—"क्या चा मिल सकती है?"

"हाँ, अभी बनवाए देता हूँ।"

"चा के अतिरिक्त और क्या मिल सकता है?"

"कबाब, शराब।"

"अच्छा, कुछ चा और शराब ले आओ।"

नौकर ने डरते-डरते पूछा—"आपको कुछ और भी चाहिए?"

"नहीं, कुछ नहीं।"

नौकर निराश होकर चला गया।

"यह एक विचित्र होटल है। मुझको ये न-मालूम क्या समझते हैं? न-मालूम इस होटल में कैसे आदमी ठहरते हैं।" उसने मोमबत्ती जलाई, और कमरे को देखने लगा। बहुत छोटा कमरा था। छत इतनी नीची थी कि स्विड्रीगेलफ़ उसमें सीधा खड़ा नहीं हो सकता था। बिछौना बड़ा गंदा था, और दरी इतनी पुरानी थी कि उसका रंग बताना मुश्किल है। एक मेज़ और एक कुरसी पड़ी थी। मेज़ पर मोमबत्ती रखकर स्विड्रीगेलफ़ बिछौने के एक कोने पर बैठ गया। दूसरे कमरे से बातचीत की आवाज़ आने लगी। मोमबत्ती उठाकर वह दराज़ से देखने लगा। उसने देखा, उसमें दो आदमी हैं। एक के घूँघरवाले बाल हैं। इसने क्रोध से दूसरे से कहा—समाज में तुम्हारी दशा अच्छी न थी। मैंने तुम्हें कीचड़ से निकाला है, और फिर तुमको कीचड़ में डाल सकता हूँ। दूसरा मनुष्य छींकने की चेष्टा करता था, परन्तु उसे छींक नहीं आ रही थी। कभी-कभी वह ऊँघ जाता था, और ऐसा विदित होता था कि वह कुछ समझता नहीं है। मेज़ पर बहुत-से ग्लास, शराब की बोतल, चा और खीरे रक्खे थे। इस दृश्य को देखकर स्विड्रीगेलफ़ फिर अपने बिछौने पर बैठ गया।

चा का सामान लाकर नौकर ने फिर पूछा—"कोई अन्य विलास की वस्तु तो नहीं चाहिए?"

स्विड्रीगेलफ़ ने कहा—"नहीं।" नौकर चला गया। वह चा ग्लास में औटकर पीने लगा। उससे कुछ खाया न गया। ज्वर चढ़ रहा था; भूख मर गई थी। ओवरकोट उतारकर, कम्बल ओढ़कर वह लेट गया। दिल बेचैन था। इस समय यह बेचैनी नहीं होनी चाहिए, उसने सोचा। मोमबत्ती का प्रकाश धीमा हो रहा था। बाहर बड़े ज़ोर से हवा चल रही थी। किसी कोने में चूहे की खड़खड़ाहट सुनाई दी। कमरे में चूहों और चमड़े की दुर्गन्ध आ रही थी। बिछौने पर लेटकर

वह ध्यान में मग्न हो गया। इस खिड़की के नीचे बग़ीचा होगा। हवा से वृक्ष हिल रहे हैं। ऐसे मौसम में मुझे वृक्षों की खड़खड़ाहट नहीं अच्छी लगती। फिर उसे नीवा-नदी का ध्यान आया। कँपकँपी आ गई, और उसने कहा, जल मेरे लिये असहनीय है। वह हँस पड़ा। उसने सोचा, इस समय मुझको किसी विशेष बात से खुशी या शोक नहीं होना चाहिए। ठण्ढक और अँधेरे से मैं डर गया हूँ। इस समय तो शान्ति प्राप्त करनी चाहिए। उसने मोमबत्ती बुझा दी, और सोचने लगा—मारफ़ा आओ, अँधेरे में तुम्हारे आने का समय है। तुम क्यों नहीं आतीं?

उसे नींद नहीं आई। डोनिया का चित्र उसकी आँखों के सामने फिरता रहा, और उस भेंट की सारी बातें उसे याद आईं, जो अभी उसने डोनिया से की थीं। खेल समाप्त हो गया। मैंने कभी किसी से घृणा नहीं की, न मैंने कभी किसी से झगड़ा किया। परन्तु आज डोनिया ने तो मेरा अन्त ही कर दिया था। अब उसके सामने डोनिया का वह चित्र आया, जब उसने पिस्तौल फेक दी थी, और उसकी ओर भयभीत दृष्टि से देख रही थी। उस समय मेरे हृदय में उसके लिये दया उत्पन्न हुई, और मेरा दिल भर आया। अब उसे नींद आने ही लगी थी कि शीघ्र ही उसे हाथ और टाँग के पास कुछ दौड़ता हुआ मालूम हुआ। यह क्या चूहा है? मेज़ पर कुछ मांस रक्खा है, उसी के लिये आया होगा। ठण्ढ के मारे वह नहीं उठा। परन्तु पैर के पास फिर कुछ सनसनाहट मालूम हुई। कम्बल फेककर उसने मोमबत्ती जलाई, बिछौने की चादर झाड़ी। एक चूहा निकल पड़ा, जिसको उसने पकड़ने का बड़ा यत्न किया। परन्तु वह उसकी उँगलियों से फिसलकर तकिए के नीचे छिप गया। स्विड्रीगेलफ़ ने तकिया फेक दिया। अब उसे मालूम हुआ कि उसकी कमीज़ के नीचे कोई रेंग रहा है। काँपते-काँपते वह जग गया। कमरे में अँधेरा था, और वह कम्बलों में लिपटा हुआ बिछौने पर लेटा हुआ था।

हवा सनसन चल रही थी। वह उठकर बिछौने पर बैठ गया, और सोचा, मैं जागता रहूँ, तो अच्छा है। जाली से हवा आने के कारण उसे सरदी लग रही थी। उसने बिछौने की चीजें भी लपेट लीं, और फिर ऊँघने लगा। तरह-तरह के ख़याल उसके मन में उठने लगे। अब वह फूलों के विषय में सोचने लगा। मैं बहुत ही अच्छी ऋतु में एक स्थान पर फूलों के बीच में खड़ा हूँ। एक बहुत ही सुन्दर गृह मेरे सामने है। शहद की मक्खी दरवाजे पर भिनभिना रही है, गुलदस्ते रक्खे हैं। खिड़कियों में पानी-भरे तसले रक्खे हैं, जिनमें सफेद फूल लगे हुए हैं, जिनकी सुगन्ध मन को मोह रही है। वह अब ज़ीने पर चढ़ा, और कमरे में घुसा। चारों ओर फूल-ही-फूल दिखाई पड़ने लगे। ठण्ढी हवा चल रही थी। पक्षी चहचहा रहे थे। कमरे के बीच में, रेशमी कपड़े से ढकी हुई एक लाश रक्खी थी, जिस पर फूलों की मालाएँ पड़ी थीं। फूलों के बीच में ढकी हुई एक बहुत ही सुंदर युवती थी। उसके हाथ छाती पर थे। ऐसा विदित होता था कि कोई संगमरमर की मूर्ति है, जिसके बाल बिखरे हुए थे, और मुख पर गुलाब के फूल थे। मुख से विदित होता था कि संगमरमर से काटकर वह बनाया गया है; परन्तु होठों पर हँसी हृदय-विदारक दुःख उत्पन्न करती थी। स्विड्रीगेलफ़ इस युवती को जानता था। उसके समीप न तो ईसा का चित्र था, न मोमबत्ती जल रही थी, न कोई प्रार्थना हो कर रहा था। पानी में डूबकर इसने आत्महत्या की थी। चौदह वर्ष की अवस्था में उसका हृदय किसी बदमाश ने तोड़ डाला था, जिससे लज्जा के कारण उसने अपनी जान दे दी। स्विड्रीगेलफ़ जग पड़ा, खिड़की खोलकर ठण्ढी हवा खाने लगा, और सोचने लगा कि अवश्य नीचे कोई बग़ीचा है, जहाँ लोग दिन में गाना गाते होंगे। फिर अँधेरा हो गया, और स्विड्रीगेलफ़ के मन में विचित्र विचार आने लगे। वह फिर ऊँघने लगा, और यह स्वप्न देखने लगा कि दो तोपों की आवाज़ सुनाई दी। उसने सोचा कि नीवा में बाढ़ आ

रही है। प्रातःकाल तक नगर का निचला हिस्सा डूब जायगा। चूहे अपने बिलों में मर जायँगे, और नीचे रहनेवाले अपना असबाब लेकर ऊपर के कमरों में आ जायँगे। इस समय उसने सोचा, कितना बजा होगा कि घण्टे की आवाज़ सुनाई दी। तीन बज रहे थे। अब ठहरने की कोई आवश्यकता नहीं; चलो, चलें। सुबह होनेवाली है। उसने खिड़की बंद की, मोमबत्ती बुझाई, और कपड़े पहनकर होटल से बाहर जाने लगा। इससे अच्छा समय अब नहीं हो सकता। इधर-उधर नौकर को ढूँढ़कर वह चिल्लाने को था कि उसने एक कोने में एक विचित्र वस्तु देखी। झुककर देखने पर मालूम हुआ कि एक पाँच वर्ष की कन्या रो रही है। स्विड्रीगेलफ़ से वह डरी नहीं, और उसकी ओर देखने लगी। वह कभी-कभी सिसकियाँ भरती थी। उसका मुख पीला पड़ गया था, और शरीर ठण्ढा हो रहा था। तुम यहाँ क्यों आई हो? क्या रात-भर यहाँ बिना सोए छिपी रहीं?"

कन्या ने "मा, मा और टूटे हुए कटोरे" के अतिरिक्त और कुछ न कहा। स्विड्रीगेलफ़ ने समझा, यह किसी नौकरानी की लड़की है, जिससे कटोरा टूट गया है, और दण्ड के भय से यहाँ छिपी हुई है, तथा यहीं रोते और काँपते हुए रात बिताई है। स्विड्रीगेलफ़ ने उसे गोद में उठा लिया, और कमरे में लाकर, उसे बिछौने पर लिटाकर, उसके वस्त्र उतारने लगा; क्योंकि वे सब भीगे हुए थे। इतना करके स्विड्रीगेलफ़ फिर बाहर जाने के लिये सोचने लगा। कैसी भोली छोटी कन्या है! वह उसकी ओर फिर मुड़ा। वह सो रही थी। उसका शरीर गर्म हो गया था, मुख लाल हो गया था। स्विड्रीगेलफ़ ने सोचा, इसको ज्वर चढ़ा है, या इसने मदिरा पी है। इसके होठ कैसे जल रहे हैं! उसी समय उसने देखा कि वह कभी तो आँख बंद करती और कभी खोलती है। उसको यह ख़याल न आया कि यह जग रही या सो रही

है, या कुछ कर रही है। उसके होठों पर हँसी आ रही थी, जिसको वह रोकना चाहती थी। अब लज्जा छोड़कर वह खिलखिलाकर हँसने लगी। उसे विदित हुआ कि वह बच्चा नहीं, एक फ्रेंच-वेश्या है। आँखें खोलकर स्विड्रीगेलफ़ की ओर प्रेम और लालसा की दृष्टि से वह देखने लगी। उसकी आँखें कुछ कह रही थीं। स्विड्रीगेलफ़ को इस भोले बच्चे के मुख पर लालसा के भाव देखकर क्रोध आ गया। उसने सोचा, इस अवस्था में क्या ऐसी बातें हो सकती हैं? "पापिष्ठा" कहकर उसने मारने को हाथ उठाया, और उसी क्षण जाग गया।

वह बिछौने पर पड़ा था, कम्बल ओढ़े था। मोमबत्ती बुझी हुई थी। सूर्य का प्रकाश होनेवाला था। सारी रात मैं स्वप्न देखता रहा। वह सीधा बैठ गया, और चारों ओर देखने लगा। कुहरा गिर रहा था, और कुछ दिखाई न पड़ता था। पाँच बज गए थे। उसने सोचा, मैं बहुत देर तक सोता रहा। उसने अपने गीले कपड़े पहने, जेब से रिवाल्वर निकालकर देखा, वह भरा हुआ था। बैठकर उसने नोट-बुक के पहले पृष्ठ पर कुछ लिखा। फिर पढ़कर, मेज़ पर कोहनियों के सहारे सिर रखकर, कुछ सोचने लगा। मांस पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, वह उनको देखता रहा। फिर उन्हें भगाकर, होश में आकर, कमरे से बाहर आया। वह सड़क पर पहुँच गया। कुहरा गिर रहा था। स्विड्रीगेलफ़ नीवा की ओर चला। लकड़ी के फिसलनेवाले रास्ते पर चलते हुए उसको विचित्र दृश्य दिखाई दे रहे थे। न कोई आदमी सड़क पर चल रहा था, और न कोई गाड़ी दिखाई देती थी। छोटे-छोटे गंदे मकान बन्द थे। स्विड्रीगेलफ़ को सरदी लग रही थी; पर वह राह में साइनबोर्ड पढ़ता चला जा रहा था। लकड़ी के रास्ते तय करके, एक बहुत बड़े पत्थर के प्रासाद को पार करके, उसने देखा कि एक कुत्ता टाँगों के बीच में दुम दबाए चला जा रहा है; एक शराबी मोरी में पड़ा

हुआ है। कुछ देर शराबी को देखकर वह फिर आगे बढ़ा। सामने एक पुलीस की चौकी थी। उसने सोचा, बस, यही स्थान उत्तम है; आगे जाने की क्या आवश्यकता है। यहाँ गवाह भी उपस्थित है। एक आदमी फ़ौजी लबादा पहने दरवाजे पर खड़ा था। स्विड्रीगेलफ़ को पास आते देखकर वह इसकी ओर घूरने लगा। दोनों एक दूसरे की ओर कुछ देर तक देखते रहे। फिर सन्तरी को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह कुछ कहे बिना मेरे पास क्यों चला आ रहा है।

खड़े-खड़े सन्तरी ने पूछा—"तुम्हारा क्या मतलब है?"

स्विड्रीगेलफ़ ने उत्तर दिया—"मेरे मित्र, कुछ नहीं। नमस्ते।"

"तो फिर आगे बढ़ो।"

"मैं बाहर जा रहा हूँ।"

"बाहर? कहाँ?"

"अमेरिका।"

"अमेरिका? अच्छा।"

स्विड्रीगेलफ़ ने जेब से पिस्तौल निकाली, और घोड़ा चढ़ाया। सन्तरी ने कहा—"नहीं-नहीं, यहाँ ऐसा काम न करना।"

"क्यों?"

"यह स्थान ठीक नहीं है।"

"इसकी चिन्ता न करो। स्थान अच्छा है। यदि तुमसे कोई पूछे, तो कह देना कि मैं अमेरिका गया हूँ।" कनपटी के पास उसने तमंचा लगा लिया।

सन्तरी ने आँखें खोलकर कहा—"नहीं-नहीं, यहाँ ऐसा न करो।"

स्विड्रीगेलफ़ ने घोड़ा दबा ही दिया।

छठा परिच्छेद

उसी दिन छः और सात बजे के बीच में रोडियन अपनी मा और बहन से मिलने गया। इस समय वे बैकेलेफ़-प्रासाद के नीचे के कमरों में रहती थीं। दरवाजे पर पहुँचकर रोडियन फिर सोचने लगा, कोई बात अब मुझको नहीं रोक सकती। उसने उनसे भेंट करने का निश्चय किया। उसने सोचा, अभी तक उनको कुछ हाल नहीं मालूम है, और वे मुझे पागल समझती हैं। उसके कपड़े फटे और कीचड़ में भरे थे। शारीरिक कष्ट के अतिरिक्त मानसिक वेदना भी उसको सता रही थी, और इस समय उसका चेहरा पहचाना भी नहीं जाता था। ईश्वर जाने, उसने रात कहाँ बिताई थी। एक बात का निर्णय हो चुका था कि उसका संकल्प दृढ़ है। उसने दरवाज़ा खटखटाया। मा ने खोल दिया। घर में डोनिया और नौकरानी न थे। मा खुशी के मारे कुछ बोल न सकी; हाथ पकड़कर उसे कमरे में घसीट ले गई।

भाव-भरी वाणी में उसने कहा—"अन्त को तुम आ गए। रोडियन, तुम दुःखी न हो। खुशी के आँसू मेरे आ रहे हैं। तुम समझते हो कि मैं दुःखी हूँ। नहीं-नहीं, मैं खुश हूँ। इसी प्रकार मुझे खुशी में आँसू आते हैं। प्यारे, बैठो। तुम थके हुए हो; तुम इतने गन्दे कपड़े क्यों पहने हो?"

"मा, कल मैं वर्षा में भीग गया था।"

मा ने उत्तर दिया—"मैं तुमसे कुछ जिरह नहीं करना चाहती। मैं सब समझती हूँ। सेंटपीटर्सबर्ग के ढंग मुझको मालूम हो गए हैं, और मैं समझती हूँ कि यहाँ के निवासी हमारे गाँववालों से अधिक चतुर हैं। मैंने कई बार सोचा कि तुम्हारे मामलों में टाँग अड़ाने का मुझे कोई

अधिकार नहीं है। जब तुम्हारा हृदय न-मालूम किन बातों से दुःखी है, तो मैं व्यर्थ के प्रश्न करके तुम्हारे दुःखों को बढ़ाना नहीं चाहती। रोडियन, राजू ने तुम्हारा लेख, जो एक पत्र में छपा था, मुझे दिया है। और, मैं उसको तीसरी बार पढ़ रही हूँ। उससे बहुत कुछ मेरी समझ में आ गया है। मैं जानती हूँ, तुम इन्हीं विचारों में हर वक्त मग्न रहते हो, और इन विचारों को कभी छोड़ना नहीं चाहते। बहुत परिश्रम करने पर भी मैं तुम्हारे लेख की बहुत-सी बातें नहीं समझ सकी। परन्तु मैं कुछ पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, इसलिये कोई आश्चर्य नहीं, यदि मैं उसकी बातें न समझूँ।"

"ज़रा मैं भी अपना लेख देखना चाहता हूँ।" यह कहकर रोडियन ने पत्रिका ले ली, और लेख देखने लगा। लेखक को अपना लेख छपा हुआ देखकर पहलेपहल बड़ी प्रसन्नता होती है। रोडियन को भी, यद्यपि इस समय वह बहुत दुःखी था, अपना लेख छपा देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। लेकिन कुछ पंक्तियाँ पढ़कर उसको बड़ा दुःख हुआ। इस लेख के पढ़ने से उसके हृदय में वह वेदना होने लगी, जो कई महीनों से उसको सता रही थी। और, खिन्न होकर उसने पत्रिका को मेज़ पर फेंक दिया।

"रोडियन, यद्यपि मैं मूर्ख हूँ, फिर भी मुझको पूर्ण विश्वास है कि तुम थोड़े ही समय में, वैज्ञानिक संसार में, प्रथम नहीं, तो बहुत अच्छा स्थान प्राप्त करोगे। लोग तुमको पागल समझते हैं। हा-हा-हा··· ! कदाचित् तुमने लोगों की यह सम्मति नहीं सुनी है कि मूर्ख लोग बुद्धि का अनुमान किस प्रकार कर सकते हैं? डोनिया, डोनिया तक को सन्देह होने लगा था। कैसे आश्चर्य की बात है! कुछ दिन हुए, तुम्हारी रहन-सहन और गन्दे वस्त्रों पर मुझे भी दुःख होता था। परन्तु अब मैं सब समझ गई हूँ। मैं जानती हूँ कि यदि तुम चाहो, तो शीघ्र ही अपनी बुद्धि से बहुत कुछ धन उपार्जन कर सकते हो। परन्तु तुमको इस बात की इच्छा नहीं; क्योंकि तुम अधिक आवश्यक काम में लगे हुए हो।"

"मा, डोनिया कहाँ है?"

"कहाँ गई हुई, है मुझको अकेली छोड़ जाती है। राजू कृपा करके आता है, और तुम्हारे विषय में बातचीत किया करता है। वह तुम्हारा बड़ा आदर करता है। तुम्हारी बहन मेरी देखभाल अच्छी तरह नहीं करती। उसका स्वभाव भी विचित्र है। अपना हाल नहीं बताती। मैं भी अपने बच्चों का भेद नहीं जानना चाहती। मैं जानती हूँ कि डोनिया बहुत चतुर है, और हम दोनों से प्रेम करती है। मुझे शोक है कि इस समय वह घर में नहीं है। जब आवेगी, मैं उससे कहूँगी कि तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारा भाई आया था। तुम कहाँ थीं? रोडियन, जब तुम्हारा जी चाहे, आ जाया करो। मैं जानती हूँ कि तुम मुझसे प्रेम करते हो। इसलिये मैं सदा तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी। मैं तुम्हारे लेख पढ़ती रहूँगी, और लोगों से तुम्हारे विषय में सुनती रहूँगी। कभी-कभी आ जाया करना। और मुझे कुछ नहीं चाहिए। तुम आज अपनी बूढ़ी मा को शान्ति देने आए हो। सुखी रहो।" यह कहकर वह फिर रोने लगी। "इसकी चिन्ता न करो, मैं मूर्ख हूँ। कुछ काफ़ी पिओगे? कुछ देर ठहरो।"

"नहीं मा, अब मैं चला। मैं यहाँ काफ़ी पीने नहीं आया था। प्यारी मा, मुझसे एक बार कह दो कि जो कुछ भी हो, जो कुछ भी तुम मेरे विषय में सुनो, तुम मुझसे सदा ऐसा ही प्रेम करती रहोगी या नहीं?" ये शब्द उसके मुख से बिना सोचे-समझे निकल गए।

"रोडियन, रोडियन, तुम्हें क्या हो गया है? यह कैसा प्रश्न है? तुम्हारे विरुद्ध बात कहने का कौन साहस कर सकता है? यदि कोई कुछ कहने का साहस करेगा, तो मैं न सुनूँगी, अपने सामने से उसको हटा दूँगी।"

रोडियन ने कहा—"अच्छा हुआ, इस समय डोनिया भी नहीं है। मैं केवल यह विश्वास दिलाने आया था कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; और यदि तुम किसी समय संकट में हो, तो स्मरण करना कि तुम्हारा

पुत्र अपने जीवन से भी अधिक तुम्हें चाहता है। तुमने मेरे प्रेम के विषय में सन्देह करने में भूल की है। मैं सदा तुमसे प्रेम करता रहूँगा। और, यही बात कहने मैं आया था।"

मा ने पुत्र को छाती से लगाया, और रोने लगी। फिर बोली—"रोडियन, तुम्हें क्या हो गया है? अभी तक मैं समझती थी कि हमारी संगति से तुमको दुःख होता है। परन्तु अब मुझको भय है कि कोई बड़ी भारी आपत्ति तुम्हारे ऊपर आनेवाली है, और तुम उससे डरते हो। मैं कुछ दिनों से ऐसा संदेह करती हूँ। क्षमा करो, मैंने इसी समय इस विषय पर बातचीत की है। परन्तु मैं इसी विषय पर सदा सोचती रहती हूँ, और इसी कारण मुझे नींद नहीं आती। कल रात को तुम्हारी बहन सरसाम की दशा में बक रही थी, और तुम्हारा नाम कई बार लिया। मैं कुछ न समझी। इधर-उधर कुछ शब्द सुन लिए। आज प्रातःकाल से मेरी दशा उस अपराधी की तरह हो रही है, जो फाँसी पर लटकने की प्रतीक्षा करता हो। मुझको कुछ भय था। रोडियन, तुम कहाँ जा रहे हो? कहीं जा अवश्य रहे हो।"

"हाँ, जा रहा हूँ।"

"मैं समझती थी। परन्तु मुझे साथ लेते चलो, और डोनिया को भी साथ ले लो। वह तुमको प्यार करती है। सुनिया को भी लेते चलो। मैं उसे लड़की की तरह रक्खूँगी। राजू हमारे जाने की तैयारी कर देगा। बताओ तो, कहाँ जा रहे हो?"

"नमस्ते, मा।"

"क्या आज ही जा रहे हो?"

"हाँ, अब नहीं ठहर सकता। क्षमा करो।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?"

"नहीं, मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना करो। कदाचित् प्रार्थना स्वीकार हो।"

"मैं तुमको आशीर्वाद देती हूँ।"

रोडियन को इस बात की खुशी थी कि डोनिया इस समय उपस्थित नहीं है। उसकी उपस्थिति में वह ये बातें न कर सकता। मा के चरणों में गिरकर उसने उसके चरण चूमे। मा ने रोते-रोते उसको छाती से लगा लिया। वह समझ गई, इस समय रोडियन बहुत दुःख में है। उसने कहा—"रोडियन, मेरे प्यारे पहलौठी के पुत्र, तुम इस समय वैसे ही प्रतीत होते हो, जैसे बचपन में आकर मुझसे प्यार करते थे, जब तुम्हारा पिता जीवित था। तुमको देखकर हम अपने दुःख भूल जाते थे। उसके मरने के उपरान्त कितनी बार एक दूसरे से प्यार करके हम उसकी क़ब्र पर रोए हैं। सेंटपीटर्सबर्ग पहुँचते ही मुझको विदित हो गया कि तुम बड़े दुःखी हो, और आज दरवाज़ा खोलते हुए, तुम्हारा मुख देखकर, मैं समझ गई कि अन्त समय आ गया। रोडियन क्या तुम अभी जा रहे हो?"

"नहीं।"

"तो फिर आओगे न?"

"हाँ, अवश्य।"

"रोडियन, दुःखी न हो। मैं पूछना नहीं चाहती; परन्तु एक बात बता दो। क्या तुम बहुत दूर जा रहे हो?"

"हाँ, बहुत दूर!"

"क्या वहाँ कोई नौकरी मिली है?"

"यह ईश्वर जाने; मेरे लिये प्रार्थना करना।"

रोडियन जाना चाहता था, परन्तु उसकी मा उसको छाती से लगाए ही रही। मा के मुख पर निराशा के भाव देखकर वह घबरा गया, और बोला—"बस, मा, जाने दो।"

"परन्तु क्या तुम सदैव के लिये विदा हो रहे हो? एक बार फिर आओगे कि नहीं?"

"आऊँगा, अवश्य आऊँगा।" यह कहकर रोडियन चला गया।

इस समय गरमी थी। रोडियन शीघ्र घर पहुँच गया। उसकी इच्छा थी कि रात ही को सब काम समाप्त हो जाय। किसी से मिलने की उसकी इच्छा नहीं होती थी। ज़ीने पर चढ़ते हुए उसने देखा कि नेस्टेसिया काम करते-करते रुक गई, और उसको ध्यानपूर्वक देखने लगी। उसने सोचा, क्या कोई मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। कहीं घृणित पारफ़ोरियस तो नहीं है? परन्तु जब उसने दरवाज़ा खोला, तो सामने डोनिया को पाया। कन्या ध्यान में मग्न, कोच पर बैठी, भाई की प्रतीक्षा कर रही थी। घुसने के पहले वह ठहर गया। वह भी घबरा गई, और ध्यान-पूर्वक भाई को देखने लगी। उसके मुख पर निराशा छाई हुई थी। रोडियन, समझ गया कि उसका हाल बहन को मालूम हो गया।

उसने डरते-डरते पूछा—"अन्दर आऊँ या चला जाऊँ?"

"मैं सुनिया के घर पर दिन-भर तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही।"

रोडियन कमरे में घुसा, और कुरसी पर लेट गया। "डोनिया, मैं थक गया हूँ। इस समय मुझे विशेष शक्ति की आवश्यकता है, परन्तु मुझमें दम नहीं है।"

"कल रात-भर कहाँ रहे?"

"प्यारी बहन, मुझे नहीं मालूम; मैं कल कुछ संकल्प करना चाहता था, और कई बार नौका पर गया। मेरी इच्छा थी कि डूब मरूँ। परन्तु हृदय ने ऐसा नहीं करने दिया।" ये बातें करते हुए वह बहन के मुख की ओर देखता रहा।

"ईश्वर को धन्यवाद है! मुझको और सुनिया को भी यही भय था। जीवन तुमको अभी भी प्यारा है!"

रोडियन हँसकर बोला—"मैं अभी मा के पास से आ रहा हूँ। यद्यपि मेरा ईश्वर में विश्वास नहीं है, फिर भी उससे

प्रार्थना करने के लिये वह आया हूँ। मैं अपने दिल का हालत स्वयं अच्छी तरह नहीं समझ सकता।"

डोनिया ने घबराकर पूछा—"तुम मा से मिल आए, और उससे बातचीत कर आए? कहीं तुमने वह बात तो उससे नहीं कही।"

"नहीं; परन्तु उसको कुछ सन्देह है। सरसाम की दशा में जो तुमने बकझक की, वह सब उसने सुना है। मेरा विश्वास है, वह कुछ-कुछ हाल जानती है। मुझे उससे मिलना न चाहिए था। परन्तु मालूम नहीं, मैं क्यों वहाँ गया। डोनिया, मैं बड़ा ही दुःखी जीव हूँ।"

"प्रायश्चित करना चाहते हो कि नहीं?"

"बिना विलम्ब किए प्रायश्चित करूँगा। निरादर से बचने के लिये मैं डूबना चाहता था; परन्तु उस समय विचार आया कि साहसी मनुष्यों को इस प्रकार नहीं डरना चाहिए। डोनिया, यह अभिमान है कि नहीं?"

"हाँ रोडियन, यही अभिमान है।"

रोडियन की आँखें चमकने लगीं, और उसे इस बात की प्रसन्नता हुई कि अभी तक अभिमान मेरा साथ दिए हुए है। "डोनिया, तुम यह तो नहीं समझती हो कि मैंने पानी के भय से आत्महत्या नहीं की।"

डोनिया ने दुःखी होकर कहा—"बस, रोडियन, बस; आगे कुछ न कहो।"

दोनों कुछ देर चुप रहे। रोडियन सिर झुकाए रहा। डोनिया उसे देखती रही। तुरन्त ही वह उठा, और बोला—"समय नष्ट हो रहा है, मुझे जाना चाहिए। आज ही अपने को पुलीस के हवाले कर दूँगा।" फिर डोनिया की आँखों में आँसू देखकर वह बोला—"डोनिया, क्यों रोती हो? क्या मुझसे हाथ मिलाओगी?"

"इसमें भी कोई संदेह है?" और, रोडियन का हाथ पकड़कर, अपनी छाती

से लगाकर, उसने कहा कि अपने अपराध का प्रायश्चित करने के विचार से ही तुमने आधा अपराध धो डाला। यह कहकर उसने अपने भाई को प्यार किया।

रोडियन ने क्रोधित होकर कहा—"अपराध? कौन अपराध? क्या एक हानिकारक बुढ़िया साहूकारिन की हत्या—जिसका जीवन एक कीड़े से अच्छा नहीं, जो दरिद्रों का .खून चूसकर पीती थी—मारना अपराध है? मैं तो यह समझता हूँ कि ऐसे व्यक्तियों को मारने से बहुत-से अपराध धुल जाते हैं। मुझको प्रायश्चित का कभी विचार नहीं आता; क्योंकि मैं—चाहे सारा संसार कुछ भी कहे—अपने कर्म को अपराध नहीं समझता। केवल निर्बलता के कारण या आत्मरक्षा के लिये मैं अपना अपराध स्वीकार करने जा रहा हूँ।"

"भाई! भाई! यह क्या कहते हो? क्या तुमने .खून नहीं किया? क्या .खून करना अपराध नहीं है?"

"अच्छा, मैंने किया; किन्तु क्या मेरे पहले और मनुष्यों ने ऐसा नहीं किया? क्या .खून की नदियाँ लोगों ने नहीं बहाईं? क्या इन लोगों ने, जिन्होंने पानी की तरह .खून बहाया है, आदर नहीं प्राप्त किया? क्या वे राजा नहीं बने, और जनता के उद्धार करनेवाले नहीं कहाए? बात करने के पहले सोच लिया करो। मैं भी मनुष्य-मात्र का उपकार करना चाहता था, सैकड़ों-हज़ारों अच्छे काम करके इस पागलपन को धो देता। मैं जीवन-यात्रा आरंभ करने के लिये धन चाहता था, जिससे सफलता प्राप्त हो। मैं सफल नहीं हुआ, इसलिये मैं दुष्ट हूँ। यदि सफलता प्राप्त करता, तो आज मेरी जयजयकार होती। परन्तु अब तो कुत्तों ही के नोचने के लिये मैं हूँ।"

"प्यारे भाई, यह प्रश्न इस समय का नहीं है!"

"मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने क़ानून के विरुद्ध काम किया है। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि एक घिरे हुए नगर पर बम

फेंकना क्यों अपराध नहीं है, और कुल्हाड़ी से मार डालना क्यों अपराध है ? क़ानून का भय केवल निर्बलता का लक्षण है। मैं इसको भली भाँति समझता हूँ, और इसीलिये अपने कर्म को पाप नहीं समझता।"

उसके पीले मुख पर लालिमा आ गई, और अन्तिम शब्द कहते हुए डोनिया से चार आँखें हुईं। डोनिया ने ऐसी दृष्टि से उसकी ओर देखा कि उसके भाव बदल गए, और उसने यह स्वीकार किया कि मैंने दो निरपराध स्त्रियों की जान ली है।

"प्यारी डोनिया, यदि तुम मुझे अपराधी समझती हो, तो क्षमा करो, यद्यपि क्षमा ऐसी दशा में करना कठिन है। अच्छा, नमस्ते। जाने का समय आ गया। कृपया मेरा पीछा न करना। मुझे एक स्थान में और जाना है। जाओ, मा के पास जाओ, उसको सांत्वना दो। बस, यही तुमसे अन्तिम प्रार्थना है। उसे मत छोड़ना। मुझे भय है कि या तो वह मर जायगी, या पागल हो जायगी। उसकी देखभाल करो। राजू तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हें नहीं छोड़ेगा। मेरे लिये शोक न करना। यद्यपि मैं खूनी हूँ, फिर भी जीवन के अन्त तक मैं अच्छे काम करने का प्रयत्न करूँगा। किसी दिन तुम मेरे विषय में सुनोगी, और फिर मेरे नाम से तुम लज्जित न होगी। विश्वास रक्खो कि अब भी···अच्छा, नमस्ते। इस प्रकार क्यों रोती हो ? सदा के लिये बिदाई नहीं है। हाँ, मैं भूल गया था।" यह कहकर उसने मेज़ पर से एक धूल से भरी हुई किताब उठाई, और खोलकर उससे एक चित्र निकाला। यह उसके मकान की मालकिन का चित्र था, जिससे वह प्रेम करता था। उसने उस चित्र को चूमकर डोनिया को दे दिया, और कहा—"मैंने केवल इसी कन्या से अपने इरादे का हाल बताया था, जिसका आज यह दुःखदाई परिणाम है। घबराओ नहीं। उस कन्या को भी ऐसा ही भय हुआ था, जैसा तुमको इस समय हुआ है। मुझको इस बात की ख़ुशी है कि वह मर गई। बात इस समय सोचने की यह है कि मैंने जो स्वीकार करने के विषय में सोच लिया है, वह ठीक है या नहीं

और, मैं उसका परिणाम सहने के लिये तैयार हूँ कि नहीं ? बीस वर्ष जेल में रहने के बाद मैं क्या संसार का उपकार कर सकूँगा ? मैं नीवा में जो डूबना चाहता था, वह कायरता थी ?"

दोनों घर से चल पड़े, और सड़क पर अलग-अलग हो गए। कुछ दूर जाकर डोनिया ने, अन्तिम बार देखने की इच्छा से, मुड़कर उसकी ओर देखा। रोडियन ने भी सड़क के कोने पर पहुँचकर ऐसा ही किया। दोनों की आँखें चार हुईं। परन्तु अपनी बहन को अपनी ओर ताकते हुए देखकर उसने अधीरता से उसकी ओर जाने का संकेत किया, और फिर आँखों से ओझल हो गया।

सातवाँ परिच्छेद

उस समय अँधेरा हो रहा था, जब रोडियन सुनिया के घर पर पहुँचा। दिन-भर सुनिया उसकी प्रतीक्षा करती रही थी। डोनिया भी उसके घर पर आई थी; क्योंकि स्विड्रीगेलफ़ से सब हाल सुनकर वह सुनिया से सच्चा हाल जानना चाहती थी। हम यहाँ पर इन दोनों कन्याओं की बातचीत न लिखेंगे। केवल इतना लिखना उचित समझते हैं कि वे दोनों मिलकर खूब रोईं, और दोनों में परस्पर गहरी मित्रता हो गई। डोनिया को यह जानकर शान्ति हुई कि उसका भाई अकेला न रहेगा। सुनिया से पहलेपहल उसने अपराध स्वीकार किया था, उसने सुनिया को अपनी गुप्त बात बतलाई थी। इसलिये वह कहीं भी जाय, सुनिया उसका साथ देगी। इस विषय में कुछ और बातचीत न करके भी डोनिया को यह विश्वास हो गया कि सुनिया एक सच्ची लड़की है, और उसने उसकी ओर ऐसी आदर की दृष्टि से देखा कि सुनिया घबरा गई; क्योंकि वह डोनिया से मिलने के योग्य अपने को न समझती थी। पिछली बार जब सुनिया ने इस सुन्दर युवती को रोडियन के घर पर देखा था, और इस सुन्दर युवती ने उसको प्रणाम किया था, तब सुनिया ने अपना अहोभाग्य समझा था।

डोनिया ने यह सोचकर कि कभी-न-कभी तो वह अपने घर की ओर आवेगा ही, रोडियन के घर की ओर प्रस्थान किया था। जब सुनिया अकेली रह गई, तो उसको रोडियन की आत्महत्या के ध्यान ने बेचैन कर दिया। डोनिया को भी यही भय था। परन्तु कुछ देर वार्तालाप करके दोनों को कुछ शान्ति प्राप्त हो गई थी। एक दूसरे से अलग होकर उनको चिन्ता ने फिर घेर लिया था। सुनिया को स्विड्रीगेलफ़ की यह बात

याद थी कि रोडियन या तो साइबेरिया जायगा, और या...। वह जानती थी कि रोडियन को ईश्वर में विश्वास नहीं है, तो क्या केवल मृत्यु के भय से वह आत्महत्या न करेगा? वह इसी सोच में डूबी हुई थी कि रोडियन कमरे में घुसा। उसे देखकर सुनिया को प्रसन्नता हुई; परन्तु फिर वह पीली पड़ गई।

रोडियन ने हँसकर कहा—"मैं क्रॉस पहनने आया हूँ। तुमने मुझसे कहा था कि मैं अपराध स्वीकार कर लूँ। मैं अब अपराध स्वीकार करने जा रहा हूँ। घबराओ नहीं।" रोडियन की वाणी से सुनिया चकित हो गई, और यह समझी कि यह सच नहीं बोल रहा है; क्योंकि बातें करते हुए वह दूसरी ओर देख रहा था, सुनिया से आँखें मिलाने का साहस उसमें न था।

"सुनिया, मैं समझता हूँ, मेरे लिये यही अच्छा है। अधिक बातचीत करने का समय नहीं। मुझको इस समय यह चिन्ता है कि थोड़ी ही देर में लोग मुझे घेर लेंगे, मेरी ओर घूरेंगे, और भाँति-भाँति के प्रश्न मुझसे करेंगे। मुझको सबका उत्तर देना होगा। मैं पारफ़ीरियस के पास न जाऊँगा; क्योंकि उससे मुझे घृणा है। मैं जेमटाफ़ के पास जाऊँगा। वह आश्चर्य में आ जायगा; और लोग भी सब चकित होंगे। मैं बहुत चिड़चिड़ा हो रहा हूँ। अभी-अभी मैं अपनी बहन को मारनेवाला था; क्योंकि उसने मेरी ओर मुड़कर देखा। अच्छा, लाओ, क्रॉस कहाँ है?"

रोडियन इस समय होश में न था, न एक स्थान में ठहर सकता था, और न एक विषय पर उसका चित्त लगता था। उसके विचार भटक रहे थे, और उसके हाथ काँप रहे थे। सुनिया भी चुप रही। वह छोटे सन्दूक से दो क्रॉस उठा लाई। एक पीतल का और दूसरा ताँबे का था। पीतलवाला उसने रोडियन की गर्दन में पहना दिया।

"यह इस बात का चिह्न है कि मैं दुःख सहने जा रहा हूँ। जैसे, यह मेरे दुःख का पहला दिन है। पीतल का क्रॉस साधारण मनुष्य

पहनते हैं। ताँबे का एलिज़बेथ का है; उसे तुम स्वयं रक्खो। क्या यह क्रॉस वह उस समय पहने हुए थी? उस समय मैंने और दो चीजें वहाँ देखी थीं—एक तो चाँदी का क्रॉस था, और दूसरा एक चित्र। मैंने उनको बुढ़िया पर फेंक दिए थे। अब मुझको चाहिए कि मैं ख़ुद उनको पहनूँ। मैं क्या बेहूदा बक रहा हूँ! मेरा दिमाग़ कुछ ठीक नहीं है। सुनिया, मैं इस समय इसलिये यहाँ आया हूँ कि तुमको निश्चिन्त कर जाऊँ। बस, यही मुझे कहना था। (अभी कुछ और भी कहना है।) तुम्हीं-ने मुझको स्वीकार करने की राह बताई। मुझको दण्ड मिलेगा। तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। फिर तुम रोती क्यों हो? बस, तुम्हारा रोना मुझसे नहीं देखा जाता।" फिर उसने दिल में सोचा, सुनिया मेरी कौन है? यह क्यों दुःखी होती है। क्या यह भी मा और दोनिया की तरह मुझको चाहती है?

कन्या ने काँपती हुई वाणी में कहा—"अब ईश्वर का ध्यान करो, और उसीसे प्रार्थना करो।"

"मैं तुम्हारे कहने के अनुसार प्रार्थना करूँगा,—दिल लगाकर प्रार्थना करूँगा।"

वह कुछ और कहना चाहता था। फिर उसने ईश्वर का ध्यान किया। सुनिया ने उसके सिर में एक हरा रूमाल बाँध दिया। वह अब पागल हो रहा था, घबरा रहा था। बेचैनी की हालत में उसने यह देखा कि सुनिया उसके संग जाने की तैयारी कर रही है।

"तुम क्या कर रही हो? कहाँ जा रही हो? यहीं ठहरो, मैं अकेला जाऊँगा। मैं भीड़ के संग नहीं जाऊँगा।"

सुनिया ठहर गई। रोडियन चल पड़ा। ज़ीने से उतरते हुए उसने सोचा, क्या खेल समाप्त हो गया? क्या अब पुलीस में गए बिना काम न चलेगा? क्या अब पीछे हटने का अवसर नहीं रहा? तुरन्त ही उसको ख़याल आया कि अब बेधड़क चलना चाहिए। सड़क पर पहुँचकर उसको यह ख़याल

हुआ कि मैं सुनिया से ठीक तरह से बिदा नहीं हुआ। "मैं वहाँ क्यों गया था? काम से गया था। क्या काम? मुझे कोई काम न था। क्या मैं इसलिये गया था कि उसको बताऊँ कि मैं पुलीस में जा रहा हूँ? इसकी कोई आवश्यकता न थी। क्या मैं उससे यह कहने गया था कि मैं उससे प्रेम करता हूँ? नहीं। अभी मैंने एक कुतिया की तरह उसे ठुकरा दिया। क्या मैं उससे क्रॉस लेने गया था? नहीं, मैं क्रॉस का क्या करूँगा। मैं उसके आँसू देखने गया था, उसके दिल की तड़पन देखने गया था। मैं समय काटने गया था। मैं अपने को बहुत ही साहसी समझता था; परन्तु मैं बिलकुल कायर, भीरु और नीच हूँ।"

वह नहर के किनारे जा रहा था। पुल पर पहुँचकर वह घास की मण्डी की ओर चल पड़ा। वह कभी दाहनी ओर कभी बाईं ओर देखता था। वह प्रत्येक वस्तु को ध्यान से देखता जाता था; परन्तु उसे कुछ दिखाई न पड़ता था। उसने सोचा, एक सप्ताह में या एक महीने में मैं इसी पुल पर से फिर कैदियों की गाड़ी में जाऊँगा। उस समय क्या मैं नहर को देखूँगा? क्या उस साइनबोर्ड को देखूँगा? कम्पनी का नाम उस पर लिखा है, क्या इसको मैं उस समय भी पढ़ूँगा? मेरे भाव और विचार उस समय क्या होंगे? इन बातों के सोचने से इस समय क्या प्रयोजन? मैं बिलकुल बच्चे की तरह इस समय व्यवहार कर रहा हूँ। उस भीड़ की ओर देखो। वह मोटा जर्मन, जो अभी धक्का देकर मुझको निकल गया! वह नहीं जानता कि मैं कैसा आदमी हूँ। यह स्त्री, जो बच्चे को लिए हुए भीख माँग रही है, समझती है कि मैं उससे अधिक भाग्यवान हूँ। मुझे चाहिए कि मैं उसको कुछ दूँ। मेरी जेब में पाँच कूपक पड़े हैं। "ले, माई।"

भीख माँगनेवाली ने कहा—"ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

बाज़ार में अब भीड़ लग गई थी। रोडियन को यह बात अच्छी न लगी। फिर भी जहाँ सबसे अधिक भीड़ थी, रोडियन वहीं पहुँचा। वह इस समय एकान्त चाहता था, परन्तु समझता था कि एकान्त में भी

मुझे सुख न मिलेगा। बीच में पहुँचकर उसे सुनिया के ये शब्द याद आए—"भीड़ को प्रणाम करके, उस धरती को, जिस पर तुमने खून बहाया है, चूमकर प्रत्येक मनुष्य की उपस्थिति में ज़ोर से कहो—मैं खूनी हूँ।" इस विचार ने उसको कँपा दिया। पिछले दिनों के दुःख ने उसका हृदय कठोर कर दिया था। परन्तु इस समय ऐसे भाव आते देखकर उसको शान्ति हुई। बीच में पहुँचकर वह धरती की ओर सिर झुकाकर घुटनों के बल बैठ गया, कीचड़ को चूम लिया, और फिर खड़ा हो गया।

एक लड़के ने कहा—"इसके दिमाग़ का कोई पुरज़ा ढीला पड़ गया है।"

इस बात को सुनकर सब लोग हँस पड़े।

एक शराबी ने कहा—"बचो, यह जेरूसलम-तीर्थ की यात्रा करने जा रहा है। अपने देश से और बच्चों से बिदा हो रहा है। सेंटपीटर्सबर्ग की धरती से भी बिदाई माँगता है।"

तीसरे ने कहा—"अभी तो इसकी बहुत कम अवस्था है!"

चौथे ने गंभीरता-पूर्वक कहा—"किसी अच्छे कुटुम्ब का मालूम होता है। आजकल यह पहचानना भी तो कठिन हो गया है कि कौन कैसे कुटुम्ब का है।"

अपने विषय में ये बातें सुनकर रोडियन कुछ घबरा गया, और "मैं खूनी हूँ" ये शब्द उसके मुँह से न निकले। भीड़ के हँसी-मज़ाक़ का उस पर कुछ प्रभाव न पड़ा, और वह शान्त भाव से पुलीस के दफ्तर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसको एक छाया-सी देख पड़ी। उसे इस छाया के देखने की पहले ही से आशा थी। जब वह सड़क पर दूसरी बार झुका था, तब उसने उसे थोड़ी दूर पर देखा था। सुनिया उसकी दृष्टि से बचना चाहती थी, परन्तु उसने देख लिया। रोडियन को उस समय दृढ़ विश्वास हो गया कि सुनिया मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी, और मेरे साथ संसार के दूसरे कोने तक जायगी। अब वह पुलीस के दफ्तर के अहाते में घुसा। दफ्तर तीसरी मंज़िल पर था। उसने सोचा,

कदाचित् अब भी मैं स्वीकार न करूँ, और मेरे इरादे में परिवर्तन हो जाय।

पहली बार जब वह पुलीस के दफ्तर में आया था, तब ज़ीने में बहुत दुर्गंध आती थी। उसकी टाँगें काँपने लगीं। रुककर वह साँस लेने लगा, और भेंट के लिये उद्यत हुआ। फिर उसने सोचा कि मैं क्यों ऐसा करता हूँ ? जब प्याले को ख़ाली करना है, तो किसी प्रकार से ख़ाली हो। फिर उसको एलापा का ध्यान आया। क्या मुझको उसी से मिलना है ? निकोडेमिश टामिश से क्यों न मिलूँ ? पुलीस के कप्तान के घर पर जाकर चुपचाप सब उससे कह दूँ। नहीं, नहीं, मैं एलापा ही से कहूँगा। जल्दी सब समाप्त हो। रोडियन ने दफ्तर का दरवाज़ा खोला। बाहर के कमरे में एक कांस्टेबिल और एक मज़दूर था। उन्होंने इसकी ओर ध्यान भी न दिया।

रोडियन अब अन्दर के कमरे में घुसा। वहाँ दो बाबू बैठे हुए काम कर रहे थे। निकोडेमिश और जेमटाफ़ दोनों ही न थे।

रोडियन ने एक बाबू से पूछा—"क्या कोई इस समय नहीं है ?"

"तुम किससे मिलना चाहते हो ?"

इसी समय अन्दर के कमरे से एक मनुष्य निकला, और उसने कहा—"आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।" रोडियन ने घबराकर देखा, सामने एलापा खड़ा है। रोडियन ने सोचा, भाग्य ने निर्णय कर दिया; नहीं तो यह यहाँ क्यों होता ?"

एलापा ने पूछा—"तुम यहाँ क्यों आए हो ? यदि काम से आए हो, तो अभी दफ्तर का समय नहीं हुआ। मैं तुम्हारे लिये क्या…।"

"मैं रोडियन हूँ।"

"हाँ-हाँ रोडियन, मैं तुमको पहचानता हूँ। मैं तुम्हारा नाम लेने ही वाला था। मुझे शोक है, उस समय मैंने तुमसे अच्छा व्यवहार नहीं किया। मैं नहीं जानता था कि तुम लेखक हो। संसार में लेखक या पण्डित, कोई ऐसा न मिलेगा, जो अपनी बाल्यावस्था में

अच्छे चरित्र का रहा हो। मुझे और मेरी स्त्री को पुस्तकों से बड़ा प्रेम है। मनुष्य जन्म के अतिरिक्त बुद्धि से ही सब कुछ प्राप्त कर सकता है। सिर पर देने की टोपी हर जगह मिल सकती है, परन्तु सिर के अन्दर की वस्तु कहीं नहीं मिल सकती। मैं तुम्हारे पास क्षमा माँगने को आनेवाला था। आज तुम यहाँ क्या करने आए हो? तुम्हारा कुटुम्ब सेंटपीटर्सबर्ग में आया हुआ है?"

"हाँ, मेरी बहन और मा आई हैं।"

"मैं तुम्हारी बहन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ। वह बहुत चतुर और सुन्दर है। मुझे शोक है कि हमारा-तुम्हारा झगड़ा हो गया था। तुम्हारे विषय में जो सन्देह हम लोगों का था, वह झूठा सिद्ध हो गया है। अब तुम्हारा कुटुम्ब यहाँ आ गया है, उन्हीं के संग रहोगे न?"

"नहीं, मैं जेमटाफ़ से मिलने आया था।"

"हाँ-हाँ, मुझे याद है। तुम्हारी-उसकी मित्रता थी। जेमटाफ़ की अब बदली हो गई है। कल ही वह यहाँ से चला गया। उसका स्वभाव बिलकुल बंदर का-सा है। पहले तो हमको उससे बहुत आशा थी; परन्तु अब मालूम हुआ कि वह बड़ा दिखाऊ है, और बुद्धि उसमें बहुत थोड़ी है। वह तुम्हारे और राजू के सदृश नहीं है। तुम लोगों को संसार के दुःख और सुख से कोई प्रयोजन नहीं। तुमने तो पुस्तकों के पीछे सन्यास ले लिया है। संसार में तुम्हारे सुख की सामग्री पुस्तक और लेखनी हैं। क्या तुमने लिविंग्स्टन के लेख पढ़े हैं?"

"नहीं।"

"मैंने पढ़े हैं। इस समय निहिलिस्ट बहुत बढ़ गए हैं। तुम तो निहिलिस्ट नहीं हो?"

"नहीं।"

"तुम मुझसे खुलासा सब हाल कहो। हमारा-तुम्हारी कोई विशेष मित्रता

नहीं है; परन्तु मैं भी मनुष्य हूँ, और मुझे भी ईश्वर से प्रेम है, तथा मनुष्य-मात्र के भावों को समझता हूँ। अभी तुम जेमटाफ़ के विषय में बातें कर रहे थे। जेमटाफ़ एक युवा पुरुष है, जो फ्रांसीसी ढंग से रहता है, और छायादार स्थानों में शराब पीकर मस्त पड़ा रहता है। मेरा अभिप्राय तुम समझ गए होगे। संभव है, मैं कुछ अधिक बुरा उसको समझूँ; क्योंकि मैं पुलीस का बड़ा हितैषी हूँ। फिर, मेरा दर्जा ऊँचा है, और समाज में मेरा आदर है। मैं बाल-बच्चोंवाला आदमी हूँ, अपना धर्म-पालन करता हूँ। परन्तु वह क्या है? तुम पढ़े-लिखे हो, इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि बताओ, इसका क्या कारण है कि धात्रियाँ इतनी बढ़ गई हैं।"

रोडियन उसकी ओर चकित होकर देखता रहा। एलापा की बातें उसकी समझ में न आईं। प्रश्नकर्त्ता की ओर किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर वह देखने लगा।

एलापा फिर बोला—"मैं तुमसे उन स्त्रियों के विषय में बात कर रहा हूँ, जो फैशन के बाल कटाती हैं। मैं उनको धात्री कहता हूँ; क्योंकि वे चिकित्सा-शास्त्र के व्याख्यानों में जाती हैं, और शरीर-रचना-शास्त्र पढ़ती हैं। यदि मैं बीमार पड़ूँ, तो कभी ऐसी स्त्रियों से अपना इलाज न कराऊँ। विद्या का प्रेम अच्छा है, परन्तु उसका यह प्रयोजन नहीं कि तुम अपने से बड़े पुरुषों का निरादर करो, जैसे वह जेमटाफ़ करता है। मैं जानना चाहता हूँ कि वह मेरा अपमान क्यों करता है? एक और पागल-पन, जो आजकल बढ़ रहा है, आत्महत्या है। पैसा-पैसा व्यय करके मनुष्य आत्महत्या करते हैं। छोटी-छोटी कन्याएँ, लड़के और बूढ़े तक आत्महत्या करने लगे हैं। अभी हमको एक मनुष्य के विषय में मालूम हुआ है, जो, थोड़े दिन हुए, इस नगर में आया था—"निलयालिश। क्यों जो, उसका क्या नाम है, जिसने आज पीटवर्गस्केया में आत्महत्या की है?"

किसी ने दूसरे कमरे से उत्तर दिया—"स्विड्रीगेलफ़।"

रोडियन काँप गया, और बोला—"स्विड्रीगेलफ़ ने आत्महत्या कर ली?"

"क्यों, क्या तुम उसको जानते थे?"

"हाँ, अभी थोड़े दिन हुए, वह इस नगर में आया था।"

"ठीक है। उसकी स्त्री का देहान्त हो गया था। बात तो यह है कि वह बड़ा विषयी जीव था। पिस्तौल से आत्महत्या की है, और उसकी जेब में एक पॉकेटबुक निकली है, जिसमें लिखा है कि मैं होश-हवास में आत्महत्या करता हूँ। मेरी मृत्यु के लिये कोई अपराधी न ठहराया जाय। कहते हैं, वह रुपएवाला था। परन्तु तुम उसको कैसे जानते हो?"

"मैं···मेरी बहन इस कुटुम्ब में नौकर थी।"

"अच्छा, तो तुम हमको उसके विषय में कुछ बता सकते हो? आत्म-हत्या के विषय में क्या तुम कुछ जानते हो?"

"कल वह मुझको मिला था, शराब पी रहा था, परन्तु मुझे और कुछ सन्देह न हुआ।"

"तुम पीले क्यों पड़ रहे हो? क्या इस कमरे का वायुमण्डल अच्छा नहीं है?"

"हाँ, अब मुझे जाना चाहिए।"

"मैं सदा तुम्हारी सेवा के लिये उपस्थित हूँ। बड़ी प्रसन्नता से कहता हूँ...।" यह कहकर एलाया ने हाथ बढ़ाया।

"मैं जेमटाफ़ से कुछ कहने आया था।"

"मुझे मालूम है। मुझको तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"प्रसन्नता! अच्छा, नमस्ते।" कहकर हँसता हुआ, लड़खड़ाता हुआ रोडियन, बाहर चला। उसके सिर में चक्कर आ रहे थे; वह खड़ा नहीं हो सकता था। दीवाल के सहारे वह खड़ा हुआ। उसको विदित हुआ कि किसी पुलीसवाले ने उसका स्पर्श किया। कोई कुत्ता नीचे भौंक रहा था, और कोई स्त्री उसे शान्त करने के लिये चिल्ला रही

थी। ज़ीने से नीचे उतरकर उसने देखा कि सुनिया खड़ी हुई विचित्र दृष्टि से उसकी ओर देख रही है। वह उसके सामने खड़ा हो गया। कन्या अपने हाथ मल रही थी, उसके मुख पर निराशा के भाव थे। यह देखकर रोडियन हँसा, और पुलीस के दफ्तर को फिर लौट गया। एलापा कुछ कागज़ उलट-पलट रहा था। उसके सामने वही सिपाही, जो रोडियन को ज़ीने में मिला था, खड़ा था।

"हैं ! हैं ! फिर तुम आ गए ! क्या कुछ भूल गए थे ? तुमको क्या हो गया है ?" काँपता हुआ रोडियन धीरे-धीरे एलापा की ओर बढ़ा। मेज़ पर हाथ रखकर वह कुछ कहना चाहता था; परन्तु कुछ स्पष्ट न कह सका।

"तुमको कष्ट है ? कुरसी लो, बैठ जाओ। थोड़ा पानी पी लो।"

रोडियन कुरसी पर बैठ गया, और एलापा की ओर देखता रहा। थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप एक दूसरे को देखते रहे। पानी आ गया।

रोडियन ने कहा—"मैं ही···।"

"पानी पिओ।"

रोडियन ने हाथ से ग्लास को हटा दिया, और धीरे-धीरे साफ़-साफ़, रुक-रुककर कहा—"मैं ही बुढ़िया साहूकारिन और उसकी बहन एलिज़बेथ का ख़ूनी हूँ। मैंने कुल्हाड़ी से उन्हें मारा, और मेरी नियत चोरी की थी।"

एलापा ने सहायता के लिये पुकारा। चारों ओर से लोग दौड़ पड़े। रोडियन ने सबके सामने अपना बयान दुहराया।

उपसंहार

पहला परिच्छेद

साइबेरिया एक बड़ी नदी के किनारे रूस में एक नगर है। उस नगर में एक किला है। किले के एक जेलख़ाने में रोडियन ९ महीने से पड़ा हुआ है। अपराध किए उसको डेढ़ वर्ष हो गए।

उसके साथ न्याय हुआ। अपराधी ने कचहरी में भी सब स्वीकार कर लिया, और सब बात सच-सच कह दी; कोई बात नहीं छिपाई। बुढ़िया की चाबियों के विषय में कहा, उनकी शक्ल बताई, सन्दूकों का हाल बताया, और एलिज़बेथ के ख़ून की कहानी कही, काश का दरवाजे पर खटखटाना, फिर विद्यार्थी का आना, दोनों की बातचीत, फिर उनका वापस जाना, मिकोलका और मिस्त्री की लड़ाई, अपने को ख़ाली कमरे में छिपाना और चोरी के माल का गाड़ना, सब साफ़-साफ़ बता दिया। माल भी मिल गया। बात साफ़ हो गई। मजिस्ट्रेट और जज को यह आश्चर्य था कि उसने माल को अपने काम में न लाकर छिपा क्यों रक्खा? वह उस माल की सूची भी ठीक-ठीक नहीं बता सकता था! उनकी समझ में यह न आता था कि चुराकर उसने यह भी न देखा कि माल में क्या-क्या है। उसमें ३७० रूबल और ताँबे के सिक्के निकले।

बड़ी देर तक लोग यह सोचते रहे कि इसने ख़ून क्यों किया? अन्त में कुछ लोगों ने यही परिणाम निकाला कि यह ख़ून किसी इच्छा से नहीं, परन्तु पागलपन की दशा में किया गया है। रोडियन के बहुत-से गवाह थे, जिन्होंने यह प्रमाणित किया कि उसका दिमाग़ ठीक नहीं था। डॉक्टर जेसीमाफ़, उसके मकान की मालकिन, और नेस्टेसिया ने

यह गवाही दी कि रोडियन साधारण खूनी या चोर नहीं है। परन्तु रोडियन साफ़-साफ़ यही कहता रहा कि दरिद्रता और निस्सहाय होने के कारण, अपना जीवन आरंभ करने के लिये, कुछ धन प्राप्त करने की इच्छा से मैंने यह खून किया। मुझे यह आशा थी कि तीन हज़ार रूबल मिलेंगे। जब उससे पूछा गया कि अब तुमने स्वीकार क्यों कर लिया, तो उसने उत्तर दिया—। पश्चात्ताप के कारण।

सब बातों पर ध्यान रखते हुए यही कहना पड़ता है कि दण्ड उसको बहुत कम दिया गया। जजों पर इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ा कि कोई बात भी उसने अपने बचाव की नहीं कही, और किसी प्रकार की सफ़ाई नहीं दी। खूनी निस्सन्देह बीमार एवं दरिद्र था। जजों को इस बात से कि चोरी का माल उसने अपने काम में नहीं लगाया, यह विश्वास हो गया कि या तो वह उस समय पागल था, और या उसको खून करने के उपरान्त शीघ्र ही पश्चात्ताप हुआ। फिर उसका स्वयं सब बातें उस समय स्वीकार कर लेना, जब मिकोलका स्वयं सारा अपराध स्वीकार कर चुका था, और उस पर कुछ सन्देह न रह गया था, (पारफ़ीरियस अपनी बात पर दृढ़ रहा) बहुत ही प्रशंसनीय समझा गया और इससे भी दण्ड में कमी हो गई।

और भी बहुत-सी बातें अपराधी के पक्ष में प्रमाणित हुईं। उसके सहपाठी राजू ने यह बात कही कि विश्वविद्यालय में रोडियन दरिद्रों की सहायता करता था, और एक क्षय-रोग-ग्रस्त सहपाठी को छः महीने तक अपने पास से खिलाता रहा। उसके मर जाने पर उसके बूढ़े बाप को एक दरिद्रालय में प्रवेश करा दिया, और उसके मरने पर उसका संस्कार अच्छी तरह किया। मकान की मालकिन ने यह बात कही कि एक समय आग लगने पर, रोडियन ने अपनी जान पर खेलकर दो बच्चों को अग्नि की प्रचण्ड ज्वाला से बचाया था। इन बातों का समर्थन निष्पक्ष गवाहों ने भी किया। इन सब बातों का

प्रभाव अदालत पर पड़ा, और जजों ने उसको आठ वर्ष का कठिन कारागार तथा साइबेरिया में देश-निकाले का दण्ड दिया।

मुकदमे के बीच में रोडियन की मा बहुत बीमार हो गई। डोनिया और राजू ने यही उचित समझा कि उसको सेंटपीटर्सबर्ग से हटा दें। उन्होंने उसे नगर से थोड़ी दूर एक छोटे-से नगर में रक्खा, जहाँ राजू रोज आ-जा सकता था। मा की बीमारी बड़ी विचित्र थी, उसको दौरे हुआ करते थे। जब डोनिया भाई के पास से वापस आई थी, तो उसने मा को बहुत उत्तेजित और सरसाम की हालत में पाया था। राजू के परामर्श से उन्होंने बहुत-सी कहानियाँ, रोडियन के विषय में, मा का मन बहलाने के लिये गढ़ लीं कि वह एक बड़े आवश्यक काम से बड़ी दूर गया है, जहाँ उसको धन और आदर प्राप्त होगा। परन्तु मा ने कभी रोडियन के जाने के विषय में कुछ नहीं पूछा। वह स्वयं ही रोडियन की जाने की सारी कहानी सुनाया करती थी कि किस प्रकार उसने मुझसे विदा माँगी, और मैं जानती हूँ कि वह बहुत ही गंभीर और आवश्यक काम से गया है। मा ने उन्हें विश्वास दिलाया कि रोडियन एक दिन राजधानी में बहुत आदर प्राप्त करेगा। उसने उसका लेख उसकी योग्यता के प्रमाण में दिया।

इस लेख को वह रात-दिन पढ़ा करती थी। डोनिया और राजू उसकी विचित्र दशा देखकर चिन्तित थे। अब वह अपने पुत्र की बात नहीं करती थी। गाँव में तो सदा उसी के पत्र की प्रतीक्षा करती रहती थी। इस बात से डोनिया बहुत घबराई, और समझने लगी कि मा जानती है कि रोडियन को किसी विपत्ति ने आ घेरा है, और इसीलिये उसके विषय में कुछ नहीं पूछती। डोनिया समझ गई, मा की दशा अच्छी नहीं है।

दो बार मा ने ऐसी बातचीत की कि जिससे रोडियन का कुछ पता चले।

परन्तु डोनिया ने कभी सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया। डोनिया समझने लगी कि अब बात बनाना कठिन है, और इसलिये इस विषय में चुप रहने लगी। अब प्रकट होने लगा कि मा सब कुछ जानती है। डोनिया ने रोडियन से सुना था कि स्विड्रीगेलफ़ की भेट जिस रात को हुई, उसने सरसाम की हालत में कुछ बका था, और उसे मा ने सुना था। बहुत दिन चुप रहने के अनन्तर वह कभी-कभी ज़ोर से चिल्लाने और अपने पुत्र के विषय में बातचीत करने लगती थी। उन्होंने उसका मन बहलाने की चेष्टा की; परन्तु वह उनका मतलब समझ गई, और बकती रही।

एलापा से अपराध स्वीकार करने के पाँच महीने बाद दण्ड की आज्ञा सुनाई गई। राजू जेल में मिलने जाया करता था। सुनिया भी जाती थी। देश-निकाले का दिन आ गया। डोनिया और राजू ने कहा, हम सदा के लिये एक दूसरे से नहीं बिदा हो रहे हैं। राजू ने कहा, तीन या चार साल के अनन्तर हम भी साइबेरिया में आकर बसेंगे; वहाँ की धरती बहुत ही उपजाऊ है, और थोड़े-से धन और परिश्रम से निर्वाह हो सकता है। और, उसी नगर में रहेंगे, जहाँ रोडियन होगा। बिदा होते समय सब रोने लगे। रोडियन को मा के विषय में बहुत चिन्ता थी। उसकी दशा अच्छी नहीं है, यह सुनकर वह बहुत उदास हो गया। सुनिया से वह दूर ही रहता था, बातचीत भी न करता था। सुनिया ने स्विड्रीगेलफ़ के दिए हुए धन की सहायता से उन्हीं कैदियों के साथ, जिनके साथ रोडियन जा रहा था, जाने का प्रबंध कर लिया था। इस बात को उसने रोडियन से कभी नहीं कहा; परन्तु रोडियन जानता था कि वह जायगी। बहन और राजू की बातें सुन-सुनकर कि कारागार के अनन्तर उसका जीवन बहुत सुख-मय होगा, रोडियन को हँसी आती थी। वह समझ गया था कि मा अब न बचेगी। वह और सुनिया दोनों रवाना हो गए।

दो महीने के बाद राजू और डोनिया का विवाह हो गया। मेहमानों में पारफ़ोरियस और जेसीमाफ़ थे। कुछ दिनों से राजू के चरित्र में परिवर्तन हो रहा था, और वह दृढ़ होता जाता था। डोनिया समझती थी कि यह उन्नति स्थायी है, और वह अपने सभी संकल्प पूरा करेगा। वह फिर युनिवर्सिटी में पढ़ने लगा। दोनों तीन-चार वर्ष के बाद साइबेरिया जाने के विषय में सोचा करते थे। उस समय तक उनका विश्वास था कि सुनिया रोडियन की देखभाल अच्छी तरह कर लेगी।

मा ने विवाह के समय दोनों को आशीर्वाद दिया, पर इसके अनन्तर उसकी दशा और शोचनीय हो गई। राजू रोडियन की वीरता की कहानी सुनाकर उसको प्रसन्न करने की चेष्टा किया करता था। उससे वह इतनी प्रसन्न हुई कि वह प्रत्येक पुरुष से, अनजान मनुष्यों से, सड़कों पर, दुकानों में उसी की चर्चा करती थी। डोनिया उसको रोक न सकती थी, और सदा डरा करती थी कि कहीं कोई रोडियन के दण्ड पाने का हाल उसको न बता दे।

उसकी दशा अब बहुत बिगड़ गई, और वह सरसाम में कहने लगी कि अब रोडियन आनेवाला है। उसने कहा था कि ९ महीने के बाद आऊँगा। वह कमरे को साफ़ करने, छतों पर झाड़ू देने और दरवाजे पर नए परदे टाँगने लगी। डोनिया उदास हो गई; परन्तु कुछ न बोली, मा को प्रसन्न करने के लिये उसकी सहायता करने लगी। दूसरे दिन मा की दशा अधिक बिगड़ गई, और पन्द्रह दिन में वह इस लोक से चल बसी। सरसाम में वह ऐसी बातें करती थी कि जिससे डोनिया और राजू समझ गए कि वह अपने पुत्र के विषय में बहुत कुछ जानती है।

रोडियन को मा के मरने का हाल बहुत दिन तक नहीं मालूम हुआ, यद्यपि सुनिया और डोनिया से पत्र-व्यवहार होता था। हर महीने सुनिया का पत्र आता था, और एक पत्र यहाँ से साइबेरिया जाता था। सुनिया के पत्र पहले तो इनको बड़े रूखे लगते थे, परन्तु फिर इनका

समझ में आ गया था कि पत्र इससे अच्छे नहीं हो सकते; क्योंकि उनमें अभागे भाई की दशा की सच्ची कहानी लिखी होती थी। वह रोडियन की प्रत्येक दिन की अवस्था सीधी, सरल भाषा में लिख भेजती थी। अपने विषय में, अपनी आशाओं और अपने भावों की कहीं भी चर्चा न करती थी। रोडियन के प्रश्न, उसकी इच्छाएँ और स्वास्थ्य की दशा लिख भेजती थी।

डोनिया को या राज़ू को इन पत्रों से कुछ सन्तोष न होता था। सुनिया ने लिखा था कि रोडियन बहुत गंभीर रहता है, और मा की मृत्यु का समाचार सुनकर भी उसकी गंभीरता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसका स्वास्थ्य ठीक है, और काम अच्छी तरह करता है; खाने-पीने से उदासीन है। खाना भी इतना बुरा मिलता है कि मैं कभी-कभी अपने पास से चा पिला आती हूँ। यदि और कुछ खाने को ले जाती हूँ, तो वह रुष्ट हो जाता है, और कहता है, मुझको दुःखी न करो। जेलखाने में साधारण कैदियों की तरह कम्बल पर सोता है। चेष्टा करने से उसको और चीजें मिल सकती हैं, परन्तु उदासीनता के कारण वह कुछ प्रयत्न नहीं करता। पहले तो वह मुझसे घृणा और मेरे संग बुरा व्यवहार करता था; परन्तु फिर साधारण रीति से मिलने लगा। छुट्टी के दिन तो मैं फाटक पर मिल लेती हूँ, परन्तु और दिन दूर से उसको ईंटों के भट्टे के समीप काम करते देखती हूँ।

अपने विषय में सुनिया ने लिखा था कि मैं सिलाई करके समय काटती हूँ, और यहाँ दरज़ी न होने के कारण मेरा काम अच्छा चलता है। उसने यह नहीं लिखा कि अधिकारी मुझसे प्रसन्न हैं, और इसलिये मेरा काम सहज में चल जाता है। अन्त में यह ख़बर आई कि वह बहुत दिन से नहीं बोला है, और बीमार-सा मालूम होता है। फिर दूसरे पत्र में यह लिखा था कि उसकी दशा बिगड़ गई है, और वह जेलखाने के अस्पताल में पड़ा हुआ है।

दूसरा परिच्छेद

वह बहुत दिन तक बीमार रहा। जेल का जीवन, परिश्रम, फटे कपड़े, बुरा खाना, मुँड़ा हुआ सिर—इन बातों की उसे चिन्ता न थी। परिश्रम से वह प्रसन्न था; क्योंकि थककर मीठी नींद की आशा की जा सकती थी। बंद गोभी का रस वह स्वाद से लेता था; क्योंकि विद्यार्थी होने की दशा में भी इससे अच्छा खाना उसको नहीं मिलता था। उसके वस्त्र उसके जीवन के अनुकूल थे। बेड़ियों की उसे कोई चिन्ता न थी, और न मुँड़े हुए सिर की कोई लज्जा। लज्जा किससे करता? सुनिया से? सुनिया उससे डरती थी।

सुनिया से उसको लज्जा आती थी; क्योंकि उसने उसके साथ घृणित व्यवहार किया था। उसकी लज्जा कटे हुए बाल और जंज़ीरों के कारण न थी। परन्तु वह अपने चोट खाए हुए अभिमान के रोग में ग्रस्त था। वह बार-बार सोचता था कि मैंने कौन-से पाप किए हैं; परन्तु एक भूल के सिवा और उसकी कुछ समझ में नहीं आता था।

वर्तमान अवस्था के विषय की चिन्ता ही उसके लिये रह गई थी। आठ वर्ष के अनन्तर उसकी आयु केवल ३२ वर्ष की होगी। क्या वह फिर नया जीवन आरम्भ कर सकता है? किस लिये? जीवन का क्या उद्देश्य है? केवल जीवित रहने के लिये? पुराने समय में वह एक आशा के पीछे हज़ारों बार मरने को तैयार था; परन्तु अब उसके भाव बदल गए थे, और पश्चात्ताप ने उसके दिल को टूक-टूक कर दिया था। नींद उसके पास से भाग गई थी। ऐसे ही पश्चात्ताप से मनुष्य आत्मघात कर लेता है। कभी उसे यह विचार आता कि मैंने मूर्खता की कि अपराध स्वीकार कर लिया। और, कभी-कभी यह विचार

आता कि मैंने अच्छा ही किया कि अपराध स्वीकार कर लिया।

वह सोचता था कि क्या मेरे विचार और मनुष्यों के विचारों से बुरे हैं? टकहे फ़िलॉस्फर चाहे जो कुछ कहें, परन्तु मैंने कोई बड़ा अपराध नहीं किया है। लोग इसे हत्या कहते हैं। हत्या का क्या अर्थ है? मेरी जीवात्मा शुद्ध है, मेरा काम अवश्य क़ानून के विरुद्ध था। मैंने क़ानून तोड़ा, और ख़ून बहाया, तो अपना सिर देने को भी तैयार हूँ। निस्सन्देह मनुष्य-मात्र के हितैषी, जिन्होंने शक्ति प्राप्त की, पहले ही दण्ड देने के योग्य थे। परन्तु सफलता के कारण इन्हें कोई कुछ नहीं कहता। मैंने जो ठीक तरह से काम नहीं किया, इसीलिये मैं अपराधी समझा जाता हूँ।

वह समझता था कि मैंने केवल एक अपराध किया है। वह यह कि मैंने अपराध स्वीकार कर लिया है। मैंने आत्महत्या क्यों न कर ली? क्या जीवित रहने की इच्छा पर विजय प्राप्त करना बड़ा कठिन है? स्विद्री-गेलफ़ ने कैसे विजय प्राप्त कर ली? उसकी समझ में यह न आता था कि आत्महत्या उसने इसलिये नहीं की कि उसको नए जीवन और अपने उद्धार की आशा है। वह अपने चरित्र की निर्बलता ही इसका कारण समझता था। वह अपने साथियों को देखता था कि इन्हें जीवन से कितना मोह है! जीवन के लिये वे क्या-क्या दुःख उठाते हैं!

जेल में वह सदा नीची आँखें किए रहता था, और इसलिये बहुत-सी बातें उसको वहाँ न सूझती थीं। कुछ दिनों के अनन्तर उसे ऐसा विदित हुआ कि और क़ैदियों में और उसमें बड़ा भेद है। वे एक दूसरे को अविश्वास और शत्रुता की दृष्टि से देखते हैं। साधारण क़ैदियों को छोड़कर वहाँ कुछ राजनीतिक क़ैदी भी थे। वे तो औरों को और भी घृणा की दृष्टि से देखते थे। परन्तु रोडियन इन्हें इतना बुरा न समझता था। वह समझता था कि इन साधारण क़ैदियों में बहुत-से राजनीतिक क़ैदियों से अधिक बुद्धिमान् हैं। रोडियन से सब क़ैदी घृणा करते थे। क्यों?



मैंने केवल एक अपराध किया है। वह यह कि मैंने अपराध स्वीकार कर लिया है।

(पृष्ठ ४८५)

S. K. Press, Lucknow

आ

बुरे
अप
अर्थ
था
तैय
पहं
कुछ
अप

मैंने
जीि
गेल
कि
उद्धा
समझ
कितन

बातें
विदित
को
छोड़क
की दृ
वह स
से अ

: यह नहीं समझता था। बहुत-से उस पर हँसते थे, और कहते थे कि
म भलेमानस हो! कुल्हाड़ी से मारना भलमंसी का काम नहीं।

एक दिन सब गिरजाघर गए थे। एकबारगी ही उसके साथी उस
र टूट पड़े, और उसे मारने लगे। बोले—"अधर्मी! तुम ईश्वर में
विश्वास नहीं करते; हम तुम्हें मार डालेंगे।"

उसने कभी उनसे ईश्वर के विषय में बात नहीं की थी, परन्तु वे
उसे नास्तिक समझकर मारना चाहते थे। उसने कुछ उत्तर न दिया।
एक क़ैदी झपटकर उस पर आक्रमण करने ही को था कि सन्तरी ने बीच में
आकर ख़ून-ख़राबी बचा ली।

एक बात और उसने देखी कि सुनिया की सब प्रशंसा करते हैं।
वह उनसे बोलती भी न थी; परन्तु वे सब उसको जानते थे कि वह
कौन है, यहाँ कैसी आई, और कहाँ रहती है। वह उन्हें कभी कुछ
धन न देती थी। केवल एक बार, क्रिसमस में, उसने उन्हें कुछ डबल
रोटियाँ और मक्खन दिया था। धीरे-धीरे सुनिया से और उनसे मित्रता
हो गई। उनके मित्रों और नातेदारों को उनकी ओर से वह पत्र लिख
देती थी। मित्र आते थे, और उसके पास अपने क़ैदी मित्रों के लिये
रुपए और पार्सल छोड़ जाते थे। क़ैदियों की स्त्रियाँ और प्रेमपात्रियाँ
उसे जान गई थीं, और उसके पास आती-जाती थीं। जब वे काम
पर लगे होते थे, तो सुनिया को देखकर प्रणाम करके कहते थे—"माता
सुनिया, तुम हमारी दयालु मा हो।" वह हँस देती थी। वे उसको
देखते रहते और अपने दुःखों की कहानी उसे सुनाया करते थे।

रोडियन बहुत [illegible] पड़ा रहा। स्वस्थ होने पर उसे
सरसाम के स्वप्न याद आने [illegible] में एक विचित्र प्रकार की
महामारी फैल चली। जिसमें [illegible] को छोड़कर सब मर
गए। नए प्रकार के कीड़े मनुष्यों [illegible] उनको पागल [illegible]ने
लगे। विचित्र बात यह थी कि पागल [illegible] सबसे अधिक

बुद्धिमान समझता था। गाँव-गाँव में यह बीमारी फैल चली, और लोगों की बुद्धि जाती रही। एक दूसरे की बात वे न समझते थे; क्योंकि प्रत्येक अपने ही को बुद्धि का भंडार समझता और दूसरे की मूर्खता प सिर पीटता था। वे किसी बात पर सहमत न होते थे, बड़ी-बड़ी फौज़ें बनाकर एक दूसरे को मार डालते थे। नगरों में हाहाकार मच गया। सभाएँ होने लगीं। साधारण व्यवसाय बन्द हो गया। दो आदमियों की सम्मति कभी न मिलती थी। कृषि भी छूट गई। लोग एकत्रित होकर यह निर्णय तो करते कि सब मिलकर काम करेंगे, और एक दूसरे का साथ न छोड़ेंगे; परन्तु थोड़ी ही देर के अनन्तर एक दूसरे को सब मारे डालते थे। अकाल पड़ गया, बीमारी बढ़ चली। बहुत ही थोड़े-से मनुष्य बचे, जो संसार में नया जीवन उत्पन्न करने और पृथ्वी को पवित्र बनाने के लिये रह गए। परन्तु उनको किसी ने नहीं पहचाना।

यह व्यर्थ का स्वप्न उसे स्वप्न नहीं मालूम होता था। ईस्टर के बाद, दूसरे सप्ताह में, उसके कमरे की खिड़कियाँ खोली गईं। इस बीमारी में सुनिया केवल दो बार उसको देख सकी थी; क्योंकि नियम कड़े थे, और आज्ञा कठिनाई से मिलती थी। वह नित्यप्रति शाम को अस्पताल की खिड़की के नीचे आकर खड़ी हो जाती थी। एक दिन नींद से उठकर वह खिड़की पर गया, और उसने वहाँ सुनिया को खड़े देखा। उस के दिल में चोट लगी, और काँपकर वह लौट पड़ा। दूसरे दिन सुनिया नहीं आई, न तीसरे ही दिन। वह आधीरात से उसकी प्रतीक्षा करने लगा। अन्त में वह अस्पताल से अच्छा होकर फिर जेल में भेज दिया गया, और, अब उसे मालूम हुआ कि सुनिया बीमार पड़ी है।

उसे बड़ा दुःख हुआ; परन्तु शीघ्र ही उसे मालूम हो गया कि उसकी बीमारी भयंकर नहीं है। सुनिया को यह मालूम हुआ कि रोडियन मेरे विषय में चिन्तित है। उसने पेंसिल से लिखकर भेज दिया कि मुझे यों ही सर्दी-सी लग गई थी, शीघ्र ही अच्छी होकर तुम्हें काम पर देखने

ऊँगी। पत्र पढ़कर रोडियन का दिल धड़कने लगा। आकाश आज मंल था। छः बजे रोडियन को नदी के किनारे काम करने जाना था। तीन कैदी भेजे गए थे। एक कैदी चौकीदार के थ कुछ औज़ार लेने वापस चला गया। दूसरा आग जलाने ी तैयारी में लग गया। रोडियन नदी के किनारे जाकर, एक लट्ठे पर ठकर, नदी की शोभा देखने लगा। बड़ी दूर पर उसको काले-काले गली जातियों के ख़ीमें देख पड़े। वे स्वतंत्र थे, और आदम के समय एक ही ढंग से रहते थे। देखते-देखते वह सोच में मग्न और फिर त्तेजित हो गया।

शीघ्र ही उसने सुनिया को अपने पास पाया। धीरे से आकर वह सके पास बैठ गई थी। अभी बहुत सबेरा था। प्रातःकाल की वायु ें सूर्य की गरमी नहीं आई थी। सुनिया के मुख पर बीमारी के चिह्न ाक़ी थे। प्रे... ...तवन से उसने रोडियन को देखा, और मिलाने ो डरते-डरते हाथ बढ़ाया; क्योंकि उसे भय था कि कदाचित् वह ाथ न मिलावे। परन्तु रोडियन ने उसका हाथ पकड़कर उसकी ओर ेखा। उसकी आँखें झुक गईं। कोई कुछ न बोला। वे दोनों अकेले थे। ीघ्र ही न-मालूम रोडियन के हृदय में क्या भाव आए कि वह सुनिया चरणों में गिर पड़ा, और रोते हुए सुनिया से चिपट गया। वह डर गई, उसके मुख पर मुर्दनी छा गई। घबराकर वह उठ खड़ी हुई, और रोडि-ा ओर देखने लगी। परन्तु एक ही दृष्टि में उसे विदित हो गया ोडियन के नेत्रों से सुख के स्वप्न की झलक आ रही है, और उसे इस में सन्देह न रहा कि अब वह मुझसे प्रेम करने लगा है।

वे बोलना चाहते थे; परन्तु बोल न सके। आँखों में आँसू आ गए दोनों पीले और बीमार थे, और दोनों के मुख की सफ़ेदी पर भावी का प्रभात चमक रहा था। प्रेम के पाश में फसे हुए दोनों के में एक दूसरे के लिये अनन्त प्रेम समाया हुआ था। उन्होंने

धैर्य से समय बिताने का संकल्प किया। अभी उसे सात वर्ष मुसीबत के काटने थे; परन्तु उसको अब यह दृढ़ विश्वास हो गया कि मेरा उद्धार हो गया, और मेरा भावी जीवन आनन्दमय होगा । सुनिया मेरे जीवन का एक अंग हो गई ।

उस दिन शाम को रोडियन पड़े-पड़े सुनिया के विषय में सोचने लगा। उसके साथियों ने अब उससे अच्छा व्यवहार करना आरंभ कर दिया था। वह समझने लगा कि अब परिवर्तन हो गया। उसे कभी-कभी अपने उस कुव्यवहार का, जो उसने सुनिया के साथ किया था, ख़याल आता था; परन्तु अब सुनिया के लिये उसके हृदय में अनन्त प्रेम था। पिछले दुःख पाप, दण्ड, देश-निकाला—सब प्रेम के प्रथम आलोकित प्रभात में भूल गए। उस शाम को उसको अपना जीवन सुखमय विदित हुआ। उसके तकिए के नीचे एक बाइबिल की प्रति पड़ी थी। यह सुनिया ने उसे दी थी। उसे उठाकर वह देखने लगा। पहले वह समझता था कि सुनिया मुझे धार्मिक शिक्षा से परेशान कर देगी। परन्तु उसने कभी धर्म के विषय में कोई बातचीत नहीं की। बीमारी में स्वयं उसने सुनिया से किताब माँगी थी; उसी दशा में वह पुस्तक पड़ी रही।

उसने पुस्तक नहीं खोली। परन्तु एक विचार उसके मन में यह आया कि क्या मैं सुनिया की तरह धार्मिक नहीं हो सकता?

सुनिया दिन-भर उत्तेजित रही, और रात को फिर कुछ बीमार हो गई। वह इतनी प्रसन्न थी कि सात वर्ष उसको कुछ जान न पड़ते थे। प्रसन्नता के प्रथम विकास में दोनों सात वर्ष सात दिन के समान समझते थे। वे यह नहीं समझते थे कि नया जीवन कठिनाई से, बहुत दुःख उठाकर बड़े प्रयत्नों से प्राप्त होता है। यह उनके नए जीवन का प्रभात था। इसी के सुन्दर, मधुर आशा में दोनों, मध्याह्न और संध्या की तैयारी करने लगे।

Class No.........
Accession No. 931
Book No..........
Date..........